

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्यद्वारा प्रकाशित

सामान्यतः जटिक भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनशास्त्रीय संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश राजस्थानी गुजराती, हिन्दी भाषा भाषाभिषद् विविध शास्त्र प्रकाशनी विविध ग्रन्थावली

प्रधान संपादक

पुरातत्त्वाचार्य, पद्मश्री, जिन विजय मुनि

[ऑनररी मेंबर ऑफ जर्मन ओरीएण्टल सोसाइटी जर्मनी]

सम्मान्य सङ्घ - माण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, एता; गुजरात साहित्य सम्म, बड़मदाबाद; विदेनारावण वैदिक ज्ञान संस्थान होशियारपुर, पञ्जाब विद्वत् सम्मान्य नियामक (ऑनररी डापरेटर) - भारतीय विद्यामण बंबई; प्रधान संपादक - गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर प्रणयावली; भारतीय विद्या प्रणयावली; सिन्धी शैव प्रणयावली; शैव साहित्यसंशोधन प्रणयावली - इत्यादि, इत्यादि ।

— प्रन्याक ४४ —

ठक्कर केरु विरचित

रत्नपरीक्षादि-सप्त-ग्रन्थसंग्रह

प्रकाशक

राजस्थानराज्यमन्त्रालय

संचालक -- राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

विक्रमाब्द २ १७

राष्ट्रीय शकाब्द १८८३

राज्यमन्त्रिमन्त्रालयतः सर्वाधिकार सुरक्षित

विक्रमाब्द

१९९१

मुद्रक - मन्जीराई नारायण बीभती लिनेकसापर प्रेस १९-२८ कोकमात हरीद बंबई ९.

प्रकाशक - योगेश्वर नारायण बहुता उपरवाबाद राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर.

विययानुक्रम



प्रधान सपादकीय - किंचित् प्रासंगिक	पृ०	१- ४
प्रास्ताविक कथन		
भगरचन्द्र, भंवरलाल नाइटा	”	५- ८
ठफुर फेरुकृत रत्नपरीक्षाका परिषय		
छे डॉ मोतीचन्द्र एम् ए. पीएच् डी	पृ०	१- ३५
(१) रत्नपरीक्षा मूल ग्रन्थ	पृ०	१- १६
(२) द्रव्यपरीक्षा ” ”	”	१७- ३८
(३) घातूत्यधि ” ”	”	३९- ४४
(४) ज्योतिषसार ” ”	”	१- ४०
(५) गणितसार ” ”	”	४१- ७४
(६) वास्तुसार ” ”	”	७५- १०३
(७) खरतरगच्छयुगप्रधानचतुःपदिका	”	१०४- १०६
(८) परिशिष्ट - ज्योतिषविषयक स्फुटपद्य	”	१०७- १०८



प्रधान सपादकीय किंचित् प्रासंगिक

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ११ वें प्रन्थक रूप में, ठडूर फेरू रचित ७ प्रन्थों का यह एकत्र संग्रह प्रकट किया जा रहा है।

ठडूर फेरू के इन प्रन्थों की छिन्नी हुई प्राचीन पोषी का पता लगाने का श्रेय श्री अजर चन्दजी और मंवर जालन्दी नाहटा को है। इन साहित्यसौजी बन्धुओं की खान में, कलकत्ते के एक कोने में पड़े हुए जैन प्रन्थों के पिटारे में से, इस मूल्यवान निधि को प्रकाश में लाने का अमिनन्दनीय यत्न प्राप्त किया है।

ठडूर फेरू के ये प्रवचनमय ग्रन्थ कैसे मिले और इन को प्रकाश में लाने का कैसा प्रयत्न किया—इस विषय में नाहटा बन्धुओं ने, अपने प्रस्तावनात्मक वक्तव्य में यथेष्ट लिखा है। इस से पहले भी इन्हीं ने, कुछ पत्रों में लेख प्रकट करा कर इस विषय पर काफी प्रकाश बाखने का प्रयत्न किया है।

इस संग्रह की प्राचीन पोषी जब इन के देखने में आई, तो इन की शोभक बुद्धि ने तत्काल उस का विशिष्ट महत्त्व पहिचान लिया और तुरन्त उस पोषी पर से अपने हाथ संनकल उतार कर मेरे पास देखने के लिये भेज दिया। मैं ने भी ग्रन्थ का 'ग्रन्थ परीक्षा' नामक प्रबन्ध में बर्णित सूत्रवा अज्ञात विषय की उपलब्धि देख कर, इस को सुप्रसिद्ध सिंधी जैन ग्रन्थमाला द्वारा प्रकट कर देने की अपनी इच्छा नाहटा बन्धुओं को व्यक्त की और उस असल प्राचीन लिखित पोषी को मेरे पास भेज देने को लिखा। पर उस समय कलकत्ते में सांप्रदायिक मार पीट की दफान वाली हम सब मच रही थी इस लिये तुरन्त यह प्रति मेरे पास न जा सकी। प्रतिक्रिया प्रत्यक्ष अबलोकन किये बिना किसी ग्रन्थ को छाप देने के लिये मेरी रुचि सतृप्त नहीं रहती, इस लिये मैं उस की प्रतीक्षा करता रहा। बाद में, मेरा स्वयं जब कलकत्ता जाना हुआ तो मैं उस प्रति को देखने में समर्थ हुआ और नाहटा बन्धुओं के सौमन्य से यह प्रति कुछ समयके लिये मुझे मिल गई। बंबई जा कर मैं ने उस पर से अपने निरीक्षण में प्रतिलिपि करवाई और उसे प्रेस में छपवाने की व्यवस्था की।

बाद में बंबई छोड़ कर मेरा अधिक रहना राजस्थान में होने लगा और मैं मेरे तत्पराबधान में प्रस्थापित और संचालित राजस्थान पुरातन मन्दिर (जब, राजस्थान प्रांथ विद्या प्रतिष्ठान) के संगठन और संचालन के कार्य में अधिक व्यस्त रहने लगा, तो इस का प्रकाशन स्थगित सा हो गया।

पर इस ग्रन्थ को, इस रूप में, प्रकट करने करान की अमिच्छा नाहटा बन्धुओं को बहुत ही उत्कट रही और मुझ भी ये बहुत प्रेरणा करत रहे। तब मैं न इसे राजस्थान

पुरातन ग्रन्थमाम्ना द्वारा प्रकट करने की व्यवस्था की और उसी के फल स्वरूप, आज यह ग्रन्थ प्रकाश में आ रहा है। नाहटा बन्धुओं का जो स्तुत आग्रह न रहता तो मैं इसे प्रकट करने में शायद ही समर्थ होना। अतः इस के संपादन के श्रेयोमानी ये बंधु हैं।

इस संग्रह की प्रेस कॉपी से केवल ग्रन्थ को वर्तमान रूप देने तक के प्रुप्त बौद्ध स्वरु मुझे ही देखने पड़े और माया एवं अर्पानुसन्धान की दृष्टि से इस के संशोधन में मुझे बहुत श्रम उठाना पड़ा। इस लिये ग्रन्थ के प्रकाशित होने में अपेक्षा से भी बहुत अधिक समय व्यतीत हुआ।

ठकुर फेरू ने अपनी ये सब रचनाएं प्राकृत माया में लिखी हैं। पर इस की यह प्राकृत भाषा, शिष्ट और व्याकरण बद्ध न हो कर, एक प्रकार की प्राकृत-अपभ्रंश की चञ्चली शैली वाली माया है जिसे हम न शुद्ध प्राकृत कह सकते हैं, न शुद्ध अपभ्रंश ही कह सकते हैं। फेरू के इन ग्रन्थों के जो नियम हैं वे लोकप्रियता की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी और अल्पसंख्यक हैं। इस लिये उस ने अपनी रचना के लिये प्राकृत माया की बहुत ही सरल शैली का उपयोग करना पसंद किया। उस का लक्ष्य अपने मात्र को-विषय के अर्थ को अभिव्यक्त करना रहा है, इस लिये व्याकरण के कुछ नियमों का अनुसरण करने के लिये वह प्रयत्नवान् नहीं दिखाई देता। अपनी रचना के लिये प्राकृत का प्रसिद्ध गाथा छन्द उस ने पसन्द किया है और वह छन्द के नियम का ठीक पालन करने की दृष्टि से, कहीं इस को दीर्घ और दीर्घ को इस रहता है, और कहीं कहीं द्वित्व अक्षर को एकाक्षर के रूप में तो कहीं एकाक्षर को द्वित्व के रूप में भी प्रयत्न कर देता है। छन्द का भंग न हो इस विचार से वह शब्दों का निर्दिष्टिक रूप तक रख देता है। प्रत्यकार की इस शैली का ठीक अध्ययन करते करते हमें इस का संशोधन करना पड़ा है। इस लिये हमारा समय भी इस में बहुत व्यतीत हुआ।

फेरू के इन ग्रन्थों में से 'वस्तुसार' और 'रत्नपरीक्षा' तथा 'धातुपत्ति' के कुछ बिस्से के सिवा, और ग्रन्थों की अन्य कोई प्रति उपलब्ध नहीं हुई, अतः उक्त एकमात्र प्रति के आधार पर ही सब पाठनिर्णय करना पड़ा। साथ में प्रति के केन्द्रक की अशुद्धियों में भी कुछ परिश्रम बड़ा दिया। प्रति का लिखने वाला न संस्कृत जानता है न प्राकृत। उस में कहीं कहीं अपनी माया में जो वाक्य लिखे हैं उन पर से उस के माताह्वान का परिचय मिल जाता है।

हम ने इस के संशोधन में केवल उतना ही प्रयत्न किया है जिस से अर्थबोध ठीक हो सके, और व्याकरण के नियम के निकट शब्द का रूप रह सके। ग्रन्थपरीक्षा, रत्नपरीक्षा और धातुपत्ति ये तीन प्रबन्ध लौकिक शब्दों के ऊपर आधारित हैं और इन में के अनेक शब्द ऐसे हैं जो सर्वथा अपरिचित से लगते हैं। इन शब्दों का ठीक स्वरूप जानने का कोई ग्रन्थ साधन नहीं। अतः उक्त की स्थिति जैसी किञ्चित् प्रति में है वैसी ही रखनी आवश्यक रही।

‘वस्तुसार’ एक प्रसिद्ध रचना है। इसका मुद्रण भी पहले हो चुका है और फिर इस की अन्य प्रतियां भी उपलब्ध होती हैं। अतः उन के आधार पर यह ग्रन्थ तो प्रायः ठीक झुझ किया जा सकता है। इस के तो विशिष्ट पाठ भेद भी दे दिये हैं।

फेरू के इन ग्रन्थों में सब से अधिक महत्त्व का ग्रन्थ ‘द्रव्यपरीक्षा’ है। इस ग्रन्थ में, उस ने अपने समय में भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों और प्रान्तों में प्रचलित, सिद्धों की जो जानकारी स्थिती है वह सर्वथा अपूर्व है। इस विषय पर प्रकाश डालने वाली और कोई ऐसी प्राचीन साहित्यिक कृति अभी तक हात नहीं है। इस ग्रन्थ पर तो भारत के मध्यकालीन सिद्धों के परिचिता ऐसे किसी विशिष्ट विद्वान् को, एक अध्ययन पूर्ण एवं प्रमाणभूत ग्रन्थ लिखना आवश्यक है। इस का संपादन कार्य प्रारम्भ करते समय हमारा उद्देश्य था, कि हम इस विषय में यथाशक्य जानकारी एवं साधनसामग्री प्राप्त करके, इस के साथ छोट-बड़ा भी वैसा कोई निबन्ध लिखेंगे, पर सम्भवतः के कारण हम वैसा निबन्ध लिखने में असमर्थ रहे। हम आशा करते हैं कि अब इस ग्रन्थ का यह मूल स्वरूप प्रकट हो जाने पर, कोई सुयोग्य निष्कण्ठ विद्वान् वैसा प्रयत्न करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

फेरू के ‘रत्नपरीक्षा’ ग्रन्थ के विषय में तो प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. मोती चन्दजी ने एक अच्छा परिचयात्मक निबन्ध लिख देने की कृपा की है, जो इसके साथ दिया गया है। इसके लिये हम डॉक्टर साहब के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हैं।

‘गणितसार’ और ‘ज्योतिषसार’ ये रचनाएँ प्राथमिक अम्पासियों के अध्ययन की दृष्टि से अच्छी उपयोगी हैं। गणितसार में तो ठकुर फेरू ने अपने समय में दिल्ली के वासवास के प्रदेश में व्यवहृत अनेक देस्य शब्दों और स्थानिक पदार्थों का भी उल्लेख किया है जिस पर बिद्योप प्रकाश डाला जा सकता है।

फेरू के इस ग्रन्थ संग्रह की जो उक्त प्राचीन प्रति उपलब्ध हुई है वह, वैसा कि उसके लिपि कला ने दो तीन स्थानों पर निर्देश किया है, बि स १४०३ और १४०४ वर्ष के बीच में लिखी गई है। वास्तव में यह पोषी उक्त संवत् के फाल्गुण और चैत के महीने के बीच में, अतः दो महीने के अन्दर ही लिखी गई है। ठकुर फेरू ने ‘द्रव्य परीक्षा’ की रचना संवत् १३७५ में दिल्ली में अकबर की बादशाह के राज्य काल में की थी। अतः रचना समय के बाद २५-३० वर्ष का भीतर ही यह पोषी लिखी गई थी जिस से इस की प्राचीनता अतः सिद्ध है।

इस प्रति की कुल पत्रसंख्या ६० है और उन में भिन्न ताकिक के अनुसार फेरू की इस संग्रह वाली सातों रचनाएँ लिखी गई हैं।

१ पत्रांक	१ से १८	तक में	ज्योतिषसार
२ "	१९ से २७ A	"	द्रव्यपरीक्षा
३ "	२८ से ३५	"	वास्तुसार
४ "	३६ से ४१ A	"	रत्नपरीक्षा
५ "	४१ A से ४३ A	"	घातृत्पत्ति
६ "	४३ B से ४४	"	युगप्रधान चतुष्पदी
७ "	४५ से ६०	"	गणितसार

हम ने इस संग्रह में प्रतिस्थित ग्रन्थक्रम का अनुसरण न करते हुए, प्रथम रत्नपरीक्षा, द्रव्यपरीक्षा और घातृत्पत्ति नामक इन ३ रचनाओं को एक साथ रखा है, और फिर ज्योतिषसार, गणितसार एवं वास्तुसार इन ३ रचनाओं को एक साथ रख कर, अन्त में 'युग प्रधान चतुष्पदी' रचना को दे दिया है। इस से विषय का विभाजन ठीक समत हो गया है।

इसके साथ मूल प्राचीन प्रति जो कलकत्ते के जैन भंडार में प्राप्त हुई उसके कुछ पन्नोंके नक्का भी बना कर दिये जा रहे हैं जिस से पाठकों को प्रति की प्रतिकृति का दर्शन हो सके।

ज्योतिष, गणित, वास्तुशास्त्र, रत्नशास्त्र और मुद्राविषयक विज्ञान पर, इस प्रकार की विशिष्ट ग्रन्थ-रचना करने वाला ठाकुर फेरू, सचमुच अपने समय का एक बहुत ही बहुमुल्य विद्वान् और अनुमयी शास्त्रज्ञ था। उसकी ये कृतियाँ हमारे प्राचीन साहित्य की बहुमूल्य निधि हैं और इस प्रकार राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा इन का प्रकाशित होना सर्वथा समझरणीय होगा।

जैन मुद्र १२ सि. सं. २ १०
दिनांक-३१ मार्च १९९१
भारतीय विद्या मंदल बंबई

}

- मु नि जि न वि ज य

ठकुर फेरू और उनके ग्रन्थों के विषय में

प्रास्ताविक कथन

(लेखक—अगरचन्द, भंवरलाल नाहटा)

कम्पाणा निवासी ठकुर फेरू का नाम यों तो उन की सुप्रसिद्ध हस्ती 'वास्तुसार प्रकरण' के कारण सब विदित था, परन्तु उन के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न एवं महान् प्रयत्न करने का अब तक पता नहीं था। १५ वर्ष पूर्व, कलकत्ते की श्रीमणि जीवन जैन कायमेरी की सूची में 'सारा कौमुदी गणित व्योतिप' नाम से उल्लिखित फेरू प्रभावली की प्रति देखने पर ठकुर फेरू की कई नई हस्तियों ज्ञात हुईं। इस प्रति की प्राप्ति से केवल हमने ही नहीं, पर जिस किस्तीने सुना परम आनन्द प्राप्त किया। इन ग्रंथों की उपलब्धि से ठकुर फेरू की गणना, भारतीय साहित्य में, एक अनूठा स्थान प्राप्त करने वाले विद्वानों में की जा सकती है।

ठकुर फेरू विक्रम की चौदहवीं शती के रानमान्य जैन गुरुओं में प्रमुख व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी हस्तियों में जो परिचय दिया है उससे विदित होता है कि ये कम्पाणा निवासी श्रीमाल बंस के घाघिया (घंघकुल) गोत्रीय श्रेष्ठ कालिय या कलश के पुत्र ठकुर चंद के सुपुत्र थे। इनकी सब प्रथम रचना 'युगप्रधान चतुष्पदिका' है जो संवत् १३७७ में बाघनाचार्य रामशेखर के समीप, अपने निवासस्थान कम्पाणा में बनी थी। इन्होंने अपनी हस्तियों के अंत में "परम जैन" और अपने आप को "निर्णद पय मत्तो" लिख कर अपना कहर जैनत्व सूचित किया है। इन्होंने 'रत्नपरीक्षा' में अपने पुत्र का नाम हेमपाल लिखा है, जिसके लिये इस ग्रंथ की रचना की है। इनके माई का नाम अज्ञात है परन्तु भ्राता और पुत्र के लिए 'द्रव्यपरीक्षा' नामक विशिष्ट ग्रंथ की रचना की थी।

दिह्नीपति सुरप्राण अगठरीन मिडजी के एग्याभिकाठी या मत्रिमंडल में होने के कारण, पीछे से इनका निवास स्थान अविष्कार दिह्नी हो गया था। इन्होंने 'द्रव्यपरीक्षा' दिह्नी की टंकसाळ के अनुभव से तथा 'रत्नपरीक्षा' ग्रंथ सजाद के रनागार के प्रसन्न अनुभव से एवं 'गणितसार' में भी ही हुई तत्कालीन रामनेतिक गणित प्रभावली आदि से, यह फलित होता है कि ये अवश्य शाही दरबार में उच्च पदार्जन व्यक्ति थे। संवत् १३८० में दिह्नी से श्रीमाल सेठ रयपति ने म्हातीर्थ शत्रुघ्नय का संघ निकाला था, जिसमें ठकुर फेरू भी सम्मिलित हुए थे।

१-५. मगधनराजरी बंस के अन्दर से 'वास्तुसार' (गुजराती अनुबाव पहिल संस्करण) के साथ "रत्नपरीक्षा" और "वास्तुपति" का अरुण मंत्र भी प्रकाशित किया है।

२-३-४-५ इनाठी "वाचा विन कथन वारी" पृष्ठ ५।

ठकुर फेरू की "युगप्रधान चतुष्पदिका" के अतिरिक्त समी कृतियाँ प्राकृत में हैं। भाषा बड़ी सरल, प्रवाही और अपभ्रंश या तत्कालीन लोकभाषा के प्रभाव से प्रभावित है। मन्थोक कतिपय वृत्तान्त तत्कालीन भारतीय संस्कृति एवं भाषा पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं। इनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१ युगप्रधान चतुष्पदिका—यह कृति तत्कालीन लोकभाषा अपभ्रंश में २८ चौपाई व एक छप्पय में रची गई है। इसमें भगवान् महावीर से लगा कर खरतरगण्ड के युगप्रधान आचार्यों की परंपरा की नामावली निम्न है। आचार्य श्री वर्तमान सूरि के पहचर श्री जिनेश्वर सूरिजी से यह गण्ड खरतर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके परवर्ती आचार्यों के संवन्ध में कतिपय संक्षिप्त ऐतिहासिक वृत्तान्तों का भी निर्देश किया गया है। जैसे—

१ श्री जिनेश्वर सूरिजी ने अणद्विष्णुपुर में दुर्लभराज के सम्मुख ८४ आचार्यों को जीत कर वसुति माग प्रकाशित किया।

२ श्री जिनचंद्र सूरिजी ने उपदेश द्वारा नृपति को रूकित किया एवं 'सवेग रंगशाळा मामक प्रप की रचना की।

३ श्री अमरदेव सूरिजी ने ९ अंगों पर टीकाएँ बनाईं एवं स्वप्न पार्श्वनाथ की प्रशंसा प्रकट की।

४ श्री जिनवल्गुम सूरिजी ने नंदी, न्दवण, रव, प्रतिष्ठा, मुक्तियों के ताबा रास आदि कार्य रात्रि में किये जाने निषिद्ध किये।

५ श्री जिनदत्त सूरिजी ने ठमैन में ध्यान-बल से योगिनी चक्र को प्रतिबोध दिया। शासन देवता ने इन्हें 'युग प्रधान' पद धारक घोषित किया।

६ श्री जिनचंद्र सूरिजी बड़े रूपबल थे। इन्होंने बहुत से शायकों को प्रतिबोध दिया।

७ श्री जिनपति सूरिजी ने अजमेर के नृपति (पृथ्वीराज) की समा में पद्यम को परामित कर अयपत्र प्राप्त किया।

८ श्री जिनेश्वर सूरिजी ने अनेक स्थानों में जिनालय एवं तहुपरि ध्वज, दण्ड, कलश, तोरणादि स्थापित किये एवं १२३ साधु शोधित किये।

इनके पहचर श्री जिनप्रबोध सूरि के पहचर श्री जिनचंद्र सूरिजी के समय में कमाणे में पाचनाचार्य राजशेखर गणि के समीप, संवत् १३७७ के माघ मास में, इस चतुष्पदी की रचना हुई। इसकी एक प्रति हमें जैसलमेर के भंडार का अकनोहन करते हुए प्राप्त हुई थी जिसकी नकल हमारे पास विद्यमान है और उससे आश्चर्यक पाठान्तर भी किये गये हैं।

२ रत्नपरीक्षा—यह ग्रंथ १३०* प्राकृत गाथाओं में है। संवत् १३७२ में बिछी में सम्राट् अल्लाउद्दीन के शासनमें खपुत्र हेमपाल के लिये प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। पूर्व कवि अगस्त्य और बुद्ध मन् के ग्रंथों के अतिरिक्त शाही रत्नकोश की अनुमति द्वारा अभिषिक्त विषय का सुन्दर प्रतिपादन किया है।

३ वास्तुसार—सिन्धु स्थापत्य के विषय में प्रस्तुत ग्रंथ प्रामाणिक माना जाता है। पं मगवानदासजी ने हिन्दी और गुजराती अनुबाद यह जयपुर से प्रकाशित भी कर दिया है। प्रस्तुत प्रति संवत् १४०४ की लिखित है और मुद्रित संस्करण से पाठ भेद का प्राप्ति है। इसकी रचना संवत् १३७२ विजया दशमी को कर्नाणापुर में हुई।

४ ज्योतिषसार—यह ग्रंथ संवत् १३७२ में २४२ प्राकृत गाथाओं में रचित है, जिसकी श्लोक संख्या, यंत्र कुंडलिका यह ४७४ होती है। इसमें ज्योतिष जैसे वैज्ञानिक विषय को बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया है।

५ गणितसार कौमुदी—यह ग्रंथ कुल ३११ गाथाओं में है। गणित जैसे शुष्क और बुद्धि प्रधान विषय का निरूपण करते हुए ग्रन्थकार ने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया है। इस ग्रंथ के परिशीलन से तत्कालीन वस्तुओं के माप, तौल, नाप इत्यादि सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थिति का अच्छा ज्ञान हो जाता है। बत्तों के नाम, उनके हिसाब, पत्थर, बकरी, सोना, चाँदी, घान्य, धृत, तैलादि के हिसाबों के साथ साथ क्षेत्रों का माप, धान्योत्पत्ति, राजकीय कर, मुकदमा इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला गया है। इसके कतिपय ग्रन्थ देश्य भाषा के छप्पयों में भी है, जो भाषाकीय अध्ययन की दृष्टि से भी अपना वैशिष्ट्य रखते हैं।

६ पातोत्पत्ति—प्राकृत की ५७ गाथाओं में पीतल, लोहा, सीसा प्रभृति धातुओं के उत्पत्ति विधानादि के साथ साथ बिगुन, सिंदूर, दक्षिणावत् संख, कपूर, अगार, चंदन, कस्तूरी आदि वस्तुओं का भी विवरण दिया है, जो कवि के बहुत होने का सूचक है।

७ द्रव्यपरीक्षा—प्रस्तुत ग्रंथ कवि की समस्त रचनाओं में अद्वितीय है। भारतीय साहित्य में पुराने सिद्धों के संक्षेप में खतब रचना वाला यही एक ग्रंथ उपलब्ध है।

* पं मगवानदासजी का प्रकाशित वास्तुसार (गुजराती अनुबादसहित) के अंत में रत्नपरीक्षा (पा २३ से १२०) छपी है। इसके बीच की ९१ से ११९ तक की गाथाएं पाठोत्पत्ति की हैं। पाठभेद भी काफी है। उक्त ग्रन्थानुसार रत्नपरीक्षा १२ गाथाओं का होता है। पर वास्तव में हमने बीच की बहुत ही गाथाएं सूट पाई हैं।

जिसमें मुद्राओं के मूल उत्पादन, घातुओं की चासमी, घातुशोषण प्रणालिका, मिस्र भिन्न मुद्राओं (सैकड़ों रकम की) के नाम, टकसाख्तखान, आकार प्रकार, तौल, माप, घातु के मिश्रण, राजाओं के नाम छम आदि सभी विषयों पर १७९ गाथाओं में, प्राचीन काल से ले कर तात्कालीन समय तक की प्राप्त सभी मुद्राओं पर विशिष्ट विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत प्रति जिसके कुल ६० पत्र हैं, संवत् १९०१-१९०४ में लिखी हुई सुन्दर सुवाच्य और अच्छी स्थिति में है। किसी सा० मावदेव के पुत्र पुरित्त ने अपने लिए लिखी है। प्रति के हांसिये पर "पचनीय प्र", लिखा हुआ है जिससे मासूम होता है कि यह प्रति मूममें पाटण के ज्ञानमंडार की रही होगी। फेरू प्रभावधी की प्रस्तुत प्रति से "प्रेस्तकापी" मंथरलालने स्वयं अपने हाम से करके पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयजी को भेजी, जिसे देख कर इन्होंने उस समय सिंधी जैन ग्रन्थमाळा द्वारा इसे दुरन्त प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की। साथ में आपने मूल प्रति को भी देखना चाहा। पर कलकत्ते की तात्कालीन सांप्रदायिक विषम परिस्थिति बश, यह तब उन्हें नहीं भेजी जा सकी। बादमें जब मुनिजी कलकत्ता पचारे तब प्रस्तुत प्रति को बर्बाद ले गये। अद्वेय मुनिजी जैसे विद्वान के तत्त्वाधान में यह ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित हो ऐसी हमारी उत्कट इच्छा रही, पर सिंधी जैन ग्रन्थमाळा के अनेकानेक प्रन्नों के संपादन कार्य में मुनिजी ललन्त व्यस्त रहने के कारण इसके प्रकाशन कार्य में विचलन होता रहा।

पर अब यह ग्रन्थ, इस रूप में राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माळा द्वारा प्रकाशित हो रहा है, जो इस विषय के जिज्ञासुओं को परम आनन्द दायक होगा।

प्रस्तुत संग्रह में ठकुर फेरू के 'रत्नपरीक्षा' ग्रन्थ के परिषय रूप में, सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. मेरी अदजी ने, हमारी प्रार्थना पर, एक विस्तृत निबन्ध लिख दिया है, जो इसमें मुद्रित हो रहा है। हम इसके लिये डॉ. साहम के प्रति अपना हार्दिक हृत्कृत्य भाव प्रकट करना चाहते हैं।

अन्त में हम आचार्य श्री जिनविजयजी के प्रति अपना विनम्र और सादर आभार भाव प्रदर्शित करना चाहते हैं कि इन्होंने, बहुत परिश्रम के साथ, इस ग्रन्थ का यह सुन्दर प्रकाशन, राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माळा के एक सुन्दर रत्न के रूप में प्रकट कर, हमारे चिराभिनयित मनोरथ को सफल बनाया।

अगरअन्त तथा मंथरलाल नाट्टा

ठकुर फेरुकृत रत्नपरीक्षाका परिषय

लेखक—डॉ. मोतीचन्द्र, एम् ए, पीएच् डी
(क्युरेटर प्रिन्स ऑफ वेस्त मुजिब्रम, बर्मा)



अमरकोश (२।१।३-४) में पृष्ठी के अस्तीस नामों में बसुधा, बसुमती और रत्नगर्भा नाम आए हैं जिनसे इस देश के रत्नों के व्यापार की ओर ध्यान जाता है। हिन्दी ने (नेचुरल हिस्ट्री ३७।७६) भी भारत के इस व्यापार की ओर इशारा किया है। इसमें जरा भी संदिह नहीं कि १८ वीं सदी पर्यंत जब तक कि, प्राजित्त की रत्नों की खानें नहीं खुली थीं, भारत संसार भर के रत्नों का एक प्रधान बाजार था। रत्नों की खरीद विक्री के बहुत दिनों के अनुभव से भारतीयों ने रत्नपरीक्षा शास्त्र का सूजन किया। जिसमें रत्नों के खरीद, बेच, नाम, जाति, आकार, घनत्व, रंग, गुण, दोष, कीमत तथा उत्पत्तिस्थानों का सांगोपांग विवेचन किया गया। बाद में जब नकली रत्न बनने लगे तब उन्हें असली रत्नों से भिन्न करने के तरीके भी बतलाए गए। अंत में रत्नों और नक्षत्रों के सम्बन्ध और उनके शुभ और अशुभ प्रभावों की ओर भी पाठकों का ध्यान दिखिया गया।

रत्नपरीक्षा का शायद सबसे पहला उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र (२।१०।२६) में हुआ है। इस प्रकरणमें अनेक तरह के रत्न, उनके प्राविस्वान तथा गुण और दोष की विवेचना है। कामसूत्र की चौंसठ कलाओं की सात्त्विक में (कामसूत्र, १।१।१६) रूप्य-रत्न-परीक्षा और मणिगणकर ज्ञान विशेष कलाएँ मानी गई हैं। जयम्माळा टीका के अनुसार रूप्य-रत्न-परीक्षा के अन्तर्गत सिक्कों तथा रत्न, हीरा, मोती इत्यादि के गुण दोषों की पहचान व्यापार के लिए होती थी। मणिगणकर ज्ञान की कला में गहनों के जड़ने के लिए स्फटिक रंगने और रत्नों के आकारों का ज्ञान आ जाता था। दिव्याभदान (पृ० ३) में भी इस बात का उल्लेख है कि व्यापारी को आठ परीक्षाओं में, जिनमें रत्नपरीक्षा भी एक है, निष्णात होना आवश्यक था। पर इस रत्नपरीक्षा ने किस युग में एक शास्त्र का रूप ग्रहण किया इसका ठीक ठीक पता नहीं चलता। कौटिल्य के ब्रह्म-प्रवेद्य रत्नपरीक्षा प्रकरण से तो ऐसा मालूम चलता है कि मौर्य युग में भी किसी न किसी रूप में रत्नपरीक्षा शास्त्र का वैज्ञानिक रूप स्थिर हो चुका था। रोम और भारत के बीच में ईसा की आरंभिक सदियों में जो व्यापार चलता था उसमें रत्नों का भी एक विशेष स्थान था। इसलिए यह अनुमान करना शायद गमत्त न होगा कि भारतीय व्यापारियों को, रत्नों का अच्छा ज्ञान रहा होगा

और किसी न किसी रूप में रत्नपरीक्षा शास्त्र की स्थापना हो चुकी होगी। जो भी हो, इसमें जरा भी संदेह नहीं कि ईसा की पाँचवीं सदी के पहले रत्नपरीक्षा का सुजन हो चुका था।

यह समझ लेना भूल होगा कि रत्न-परीक्षा शास्त्र केवल जौहरियों की शिक्षा के लिए ही बना था। इसमें शक नहीं कि, जैसा दिव्यावदान में कहा गया है, व्यापारियों के पुत्र पूर्ण और सुप्रिय (दिव्यावदान, पृ० २६, २९) को और और विधाओं के साथ साथ रत्नपरीक्षा भी पढ़ना पड़ा था। हमें इस बात का पता है कि प्राचीन भारत में राजा और राजा राजों के पारखी होते थे। यह आवश्यक भी था क्यों कि व्यापारियों के सिवा वे ही रत्न खरीदते थे और संग्रह करते थे। जैसा कि हमें साक्ष्य से पता चलता है, काम्यकारों को भी इस रत्नशास्त्र का ज्ञान होता था और वे बहुधा राजों का उपयोग रूपकों और उपमाओं में करते थे, गो कि रत्न सम्बन्धी उनके व्यक्तित्व कमी कमी अतिरिक्त होकर वास्तविकता से बहुत दूर जा पहुँचते थे। जैसा कि हमें मृच्छकटिक के चौथे अंक से पता चलता है, कि जब विदूषक बसंतसेना के माल में घुसा तो उसने छठे परकोट के वांगन के दातानों में कागिरों को आपस में बैदूर्य, मोती, मृगा, पुष्कराज, नीलम, कर्णैतन, मानिक और पत्ते के सम्बन्ध में बातचीत करते देखा। मानिक सोने से जड़े (वष्मन्ते) जा रहे थे, सोने के गहने गड़ जा रहे थे, शंस फाटे जा रहे थे, और कागने के लिए मृगो सान पर चढ़ाए जा रहे थे। उपर्युक्त विवरण से इस बात का पता चल जाता है कि राजा को रत्नपरीक्षा का अच्छा ज्ञान पना होगा। कलाविद्यस्त के आठवें सर्ग में सोनारों के वर्णन से भी इस बात का पता चलता है कि छेमेन्द्र को उनकी कला और रत्नशास्त्र का अच्छा परिचय था।

रत्नपरीक्षा शास्त्र का जितना ही मान था, उतना ही यह शास्त्र कठिन माना जाता था। इसीलिए एक कुशल रत्नपरीक्षक का सम्मान में कफि आदर होता था। रत्नपरीक्षा के प्रथम उत्कृष्ट नाम बड़े आदर से छेते हैं। जगस्तिमत्¹ (६७-६८) के अनुसार गुणवान मंत्रालिक जिस देश में होता है, वह धन्य है। प्राहक को उसे बुझाकर आसन देकर तथा गंध माळमदि से सत्कार करना चाहिए। मुद्रमाह (१४-१५) के अनुसार रत्नपरीक्षकों को शास्त्रज्ञ एवं कुशल होना चाहिए। इसी-विधि उन्हें रत्नों के मूल्य और मात्रा के जागकर कहा गया है। देश करु के अनुसार मूल्य न जानने वाले तथा शास्त्र से अनभिज्ञ जौहरियों की विद्वान करदर नहीं करते। ठकुर केरु (१ ६-१०७) का माय भी कुछ ऐसा ही है। उसके अनुसार मंत्रालिक

1 वैदिय, केम्पेविर जमिना थी छै किनो पारी १८९६। किने इय मुमिध को सिद्धने में भी किनो के प्रथ से सहायता की है किस्त्र में आमार माता हूँ। भी किनो में कल्पे इय महत्पूर्ण प्रथ में उपसम्भ एज शास्त्रो को एक बप्य इच्छा कर दिया है।

को शाब्दिक, आंखवाला, अनुमयी, देश, काल और मात्र का ज्ञाता और रत्नों के स्वरूप का जानकार होना आवश्यक था। हीनांग, नीच जाति, सस्म रहित और बदनाम व्यक्ति जानकार और मान्य होने पर भी असुधी जौहरी कमी नहीं हो सकता। अगस्तिसप्त (६५) ने भी यही मात्र प्रकृत किए हैं।

अगस्तिसप्त (५४-६६) के अनुसार जहुर जौहरी को मंडलित् कहा गया है। यह नाम शायद इसलिए पडा कि जौहरी अपना काम करते समय मंडल में बैठता था। यह भी संभव है कि यहाँ मंडल से मंडली यानी समूह का मतलब हो। अगस्तिसप्त (६१-६६) के अनुसार जौहरी रत्नों का मूल्य आंकता था। उसे देश में मिलनेवाले आठ खानों तथा विदेशी और द्वीपों से आए हुए रत्नों का ज्ञान होता था। उसे रत्नों की जाति, रंग रंग, बर्तन, तौल, गुण, आकर, दोष, आब (छाया) और मूल्य का पता होता था। वह आकर (पूर्वी मध्यभारत), पूर्वदिश, कन्नौर, मध्यदेश, सिंधु तथा सिंधु नदी की घाटी में रत्न खरीदता था तथा रत्न बेचने और खरीदने वाले के बीच मध्यस्थ का काम करता था। अगस्तिसप्त (७२) के अनुसार वह रत्न विक्रेता से हाथ मिलानकर अंगुलियों के इशारे से उसे रत्न के मूल्य का पता दे देता था। उसी के एक खेपक (१३-२३) के अनुसार १, २, ३, ४ संख्याओं का क्रमशः तर्जनी से दूसरी अंगुलियों को पकड़ने से बोध होता था। अंगूठे सहित चारों अंगुलियाँ पकड़ने से ५ की संख्या प्रकृत होती थी। कनिष्ठा आदि के तलत्परी से क्रमशः ६, ७, ८ और ९ की संख्याओं का बोध होता था, तथा तर्जनी से १० का। फिर नखों के छूने से क्रमशः ११, १२, १३, १४ और १५ का बोध होता था। इसके बाद हथेली छूने पर कनिष्ठादि से १६ से १९ तक की संख्याओं का बोध होता था। तर्जनी आदि का दो, तीन, चार और पाँच बार छूने से २० से ५० तक की संख्याओं का बोध होता था। कनिष्ठा आदि के तर्जनी को ६ बार तक छूने से ६० से ९० तक अर्कों की ओर इशारा हो जाता था तथा आधी तर्जनी पकड़ने से १००, आधी मध्यमा पकड़ने से १०००, आधी अनामिका पकड़ने से अत्यंत, आधी कनिष्ठिका से १०००००, अंगूठे से प्रत्युत, कर्ण से करोड़। मुगल काल में तथा अब भी अंगुलियों की संक्रितिक भाषा से जौहरी अपना म्यपार चलाते हैं।

प्राचीन साहित्य में भी बहुधा जौहरियों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलते हैं। दिव्या स्थान (पृ० ३) में कहा गया है कि किसी रत्न की कीमत आंकने के लिए जौहरी बुलाये जाते थे। अगर वे रत्न की ठीक ठीक कीमत मही आंक सकते थे तो उत्तम मूल्य वे एक करोड़ कह देते थे। दृष्टकपाछोकसंग्रह (१८, ३६६) से पता चलता है कि सानुदास ने पाण्ड्य मयुर में पदार्थ कर बहाँ का जौहरी बानार देखा और वहाँ एक श्रेता और शिकता को, एक जौहरी से एक रत्नामंकार का मूल्य आंकने को कहते

सुना । सानुदास को उस गहने की ओर ताकते हुए देखकर उन्होंने समझा कि चाण्ड यह सिगाहदार था । उससे पूछने पर उसने गहने की कीमत एक करोड़ बता कर कह दिया कि बेचने और खरीदनेवाले की मर्जी से सौदा पट सकता था । वे दोनों एक दूसरे जौहरी के पास पहुँचे जिसने कहा कि गहने की कीमत साठ संसार था पर नासम्झ के लिए उसका मोड़ एक छदाम था । सानुदास की जानकारी से प्रसन्न होकर राजा ने उसे अपना रत्नपरीक्षक नियुक्त कर दिया ।

प्राचीन साहित्य में अनेक ऐसे उल्लेख आए हैं जिनसे पता चलता है कि रत्नों के व्यापार के लिए भारतीय जौहरी देश और विदेश की बराबर यात्रा करते थे । दिम्बा-वदान (पृ० २२९-२३०) की एक कहानी में बतलाया गया है कि रत्नों के व्यापारी मोती, वैदूर्य, हीरा, मंगा, चाँदी, सोना, अकशिक, जमुनिया, और दक्षिणार्ध रास के व्यापार के लिए समुद्र यात्रा करते थे । निर्यातक प्रायः उन्हें सिङ्घ द्वीप में बनने वाले मकली रत्नों से इथियोपिया कर देता था तथा उन्हें आवेश दे देता था कि वे लूट समझ कर माछ खीरे । इताबर्न कथा (१७) और उत्तराख्यन सूत्रकी टीका (३५, ७५) से भी रत्नों के इस व्यापार की ओर संकेत मिलता है । उत्तराख्यन टीका में एक ईरानी व्यापारी की कहानी दी गई है जो ईरान से इस देश में सोना, चाँदी, रत्न और मंगा छिपा कर आना चाहता था । आक्षयक शूर्णि (पृ० ३४२) में रत्नव्यापार के लिए एक बलिए का पारसकूट आने का उल्लेख है । महाभारत (२।२।७।२५-२६) के अनुसार दक्षिण समुद्र से इस देश में रत्न और मृगे आते थे । ईसा की प्रारंभिक सत्रियों में तो भारत से रोम को हीरे, सार्ड, सोडिताक, अकशिक, सार्बोनिकस, बाबागोरी, कद्दसप्रोस, जहर मुहर, रक्तमणि, हेल्थियोद्राप, ज्योतिरस, कस्तूरी पत्थर, लहसुनिया, एर्वेचुलिन, जमुनिया, स्फटिक, बिहौर, कोरंड, नीलम, मानिक काष्ठ, आकवर्द, गार्नेट, तुसुथी, मोती इत्यादि पहुँचते थे (मोतीचन्द्र, सार्यवाह, पृ० १२८-१२९)

-:१:-

प्राचीन रत्नपरीक्षा का क्या रूप रहा होगा यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, पर उस सम्बन्ध के जो प्रसंग मिले हैं उनका विवरण नीचे दिया जाता है ।

१ अर्थशास्त्र—कौटिल्य ने क्रोश-प्रवेश्य रत्नपरीक्षा (अर्थशास्त्र, २-१०-२९) में रत्नपरीक्षा के सम्बन्ध की कुछ जानकारियाँ दी हैं । क्रोश में अधिकारी व्यक्तियों के समझ से ही रत्न खरीदे जाते थे । पहले प्रकरण में मोती के उत्पत्ति स्थान, गुण, दोष तथा आकर इत्यादि का वर्णन है । इसके बाद मणि, सीगंधिक, वैदूर्य, पुष्पराग, इन्द्रनील, नैदक, अक्षयमय्य, स्यकण्ठ, विमलक, सत्यक, अंबजनमूस, पित्तक, सुममक, मोहितक, अपूर्णाक, ज्योतिरसक, कैलेयक, अहिच्छत्रक, कूर्प, प्रथिर्षुर्प, सुगन्धिर्षुर्प,

धीरपक, मुक्तिचूर्णक, सिद्धप्रवालक, चूल्क, शुक्रपुष्क तथा हीरा और मृगा के नाम आए हैं। इनमें से बहुत से रत्नों की ठीक ठीक पहचान भी नहीं हो सकती क्यों कि बाद के रत्नशास्त्र उनका उल्लेख तक नहीं करते।

२ रत्नपरीक्षा—बुद्धमह की रत्नपरीक्षा का समय निश्चित करने के पहले पण्डित-निहिर की बृहत् संहिता के ८० से ८३ अध्यायों की जानकारी जरूरी है। इन अध्यायों में हीरा, मोती और मानिक के वर्णन हैं। पद्मे का वर्णन तो केवल एक श्लोक में है। बुद्धमह की रत्नपरीक्षा और बृहत्संहिता के उल्लेख की छानबीन करके श्री फिनो (वही पृ० ७ से) इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि दोनों की रत्नों की शक्तियों तथा हीरे और मोती का माप लगाने की विधि इत्यादि में बड़ी समानता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों ग्रंथों ने समान रूप से किसी प्राचीन रत्नशास्त्र से अपना मसाला लिया। गरुड पुराण ने भी बुद्धमह का नाम बताकर ६८ से ७० अध्यायों में रत्नपरीक्षा ब्रह्मण कर लिया। बहुत संभव है कि शायद बुद्धमह का समय ७-८ वीं सदी या इसके पहले भी हो सकता है।

३ अगस्तिमत्—अगस्तिमत् और रत्नपरीक्षा का विषय एक होते हुए भी दोनों में इतना भेद है कि दोनों एक ही अनुसृष्टि की बहुत दिनोंसे बल्ग हुई शाखा मान पड़ते हैं। श्री फिनो (पृ० ११) के अनुसार अगस्तिमत् का समय बुद्धमह के बाद पानी छठी सदी के बाद माना जाना चाहिए। शायद उसके लेखक दक्षिण का रहनेवाला जान पड़ता है। संभव है कि अगस्तिमत् का आधार कोई ऐसा रत्नशास्त्र रहा हो जिसकी ब्याप्ति दक्षिण में बहुत दिनों तक थी। ग्रंथ के अनेक उल्लेखों से ऐसा पता चलता है, कि रत्नशास्त्र के प्राचीन सिद्धांतों को निवाहते हुए भी ग्रंथकार ने अपने अनुभवों का उल्लेख किया है। अमात्यवश ग्रंथकार के व्याकरण और शैली में निष्णात न होने से उसके माप समझने में बड़ी कठिनाई पड़ती है।

४ नवरत्नपरीक्षा—नवरत्नपरीक्षा के दो संस्करण मिलते हैं। छोटे संस्करण में सोम मूर्जु का नाम तीन जगह मिलता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि इसके रचयिता कल्याणी का पश्चिमी चासुक्य राजा सोमेश्वर (११२८-११३८, ई.) था। इस कथन की सच्चाई इस बात से भी सिद्ध होती है कि मानसोत्सास के कोश-ध्यायमें (मानसोत्सास, भा० १, पृ० ६४ से) जो रत्नों का वर्णन है, वह सिवाय कुछ छोटे मोटे पाठभेदों के नवरत्नपरीक्षा जैसा ही है। नवरत्नपरीक्षा का दूसरा संस्करण बौद्धनेर और तंबोरकी हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है। इसमें भातुगद, मुद्राप्रकर और कृत्रिम रत्नप्रकर प्रकरण अधिक हैं। संभव है कि स्थितिसारोद्धार के लेखक नारायण पंडित ने इन प्रकरणों को अपनी ओर से जोड़ दिया हो।

सुना । सानुदास को उस गहने की ओर ताकते हुए देखकर उन्होंने समझा कि शायद यह निगाहदार था । उससे पूछने पर उसने गहने की कीमत एक करोड़ बता कर कह दिया कि बेचने और खरीदनेवाले की मर्जी से सौदा पट सकता था । वे दोनों एक दूसरे ओहरी के पास पहुँचे जिसने कहा कि गहने की कीमत सारा संसार था पर नासमझ के लिए उसका मोल एक छदाम था । सानुदास की जानकरी से प्रसन्न होकर राजा ने उसे अपना रत्नपरीक्षक नियुक्त कर दिया ।

प्राचीन साहित्य में अनेक ऐसे उल्लेख आए हैं जिनसे पता चलता है कि रत्नों के व्यापार के लिए भारतीय जौहरी देश और विदेश की बरतन यात्रा करते थे । दिव्या वदान (पृ० २२९-२३०) की एक कहानी में बतलाया गया है कि रत्नों के व्यापारी मोती, वैदूर्य, शंख, मृगा, चांदी, सोना, अरुणिक, जमुनिया, और दक्षिणार्ध शंख के व्यापार के लिए समुद्र यात्रा करते थे । निर्णामक प्रायः उन्हें सिंहल द्वीप में बनने वाले मकली रत्नों से होशियार कर देता था तथा उन्हें आदेश दे देता था कि वे सून समझ कर माछ खरीदें । इलाहर्म कथा (१७) और उत्तराख्यपन सूत्रकी टीका (१६७१) से भी रत्नों के इस व्यापार की ओर संकेत मिलता है । उत्तराख्यपन टीका में एक ईरानी व्यापारी की कहानी दी गई है जो ईरान से इस देश में सोना, चांदी, रत्न और मृगा लिये कर आया था । आख्यक पूर्णि (पृ० ३४२) में रत्नव्यापार के लिए एक बगिए का पारसकूल आने का उल्लेख है । महाभारत (२।२।२५-२६) के अनुसार दक्षिण समुद्र से इस देश में रत्न और मृगे आते थे । ईसा की प्रारंभिक सदियों में तो भारत से रोम को हीरे, सार्बे, डोडितांक, अरुणिक, सार्बोनिक्स, बान्नागोरी, क्रुडसाम्रेस, जहर मुहय, रक्तमणि, हेल्थियोद्रूप, ज्योतिरस, कस्तीटी फर, ल्हसुनिया, एर्वेजुमिन, जमुनिया, स्फटिक, बिजौर, कोरेड, नीलम, मानिक छस, छालबर्द, गर्मेंट, तुरसुखी, मोती इत्यादि पहुँचते थे (मोतीचन्द्र, सार्यबाह, पृ० १२८-१२९)

-:२:-

प्राचीन रत्नपरीक्षा का क्या रूप रहा होगा यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता, पर उस सम्बन्ध के जो ग्रंथ मिले हैं उनका विवरण नीचे दिया जाता है ।

१ अर्घ्यदास-कौटिल्य ने क्लेश-मवेस्य रत्नपरीक्षा (अर्घ्यदास, २-१०-२९) में रत्नपरीक्षा के सम्बन्ध की कुछ जानकारीयाँ दी हैं । क्लेश में अभिचारी व्यक्तियों के सलाह से ही रत्न खरीदे जाते थे । पहले प्रकरण में मोती के उत्पत्ति स्थल, गुण, दोष तथा आकार इत्यादि का वर्णन है । इसके बाद मणि, सीगभिक, वैदूर्य, पुष्पण, इन्द्रनील, मंदक, धरगमप्य, तूपकण्ठ, विमलक, सलक, अंब्रनमूल, पिचक, सुनमक, मोहितक, अपृथग्शुक, ज्योतिरसक, मैथेयक, अद्रिष्ठयक, कूर्प, इतिशूर्प, सुगन्धिशूर्प,

धीरपक, घुफिचूर्णक, सिद्धाप्रवालक, चूल्क, छुक्रपुष्क तथा हीर और मृगा के नाम आए हैं। इनमें से बहुत से रत्नों की ठीक ठीक पहचान भी नहीं हो सकती क्यों कि बाद के राजशाह उनका उल्लेख तक नहीं करते।

२ रत्नपरीक्षा—बुद्धमह की रत्नपरीक्षा का समय निश्चित करने के पहले ब्राह्म-मिथिल की बृहत् संहिता के ८० से ८३ अध्यायों की जानकारी जरूरी है। इन अध्यायों में हीरा, मोती और मानिक के वर्णन हैं। पद्मे का वर्णन तो केवल एक श्लोक में है। बुद्धमह की रत्नपरीक्षा और बृहत्संहिता के रत्नप्रकरण की छानबीन करके श्री किनो (वही पृ० ७ से) इस मतीने पर पहुंचते हैं कि दोनों की रत्नों की शक्तियों तथा हीरे और मोती का माव उगाने की विधि इत्यादि में बड़ी समानता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों ग्रंथों ने समान रूप से पृथ्वी प्राचीन राजशाह से अपना मसाला लिया। गरुड पुराण ने भी बुद्धमह का नाम बताकर ६८ से ७० अध्यायों में रत्नपरीक्षा प्रहण कर लिया। बहुत संभव है कि शायद बुद्धमह का समय ७-८ वीं सदी या इसके पहले भी हो सकता है।

३ अगस्तिमत—अगस्तिमत और रत्नपरीक्षा का विषय एक होते हुए भी दोनों में इतना भेद है कि दोनों एक ही अनुसृष्टि की बहुत दिनोंसे अलग हुई शाखा मान सकते हैं। श्री किनो (पृ० ११) के अनुसार अगस्तिमत का समय बुद्धमह के बाद यानी छठी सदी के बाद माना जाना चाहिए। शायद उसका ज्येष्ठक इण्डिया का रहनेवाला जान सकता है। संभव है कि अगस्तिमत का आचार कोई ऐसा राजशाह रहा हो जिसकी क्यासि दक्षिण में बहुत दिनों तक थी। ग्रंथ के अनेक उल्लेखों से ऐसा पता चलता है, कि राजशाह के प्राचीन सिंहासनों को निवाहते हुए भी ग्रंथकार ने अपने अनुभवों का उल्लेख किया है। अमान्यवश ग्रंथकार के व्याकरण और ऐतरी में निष्णात न होने से उसके भाष समझने में बड़ी कठिनाई पड़ती है।

४ नवरत्नपरीक्षा—नवरत्नपरीक्षा के दो संस्करण मिलते हैं। छोटे संस्करण में सोम मूजू का नाम तीन जगह मिलता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि इसके रचयिता कन्याणी का पश्चिमी चाण्डन्य राजा सोमेश्वर (११२८-११३८, ई.) था। इस कथन की सच्चाई इस बात से भी सिद्ध होती है कि मानसोहास के कोश-प्यापने (मानसोहास, भा० १, पृ० ६४ से) जो रत्नों का वर्णन है, वह सिवाय कुछ छोटे मोटे पाठमैत्रों क नवरत्नपरीक्षा जैसा ही है। नवरत्नपरीक्षा का रूप संस्कृत-बीकानेर और तंजौरकी हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है। इसमें भद्रगद, मुद्रा और इण्डियन रत्नप्रकार प्रकरण अधिक हैं। संभव है कि स्पृष्टिसारोद्धर के ३ नारायण पंडित ने इन प्रकरणों को अपनी ओर से जोड़ दिया हो।

५ अगस्त्यीय रत्नपरीक्षा—अगस्त्यीय रत्नपरीक्षा वास्तव में अगस्त्यि मत्त का सार है। पर लिखार में कहीं कहीं नई बातें आ गई हैं। अभाष्यपत्र इसका पाठ बहुत भ्रष्ट और अशुद्ध है।

उपर्युक्त प्रयोगों के सिवाय रत्नसंग्रह, अथवा रत्नसमुच्चय, अथवा सम्स्तरत्नपरीक्षा २२ श्लोकों का एक छोटा सा ग्रन्थ है। छन्दुरत्नपरीक्षा में भी २० श्लोक हैं, जिनमें रत्नों के गुण दोषों का विवरण है। मणिमाहात्म्य में शिव पार्वती संवाद के रूप में कुछ उपरतों की महिमा गाई गई है।

६ फेरू रचित रत्नपरीक्षा—ठङ्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षा का कई कारणों से विरोध महत्त्व है। पहली बात तो यह है कि यह रत्नपरीक्षा प्राकृत में है। ठङ्कुर फेरू के पहले भी शायद प्राकृत में रत्नपरीक्षा पर कोई ग्रंथ रहा हो, पर उसका अभी तक पता नहीं। दूसरी बात यह है कि ग्रंथकार श्रीमच्छ ज्ञप्ति में उत्पन्न ठङ्कुर चंद के पुत्र ठङ्कुर फेरू का मुन्तान अछाठदीन खिन्जी (१२९६-१३१६) के खजाने और टन्साळ से निकटतर सम्बन्ध था। उसका सत्य कहना है कि उसने बृहस्पति, अगस्त्य और बुद्धमह की रत्नपरीक्षाओं का अध्ययन करके और एक चौदरी की निगाह से अछाठदीन के खजाने में रत्नों को देख कर, अपने ग्रंथ की रचना की (१-५)। उसके इस कथन से यह बात साफ माहम पक्क जाती है कि कम से कम ईसा की ११ वीं सदी के अंत में बुद्धमह की रत्नपरीक्षा, बराहमिहिर के रत्नों पर के अध्याय और अगस्त्यिमत, राजशाह पर अविष्करी ग्रंथ माने जाते थे और उनका उपयोग उस युग के चौदरी बराबर करते रहते थे। जैसा हम आगे चर्च कर देखेंगे, ठङ्कुर फेरू ने रत्नपरीक्षा की प्राचीन परम्परा की रक्षा करते हुए भी तत्कालीन मूल्य, नाप, तोल तथा रत्नों के अनेक नए खोजों का उल्लेख किया है जिनका पता हमें फारसी इतिहासकारों से भी नहीं चम्कता।

— : ३ : —

प्राचीन रत्नशास्त्रों में खानों से निकले रत्नों के सिवाय मोती और मृगा भी शामिल है जो वास्तव में पत्थर नहीं कहे जा सकते। साधारणतः जवाहरात के लिए रत्न और मणि और कमी कमी उपज शब्द का व्यवहार किया गया है। संस्कृत साहित्य में रत्न शब्द का व्यवहार किमती वस्तु और किमती जवाहरात के लिए हुआ है। बराहमिहिर (सू० सं० ८०।२) के अनुसार रत्न शब्द का व्यवहार हाथी, घोड़ा, घी इत्यादि के लिए गुणपरक है, रत्नपरीक्षा में इसका व्यवहार केवल कंचनादि रत्नों के लिए हुआ है। मणि शब्द का व्यवहार किमती रत्नों के लिए हुआ है, पर बहुधा यह शब्द मनिषा, गुरिया अथवा मनके लिए भी आया है।

बेटों में रत्न शब्द का प्रयोग कीमती वस्तु और खजानों के अर्थ में हुआ है। ऋग्वेद में तीन जगह (किनो, पृ० १५) सप्त रत्नों का उल्लेख है। मणि का अर्थ ऋग्वेद में ताबीज की तरह पहननेवाले रत्नों से है (ऋग्वेद, १।३।८, अ० वे० १।२९२, २।७।१ इत्यादि) मणि तागे में पिरोकर गले में पहनी जाती थी (बाब्रसनेयी सं० ३०।७, तैत्तिरीयसं ३।७।३।१) इसमें भी सिद्ध नहीं कि वैदिक आर्यों को मोती का भी ज्ञान था। मोती (कृशन) का उपयोग शृंगार के लिए होता था (ऋग्वेद, २।३।५४, १०।६।८।१, अथर्ववेद ४।१०।१-३)

सुम्पवसित रत्नशास्त्रों के अनुसार नव रत्नों में पांच महारत्न और चार उपरत्न हैं। बरत, मुक्ता, माणिक्य, नील और मरकत महारत्न हैं। गोमेद, पुष्परत्न, वैदूर्य (छद्मसनिया) और प्रवाल उपरत्न हैं। मानिक और नीलम के कई भेद गिनाए गए हैं। वराहमिहिर (८२।१) तथा बुद्धमह (११४) के अनुसार मानिक के चार भेद यथा—श्याम, सौम्य, कुरुविंद और स्फटिक हैं। अगस्तिस (१७३) के अनुसार मानिक के तीन भेद हैं, यथा—पथराग, सौम्य, कुरुविंद। नवरत्नपरीक्षा (१०९-११०) में इनके सिवाय नीलमणि भी आ गया है। अगस्तिय रत्नपरीक्षा में (४६ से) मानिक का एक नाम मंसर्पिक भी है। ट्यूर फेरू के अनुसार (५६) मानिक के साधारण नाम माणिक्य और चुनी है, अब भी मानिक के ये ही दो नाम सर्वसाधारण में प्रचलित हैं। मानिक के निम्नलिखित भेद गिनाए गए हैं—पथराग (पथराग), सौम्य (सौम्य), नीलमणि, कुरुविंद और आमुणिय।

रत्नपरीक्षाओं में नीलम के तीन भेद गिनाए गए हैं—नील साधारण नीलम के लिए व्यवहृत हुआ है तथा इन्द्रनील और महानील उत्तम कीमती किस्में थीं। ट्यूर फेरू ने (८१) नीलम की केवल एक किस्म महीदनील (महेन्द्रनील) बखशा है।

प्राचीन रत्नपरीक्षाओं में पके के मरकत और तार्क्य नाम आए हैं। पर ट्यूर फेरू (७२) ने पके के निम्नलिखित भेद दिए हैं—गड़बोदार, कीड़ठठी, घासउठी, मगठमी, और घूमिमारई।

उपर्युक्त नव रत्नों की सात्त्विक प्रायः सब रत्नशास्त्रों में आती है पर अगस्तिस (३२५-२९) में स्फटिक और प्रम जोड़कर उनकी संख्या ग्यारह कर दी गई है। बुद्धमह न उस सात्त्विक में पांच निम्नलिखित रत्न जोड़ दिए हैं—यथा शोप (onyx) कॉर्नेल (thryobonyl) मीष्म, पुषक (garnet) रुविराह (cornelial) शोप का ही आरबी जब रूपान्तर है। यह पत्थर भारत और यमन से आता था। इसके बहुत से रंग होते हैं जिनमें सफेद और काळा प्रधान है। भारत में इस पत्थर का पहनना बहुत

माना जाता था। मीष कोई स्फेद रंग का पत्थर होता था। पुराण (२१२-७९) के अनुसार कवायक किण्वट किए हुए आखरंग का पत्थर होता था जो पुच्छिकल्पतरु के अनुसार स्फटिक का एक मेद मात्र था। सोम्यक नीळमायक स्फेद पत्थर था और कुळ कर्कतन के क्लम का नीला पत्थर था।

ब्राह्मिखिर की रत्नों की तालिका में बार्स नाम गिनाए गए हैं पर एक ही रत्न की अनेक किस्में देखते हुए उनकी संख्या कम कर दी जा सकती है। जैसे शशिकान्त स्फटिक का ही एक मेद है, महानीळ और इन्द्रनीळ मीळम हैं, तथा सौगंधिक और पद्मराग मालिक के ही मेद हैं। इस तरह रत्नों की संख्या घट कर उभीस हो जाती है यथा स्फटिक के सहित दस रत्न, कर्कतन, पुष्क, रुधिराक्ष तथा विमलक, राजमणि, शाल, म्नामणि, म्योस्त्रिस और सत्यक। म्योस्त्रिस और सत्यक का उल्लेख अर्धशाब्द (२।१।२९) में भी हुआ है। शास्त्र से शापद यहाँ दक्षिणाकर्त्त शंख का अनुमान किया जा सकता है। म्योस्त्रिस शापद जेस्पर या हेक्जियोट्रोप था।

उपर्युक्त रत्नों के सिवाय, फिरोजा (पेरोज, पीरोज) छाबबर्द और लसुन यानी लहसुनिया या वैदूर्य के नाम भी आए हैं। रत्नसंग्रह (१९) में मसारगर्म (रूप-मुसारगर्म, मुसलगर्म, मुसारगत्व; पालि-मसारगळ, मुसारगळ) को दूध पानी अक्षय करने वाला, श्यामरंग का, चमकिला तथा कुछ दोरों का अपहर्त्ता कहा गया है। शम्भु कल्पद्रुम ने इसे इन्द्रनीळमणि कहा है जो ठीक नहीं। महामारत (२।४।१४) में म्नादत्त द्वारा मुषिष्ठिर को अस्मसार का बना पात्र देने का उल्लेख है जिसकी पहचान शापद मसारगर्म से की जा सकती है। मसारगर्म की पहचान चीनी रुन-जे-यू यानी जमुनिया से की जाती है, पर अस्मसार यद्यपि भी हो सकता है। क्यों कि वासाम का पकोसी बर्मा पहाड़ के लिए प्रसिद्ध है।

ठकुर फेरुखत रत्नपरीक्षा (१४-१५) में मवरत्न यथा पद्मराग, मुका, विद्रुम, मरकत, पुष्कराज, शिवा, इन्द्रनीळ, गोमेद और वैदूर्य गिनाए हैं। इनके सिवाय हसुणिया (९२-९३) फरुख (स्फटिक, ९५-९६) कर्कतन (९८) मीसम (मीष, ९९) नाम आए हैं। ठकुर फेरु ने काळ, अक्षिक और फिरोजा को पारसी रत्न बतलाया है (१७९), इस तरह ठकुर फेरु के अनुसार रत्नों की संख्या सोम्बह बैठती है।

पर कर्नेरबाकर के रचयिता म्योस्त्रियर ठकुर (आरंभिक १४ वीं सदी) के समय में खगता है कि १८ रत्न और ३२ उपरत्न मने जाते थे (कर्णरत्नाकर, पृ० २१, ४१ श्री सुनीलकुमार घेटर्जी द्वारा संपादित, कलकत्ता १९४०)। रत्नों की तालिका में गोमेद, गरुडोद्धार, मरकत, मुकुटा, मंसलंड, पद्मराग, शिवा, रेणुज, मारासेस, सौग-

विक्र चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त, प्रवाल, रात्रिकर्त, कपाय और इन्द्रनील के नाम आए हैं। इस तालिका में रत्नपरीक्षा के महारत्नों में गोमेद, मरकत, मुक्ता, हीरा, पद्मराग, इन्द्र नील, प्रवाल और सूर्यकान्त हैं। मंसखड, सौगंधिक, (शामद पुनी), तो पद्मराग या मानिक के ही मेद हैं। इसी तरह चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त और कपाय स्फटिक के मेद हैं। मारासेस बिसका सम्प्रभ शेष (onyx) से हो सकता है, तथा जानबर्द की गणना रत्नों में किस प्रकार की गई यह कहना सम्भव नहीं।

उपमणियों की तालिका वर्णरत्नाकर में दो जगह आई है [पृ० २१, ४१] इनमें [१] कूर्म, [२] म्हाकूर्म, [३] अहिच्छ, [४] श्यावग (स) ष, [५] श्योमराग, [६] ब्रिटपक्ष, [७] कुक [कूर्म] विद, [८] स्यमा (ना) छ, [९] हरि (री) तसार, [१०] जीविठ (जीवित), [११] यवयाति (यवजाति), [१२] शिशि (शी) निळ, [१३] बंशपत्र, [१४] पू (पू) छिमरकत, [१५] मस्यंग, [१६] जंबुकान्त, [१७] स्फटिक, [१८] कर्कंतर, [१९] परिपात्र, [२०] नन्दक, [२१] लच (तु) नक, [२२] ओहितक, [२३] शैत्यक, [२४] छुकिचूर्ण, [२५] पुळक, [२६] तुल्य (तु) क, [२७] छुकमीम [२८] गुह्य (व) पक्ष, [२९] पीतराग, [३०] बर्गेस (सर), [३१] कर्पूरक, [३२] काच।

उपमणियों की उपर्युक्त तालिका में कुछ मणियों पर ध्यान दिखाना आवश्यक है। इसमें कूर्म और म्हाकूर्म तो मणियों की श्रेणी में नहीं आते। कस्तुर की खपणियों का व्यापार बहुत पुराना है और इसका उल्लेख पेरिप्लस में बनेक बार हुआ है (शाफ, पेरिप्लस आफ दि एरीथियन सी, पृ० १३ इत्यादि) अहिच्छप्रक वर उल्लेख हमारा ध्यान कौटिल्य (२।१।२९) के अहिच्छप्रक रत्न की ओर ले जाता है। धूम्रकत से यहां शायद पद्मे के खड से मतलब है और इस तरह वह ठकुर फेरु की धूम्रमर्त भी शायद खड हो। मस्यंग से यहां शायद भीम से मतलब है। जंबुकान्त से शायद जंबुनियों का मतलब है। लंबन, पुत्रक, नंदक और छुकिचूर्णक के नाम भी अर्षशास्त्र में आए हैं। कर्कंतर से यहां कर्कतन वर तथा ओहितक से ओहिताक का मतलब है। तुल्यक से हमारा ध्यान कौटिल्य के तुल्योद्गत खड़ी की ओर खींच जाता है (१२।१४।३२)। काच से काच मणि की ओर इशारा है।

सन् १४२१ में लिखित पूषीचन्द्र चरित्र (प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह पृ० ९५, बडोदा, १९२०) में रत्नों और उपरत्नों की निम्न लिखित तालिका दी गई है—
पद्मराग, पुष्पराग (पुष्पराज) माणिक, सीवधिया, गङ्गोद्गत, मणि, मरकत, कर्कतल वर, वैदूर्य, चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त जलकान्त, शिवकान्त चन्द्रप्रभ साकर प्रभ, प्रमनाप, अशोक, पीताशोक, अपराजित, गंगोदक, मसारगड्ड, हंसार्म, पुच्छिक, सौगंधिक, सुमग,

सौमत्यकर, विषहर, भृत्तिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, भ्योतिरस, ध्रुमरुचि, शूल्मणि, अंशुककलि, देवानन्द, रिष्टरत्न, क्तिटपंच, कस्ताउला, भूमराह, गोमूत्र, गोमेद, कसणीया, नीला, तृणघर, सगरत्न, वज्रघार, पट्टोण, कर्मी, चापबी, भिरोबा, प्रबाला, मौक्तिक ।

उपर्युक्त तात्त्विक के सम्बन्ध से इस बात का पता चलता है कि प्रकृत ने उसमें रत्नों और उपरत्नों के सिवाय उनके भेद, गुण, दोष इत्यादि की भी गिनती कर ली है । जैसे पषाराग, माणिक, सीधल्लिया और सौम्यक मानिक के भेद हैं । मरकत के भेद में ही गरुडोद्धार, मणि, मरकत, भूमराह और क्तिटपंच आ जाते हैं । स्फटिक के भेदों में चन्द्रकान्त, अश्वकान्त, शिवकान्त, चन्द्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रमानाय, गंगोदक, हंसगर्म, कस्ताउला (कषाय) आ जाते हैं । पुषाराग, कर्कणन, वज्र, वैदूर्य, अशोक, वीतशोक, पुलक, अंजन, भ्योतिरस, अंशुककलि, मस्तारगल्ल, रिष्टरत्न, गोमूत्र, गोमेद, अहस्तनिया, मीला, भिरोबा, मोती, गंगा अलग अलग रत्न या उपरत्न हैं । अपराचित, सुभग, सौम्यकर, विषहर, भृत्तिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, देवानन्द, तृणघर, रत्नों के गुण से सम्बन्ध रखते हैं । वज्रघार, पट्टोण, कर्मी और चापबी रत्नों की बनावट से सम्बन्धित हैं ।

यहाँ बौद्ध और जैन शास्त्रों में आई रत्नों की तात्त्विकताओं की ओर भी ध्यान दिना देना आवश्यक मालूम होता है । पुष्यग (१।१।३) में मुष्ठा, मणि, वेखरिय, शख, शिला, पषाळ, रजत, जातरूप, ज्योतिर्क और मस्तारगल्ल के नाम आए हैं । मिथिन्द्र प्रभ (पृ० ११८) में इंदनील, म्हानील, जोतिरस, वेखरिय, उम्मापुष्क, सिमिन्द्र पुष्क, मनोहर, सूरियकंत, चंद्रकान्त, वज्र, कम्पोपम्क, कुस्तरग, ज्योतिर्क और मस्तारगल्ल के नाम आए हैं । सुसावती म्यूह (५६) में वैदूर्य, स्फटिक, सुवर्ण, रूप, अस्मगर्म, लोहितिका और मुस्तारगल्ल नाम आए हैं । विष्णुदान में रत्नों की दो तात्त्विकताएँ हैं । एक में (पृ० ५१) मुष्ठा, वैदूर्य, शंख, शिला, प्रबालक, रजत, जातरूप, अस्मगर्म, मुस्तारगल्ल, लोहितिका और दक्षिणावर्त के नाम हैं, और दूसरीमें (पृ० ६७) पुष्पराग, पषाराग, वज्र, वैदूर्य, मुस्तारगल्ल, लोहितिका, दक्षिणावर्त शंख, शिला और प्रबाल के नाम हैं । जैन प्रज्ञापना सूत्र (भगवान दास हर्यचन्द्र द्वारा अनूदित १, पृ० ७७, ७८) में बहूर, जग (अंजन), पषाळ गोमेद, रुचक, अंक, फलिह, ज्योतिरक मरकत, मस्तारगल्ल, सुभयोग, इंदनील, हसगम्भ, पुष्क, सौम्यक, चन्द्रप्रभ, वैदूर्य, अश्वकान्त और सूर्यकान्त के नाम आए हैं । पुष्यग की तात्त्विकता में शिला से शायद स्फटिक से मतलब है । मिथिन्द्र प्रभ की तात्त्विकता में उम्मापुष्क से शायद जमुनिया का; शिरीषपुष्क से (अ० शा० २।१।२९) शायद किसी तरह के वैदूर्य का बोध होता है । कम्पोपम्क से शायद चिन्तामणि रत्न की ओर इशारा है जो सब काम पूरा करता था । वराहमिहिर का (वृ० सं० ८०।५) ब्रह्ममणि भी शायद चिन्तामणि ही हो । सुसावती म्यूह के अस्मगर्म से शायद फने का मतलब हो (अमरकोश २।१।९२) ।

प्रज्ञापनासूत्र में मुयगमोषक से शायद बहर मुहरे का और इंद्रगम से किसी तरह के स्फटिक का बोध होता है।

अर्धशास्त्र (२।१।२९) में जैसा हम पहले देख आए हैं, अनेक रत्नों के उल्लेख हैं। इनमें मोती, हीरा पश्मराग, वैदूर्य, पुष्पराग, गोमदक, मीरम्म, चन्द्रकान्त और सूर्यकान्त इत्यादि रत्नों की श्रेणीमें आ जाते हैं। कौट, मौल्येयक और पारसमुद्रक से मणियों के उत्पत्ति स्थान का बोध होता है। कूट पर्वत का तो पता नहीं पर मौल्येयक रत्न का नाम शायद बङ्गालिस्तान में ब्राह्मवर्ण में बहनेवाली मूखानदी से पड़ा हो (गेह्रीचन्द्र जे० यू० पी० एच० एस० १७ भा० १, पृ० ६३)

छाता है कि प्राचीन साहित्य में रत्नों की तालिका देने की कुछ रीति सी चढ़ गई थी। तमिळ के सुप्रसिद्ध काव्य (शिल्पविकारम् में भी एक घगह रत्नों का उल्लेख आया है (शिल्पविकारम् १४।१८०-२०० की वीक्षितारद्वारा अमित्री अनुवाद, मद्रास १९३९) मयुर में घूमता धामना कोवलून बौद्धरी बाजार में पहुंचा। वहाँ उसने चार बर्ण के निर्दोष हीरे, मरकत, पश्मराग, मणिमय, मीरम्मिदु, स्फटिक, पुष्पराग, गोमदक और मोती देखे।

- १ :-

प्रायः रत्नशास्त्रों में (अगस्तिसम् ४, ६३; बुद्धमह ११ का पाठमेव) रत्नों की परस आठ तरह से, यथा—(१) उत्पत्ति (२) आकर (३) बर्ण अपवा छया (४) जाति (५) गुण—दोष (६) फल (७) मूल्य और (८) विजाति (नकल) के आधार पर, की गई है। इस का विस्तार नीचे दिया जाता है।

(१) उत्पत्ति—यहाँ उत्पत्ति से रत्नों की वास्तविक अपवा पारलौकिक उत्पत्ति से सात्पर्य है। रत्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रायः सब शास्त्रों का मत है कि वे एक ब्रह्मदेव अक्षर से पैदा हुए। बुद्धमह (२ १२) के अनुसार एक पराक्रमी त्रिलोक विजेता दानव राज बलि था। एक समय उसने इन्द्र को जीत लिया। सुधी लड़ाई में उससे पार न पा सकने के कारण देवताओं ने उससे यह में बलि-पशु बनने का वर माँगा। उसके एवमस्तु कहने पर सौभ्रामणि यह में देवताओं ने उसे स्वर्ग से बाँध दिया। उसके शिष्टाद जाति और कर्म से उसके शरीर के सारे अवयव रत्नों में परिणत हो गए। ऐसा होने पर देव और मर्गों में यह सिद्ध रत्नों के लिए छीनामपटी होने लगी। इस छीनामपटी में समुद्र, नदी, पर्वत, वन इत्यादि में रत्न गिर कर आकर रूप में परिवर्तित हो गए। इन रत्नों से राक्षस, विष, सर्प और म्याभियों से तथा पापलग्न में जन्म तथा दुर्मिन्न से रक्षा होती है। अगस्तिसम् (१-९) में भी कहानी का यही रूप है। केवल फल इतना है कि यह में अक्षर के सिर पर इन्द्र ने वज्र मारा और ब्रह्मदेव सिर से ही रत्नों की सृष्टि हुई। उसके सिर से ब्राह्मण, मुजार्गों से क्षत्रिय, नाभि से

वैश्य और पैरों से छद्म रत्नों की उत्पत्ति हुई। भवरत्न परीक्षा (८ से) में वैश्य का माम बन्न दिया गया है। ब्रह्मासुर को हराने के लिए इन्द्र ने उससे उसके शरीरदान का घर मांगा। ब्राह्मण बेधघापी इन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर लेने पर यह जान कर कि उसका शरीर अमोघ है, इन्द्र ने उसके मस्तक पर बन्न से प्रहार किया। उसके शरीर से तरह तरह के रत्न निकले। वेद, नाग, सिद्ध, यक्ष, राक्षस और किन्नरों ने तो यह रत्न जाळ ग्रहण कर लिया, बाकी रत्न पृथ्वी पर फैल गए।

ठक्कुर फेरू (६-१९) की रत्नोत्पत्ति सम्बन्धी अनुश्रुति का रूप भी बुद्धमह वाखी धनश्रुति जैसा ही है। एक दिन असुर बलि इन्द्रजोक को जीतने गया। वहाँ देवातकों ने उससे यज्ञ-यशु बनने की प्रार्थना की जिसे उसने स्वीकार कर लिया। उसकी हथियों से हीरे, दाँतों से मोती, छट्ट से माणिक्य, पिच से पद्मा, आँखों से नीळम, हृद् रत्न से वैदूर्य, मूत्रा से कर्लेतन, नसों से छद्मसुनिया, भेद से एकटिक, मूंस से मृगा, जमड़े से पुच्छराज तथा धीर्य से मीम्म पैदा हुए। असुर बन्न के शरीर से निकले रत्नों में से सूर्य ने पच्छराज, चन्द्र ने मोती, मंगल ने मृगा, बुध ने पद्मा, शुक्रस्पति ने पुच्छराज, शुक ने हीरा, घनि ने नीळम, राहु ने गोमेद और केतुने वैदूर्य ग्रहण कर लिए और इसीलिए इन रत्नों को धारण करने वाले उपर्युक्त ग्रहों से पीना नहीं पाते। चौथे रत्न अविदायक और सदोय रत्न दरिद्रता देने वाले होते हैं।

पर रत्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में उपर्युक्त मत ही प्रचलित नहीं था, इसका निराकरण बराहमिहिर (८०।३) ने कर दिया है। उनके अनुसार एक मत से रत्न देवत्वल से उत्पन्न हुए, दूसरों का कहना है कि दक्षीणि से। कुछ इस मत के हैं कि उनकी उत्पत्ति पत्थरों के समाकषैविभ्य से है। ठक्कुर फेरू (१२) के अनुसार भी कुछ लोग ऐसे थे जिनका मत था कि रत्न पृथ्वी के निकर हैं। जैसे सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातु हैं वैसे ही रत्न भी।

एक दूसरे विश्वास के अनुसार मनुष्य, सर्प तथा मेंक के सर में मणि होती थी (अगस्तिस्मृत, ६३-६७) बराहमिहिर, (८५-५) के अनुसार सर्पमणि गहरे नीले रंग की और बड़ी चमकदार होती थी।

(२) आकर-रत्नों की खान को आकर कहा गया है। बराहमिहिर (८०-१७) के अनुसार मदी, खान और छिटफुट मिछने की जगह आकर है। बुद्धमह (१०) ने आकरों में समुद्र, मदी, पर्वत और जंगल गिनाए हैं।

(३) वर्ष, छाया-प्राचीन कालों में रत्नों के रंग को छाया कहा गया है। पर बाद के शास्त्रों में वर्ष के लिए छाया शब्द का व्यवहार हुआ है। बहुधा शास्त्रकार रत्नों को छाया की उपमा जानी पहचानी वस्तुओं से देते हैं।

(४) खाति—रत्नशास्त्रों में इस शब्द का तीन अर्थों में प्रयोग हुआ है। यथा बसली रत्न, रत्न की किस्म और जाति। अंतिम विश्वास के अनुसार रत्नों में भी जातिभेद होता था। यह विश्वास शायद पहिले पहलू धीरे तक ही संश्लिष्ट था। इसके अनुसार ब्राह्मण को सफेद हीरा, क्षत्रिय को ज़ाब, वैश्य को पीछा और शूद्र को कल्ला हीरा पहनने का विधान था। बाद में यह विश्वास और रत्नों के सम्बन्ध में भी प्रचलित हो गया।

(५) गुण, दोष—रत्नों के सम्बन्ध में इन शब्दों का प्रयोग उनकी दृढ़ता और चमकदार लेकर हुआ है। पहिले अर्थ में वे रत्न के गुण और दोष परक हैं। दूसरे अर्थ में वे रत्न के बुरे और मन्हे प्रभाव के चेतक हैं।

रत्नों के गुण निम्नलिखित हैं—महत्ता (भारीपन) गुरुत्व, गौरव (घनत्व) कठिन्य, शिब्रता, राग-रंग, आब (अचिस, पुष्टि कृति, प्रभाव) और स्रष्टता।

(६) फल—सभी रत्नों के फल की विवेचना की गई है। अच्छे रत्न स्वास्थ्य, दीर्घजीवन, धन और गौरव देने वाले, सर्प, जंगली जानवर, पानी, आग, बिजली, चोट, बिमारी इत्यादि से मुक्ति देनेवाले तथा मैत्री करम रखने वाले माने गए हैं। उसी तरह खराब रत्न दुःख देनेवाले माने गए हैं।

यह ध्यान देने योग्य बात है, कि रत्नों के बीमारी अच्छा करने के गुणों का रत्न शास्त्रों में उल्लेख नहीं है। रत्नों के फलों की जांच पड़ताल से यह भी पता चलता है कि उनके लिखने में विमागी कसरत को अधिक प्रयत्न दिया गया है। पर इसमें संदेह नहीं कि शास्त्रकारों ने रत्न-फल के सम्बन्ध में लोकविश्वासों की भी चर्चा कर ली है। धीरे का गर्मभावक फल और पत्थे का सर्पविष को रहना इसी कोटि के विश्वास हैं।

(७) रत्नों के मूल्य—उनके तौल और प्रमाण पर आश्रित होते थे। प्राचीन ग्रंथों में रत्नों का मूल्य रूपकों और कार्पापणों में निर्धारित किया गया है। यह पता नहीं चलता कि रत्नों का मूल्य सोना अपना चांदी के सिक्कों में निर्धारित होता था पर कार्पापणके उल्लेख से इनका दाम चांदीके सिक्को ही में मापन पड़ता है। अनादिमत के एक छेपक (१२) से पता चलता है कि ग्रेमेद और मूरे का दाग चांदी के सिक्कों में होता था, तथा बैर्य और मासिक का सोने के सिक्कों में। ठकुरपेठ (१३७) ने बड़े धीरे, मोती, मासिक और पत्थे का मूल्य सर्पापणोंमें बतलाया है। आधे मासे से चार मासे तक के लाल, लहसुनिया, इन्द्रनील और फिरोजा के दाम भी सर्पापणों में होते थे (१२१ १२३) एक टंक में १० से १०० तक चमने वाले

↑ यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि किन्हीं शरीर का रत्नों में परिष्कृत हो जाने का विधान वैदिक है (वे भार एष १८१४ इ ५५८-५९) ईरानियों का भी कुछ ऐसा ही विधान था (वे भार एष १८१५ इ २ २-२ ३)

मोतियों का दाम रूप्य टंकों में होता था (१२४ १२६) । उसी तरह एक रत्नी में १ से २ दान चढ़ने वाले हीरे का मूल्य भी चांदी के टंकों में कड़ा गया है (१२७, २८) । गोमेद, स्फटिक, मीष, कर्कसन, पुषराज, वैद्य-इन सबके मूल्य भी इन्हीं में होते थे (१३०) ।

मानसोद्धार (१, ४५७-४६४) में रत्न तोड़ने की तुला का सुंदर वर्णन है । उसके लक्षापात्र कर्से के बने होते थे । उनमें चार छेद होते थे । जिनसे बोरियां पिरोई जाती थीं । कर्से की दांढी १२ अंगुल की होती थी । जिसके दोनों बगल मुद्रिकर्षे होती थीं । दांढी के ठीक बीचोबीच पांच अंगुल का कंटा होता था । जिसका एक अंगुल छेद में फसा दिया जाता था । कंटे के दोनों ओर तोरण की आकृति बनाई जाती थी । जिसके सिर पर कुण्डी होती थी । उसी में बोरी लगती थी । तराजू साधने के लिए एक कर्कस तौल का मात्र एक पल्ले में और पानी दूसरे पल्ले में मरा जाता था । जब कंटा तोरण के ठीक बीच में बैठ जाता था तो तराजू सच गई मानी जाती थी ।

(८) विधाति—इस शब्द से कृत्रिम रत्नों का तथा कृत्रिमी रत्नों की तरह दिखने-वाले उपरत्नों से अभिप्राय है । ऐसे नकली रत्न भारत और सिन्ध में बहुतायत से बनते थे । नवरत्न परीक्षा (१७४-१८६) के अनुसार सम मात्रा वाले शंख और सिंघूर को सप्त प्रस्ता गाय के दूध में सान कर फिर उसे तुल से बांध कर बांस में मर कर, मिट्टी के बरतन में चाख के साथ पका कर फिर उसे निकाल कर घौली बांध पर रख देते थे, फिर उसे तेल में बोरते थे । इससे बांस के मीतर नकली मूंगा बन जाता था । इन्द्रनील बनाने के लिए एक कुप्पे में एक पल मील का चूर्ण और दो पल शंख का चूर्ण मिलाकर स्रुज दिमाते थे । फिर फूँक विधि से नकली इन्द्रनील बना लेते थे । नकली मरकत बनाने के लिए मंजीठ, ईंगुर और नील समभाग में लेकर उसे शीशे की कुप्पी में स्रुज मिलाते थे । फिर उसके रवे जका करके उन्हें आग में पकाया जाता था । मयिक शंख के चूर्ण और ईंगुर के मेल से उपर्युक्त विधि से बनता था ।

- ४ -

इस प्रकरण में रत्न-परीक्षाओं के आचार पर उममें आए रत्नों के उपर्युक्त आठ विशेषताओं की बांध पढ़ताख करके यह बतलाने का प्रयत्न किया गया है कि ठकुर फेड़ ने अपनी रत्नपरीक्षा में कहां तक प्राचीनता का उपयोग किया है और कहां उसने उन सम्बन्धी अपने अनुभवों का ।

हीरा—हीरा रत्नों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । उसकी विशेषता यह है कि वह सप्त रत्नों को कट सकता है उसे कोई रत्न नहीं कट सकता । प्रायः सब शास्त्रों के अनुसार हीरे की उत्पत्ति असुरजल की हथियों से हुई । उसका नाम वज्र इस्मिन् पड़ा कि इन्द्र से बजाइत होने पर ही वह निकला ।

प्रधान रत्नशास्त्र हिरेकी खानें आठ भा वृत्त मानते हैं । पर कौटिल्य (अनुवाद, पृ० ७८) में हिरे की खानों के कुछ दूसरे ही नाम हैं । यथा, समाराष्ट्रक (विदर्भ या वरर में) मध्यम राष्ट्रक (कोसल यानी दक्षिण कोसल में) काश्मक (शायद अश्मक) [हैदराबाद की गोळकुंडा की खान] इन्द्रवानक (कलिंग, ओबिसा) की तो पहचान टीकाकारों ने की है । काश्मक की पहचान टीकाकार ने बनारसी हिरे से की है । जिससे बनारस का हिरे तराशोंका अज्ञा होने की ओर संकेत हो सकता है । श्रीकटनक हीरा वेदोक्त पर्वत में मिलता था । श्रीकटनक का ठीक पता नहीं चलता पर शायद इससे, धनकटक (धरणीकोट) जो प्राचीन अमरावती का नाम था, बोध होता है । अगर यह पहचान ठीक है तो यहां कृष्णानदी की घाटी में मिलनेवाले हिरों की ओर संकेत हो सकता है । मणिमन्तक हीरा मणिमत् अथवा मणिमंत पर्वत के पास पाया जाता था । इस मणिमत् पर्वत की पहचान श्रीपारिटर ने (मार्कण्डेय पुराण, पृ० ३७०) में कन्निर के दक्षिण की पहाड़ियों से की है । यहां अब हीरा मिलनेका पता नहीं चलता । रत्नशास्त्रों में ही गई हिरे की खानों का पता निम्नलिखित तालिका से चख जाएगा—

मुद्रमह वराहमिहिर अगस्तिसप्त मन्मसोच्छास अगस्त्य रत्न-संग्रह उज्जुर केरु

		रत्नपरीक्षा			
सुराष्ट्र			---	--	हेमंत
हिमाख्य			---	--	हिमवतः
मातंग	बंग	मातंग	मगध	मातंग	--
पौडू					पंडुर (पौडू)
कोशल				--	
वैष्णवट	विणवट	वैणु	वैणगर	भारव	वैणु
सूर्यार			सौपार	+	सौपारक

यहां यह निश्चित कर लेना कठिन है कि उपर्युक्त पत्र में लिखने मौगोलिक नाम वास्तविकता लिए हुए हैं और किन्ने कल्पनिक हैं । पर इसमें संदेह नहीं की यंत्र में खानों और बाजारों के नाम मिल गए हैं । यह भी संभव है कि बहुत सी प्राचीन खानें समप्त हो गई हों और उनकी सुगई बहुत प्राचीन काल में बंद कर दी गई हो । सुराष्ट्र यानी आधुनिक सौराष्ट्र में हिरे की किसी खान का पता नहीं चलता पर यह संभव है कि यहां से रत्न बाहर भेजे जाते हों । यहां एक उल्लेखनीय बात यह है कि प्राचीन साहित्य में जैसे महाभारत और बसुदरहिष्ठी में सुराष्ट्र एक बंदर का नाम भी आया है जो शायद सोमनाथ पट्टण हो । यही बात सूर्यारक यानी बम्बई के पास सोपारा बंदरगाह के बारे में भी कही जा सकती है । आर्यरत्न की जातकमाला में तो इस बंदर में रत्नों छाप जाने का उल्लेख भी है । हिमाख्य में हिरे का होना तो उस अनुकृति का चेतक है जिसके अनुसार मेरु, हिमाख्य और समुद्र रत्नों के अंतर माने गए हैं । यह बात

ठीक है कि शिमला के पास कुछ हिरे मिले थे पर हिमालय में हिरे की खान होने का पता नहीं चलता। मार्तग से यहाँ किस प्रदेश से वात्पर्य है इसका भी ठीक पता नहीं चलता। श्री किनो (पृ० २६) चाणक्यराज मंगळीश के एक लेख के आधार पर मार्तगों का निवास खान गोलकुंडा का प्रदेश स्थिर करते हैं। हरियेण (बृहत्कयाकोश ७५।१-३) के अनुसार मार्तग पांश्व देश तथा उसके उत्तर में पर्वत की संधि पर रहते थे। शायद यहाँ सेखम जिले के चौरै पर्वत भेणी से मूलक्य है, पर यहाँ हिरे का पता नहीं चला है। पौण्ड्र देश से माण्डर, कोसी के पूर्व पुर्निया जिले का कुछ भाग तथा दीनाजपुर और राजशही जिले के कुछ भाग का बोध होता है। तथा पौण्ड्रबर्धन से बोगय जिले के महाखान से मूलक्य है। शायद कश्मिर के हिरे से कन्नपा, बेजारी, कर्नूल, कृष्णा, गोदावरी इत्यादि के तथा संमरपुर के पास ब्राह्मणी, संक, तथा दक्षिणी कोयल नदियों से मिलने वाले हिरे से है। जहांगीर युग की खोजका की हिरे की खान भी इस बात की पुष्टि करती है। जहांगीर ने स्वयं अपने राज्य के दसवें वर्ष के विवरण (तुल्फ, अमिजी अनुवाद, भा० १, ३१६) में इस बात का उल्लेख किया है कि बिहार के सूबेदार इब्राहिम खान खोजका की खान के हिरे की खान पर कब्जा कर लिया। हिरे यहाँ की एक नदी से निकलते थे। इसमें सिद्ध नहीं कि कोसल से यहाँ दक्षिण कोसल से मूलक्य है। जिसकी पहचान आधुनिक महाकोसल से है। शायद वैराग और बेजाल या वेणु के हिरे कोसल ही के उत्पन्न जा जाते हैं। बेजा नदी जो आज कल की बेन गंगा है चांदा जिले से होकर बहती है और उसी पर स्थित वैराग में हिरे मिलते हैं। मानसोह्रास के वैराग (सं० बजाकर) की पहचान इसी वैराग से ठीक उतर जाती है। शायद यही खान चीनी यात्रियोंका कोसल और टांली का कोसल रहा हो। अगस्तिय एनपरीक्षा में आए भाग से भी शायद छोटा नागपुर की खानों का बोध होता है।

रत्नशास्त्रों में हिरे के अनेक रंग बताए गए हैं। इनके अनुसार सुराष्ट्र का हीरा लाल, हिमालय का तमैसा, मार्तग का पीला, पुंड्र का भूरा, कश्मिरका सुनहरा, कोसल का सिरीस के फूल के रंगवाला बेजा, का चन्द्र की तरह सफेद, तथा सुराष्ट्र का सफेद होता था। ठकुर फेरू (२२) ने हिरे का रंग तमैसा, सफेद नीला, मर्मैला, हस्ताल की तरह पीला, तथा सिरीस के फूल जैसा बतलाया है। ये रंग खान-मरक थे। हिरे के बगों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है। सफेद हीरा ब्राह्मण, धाम क्षत्रिय, पीला वैश्य और काला शूद्र पहनने का अभिचार था। पर राजा को चारों वर्ण के हिरे पहनने का अधिकार था। पर बाद के लेखकों ने सफेद, लाल, पीले और काले हिरे को ही ब्रह्मणः ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति में बाँट दिया है। ठकुर फेरू (२६) भी इसी मतके हैं। उनकी राय में सफेद जोड़ा हीरा मातृकी अर्थात् मातृके का कद्रवाता था।

जिनके चरों में मिट्टीय धीरे होते हैं उनकी विभ, अकार मय्य और शत्रुमय से रक्षा होती है। माछ और पीछे धीरे पहनने से राजा को विजयभी हाप जगती थी। पुरुष कपलपाले धीरे में मृत, प्रेत, दृष्ट, मंदिर, इन्द्रधनुष इत्यादि देख सकते थे (३०)।

धीरे का आरंभिक रूप अठपहका होता था और धीरे के इसी आकार को रत्नशास्त्रों में सबसे अच्छा माना है। प्राचीन रत्नशास्त्रों के अनुसार अच्छे धीरे में छः या अष्ट कोण, बारह धाराएँ, आठ दल, पार्श्व या अंग कहे गए हैं। धीरे की चोटी को कोटि, तल को विभाजित करने वाली रेखा को अग्र, चोटी की उठान को उत्तुंग, तथा नुकीली विभाजक रेखाओं को तीक्ष्ण कहाते थे। तौल में कम, लम्ब, झुद और निर्मल और मास्कर—ये धीरे के गुण माने गए हैं। टंकुर फेरू (२४) ने धीरे के आठ गुण कहे हैं—सम फलक, उच्च कोणी, तीक्ष्ण धारा, पानी (वायितक), अमल, सज्जव, अदोष और समुतोळ।

रत्नशास्त्रों में धीरे के अनेक दोष भी उल्लिखित हैं। जिनमें टूटी चोटी या पड़लं, एक की जगह दो कोण, दल हीनता, वर्तुलता, दलहीनता, चपटापन, अंबोदरपन, माटीपन, बुझमुकापना, और कश्चिहीनता मुख्य हैं। टंकुर फेरू (२५) ने नौ दोष यथा—काकपद, विंदुर (छिटा) रेखा, मैलापन, विकट, एक शंगता, वर्तुलता, जोका आकार, तथा हीन अथवा अकिक कोण बतलाया है। उसके अनुसार (११ ३२) अल्पत चोखी तीक्ष्ण धारा पुत्रार्थी स्त्रियों के लिए हानिकर थी। पर इसके विपरीत चिपटा, मलिन और निकोना धीरा रत्नियों को इसलिए सुख कर होता था कि पुत्ररत्नों की जननी होनेसे वे अपने को प्रथम रत्न मानती थीं, मखा फिर उनका सदोष रत्न क्या कर सकता था।

धीरे का मूल्य प्राचीन रत्नशास्त्रों में तौल के आधार पर निश्चित किया जाता था। इस सम्बन्ध में दो मत थे एक मुद्रमद और बराहमिहिर का और दूसरा जगसिमत का। पश्चिमी व्यवस्था में तौल तंडुल और सर्पप (१ तंडुल = ८ सर्पप) में थी तथा मूल्य रूपकों में। धीरे की सबसे अधिक तौल बीस तंडुल और दाम दो माछ रूपक निश्चित की गई थी। तौल के इस क्रममें हर घटाव या अवन दो हजारों के बराबर होता था। २० तंडुल के धीरे का दाम दो माछ था और एक तंडुल के धीरे का एक हजार। देखने में तो यह हिसाब सीधा साधा माझम पड़ता है, पर श्री किमोने हिसाब सगा कर बतलाया है कि २० तंडुल यानी चार फेरू के धीरे का दाम इस रीति से बहुत अधिक बैठ जाता है।

जगसिमत के अनुसार तीत्य और सौत्य के आधार पर पिंड से धीरे का दाम निश्चित किया जाता था। पिंड का माप १ पब सौत्य और १ तंडुल तीत्य मान लिया गया है। इस तरह एक पिंड के धीरे का दाम ५०; दो का ५० गुणा ४; चार का

५० गुणा १२; पांच क्व ५० गुणा १६ -- इस तरह बढ़ते बढ़ते २० पिंड का दाम ३८०० पहुंच जाता है। पर इस मूल्यांकन में एक ही घनत्व के धीरे, आते हैं; उनके हल्के होने पर उनका दाम बढ़ जाता था तथा भारी होने पर घट जाता था। इस तरह एक ही एक पिंड के घनत्व का होते हुए भी १।४ हल्के होने पर उसका दाम अठारह गुना होता था, १।२ हल्के होने पर छत्तीस गुना तथा ३।४ हल्के होने पर बत्तर गुना हो जाता था। इसी तरह एक ही एक पिंड का घनत्व होते हुए भी भारी हो तो उसका दाम १।४ भारी होने पर आधा हो जाएगा इत्यादि। श्री फिनो की रण्य में अगतिमत का ही मूल्यांकन वास्तविक मासूम पड़ता है।

ठक्कुर केरूने धीरे का मूल्यांकन अलग म देकर मोती, मालिक और पत्ते के साथ किया है। पर धीरे का मूल्य निर्धारण करते समय उसे अगतिमत का ध्यान अवश्य रखा होगा। उसके अनुसार (३६) समपिंड धीरे का भारी होने पर कम दाम और फार तथा हल्के होने पर ज्यादा दाम होता था।

अजातरीन के समय जौहरियों की तौल का बर्णन ठक्कुर केरू ने इस तरह से किया है—

१ रई — १ सरसों

६ सरसों — १ तंडुळ

२ तंडुळ — १ जी

१६ तंडुळ या ६ गुंजा (रत्ती) — १ मासा

४ मासा — १ टांक

टांक के उपर्युक्त तौल में कई बातें उल्लेखनीय हैं। श्री नेस्सन एट (रि कॉम्पस एंड मैट्रुवमेन्टी आफ रि सुब्स्टान्स् आफ वेइथी, पृ० ६९१ से) ने अपनी खोज से यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सुब्स्टान युगके टांक में ९६ रत्तियां होती थीं। रत्ती का बजन १०८ ग्रेन मान कर उन्होंने टांक की तौल १७२ ग्रेन निर्धारित की है। पर ठक्कुर केरू के हिसाब से तो २४ रत्ती १ टांक यानी १७२८ ग्रेन के बजाय हुई यानी एक रत्ती का बजन करीब ६ १/५ ग्रेन के करीब हुआ। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि गुंजा से यहाँ साधारण गुंजा का ही व्यय है अथवा यह कोई तौल थी जिसका बजन आधुनिक रत्तीसे करीब करीब पांचगुना अधिक था।

ठक्कुर केरू (१११) ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि रत्तों का मूल्य बंधा हुआ न होकर अपनी मजदूरी पर अवलंबित होता है, फिर भी अजातरीन के समय रत्तों के जो दाम थे उनकी तौल के साथ उसने बर्णन किया है और यह भी बतलाया है की चार रत्न यानी धीरा, मोती, मालिक और पत्ते का दाम खेने के टांके में आया

जाता था। इन रत्नों की वही से वही तोड़ एक टांक और छोटी तीळ एक गुंजा मान ली गई है। पर एक टांक में १० से १०० तक चढ़नेवाले मोती तथा एक गुंजा में १ से १२ पान तक चढ़नेवाले हीरे का मुख्य घांटी के टांक में होता था। उपर्युक्त रत्नों के तीळ और मुख्य दो यंत्रों में सम्मिलित गए हैं -

कश्मिरी रत्न सम्बन्धी यंत्र -

गुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१५	१८	२१	२४
हीरा	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५
मोती	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५
मानिक	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५
पद्म	१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१	१०१	१११	१२१	१३१	१४१	१५१

उपर्युक्त यंत्र की जांच से कई बातों का पता लगता है। सबसे पहली बात तो यह है कि अलतरीन के काल में और युगों की तरह हीरे की कश्मिरी सब रत्नों से अधिक थी। हीरा जैसे जैसे तीळ में बढ़ता जाता था उसी अनुपात में उसकी कश्मिरी बढ़ती जाती थी। बाह्य रत्नी तक तो उसका दाम क्रमशः बढ़ता था पर उसके बाद हर तीन रत्नी के वजन पर उसका दाम दुगुना हो जाता था। अगर चाँदी और सोने का अनुपात १० : १ मान लिया जाय तो एक टांक के हीरे का मुख्य १,२०,००० चाँदी के टांक के बराबर होता था। इसके विपरीत एक टांक के मोती का मुख्य २००० और मानिक का २४०० सुवर्ण टंका था। पद्मे का दाम तो बहुत ही कम पानी एक टंका के पद्मे का दाम ६० सुवर्ण टंका था।

छोटे मोती और हीरों के तीळ और दाम का यंत्र -

मोती (टांक १)	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
कश्मिरी	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५	५४५५	८१५५	११५५५	१६५५५
मोती	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५	५४५५	८१५५	११५५५	१६५५५
कश्मिरी	५	१२	२३	३५	५५	८५	११५	१६५	२४५	३६५	५४५	८१५	११५५	१६५५	२४५५	३६५५	५४५५	८१५५	११५५५	१६५५५

उपर्युक्त यंत्र से यह पता चलता है कि मोती और हीरे जितने अधिक एक टांक में चढ़ते थे उतना ही उनका दाम कम होता जाता था और इसीलिए उनका दाम सोने के टांकों में न लगाया जाकर चाँदी के टांकों में लगाया जाता था।

रत्न शास्त्रों के अनुसार नकली हीरा जोड़ पुखराज, गोमेन, स्फटिक, बेहूर्य और हाँसे से बनता था। ठकुर फेरू (१७) ने भी इन्हीं वस्तुओं को नकली हीरा बनाने के काम में जाने का उल्लेख किया है। नकली हीरे की पहचान अम्ल तथा दूसरे पत्थरों के कटने की शक्ति से होती थी। ठकुर फेरू (४८) के अनुसार नकली हीरा बज्र में भाँटी, जस्ट्री बिचनेवाला, पतली धार वाला तथा सरलतापूर्वक मिस जानेवाला होता था।

मोती—म्हारबों में मोती का मन्त्र हुआ है। भाष्यियों को शायद इस रत्न का बहुत प्राचीनकाल से पता था। मोती को जिसे वैदिक साहित्य में कृशन कहा गया है, सबसे पहला उल्लेख ऋग्वेद (१।३५।४, १०।६।८।१) में आता है। अथर्ववेद में वायु, आकाश, विजम्बि, प्रकाश तथा सुवर्ण, शंख और मोती से रक्षा की प्रार्थना की गई है। शंख और मोती राक्षसों, राक्षसियों और बीमारियों से रक्षा करने वाले माने जाते थे। उनकी उत्पत्ति आकाश, समुद्र, सोना तथा वृत्र से मानी गई है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार मोतीके आठ स्रोत—यथा सीप, शंख, चादल, मकर और सर्प का सिर, सूखर की दाढ़, हाथी का कुंभस्थल तथा बांस की पेशे माने गए हैं। यह विश्वास भी था कि खाती की बूँदें सीपियों में पड़कर मोती हो जाती थीं। जसुरदल के दाँतों से भी मोती बनने का उल्लेख आता है।

मोती के उत्पत्ति सम्बन्धी उपर्युक्त विश्वासों की जांच पड़ताल से पता चलता है कि अथर्ववेद बांधी अनुश्रुति से उनका खासा सम्बन्ध है। उसके वृत्रजाल मानने से जसुरदल बांधी अनुश्रुति की ओर ध्यान आता है। इस तरह हम देख सकते हैं कि मोती सम्बन्धी प्राचीन विश्वासों की बड़ वैदिक युग तक पहुँच जाती है।

ठगुर फेरु ने भी मोती के उत्पत्तिस्थान, रत्नशास्त्रों की ही तरह कहे हैं। उसके अनुसार शंखजन्म्य मोती छोटे, सफेद तथा बालू होते हैं और उनमें मंगल का आवास होता है। मच्छ से उत्पन्न मोती काला, गोल तथा हल्का होता है और उसके पहनने से शत्रु और मृत प्रेतों से रक्षा होती है। बांस में पैदा मोती गुने के इतने बड़े तथा राज वेनेवाले होते हैं। सूखर की दाढ़ से पैदा मोती गोल निकला और सानू के फल इतना बड़ा होता है। उसको पहननेवाला अजेय हो जाता है। साँप से निकला मोती मीठा तथा हवायवी इतना बड़ा होता है। उसके पहनने से सर्पोपद्रव, विष, तथा विजम्बि से रक्षा होती है। बादल में पैदा मोती तो देवता पृथ्वी पर आने की नहीं देते, गिरने के पहिले ही उन्हें ठेक भेते हैं। चिन्तामणि मोती बड़ है जो बरसते पाणी की एक बूँद बहा से सूख कर मोती हो जाय। सीप के मोती छोटे और मध्यस्थान होते हैं।

रत्नशास्त्रों में मोती के आकारों की संख्या निम्न निम्न की हुई है। एक अनुश्रुति के अनुसार आठ प्रकार हैं तो दूसरी के अनुसार चार। अर्धशास्त्र (३।११।२९) के अनुसार ताम्रपर्णी से निकलनेवाले मोती ताम्रपर्णिक, पांख्यकवाट से पांख्यकवाटक, पाश से पाशिक्य, कूछ से क्रीम्य, चूर्ण से चूर्ण, माहेन्द्र से माहेन्द्र, कर्दम से कर्दमिक, चोतसि से चोतसीय, हृद से हृदीय और द्विमवत् से द्विमवतीय।

उपर्युक्त साहित्य में ताम्रपर्णिक और पांख्यकवाटक तो निश्चय मन्त्र की खात्री के मोती के चोत्क हैं। ताम्रपर्ण से यहाँ ताम्रपर्णी नदी का तात्पर्य माना गया है। पांख्यवाट मयुर है जहाँ मोती का भ्यापार स्रज चलता था। पाश से शायद फारस का मतलब

है। पूर्ण को टीकाकार ने केरळ में मुच्चिरिके पास एक गांव माना है। यह गांव छायाद तामिळ साहित्य का मुच्चिरि और पेरिप्पस (साफ, वही, पृ० २०५) का मुच्चिरिस वा निसर्फी पहचान केगनोर में मुच्चिरिकोड से की जाती है। मुच्चिरिस ईसा की आरंभिक सदियों में एक बड़ा बंदर था और बहुत संभव है कि यहाँ मोती आने से किसी मदी के नाम के आकार पर मोती का चौरेण्य नाम पड़ गया हो। टीका के अनुसार कौन्स्य मोती का नाम सिंहाल की किसी ब्रह्म नदी के नाम पर पड़ा, पर विचार करने से यह बात ठीक नहीं मान्य पड़ती। ब्रह्म से पेरिप्पस (५९) के अरेविव तथा शिल्पविकरम् (पृ० २०२) के कौरकै से बोध होता है जो मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। पेरिप्पस के समय में यह पांच देश का एक प्रसिद्ध बंदरगाह था। पर ताम्रसिंही नदी द्वारा बंदर के मर जाने पर बदरगाह वहाँ से पांच मील दूर हटकर कायल में पहुँच गया। माहेन्द्रक, कर्दमक, हारीय और स्रीतरीय का ठीक पता नहीं चलता। टीकाकार के अनुसार कर्दम ईरान और स्रोतसी बर्बर देश में नरियाँ और हूद बर्बर देश में दह था। इन संकेतों में जो भी तथ्य हो पर यहाँ टीकाकार का फारस की खाड़ी और बर्बर देश से मोती आने की ओर संकेत अवश्य है।

हिमालय तो सब रत्नों का घर मना ही जाता था। बराह मित्रि ८१२ के अनुसार सिंहाल, परलोक, सुरापू, ताम्रपर्णी, पार्ष्णास, किकेरबाण, पांड्यबाट और हिमालय में मोती होते थे।

सिंहाल—मनार की खाड़ी मोती के लिए प्रसिद्ध है। यह खाड़ी ६५ से १५० मील चौड़ी हिन्द महासागर की एक बाड़ी है। मोती के सौप सिंहाल के उत्तर पश्चिमीतट से सट कर तथा दक्षिणोरेन के आसपास मिलते हैं। मोतियों के इस स्रोत का उल्लेख थिमि (९५४-८), पेरिप्पस (१५, ३६, ५६, ५९), मार्कोपोलो (वि बुक आफ् सेर मार्कोपोलो, मा०२, पृ० २६७, २६८) फ़रर जार्जेस (नीरालिडिया डिस्क्रिप्टा, इन्डियेत सोसायटी, १८६३, पृ० ६३) खिनशोटेन (डि बोयन आफ् खिनशोटेन, इन्डियेत सोसायटी, १८८४, मा०२ पृ० १३३-१३५) इत्यादि करते हैं।

परलोक—इसी को छायाद ट्यूल फेरु ने रामाब्लोक कहा है। इस प्रदेश का ठीक ठीक पता नहीं चलता पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि मध्यकाल में आरब भौगोलिक पेरू को ब्रह्मादेश कहते थे। बरमा के समुद्रतट में कुछ दूर मेर्गई द्वीप समूह के समुद्र में अब भी मोती मिलते हैं। रामा से पेरू की पहचान की जा सकती है। वहाँ सधेय लोग मोती निकालते हैं। सुरापू काल के रनके दखिन में, नवानगर क समुद्र तट के जाने जोधावदर के पास, मगरा से कुछ की खाड़ी में पिबेर तक, आबद, चोक, कर्दुवार और नीरा क द्वीपों के आसपास भी मोती मिलते हैं (सी० एफ० कुन्ज आर सी० एच० स्टिवेन्सन, वि बुक आफ् पन्न, पृ० १३२, छंडन १००८)।

ताम्रपर्णी—जैसा हम ऊपर कह आए हैं यहाँ ताम्रपर्णी से म्नार की खाड़ी से मत्स्य है। ताम्रपर्णी मदी के मुहाने पर पहले कौरके बंदरगाह पर, बाद में उसके भरजाने से उसके दक्खिन पांच मील पर, कायछ बंदरगाह हो गया।

पाण्ड्याट—इससे छायाद मधुरे का मतस्य है जहाँ मोती का खूब व्यापार चल्ता था। शिल्पविकारम् (पृ० २०७) के अनुसार यहाँ के जीहरी बाजार में चन्द्रा गुरु, अंगारक और जणिसुषु कित्तम के मोती निकले थे।

कौबेरवाट—इसका ठीक पता तो नहीं चल्ता पर संभव है कि यहाँ चीनों की सुप्रसिद्ध राजधानी कौबेरिपडीनम अपना पुहार से मत्स्य हो। शिल्पविकारम् (पृ० ११०-१११) के अनुसार यहाँ मोतीसाल रहते थे और वे ऐब मोती निकले थे।

पारश्वबास—इसके फारस की खाड़ी से मत्स्य है। यहाँ मोती बहुत प्राचीन काल से निकले हैं। इसका उल्लेख, मेगास्थनीज, चेरकस के इसिडोर, निर्यरिस्त, तथा टास्ली ने किया है। टास्ली के अनुसार मोती के सीप ट्यूलोस द्वीपमें (वायुनिक बहैन) निकले थे। पेरिप्लस (१५) के अनुसार कौर्डे (मत्स्य के उत्तर पश्चिम दैर्घानिप्त द्वीप समूह में कन्नातो) में मोती के सीप निकले थे। नहीं सही में मासूरी ने उसका वर्णन किया है। पारी रेनो, गिमायर सुर में व' १८५९। इम्बवदना (गिम्स, इम्बवदना) ने इसका उल्लेख किया है। बार्नेम ने (दि ट्यूमेस आफ ओडीविको बार्निमा, पृ० ९५, बंडम, १८६३) इम्बुज की यात्रा में फारस की खाड़ी के मोतियों का वर्णन किया है। स्त्रिबोटन और ताबर्निमे ने भी इम्बुज, बसरा और कहरम के मोती के व्यापार का बार्णो देखा वर्णन किया है।

जगद्विमत (१०९-१११) और मानसोच्छस (१, ४३४) के अनुसार सिन्धु, अरबाटी, बर्बर और पासीक से मोती आते थे। सिन्धु और फारस का तो हम वर्णन कर चुके हैं। अरबाटी से यहाँ अरब के दक्खिन-पूर्वी तट और बर्बर से काळ सागर से मिन्नेबाले मोती के सीपों से तारुपर्य मासूम पड़ता है। अरब में अदन से मत्स्य तक के बंदरों में मोती के गोलाखोर निकले हैं जो अपना व्यापार स्केकेटल के द्वीपों, पूर्वी अफ्रीका और अंजीवार तक चलाते हैं। काळ सागर में अफ्रिका की खाड़ी से बाबेज मंदेब तक मोती के सीप निकले हैं (कुंज, बही, पृ० १४२)।

ठङ्गर पेरू के अनुसार (४९) मोती रामालखेड, मम्बर, सिन्धु कर्तार, पारस, कैसिय और समुद्रतट से आते थे। उपर्युक्त तालिका कुछ अंश में रान शाकों की तालिकाओं से भिन्न है। रामालखेड से जैसा हम पहले कह आए हैं, छायाद मेरगुई के द्वीप समूह से अपना पैगू से मत्स्य हो। मम्बर से काळ सागर के अफ्रीका तट से मत्स्य है। यहाँ बर खेगों से तारुपर्य नील नदी और काळ सागर के बीच खनेवाले दनाकिल तथा सोम्य और गहों से है। कान्तार से यहाँ रेगिस्तान से अमिप्राय है। म्बर्निदेस (का पूसा हार

संपादित, पृ० १५४-५५) में मरु कण्टार किसी प्रदेश का नाम है जो शायद बेरेनिके से सिकंदरिया तक के मार्ग का चोतक था। यह भी संभव है कि ठकुर फेरू का मतलब यहाँ कान्तार से अरब के दक्खिन पूर्वी समुद्र तट से हो जहाँ के मोस्तियों के बारे में हम ऊपर कह आए हैं। अगर हमारा अनुमान ठीक है तो यहाँ कान्तार से अगस्तिमत के आबादी और मानसोख्खस के आवागम से मतलब है। केसिय से यहाँ निश्चय इम्नबद्धता (गिम्स, इम्नबद्धता, पृ० १२१, पृ० ३५१) के बंदर कैस से मतलब है जिसे उसने मूक से सीराफ के साथ में भिन्न दिया है। (वास्तव में यह बंदर सीराफ से ७० मील दक्खिन में है)। सीराफ (आनुषिक तहीरी के पास) पत्तन के बाद, १३ वीं सदी में उनका सारा व्यापार कैस चला आया। करीब १३०० के कैस का व्यापार इरमुज उठ आया। कैस के गोताखोरों द्वारा मोती निकालने का आखिरी देखा वर्णन इम्नबद्धता ने किया है। जैसे, बाद में थक कर और आज तक बसरा के मोती प्रसिद्ध हैं उसी तरह शायद चौदहवीं सदी में कैस के मोती प्रसिद्ध थे।

इम्नबद्धता के शब्दों में— 'हम लुंबुवाठ से कैस छार को गए। जिसे सीराफ भी कहते हैं। सीराफ के लोग भले घर के और ईरानी नस्ल के हैं। उसमें एक अरब कमीजा मोस्तियों के लिए गोताखोरी का काम करता था। मोती के सीप सीराफ और बहरेन के बीच नदी की तरह शांत समुद्र में होते हैं। अग्नेय और मई के महीनों में यहाँ फार्स, बहरेन और कतीफ के व्यापारियों और गोताखोरों से लड़ी मार्गें जाती है।'

बुद्धमह ने केवल सफेद मोस्तियों का वर्णन किया है। अगस्तिमत के अनुसार मोती महुबई (मधुर) पीले और सफेद होते हैं। मानसोख्खस में नीले मोती का भी उल्लेख है, तथा रत्नसंग्रह में काल मोती का। ठकुर फेरू ने भी प्रायः मोती के इन्हीं रंगों का वर्णन किया है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार गोख, सफेद, निर्मल, सफ़ेद, लिम्ब, और माती मोती अच्छे होते हैं। अच्छे मोती के बारे में ठकुर फेरू (५१) का भी यही मत है।

रत्नशास्त्रों के अनुसार मोती के आकार दोष—वर्धरूप, त्रिकोनापन, कृशापार्श्व और त्रिहृत् (तीनगाँठ); बनावट के दोष—दुष्किपार्श्व (सीप से अलग) मस्पाम्ना (मछली के आंस का दाग), निस्कोटपूर्ण (निकट), बसुआइट (पंकमूर्ण सर्कर), कम्पापन; तथा रंग के दोष—पीरापन, गदखापन, कांस्यवर्ण, ताभ्राम और चटर माने गए हैं। मोती के प्रायः यही दोष ठकुर फेरू ने भी गिनाए हैं। इन दोषों से मोती का मूल्य काफी घट जाता था।

हम धीरे के प्रकल्प में देख आए हैं कि ठकुर फेरू ने मोस्तियों के सीप और दाम का क्या ज़िहान रखा था। प्राचीन रत्नशास्त्रों में इस सम्बन्ध में दो मत मिलते हैं—एक तो बुद्धमह और बराहमिदिर का और दूसरा अगस्ति का। पहले सिद्धांत में गुंजा

कि याकृत शब्द का व्यवहार माणिक और नीलम तथा दूसरे रंगिन रत्नों के लिए भी होता था। सौ फनम से ऊंची मस्त्रियत के पत्थर राजा स्वयं रख लेता था। मार्कोपोलो (यून, दि बुक आफ् सर मार्कोपोलो, २, १५४) ने भी सिंहाल के मानिक और दूसरे कीमती पत्थरों का उल्लेख किया है। साबनिये (ड्रावेन्स, भा० २, पृ० १०१-१०२) के अनुसार भी मध्यसिंहल के पहाड़ी इलाकेकी एक नदी से मानिक और दूसरे रत्न मिलते थे। बरसात में यह नदी बहुत बह जाती थी। पानी कम हो जाने पर लोग इसमें मानिक इत्यादि की खोज करते थे।

उपर्युक्त उद्धरणों से रत्नगंगा अथवा रामगंगा की वास्तविकता सिद्ध हो जाती है। सर ए० टेनेट के अनुसार इन्मवत्ता का कुनकर या कनकर गंपोळा या बिसका दूसरा नाम गंगाभीपुर या गंगोली था। पर गिम्स के अनुसार कुनकर की पहचान कोर्नेगळे (कुल्लुगळ) से की जा सकती है जो इन्मवत्ता के समय सिंहल के राजाओं की राजधानी थी। (गिम्स, इन्मवत्ता, पृ० ३६५ नोट ६)

क (का) लपुर—कळशपुर—प्राचीन रत्नशास्त्रों में मानिक का एक, प्रातिस्वान कळपुर दिया है। यह पाठ ठीक है अथवा नहीं यह तो कहना संभव नहीं, पर छोटे मानिक का वर्णन करते हुए बुद्धमह (१२९-१३१) ने कळशपुर का उल्लेख किया है। अगर कळपुर (मानसोच्छ्रास—कळपुर) पाठ ठीक है तो शायद उसका मिलान ताम्बिक कम्प्य पहिमप्यले के काळगम् से किया जा सकता है जिसे श्री मीलकंठशास्त्री कळारम् अथवा व्याजुनिक केन्द्रा मानते हैं (मीलकंठशास्त्री, हिस्ट्री आफ् श्रीविजय, पृ० २६, म्यास १९४६) पर केन्द्रा में मानिक कैसे पहुँचे यह प्रश्न विचाराणीय है। संभव है कि स्याम और बर्मा के मानिक यहां बिकने के लिए पहुँचते हो और वाजार के नाम से ही उत्पत्तिसूत्र का नाम पड़ गया हो। कळशपुर की पहचान सिगोर के इस्वमस पर स्थित कर्नरंग से श्री मेनी ने की है (वही, पृ० ८१)। अगर यह पहचान ठीक है तो कळशपुर में शायद मानिक का व्यापार होता रहा होगा।

अंध—बांग्लादेश में मानिक मिलने का और दूसरा उल्लेख नहीं मिलता।

तुंबर—मार्कडेय पुराण (पार्ष्णिटर का अनुवाद, पृ० ३४३) के तुंबर, जैसा श्री पार्ष्णिटर का अनुमान है, शायद विंध्यपाद पर रहनेवाली एक जंगली जाति के लोग थे पर तुंबर देश की स्थिति का ठीक पता नहीं चलता। विंध्य में मानिक मिलने का भी पता नहीं है।

रत्नशास्त्रों में मानिक के बहुत से रंग कहे गए हैं जिनमें चटकीका (पधरग) पीतरक (कुल्लुबिद) और नीतरक (सौगंधिक) मुख्य हैं। प्राचीन रत्नशास्त्रों के अनुसार सब तरह के मानिक एक ही स्थान में मिलते थे। बुद्धमह के अनुसार सिंहल की नदी

रावणगंगा में चार रंग के मानिक मिलते थे पर मानसोद्यस (४७५-४७६) के अनुसार सिद्ध का पञ्चरंग बाल, कालपुर का कुरुविद पीला, आंघ का सौगंधिक धरोक के पञ्च के रंग का, तथा तुंवर का नीलगंधि मीले रंग का होता था। पर खानों के अनुसार मानिक का रंगों के अनुसार कर्णिकरण कोरी कल्पना जान पड़ती है। अगस्तीय रत्नपरीक्षा (४७, ५२) के अनुसार तो मानिक के वर्ण भी निश्चित कर दिए गए हैं। उस ग्रंथ में पञ्चरंग ब्राह्मण, कुरुविद क्षत्रिय, श्यामगंधि वैश्य और मंसखंड शूद्र माना गया है। ब्राह्मण वर्ण का मानिक सफेद और काळ मिश्रित, क्षत्रिय गहरा काळ, वैश्य पीला मिश्रित काळ और शूद्र पीला मिश्रित काळ रंग का होता था। यहाँ यह बात जानने लायक है कि यह विश्वास केवल शास्त्रीय ही नहीं था इसका प्रसार खेमों में भी था। इन्धनव्यता के अनुसार सिद्ध के मानिक को ब्राह्मण कहते भी थे।

ठ्युर फेरू के अनुसार (५७-६१) पञ्चरंग, सूर्य तपे सोने और अग्निवर्ण का; सौगंधिक पमास के फूल, कोयल, सरस और चकोर की आंस के रंग वैसा तथा अनारदाने के रंग का; नीलगांध कमल, अम्बुजा, मूंगा और ईशुर के रंग का; कुरुविद पञ्चरंग और सौगंधिक के रंग का, और जमुनिया जामुन और कनेर के फूल के रंग का होता था।

मानसोद्यस (४८५) के अनुसार त्निग्व छाया, गुल्ब, निर्मळता और अक्षिरक्षता मानिक के गुण माने गए हैं। अगस्तीय रत्नपरीक्षा के अनुसार (५३, ६०) बक्षिया, मानिक गहरे काळ रंग का, छोड़े से न कटनेवाला, निचला, मंसपिंड की आमा देने वाला, बुद्धिदायक तथा पापनाशक होता था।

मानिक के आठ दोष यथा—द्विष्यय, विपद, मिस, कर्कर, छद्मनपद (दूष से पुठेकी तरह) कोमल, अक्ष (रंगहीन) और धूम (धुँसला) मानिक के दोष हैं (मानसोद्यस, ४७९-४८१)।

ठ्युर फेरू के अनुसार (६२) मानिक के ये आठ गुण हैं यथा—सञ्छाय, सुखिष्य, विरण्याम, कोमल, रंगीलापन, गुल्ता, समता और म्हाता। इसके दोष हैं (६३) गतछाय, अक्ष धूमता, मिस जद्मन कर्कर और कठिन, विपद तथा रुद्ध।

ठ्युर फेरू के अनुसार मानिक की लीख और दाम के बारे में हम ऊपर कह आए हैं। वराहमिहिर के अनुसार एक पठ (४ कर्ष) के मानिक का दाम २६०००, ३ कर्ष का २००००, २ कर्ष का १२०००, १ कर्ष (१६ मापक) का ६०००, ८ मापक का ३०००, ४ मापक का १००० और २ मापक का ५०० है। बुद्धयष्ट (१४४) के अनुसार समान लीख के हीरे और मानिक का एक ही मूल्य होता है; पर हीरे की लीख तंतुओं में और मानिक की लीख मापकों में होती है। अगस्तिमन के अनुसार मानिक का दाम बढ़ना तीन बातों पर अवलंबित था। यथा—मानिक की किस्म, धनत्व (पत्थों में) तथा कृति (सर्पों में) मानिक की साधारण कृति का मापदंड २०

सर्पपों के उतार चढाव में लिखित थी। इसके लिए ऊर्ध्ववर्ति, पार्श्ववर्ति, अधोवर्ति; अपवा, ठकुर फेरु (६७) के ऊर्ध्वयोर्तिस्, पार्श्वयोर्तिस् और अधोयोर्तिस् शब्द व्यवहार में आए हैं। अगर कति २० सर्पपों से अधिक हुई तो उसे कर्तिरंग कहते थे और उसी अनुपात में उसका दाम बढ़ जाता था। घनत्व की इकाई ३ यव मानी गई है, इसमें हर बार इकाई बढ़ने पर मानिक का दाम दुगुना हो जाता था। अधिक से अधिक दाम २६१, ९१४,००० तक पहुँचता है।

ठकुर फेरु ने (६१) मानिक के किस्मों पर दाम का अनुपात निश्चित किया है। उसके अनुसार पद्मराग, सौगंधिक, नीलगंध, कुठबिंद और जमुनिया के दामों में २०, १५, १०, ६ और ३ भिन्ना मूल्य का अंतर पड़ जाता था। ठकुर फेरु ने (६८) केवल उर्ध्ववर्ती, अधोवर्ती और क्षिप्रवर्ती मानिकों को उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणी का माना है बाकी को मिष्टी। सान पर चढाने से बिसनेवाली, तथा छूटे ही दाम पढने वाली तथा छिर में पत्थरवाली चुम्बी को विपटिका कहते थे (७०)।

ठकुर फेरु ने तो नकली मानिक बनाने की किस्ती विधि का उल्लेख नहीं किया है पर एनशाखों में, जैसा हम ऊपर देख आए हैं, नकली मानिक बनाने की विधियाँ दी हुई हैं और यह भी बताया गया है कि नकली मानिक कैसे पहचाने जा सकते थे। बुद्धमह (१२९-१३१) ने पाँच तरह के नकली मानिक बताए हैं जो बनाए तो नहीं जाते थे पर वे साधारण उपलब्ध थे जो मानिक से मिलते जुलते थे और जिनसे मानिक का बोझा छाया जा सकता था। ये परपर कच्छपुर, टुंबर, सिहल, मुक्कामाक्षिय और श्रीरंगक से आते थे। मुक्कामाक्ष का पता नहीं चलता पर श्रीरंगक से शायद यहाँ सिहल के श्रीपुर से मतलब हो।

नीलम—अनुसुप्ति के अनुसार नीलम की उत्पत्ति असुरराज की आँखों से हुई। शाखों के अनुसार नीलम की दो किस्में थी इन्द्रनील और म्हानील, पर इनके रंगों के बारे में साखशरों के विभिन्न मत हैं। बुद्धमह के अनुसार इन्द्रनील का रंग इन्द्रभनुप जैसा होता है और म्हानील का रंग दूध में नीलापन सा देता है। पर दूसरे शाखों के अनुसार यह इन्द्रनील का गुण है। ठकुर फेरु (८१) ने इन्द्रनील और म्हानील को मिठाकर नीलम का नामकरण महेन्द्रनील किया है।

बुद्धमह के अनुसार नीलम केवल सिहल से आता था। म्मनसोक्कास (४९२) का अनुसार नीलम सिहल द्वीप के मध्य में रात्रणगगा नदी के किनारे पद्मराग में मिलता था। अगस्तिमत्त ने कच्छपुर और कर्त्तिय क नाम भी जोड़ दिए हैं। उसके अनुसार कच्छपुर का नीलम गाय की आँख के रंग का और कर्त्तिय का नीलम बाज की आँख के रंग का होता था।

हम ऊपर देख आए हैं कि इन्कवृत्ता रिहल के नीलम और उसके प्रातिस्वान का निरस तरह आँसों देखा हाळ बर्णन करता है। विंशोटेन (मा० २, पृ० १४०) के अनुसार फेरू का नीलम भी अच्छा होता था, जो सायद मोगाके की मानिक की खानों से निकलता था। (तावर्नियर, २, पृ० १०१, १०२)। कलपुर और कर्किंग के नीलम से सायद बर्मा और स्वाम के नीलम से मखल हो जो कर्किंग और केदा के बाजारों में जाकर बिकते थे।

रत्नशास्त्रों में नीलम के दस या ग्याह रंग कहे गए हैं। खेतनीलाम नीलम ब्राह्मण, रत्ननीलम क्षत्रिय, पीतनीलाम वैश्य, तथा धननील शूद्र माना गया है। ठकुर फेरू के अनुसार नीलम के नौ रंग होते थे यथा—नील, मेघबर्ण, मोरकंठी, बबलीका हल, गिरकर्णका हल, अमरपंखी, हृष्ण, श्यामल और कोमिलक्रीलाम।

रत्नशास्त्रों के अनुसार नीलम के पांचगुण हैं, यथा—गुस्ता, रिगभता, रंगभता, पार्थरंजनता और तुजप्रक्षिप। ठकुर फेरू के अनुसार ये गुण हैं—गुस्ता, घुरंगत्ता, घुभ्रंगता, कोमकता और घुरंजनता।

रत्नशास्त्रों के अनुसार नीलम के छ दोष हैं यथा—अभक (धूमिल) कर्कर या सशर्कर (रेतीला), त्रास (टूटा), मिम (बिटका), मृदा या सृत्तिका गर्म (मौतर मिट्टी होना) और पाषण (हीरे में पत्थर होना)। ठकुर फेरू (८१) के अनुसार नीलम के नौ दोष हैं, यथा—अभक, मरिस (मरा), सर्करगर्म, सत्रास, चठर, पषीला, सम्भ, सागार (मिट्टीमरा) और विवर्क।

नीलम का दाम मानिक की तरह लगाया जाता था। ठकुर फेरू के समय में नीलम के दाम के बारे में हम ऊपर कह आए हैं।

पद्मा—(मरकत, ताक्षर) की उत्पत्ति असुर बल के उस पिच से मानी गई है जिसे गरुड ने पृथ्वी पर गिराया। प्राचीन रत्नशास्त्रों में पद्मे की खानों का बर्णन बरस्पष्ट है। बुद्धमह (१५०) के अनुसार जब गरुड ने असुर बल का पिच गिराया तो वह बर्बाद होकर, रेगिस्तान के समीप, समुद्र के किनारे के पास एक पर्वत पर गिरकर मरकत बना गया। यह भी कहा गया है (१४९) की खाँ तुष्क के बूझ होते थे। अगस्तिस (२८७) के अनुसार वह सुप्रसिद्ध पर्वत समुद्र के किनारे के पास तुष्क के देश में स्थित था। अगस्तिय रत्नपरीक्षा (७५) के अनुसार पद्मे की खानें भी एक तुष्क देश में और इस्ती मगध में। ठकुर फेरू ने (७३) मरकत के उत्पत्ति स्वाम अचक्रिद, मख्याचल, बर्बर देश और उदधितीर माने हैं।

मरकत के उपर्युक्त आकर की जांच पड़ताल से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रायः सब धरतलकर पद्मे की खान बर्बर देश के रेगिस्तान में, समुद्र तीर के निकट, मानते हैं। टास्मनी युग से लेकर मध्यकाल तक प्रायः सब विवरण मिल में विशेष कर अल

सागर के पास स्थित 'जर्बर' पर्वत की पत्थर की खान का उल्लेख करते हैं। इस खान का उल्लेख पिन्नी, कासमास इंडिको प्लायस्टस (करीब ५४५ ई०) मासूरी और नवी सरी के दूसरे अरब यात्री करते हैं। अल इंदिसी के अनुसार मध्य नील पर बखान से कुछ दूर एक पर्वत के पाद पर पत्थर की खान है। यह खान शहर से बहुत दूर एक रेगिस्तान में है। इस पत्थर की खान की, दुनिया की और कोई दूसरी खान मुकाम-काम नहीं कर सकती। अपने फायदे और निर्यात के लिए यहाँ काफी आदमी काम करते हैं (पी० ए० जोर्बर्क, अल इंदिसी, १, पृ० ३६), यहाँ यह भी उल्लेखनीय बात है कि अखाम से एक महीने की राह पर मरकत्ता नामक एक शहर था जहाँ हथियार के अल सागरनाम के किनारे पर स्थित जलेग के व्यापारी रहते थे। यह संभव हो सकता है कि संस्कृत मरकत्त का नाम शायद इसी शहर से पड़ा हो पर संस्कृत मरकत्त की व्युत्पत्ति यूनानी स्मरन्दोस से की जाती है। यह यूनानी शब्द असीरी बरकू, हिब्रू बारिकेत या बारकत्त, शांसी बोरको का रूपांतर है। अरबी शुम्मुदद शायद यूनानी से निकला हो (अठफर, साइनो इरानिक, पृ० ५१९) स्प्रिंशोटेन (२, ५, १४०) के अनुसार भी भारत में बहुत कम पत्थर मिलते थे। यहाँ पत्थर की काफी मांग थी और वे मिस्र के काहिरा से आते थे।

अबलिद्—इस देश का नाम और कहीं नहीं मिलता। पर यहाँ हम पेरिप्लस (७) के अबलितेस की ओर ध्यान दिजाना चाहते हैं जिसकी पहचान बालेख मंदिर के एक विभाजक से ७९ मील दूर जैजा से की जाती है। जैजा के उत्तर में अवलित गाँव में प्राचीन अबलितेस का रूप बच गया है। बहुत संभव है कि अबलिद् भी इसी अबलितेस—अवलित का रूप हो। यहाँ पत्थर तो नहीं मिलता पर संभव है कि जैजा के व्यापारी मिस्री पत्थर इस देश में आते रहे हों और उसी के आधार पर अबलिद्—अवलित पत्थर का एक स्रोत मान लिया गया हो।

मलयाचल—यह दक्षिण भारत का मन्थाचल तो हो नहीं सकता। शायद ठंडुर फेरु का उदरय यहाँ गोबळ जर्बर से हो जहाँ बुद्धमह के अनुसार तुरुष्क पानी गुगुङ होता था। जर्बर और उदधि तीर का संकेत भी खाळ सागर की ओर इशारा करता है।

मगध—आखीर रत्नपरीक्षा में मगध में भी पत्थर की खान मानी गई है। मगध (रेकार्ड्स आफ दि बियाजोग्रिकल सर्वे ऑफ इंडिया, भा० ७ पृ० ४१) के अनुसार बिहार के हजारीबाग जिले में पत्थर की एक खान थी।

रत्नखानों में पत्थर की खान से आठ छाया मानी गई है। अगस्तिनस के अनुसार महाभारत में अपने पास की वस्तुओं को रंगीन कर देने की शक्ति होती थी। मरकत्त

सहज और श्यामलिक रंग के होते थे। सहज का रंग सेनार बैसा और दूसरेका शुक्रपंख, सिरीय पुष्प और द्वातीया बैसा होता था।

रत्नशास्त्रों में पत्थे के पांच गुण यथा—सख्ठ, गुरु, सुवर्ण शिगम और बरजस्क (धूम्रहित) हैं। ठक्कुर फेरू के अनुसार (७६) जण्डी छापा, सुसुधगता, अनेक-रूपता, छद्युता और वर्णलभ्यता पत्थे के पांच गुण हैं।

रत्नशास्त्रों के अनुसार श्वच्छता, जठरता (कशिपीमता) मञ्जिता, रज्जुता, सपापाणता, कर्करता और विस्फोट पत्थे के दोष हैं। ये छी दोष ठक्कुर फेरू ने गिनाए हैं। केवल शत्रुता की जगह सरजस्कता आ गई है।

मुद्रमह के अनुसार नक्षत्री पक्षा शीशा, पुत्रिक और मञ्जातक से बनता था। इसके बनाने में मंत्रीठ, नीळ और ईशुर भी उपयोग में आए जाते थे।

उपरस

रत्नशास्त्रों में उपरसों का बड़ी सरसरी तौर पर उल्लेख हुआ है। पांच मञ्जा-रसों के विपरीत ठक्कुर फेरू ने विद्रुम, मृंगा, छहसनिया, वैहूर्य, स्फटिक, पुसराज, कर्कतन और मीष का उल्लेख किया है।

विद्रुम—वर्षशास्त्र (अग्निजी अनुवाद, पृ० ७६) के अनुसार मृंगा आल्कंद और विवर्ण से आता था। यहाँ आल्कंद से मिस्र के सिक्दरिया के बंदरगाह से मत्तक्य है। टीका के अनुसार विवर्ण यवन द्वीप के पास का समुद्र है। अगर यह ठीक है तो यहाँ विवर्णसे मूमध्य सागर से तात्पर्य होना चाहिए। मुद्रमह (२४९—२५२) के अनुसार मृंगा शकंजक, सम्भासक, देवक और रामक से आते थे। यहाँ रामक से शायद रोम का मत्तक्य हो सकता है। अगस्तिनस के एक खेपक (१०) में कहा गया है कि हेमकंद पर्वत की एक खाड़ी बीच में मृंगा पाया जाता था। ठक्कुर फेरू के अनुसार (९०) मृंगा कावेर, मिन्याचक, चीन, मञ्जावीन, समुद्र और मैपाळ में पैदा होता था।

पेरिप्लस (२८, ३९, ४९, ५६) के अनुसार मूमध्य सागर का छाख मृंगा आरवारिकस बेरिगाज़ा (मरुकण्ड) और मुजिरिस के बंदरगाहों में आता था। किन्नी (२२।११) के अनुसार मृगे का भारत में अच्छा दाम था। आज की तरह उस समय भी मृंगा सिसकी, कोर्सिका और सार्डीनिया, नेपल्स के पास लेगार्न और वेनेता, क्राउडोनिया, बल्गेरिक द्वीप तथा ट्यूनिस अल्जीरिया और मोरक्को के समुद्र तट पर मिलता था। छाख सागर और अरब के समुद्रतट के मृगे काले होते थे।

अगस्तिनस के हेमकंद पर्वत के पास एक खाड़ी बीच में मृंगा मिलने के उल्लेख से भी शायद छाख सागर अथवा फारस की खाड़ी के मृगों से मत्तक्य हो सकता है।

श्री माठफर के अनुसार (साइनो ईरानिका, पृ० ५२४—२५) चीनी प्रयोगों में ईरान में मूंगा पैदा होने के उल्लेख हैं। सुजुन के अनुसार मूंगा फारस, सिन्धु और चीन के दक्षिण समुद्र से आता था। तांग इतिहास से पता चलता है कि फारस की प्रवाह जिनार्वर तीन फुट से ऊंची नहीं होती थी। इसमें संदिह नहीं कि फारस के मूंगे एशिया में सब जगह पहुँचते थे। काश्मीर के मूंगे का वर्णन जो एक चीनी इतिहासकार ने किया है, वह फारसी मूंगा ही रहा होगा। मार्कोपोलो (मा० २, पृ० ३२) के अनुसार सिन्धु में मूंगे की बड़ी मांग थी और उसका काफी दाम होता था। मूंगे शिया गले में पहनती थी जपवा मूर्तियों में बड़े आते थे। काश्मीर में मूंगे इटली से पहुँचते थे और वहाँ उनकी काफी खपत थी (मार्कोपोलो; १, पृ० १५९)। ताव नियो (मा० २, पृ० १३६) के अनुसार आसाम और मूटानमें मूंगे की काफी मांग थी।

कावेर—यहाँ दक्षिण के कावेरी पर्वतों के बंदरगाह से मत्स्य हो सकता है। शायद यहाँ मूंगा बाहर से उतरता हो। विष्णुखण्ड में मूंगा सिन्धु कावेरी कल्पना मात्स्य पड़ती है।

चीन, महाचीन—सगता है चीन और महाचीन से यहाँ क्रमशः चीन देश और केंटन से मत्स्य हो। संभव है कि चीनी व्यापारी इस देश में बाहर से मूंगा लाते हों।

समुद्र—इससे भूमध्य सागर, फारस की खाड़ी और अरब सागर के मूंगों से मत्स्य मात्स्य पड़ता है।

नेपाल—जैसा हम ऊपर देख आए हैं सिन्धु और काश्मीर की तरह नेपाल में भी मूंगे की बड़ी मांग थी। हो सकता है कि नेपाली व्यापारियों द्वारा मूंगा लाए जाने पर नेपाल उसका एक उत्पत्ति स्थान मान लिया गया हो।

लहसुनिया—नीले, पीले, लाल और सफेद रंग की लहसुनिया ठाकुर फेर (९२—९३) के अनुसार सिन्धु डीम से आती थी। इसे बिनालास जपवा बिल्ली के आंख जैसी रंगवाली मी कहा गया है। उसमें सूत पड़ने से उसे कोई कोई पुसकित मी कहते थे।

बैदूर्य—सब श्री गाँव, सौंठ मोहन ठाकुर और किनो की राय है कि बैदूर्य का वर्णन लहसुनिया से बहुत कुछ मिलता है। मुदमद (२००) ने भी बैदूर्य को बिल्ली की आंख के शकल का कहा है।

पाणिनि ४।१।८४ के अनुसार बैदूर्य (बैदूर्य) का नाम स्थान बाचक है। परत-जलि के अनुसार सिद्ध में य प्रथम जगत्कर उसे स्थान बाचक मानना ठीक नहीं; क्योंकि

बैर्य विदूर में नहीं होता, यह तो बाल्वाय में होता है और विदूर में कमाया जाता है। पर शायद बाल्वाय शब्द विदूर में परिणत हो गया हो और इसीलिए उसमें य प्रत्यय छग गया हो। इसके माने यह हुए कि विदूर शब्द बाल्वाय का एक दूसरा रूप है। इस पर एक मत है कि विदूर बाल्वाय नहीं हो सकता, दूसरा मत है कि जिस तरह ब्यापाठी बाताणसी को निल्वी कहते थे उसी तरह वैष्वाकरण बाल्वाय को विदूर।

उपर्युक्त कथन से यह बात साफ हो जाती है कि बैर्य बाल्वाय पर्वत में मिलता था और विदूर में कमाया और बेचा जाता था। यह पर्वत दक्षिण भारत में था। बुद्धमह (१९९) के अनुसार विदूर पर्वत दो एम्पों की सीमा पर स्थित था। पहला देश कोंग है जिसकी पहचान आधुनिक सेचम, कोर्यन्टूर, सिन्धेवेळी और दूबन्कोरे के कुछ भाग से की जाती है। दूसरे देश का नाम बाल्कि, चारिक या तोरुक जाता है, जिसे भी फिनो चोल्क मानते हैं जिसकी पहचान चोल्मंडळ से की जा सकती है। इसी आधार पर भी फिनो ने बाल्वाय की पहचान बीरै पर्वत से की है। यह बात उल्लेखनीय है कि सेचम जिसे में स्फटिक और कोरंड बहुतप्रकार से मिलते हैं।

ठक्कुर फेरू (९४) का कुशियंग कोंग का बिगडा रूप है। समुद्र का उल्लेख कोरी कल्पना है। ठक्कुर फेरू ने ब्रह्मसिनिया और बैर्य अलग अलग रत्न माने हैं। संभव है कि देशभेद से एक ही रत्न के दो नाम पड़ गए हों।

स्फटिक

प्राचीन राजशाहों के अनुसार स्फटिक के दो भेद यानी सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त माने गए हैं। ठक्कुर फेरू (९६) ने भी यही माना है पर अगस्तिस के छेपक में स्फटिक के भेदों में जलकान्त और इंद्रगर्भ भी माने गए हैं। पूषवीचन्द्र चरित्र (पृ० ९५) में भी जलकान्त और इंद्रगर्भ का उल्लेख है। सूर्यकान्त से भाग, चन्द्रकान्त से अपृतवर्षा, जलकान्त से पानी निकलना तथा इंद्रगर्भ से शिव का मास माना जाता था।

बुद्धमह के अनुसार स्फटिक कबरेठी नदी, सिंधुपर्यंत, यवन देश, चीन और नेपाल में होता था। मानसोहस के अनुसार ये स्वान छेक, साप्ती नदी, सिंध्याचल और हिमाचल थे। ठक्कुर फेरू के अनुसार नेपाल, कर्नाट, चीन, कबरेठी नदी, जमुना और सिंध्याचल से स्फटिक आता था।

पुष्पराज

पुष्पराज की उत्पत्ति जमुना बाल के चमके से मानी गई है। इसका दाम ब्रह्मसिनिया जैसा होता था। बुद्धमह के अनुसार पुष्पराज हिमाचल में, अगस्तिस के अनुसार सिंधु और कस्यूस (!) में तथा रत्नप्रह के अनुसार सिंधु और कर्क

में होता था। ठक्कुर फेरू ने हिमाक्ष्य को ही पुसराज का उत्पन्न स्थान माना है पर यह बात प्रसिद्ध है कि सिंहाल अपने पीले पुसराज के लिए प्रसिद्ध है।

कर्केंतन—कर्केंतन के उत्पत्ति स्थान का किसी रत्नशास्त्र में उल्लेख नहीं है। पर ठक्कुर फेरू ने पवणुप्पट्टान देश में इसकी उत्पत्ति कही है। यहां शायद दो जगहों से मत्तलव है पवण और उप्पट्टान। पवण से संभव है शायद अफगानिस्तान में गजनी के पास पर्वान से मत्तलव हो और उप्पट्टान से परि-अफगानिस्तान से। अगर हमारी पहचान ठीक है तो यहां पर्वान से शायद वहां कर्केंतन के व्यापार से मत्तलव हो। उप्पट्टान से रूस में उरख पर्वत में एकटेरिन बर्ग और टाकोबाजा की कर्केंतन की खानों से मत्तलव हो (जी० एफ०, हर्बर्ट स्मिथ, जेम स्टोन्स, पृ० २३६, संडन १९२३)। यह भी संभव है कि उप्पट्टान में पहल शायद छिया हो। इम्नबत्ता ने (२६३-६४) पहल को चोळ मंडम का एक बड़ा बंदर माना है पर इस बंदर की ठीक पहचान नहीं हो सकती। संभव है कि इससे कवेरी पहीनम् अथवा नागपहीनम् का बोध होता हो। अगर यह पहचान ठीक है तो शायद सिंहाल का कर्केंतन यहां जाता हो।

ठक्कुर फेरू के अनुसार इसका रंग तांबे अथवा पके हुए महुए की तरह अथवा नीमाम होता था।

मीष्म—ठक्कुर फेरू ने मीष्म का उत्पत्ति स्थान हिमाक्ष्य माना है। यह रंगमें सफेद तथा बिजली और आग से रक्षा करनेवाला माना गया है।

गोमेद—रत्नशास्त्रों में इसका भिन्न-भिन्न नाम आया है। अगस्तिनस के छेपक में (४-५) गोमेद को सख्ख, गुरु, खिम्ब और गोमूत्र के रंग का कहा गया है। अगस्तिय रत्नपरीक्षा (८३-८६) में गोमेद को गाम के मेद अथवा गोमूत्र के रंग का कहा गया है। उसका रंग चबस और पिंजर भी होना था। ठक्कुर फेरू (१००) ने इसका रंग गहरा लाल, सफेद और पीला माना है।

और किसी रत्नशास्त्र में गोमेद के उत्पत्तिस्थान का पता नहीं चलता। पर ठक्कुर फेरू ने इसका स्रोत सिरिनायकुलपरेका देस तथा मर्मदा नदी माना है। सिरिनायकुलपरे में कौन सा नाम छिया हुआ है यह तो ठीक नहीं कहा जा सकता पर गोम्बुडा से म्मुलीफन के राजे में पुंगय के आगे नगुम्पाद पडता था जिसे ताम्-निये ने नगेमपर कहा है (ताबर्निये, १, पृ० १७३) संभव है कि नायकुलपरे यही स्थान हो। बग देस से शायद बंगाल का बोध हो सकता है, बहुत संभव है कि १४ वीं सदी में सिंधु से गोमेद वहां जाता रहा हो।

पारसी रत्न

ठकुर फेरू ने (१०३) लाख, अफ्रीक और फिरोजा को पारसी रत्न मना है । इसका यह अर्थ हुआ कि ये रत्न या तो फारस में होते थे जबवा उनका व्यापार फारस और अरब के व्यापारी करते थे ।

लास-भाग की तरह लाख-यह रत्न बंदखसाण देश यानी बंदखसाण से आता था । मार्कोपोलो (भा० १, पृ० १४९-५०) के अनुसार बंदखसाण के बखस मानिक प्रसिद्ध थे । वे सिमान के एक पहाड़ से खोद कर निकाले जाते थे और उन पर बहो के शासक का पूरा अधिकार होता था । लाख की खानें बंधु मदी के दाहिने किनारे पर इरक़ाशम जिले में शिगनान के सीमा पर स्थित हैं (हुड, ए जर्नी टु बान्धस, भूमिका पृ० ३३)

अफ्रीक-ठकुर फेरू ने इसे पीले रंग का कहा है और इसकी उत्पत्ति यमन देश यानी अरब में यमन देश मना है । यमन देश के अफ्रीक का उल्लेख इब्नबैतर (११९७-१२४८) ने किया है (फेरू, लेक्सट्ट रेखसीफ अ छ एक्सप्रेम ओरिया, १, पृ० २५६) और इसे कई बीमारियों की औषधि मानी है । आज दिन भी यमनी अफ्रीक बंध में प्रसिद्ध है । इसका दाम ठकुर फेरू के अनुसार बहुत कम होता था ।

फिरोजा-ठकुर फेरू के अनुसार नीलम रंग का फिरोजा नीसावर और मुवासीर की खानों से आता था । नीसावर से यहाँ फारस के निशापुर से मत्तब है । ताबर्मिये (२, पृ० १०३-०४) के अनुसार फिरोजा फारस में दो खानों से पाया जाता था । पुरानी खान मशद से तीन दिन के रास्ते पर निशापुर के आसपास थी और नई मशद से पाँच दिन के रास्ते पर थी । मुवासीर से यहाँ ईराक के मोसुल या अम्नोसिठ से बोध होता है । लगता है फारसी फिरोजा यहाँ व्यापार के लिये आता था । आज दिन भी मोसुल में फिरोजे का व्यापार होता है ।

लास, अहसनिया, इन्दीक और फिरोजे का दाम ठकुर फेरू के अनुसार तीस से सोने के टांकों में होता था । निम्नलिखित यंत्र से यह बात साफ हो जाती है—

माथा	४	१	१०	२	१०	३	३४	४
अफ्रीक	१	२४	६	१	१५	२४	३४	५
बंदखसाण	०१	११४	४०	६४	१११	१८	२५०	३४४
		-२०						
इन्दीक	१	४	४१	१	२	५	८	१५
फिरोजा	१	०	०१	१	३	५	८	१५

उपर्युक्त यंत्र के अध्ययन से पता चल जाता है कि लाख इजादि की कीमत दूसरे मन्थरों के मुकाबिले में काफी कम थी ।

उपसंहार

प्राचीन रत्नशास्त्रों के आधार पर हमने ऊपर यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि रत्नशास्त्र प्राचीन भारत में एक विज्ञान माना जाता था। उस विज्ञान में बहुत सी बातें तो अनुभूति पर अवलंबित थीं पर इसमें संदेह नहीं कि समय समय पर रत्नशास्त्रों के लेखक अपने अनुभवों का भी संकलन कर देते थे। ठक्कुर फेरू ने भी अपनी 'रत्नपरीक्षा' में प्राचीन ग्रंथों का सहाय लेते हुए भी चौदहवीं सदी के रत्न व्यवसाय पर काफी प्रकाश डाला है। ठक्कुर फेरू के प्रथम की मूल्या इसलिये और भी बढ़ जाती है कि रत्न सम्बन्धी इतनी बातें मुस्लिम युग के किसी फारसी व्यवसाय मारतीय ग्रंथकार ने नहीं दी है। कुछ रत्नों के उत्पत्ति स्थान भी, ठक्कुर फेरू ने १४ वीं सदी के रत्नों के आयात निर्यात देख कर निश्चित किए हैं। रत्नों की तौल और दाम भी उसने समयानुसार रखे हैं, प्राचीन शास्त्रों के आधार पर नहीं। पारसी रत्नों का मिश्रण तो ठक्कुर फेरू का अपना ही है, पद्मराग के प्राचीन भेद तो उसने गिनाए ही हैं पर शुभी नाम का भी उसने प्रयोग किया है जिसका व्यवहार आज दिन भी जोहरी करते हैं। उसी तरह घटिया काले मानिक के लिए घेष्ठी शब्द चिपकिया का व्यवहार किया गया है। हीरे के लिए फार शब्द भी आजकल प्रचलित है। उगता है, उस समय माछवा हीरे के व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध था, क्योंकि ठक्कुर फेरू ने चोखे हीरे के लिए माछवा शब्द व्यवहार किया है। पत्थे के बारे में तो उसने बहुत सी मई बातें कही हैं। कुछ ऐसा आता है कि ठक्कुर फेरू के समय में मई और पुरानी खाल के पत्थों में भेद हो चुका था और इसीलिये उसने पत्थों के तत्कालीन प्रचलित नाम गरुडोद्गाट, कीडउठी, वासुक्ती, मृगउनी और घूमिमाई दिए हैं। इन सब बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ठक्कुर फेरू रत्नों के सच्चे पारसी थे। उन्होंने देख समाप्त कर ही रत्नों के वर्णन लिखे हैं केवल परंपरागत सिद्धान्तों के आधार पर ही नहीं।



अनुक्रम

*

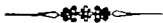
१	रत्नपरीक्षा	पृ.	१-१६
२	द्रव्यपरीक्षा	"	१७-३८
३	धातुत्पत्तिः	"	३९-४४

* * *

श्रीमालवशीय ठक्कुर फेरुविरचिता

प्राकृतभाषापाददा

रत्नपरीक्षा



सयलगुणाण निवास नमिठ सब्बन्न तिहुयणपयास ।
संखेवि परप्पहिय रयणपरिक्खा भणामि अह ॥ १ ॥
सिरिमालकुलुधसो ठक्कुर चवो जिणिंदपयमत्तो ।
तत्संगरुहो फेरु जपइ रयणाण माहप्प ॥ २ ॥
पुत्थि रयणपरिक्खा सुरमिति अगत्य बुद्धमट्टेहिं ।
विहिया त ददुण तह बुद्धी मंडलीय च ॥ ३ ॥
अल्लावदीणकलिकाल च्छवट्टिस्स कोसमज्जत्य ।
रयणायरु व्व रयणुच्चय च नियदिट्टिए ददु ॥ ४ ॥
पच्चक्ख अणुभूय मढलिय परिक्खिय च सत्यार्यं(इ) ।
नाठ रयणसरूव पसेय भणामि सब्बेसिं ॥ ५ ॥
लोए भणति एव आसी बलदाणवो महाबलव ।
सो पत्तो अन्नविणे सग्गे इदस्स जिणणत्य ॥ ६ ॥
तहिं पत्थिओ सुरेहिं जन्ने अम्हाण तु पसू होह ।
तेण पसन्ने भाणिय भविओह कुणसु नियकज्ज ॥ ७ ॥
सो पसु धहिठ सुरेहिं तस्स सरीरस्स अवयवाओ य ।
सजाया वर रयणा सिरिनिलया सुरपिया रम्मा ॥ ८ ॥
अत्थिस्स जाय हीरय मुत्थिय दताठ रुहिर माणिक्क ।
मरगयमणि पित्ताओ नयणाओ इन्दनीलो य ॥ ९ ॥
वइहुज्जो य रसाओ वमाउ कक्केयग समुप्पन्न ।
ल्लहमणीओ य नहामो फलिय मेयाठ सजाय ॥ १० ॥

● श्री आचार्य विवरणम् इन मङ्गल ●

ब य पुर

विदुमु आमिस्साओ चम्माओ पुसराठ निप्पन्नो ।
 सुक्काठ य भीसम्मो रयणाण एस उप्पत्ती ॥ ११ ॥
 एव भणस्ति एगे भू[मि]विकारं इम च सब्ब च्च ।
 जह रूप कणय तच य घाऊ रयणा पुणो तह य ॥ १२ ॥
 तट्ठाणाओ गहिया निय निय वन्नेहिं नवहि सुगहेहिं ।
 तत्तो जत्थ य जत्थ य पढिया ते आगरा जाया ॥ १३ ॥
 सूरेण पउमराय मुत्तिय चंदेण विदुम भूमे ।
 मरगयमणीठ बुद्धे जीवेण य पुसराय च्च ॥ १४ ॥
 सुक्केण गहिय वज्ज सर्णिदनील त्मेण गोमेय ।
 केएण य वेदुज्ज मुक्का तत्थेव सेस तहिं ॥ १५ ॥
 इय रयण नव गहाण अंगे जो घरह सच्चसीलजुओ ।
 तस्स न पीढति गहा सो जायह रिद्धितो य ॥ १६ ॥
 पुणु जह सत्थे भणिया अदोस अइच्चुक्खया गुणत्ता य ।
 ते रयण रिद्धिजणया सदोस षण पुत्त रिद्धिहरा ॥ १७ ॥
 जह उच्चिमरयणतरि इच्छो वि सदोसु कूडु समलु हवे ।
 ता सयलउच्चिमाण कत्तिपहाव हणेइ धुव ॥ १८ ॥
 भणिया मूलुप्पत्ती अओ य बुद्धामि आगराईणि ।
 वन्न गुण धोस जाई मुक्क सव्खाण रयणाण ॥ १९ ॥

वज्र जहा—

हेमत सूरपारय कलिंग मायग कोसल मुरट्ठे ।
 पडुर विसएसु तहा वेणुनई वज्जठाणाई ॥ २० ॥
 तंष सिय नील कुक्कुस हरियाल सिरीसकुसुम षणरत्ता ।
 इय वज्जवन्नजाया कमेण आगरविसेसाओ ॥ २१ ॥

पर विशेषोऽयम्—

कोसल कर्लिग पढमे दुइए हेमत तह य मायगे ।
 पडुर सुरट्ट तईए वेणुज सोपारय कर्लिमि ॥ २२ ॥
 छ कोण अट्ट फलहा वारम घारा य हुति वज्जा य ।
 अट्ट गुणा नव दोसा चउ छाया चउर वन्न कमा ॥ २३ ॥
 समफलह उच्चकोणा सुतिक्खघारा य वारितर अमला ।
 उज्जल अदोस लहु तुल इय वज्जे होंति अट्ट गुणा ॥ २४ ॥
 कागपग विंदु रेहा समला फुट्टा य एगसिंगा य ।
 घट्टा य जवाकारा हीणाहियकोण नव दोसा ॥ २५ ॥
 सिय विप्प अरुण स्वत्तिय पीय वडस्सा य कसिण सुद्धा य ।
 इय चउ वन्न दुजाई चुक्खा तह माल्धी नेया ॥ २६ ॥
 निदोस सगुण उत्तिम चत्तारि वि वन्न हुति जस्त गिहे ।
 तस्त न हवति विग्घ अकालमरण न सत्तुमय ॥ २७ ॥
 चत्तारि वि वन्न तहा पीयारुण नरवराण रिद्धिकरा ।
 सेसा नियनिय वल्ले सुहकरा वज्ज नायव्वा ॥ २८ ॥
 लच्छीए आयट्ठी थमइ अरिणो परि(र)क्खम समरे ।
 तेण अरुण पीय नरेसरो घरह धरवज्ज ॥ २९ ॥
 जह वप्पणेण वयण वीसइ तह उत्तमेण वज्जेण ।
 नर तिरिय रुक्ख मविर तहिंदघणुहाइ वीसंति ॥ ३० ॥
 अइचुक्ख तिक्खघारा पुत्तथीइत्थियाण हाणिकरा ।
 चप्पडि मल्लिण तिकोणा रमणीण वज्ज मुहजणया ॥ ३१ ॥

भणिय थ—

अहमेव पढमरयण सुपुत्तरयणाण स्वाणि मुह कुच्छी ।
 कोण वराओ वज्जो इय दोस दाउ घर इत्थी ॥ ३२ ॥

समर्पिंढ सगुण निम्मल गुरुतुच्छा हीर्णापिंढ लहुमुच्छा ।
 फार लहुतुच्छ वज्जा बहुमुच्छा सम समा मुच्छो ॥ ३३ ॥
 वज्ज लहु फलह सिरं वित्थरचरण तिलोवरिं काठ ।
 जो जइइ अह जइावइ तस्स घुव हवइ बहु दोसं ॥ ३४ ॥
 जस्स फलहाण मज्जे बुद्धो बुद्धो हुति भिन्न वस्साइ ।
 कागपय रत्तविंदू त वज्ज होइ पुत्तहरं ॥ ३५ ॥
 वज्जेण सव्वि रयणा वेह पावति हीरए हीरा ।
 कुरुविंदो पुण वेहइ नीलस्स न अन्नरयणस्स ॥ ३६ ॥
 अयसार कच्च फलिहा गोमेयग पुसराय वेहुज्जा ।
 एयाठ कूढवज्जा कुणति जे होति कल्लकुत्सला ॥ ३७ ॥
 कूढाण इय परिक्खा गुरु विन्नाया य सुहमघारा य ।
 साणाय सुह घसिया दुठ घसिया रयण जाइमवा ॥ ३८ ॥

॥ इति वज्जपरीक्षा ॥

अथ मुत्ताहल —

गयकुम १ संखमज्जे २ मच्छमुहे ३ वस ४ कोलवाडे य ५ ।
 सप्पसिरे ६ तह मेहे ७ सिप्पउडे ८ मुत्थिया हुति ॥ ३९ ॥
 मवव(प)ह पीय रत्ता इय उत्तिम जघुछाय मज्जत्त्या ।
 वट्टामलयपमाणा गयइजा हुति रज्जकरा ॥ ४० ॥
 दाहिणवत्ते संखे महासमुहे य कघुजा हुति ।
 लहु सेया अरुणपहा नरदुलहा मगलावासा ॥ ४१ ॥
 मच्छे य साम वट्ट लहुतुला विमलदिट्ठिसजणया ।
 अरि चोर भूय साइणि भयनामा हुति रिद्धिकरा ॥ ४२ ॥
 गुजसमा मदपहा हघति कच्छ वन सव्व भूमीसु ।
 रज्जकरा दुक्खहग सुपवित्ता वसठद्धरणा ॥ ४३ ॥

सूवरदाढे वट्टा धियवन्ना तह् य सालफलतुल्ला ।
 चिद्वृत्ति जस्त पासे इदेण न जिप्पए सोवि ॥ ४४ ॥
 सप्पस्स नील निम्मल ककोलीफलसमाण लच्छिकरा ।
 छल च्छिद अहि उवदव विसवाही विज्जु नासयरा ॥ ४५ ॥
 मेहे रवितेयसमा सुराण कीलत्त कहव निवडत्ति ।
 गिण्हत्ति अतराले अपत्त घरणीयले देवा ॥ ४६ ॥
 धाय छिज्जइ कोषि हु जलनिंदू जलहरमि वरिसंते ।
 सु वि मुत्ताह[ल]लच्छी भणत्ति चिंतामणी विउसा ॥ ४७ ॥
 एए हुत्ति अवेहा अमुल्लया पूयमाण रिच्छिकरा ।
 लोए बहुमाहप्पा लहु बहुमुल्ला य सिप्पिमवा ॥ ४८ ॥
 रामावलोइ वच्चरि सिंघलि क्तारि पारसीए य ।
 केसिय देसेसु तहा उवहितढे सिप्पिजा हुत्ति ॥ ४९ ॥
 सव्वेसु आगरेसु य सिप्पठढे साइरिक्ख जलजोए ।
 जायत्ति मुत्तियाइ सव्वाल्लकारजणयाइ ॥ ५० ॥
 तारं वट्ट अमल मुसणिइ कोमल गुरु छ गुणा ।
 लहु कट्ठिण रुक्ख करढा विवस सह चिंदु छह दोसा ॥ ५१ ॥
 ससिकिरणसम सगुण दीह इक्कणि कल्लुसिय हवइ ।
 तत्स य सडस हीण मुल्ल निवडलिए अइ ॥ ५२ ॥
 अहरूध पक्कूरिय असार विप्फोढ मच्छन्नयणसम ।
 करयाम गठिजुय गुरु पि वट्ट पि लहुमुल्ल ॥ ५३ ॥
 पीयइ अयट्ट तिहा सन्नुइ छट्टसु खरड जह जुग ।
 सदोसे य वसंसं इयराण दिट्टए मुल्ल ॥ ५४ ॥

॥ इति मुत्ताहलपरीक्षा ॥

अथ पञ्चरागमणिर्यथा—

रामा गंगनई तदि सिंघलि कलसठरि तुवरे देसे ।
 माणिष्ठाणुप्पत्ती विहु विहु पुण दोस गुण वत्ता ॥ ५५ ॥
 पढमित्य पठमराय सोगधिय नीलगघ कुरुविद ।
 जामुणिय पच जाई चुन्निय माणिष्ठा नामेहिं ॥ ५६ ॥
 सूरु व्व किरणपसरा सुसणिद्ध कोमल च अग्निनिहा ।
 ज कणयसम कटिया अक्खीणा पठमराय सा ॥ ५७ ॥
 किंसुय कुसुम कसुमय कोइल सारिस चकोर अक्खिसम ।
 दाडिमधीजनिह ज तमित्य सोगधिया नेया ॥ ५८ ॥
 कमलालत्तय विहुम हिंगुलुयसमो य किंघि नीलामो ।
 खज्जोयकतिसरिसो इय वधे नीलगधो य ॥ ५९ ॥
 पढम तह साव गंधयसमप्पह रंगधहुल कुरविदा ।
 पुण सत्तासं लहुय सजल च इय सहाव गुण ॥ ६० ॥
 जामुणिया विन्नेया जवू कणवीररत्तपुप्फसमा ।
 सुद्धसंतरमेय वीसं पनरस वस उ तिग विमुवा ॥ ६१ ॥
 सुच्छाय सुसणिद्ध किरणाम कोमल च रंगिच्छ ।
 सुख्य सम महत्त माणिष्ठा हवइ अट्टगुणं ॥ ६२ ॥
 गयडाय जह धूम भिन्न र्हसणं सकक्करं कटिण ।
 विपय रुक्ख च तहा अब दोसा भणिय माणिष्ठा ॥ ६३ ॥
 गुणपुवुत्त जहुत्त माणिष्ठा दोसवज्जिय अमल ।
 जो धरइ तस्स रज्ज पुत्त अत्य हवइ नूण ॥ ६४ ॥
 गुणसहिय पठमराय धरिण नरनाह आवया टलइ ।
 सहोसेण उवज्जइ न ससय इत्य जाणेह ॥ ६५ ॥
 अगुण विवन्नच्छाय र्हसण जुय थट्टय च खग्ग च ।
 इय माणिष्ठा भरिय सुदेसमट्ट नरं कुणइ ॥ ६६ ॥

कर चरण वयण नयण सुपठमराय पइस्स जणयती ।
तो वहइ पठमराय पठमिणि सुयपठमजणणत्थ ॥ ६७ ॥
अहवट्टि उह्वट्टी तिरीयवट्टी य जा हवइ चुम्भी ।
सा अहमुत्तिम मज्झिम कूडा पुण सव्ववट्टी य ॥ ६८ ॥
जो मणि व्हिप्पएसे मुचइ किरण जहग्गि गयधूम ।
सा इवकति नेया चदो व्व सुहाबहा सघणा ॥ ६९ ॥
साणाइ पठमराय जो छिज्जइ अगुली छिविय कसिणा ।
त च पहाउ सगम्भा चिप्पिडिया हवइ सा चुम्भी ॥ ७० ॥

॥ इति माणिक्यपरीक्षा समप्ता ॥

अथ मरकतमणिर्यथा -

अर्वालिंद मलयपव्वय वव्वरदेसे य उवहितीरे य ।
गरुहस्स उरे कठे हवति मरगय महामणिणो ॥ ७१ ॥
गरुहोदगार पडमा कीडउठी धुईय तईय वासउती ।
मूगउनी य चउत्थी धूलिमराई य पण जाई ॥ ७२ ॥
गरुहोदगार रम्मा नीलामल कोमला य विसहरणा ।
कीडउठि सुहम णिच्चा कसिणा हेमाभकसिच्चा ॥ ७३ ॥
वासवई य सरुक्खा नील हरिय कीरपुच्छसम णिच्चा ।
मूगउनी पुण कठिणा कसिणा हरियाल सुसणेहा ॥ ७४ ॥
धूलमराई गरुया तह कठिणा नीलकम्ब सारिच्छा ।
मुल्ल धीस विसोवा वसट्ट तह पच दुल्लि कमा ॥ ७५ ॥
रुक्ख विफोडा पाहण मल कक्कर जठर सज्वरस तह य ।
इय सत्त दोस मरगयमणीण ताण फल वोच्छ ॥ ७६ ॥
रुक्खा य वाहिकरणी विफोडा सत्पघायसंजणणी ।
मलिण बहिरंभयारी पाहाणी यधुनासयरी ॥ ७७ ॥

कङ्कर सहिय अठत्ता जठरा जाणेह सव्व दोसगिह ।
 सज्वरसा मामिधू मरगइदोसाइ ताण फल ॥ ७८ ॥
 सुच्छायं सुसणिद्ध अणेकय तह लहु च वझइ ।
 पच गुण विसहरण मरगय मसराल लच्छिकर ॥ ७९ ॥
 सुरामिसुह ठविय कर उयरे मरगयमि चित्तिज्जा ।
 विष्णुरइ जत्स छाया पुन्नपविष्ठा धुरीणा सा ॥ ८० ॥
 ॥ इति मरकतमणिपरीक्षा समता ॥

अथ इन्द्रनीलम्—

सिंघलदीव समुम्भव महिंदनीला य चउ सुवन्ना य ।
 छ दोस पच गुणाहि य तहेव नव छाया जाणेह ॥ ८१ ॥
 सियनीलाम विष्ण नीलारुण खत्तिय वियाणाहि ।
 पीयामनील वइसं घणणील ह्वइ त सुइ ॥ ८२ ॥
 अम्भय मदि सकङ्कर गम्भा सत्तास जठर पाहणिया ।
 समल सगार विवन्ना इय नीले होति नव दोसा ॥ ८३ ॥
 अम्भय दोस घणक्खय सकङ्कर वाहिठ मविए कुट्ट ।
 पाहणिए असिघायं मिन्नविबन्ने य सिंहमयं ॥ ८४ ॥
 सत्तासे धधुवह समल सगारे य जठर मित्तखय ।
 नव दोसाणि फलाणि य महिंदनीलत्स भणियाइ ॥ ८५ ॥
 गुरुय तह य सुरंग सुसणिद्ध कोमल सुरजणय ।
 इय पच गुण नील धरंति मणि कोव पसमति ॥ ८६ ॥
 नील घण मोरकठ य अलसी गिरिकन्नकुसुमसंकासा ।
 अलिपंखकसिण सामल कोइलगीवाम नव छाया ॥ ८७ ॥
 हीरय चुन्निय माणिक मरगय नील च पंच रयणमय ।
 इय धरिए ज पुन्न ह्वइ न त कोडिदाणेण ॥ ८८ ॥

॥ इति इन्द्रनीलमहापचरणुच्चयं ॥

अह विहुम व्हसणियय वइहुज्जो फलिह पुसराओ य ।
फण्येग मीसम्मो भणिय इय सत्त रयणाण ॥ ८९ ॥

विहुम जहा—

कावेर विंशपव्वइ चीण महाचीण उवहि नयपाळे ।
वल्लीरूव जायइ पवालय कदनालमय ॥ ९० ॥

[पाठान्तर—वल्लीरूव फण्येवि पयालय होइ उयहिमज्जम्मि ।
वहुरत्त फट्ठिण कोमल जह नाल सव्वसुसपेइ ॥ ५०]
चहुरंग सुसणिच्च सुपसन्न तह य कोमल विमल ।
घणवन्न वन्नरत्त भूमिय पय विहुम परम ॥ ९१ ॥ छ ॥

व्हसणियओ जहा—

नीलुज्जल पीयारुण छाया कतीइ फिरइ जस्सगे ।
त व्हसणिय पहाण सिंघलदीवाठ समूय ॥ ९२ ॥
इच्छोवि य व्हसणियओ अदोस अइ चुक्खओ विरालक्खो ।
नवगहरयण समगुणो भणति त सपुलिय केवि ॥ ९३ ॥

वइहुज्ज जहा—

कुवियगय देसोवहि वइहरनगेसु हवइ वइहुज्ज ।
वसदलाम नील वीरिय सताण पोसयरं ॥ ९४ ॥

[पाठान्तर—रयणापरस्स मन्ने कुवियंगय नाम वणवओ तत्थ ।
वइहरनगे जापइ वइहुज्ज वंसपत्ताम ॥ ५१]

फलिह जहा—

नयवाल कासमीरे चीणे कावेरि जठणनइतीरे ।
विंशगिरि हुति फलिह अइनिम्मलदप्पणु व्व सिय ॥ ९५ ॥

[पाठान्तर—नयवाले कसमीर पीप्पे व्वरि अठणनइकूले ।
विंशनग उप्पज्जइ फलिह अइनिम्मल सेय ॥ ५४]
रविकताओ अग्गी ससिकताओ श्शरेइ अमिय जल ।
रविकत्त चदक्ते दुन्नि वि फलिहाठ जायति ॥ ९६ ॥

[पाठान्तर-उप्यतीओ अमी ससिकृतिओ मरेइ अमियबल ।
रविकल-चंदकते दुभि वि फलिहाओ जायंति ॥ ५५]

पुसराय जहा-

बहुपीय कणयबलो समणिओ पुसराओ हिमवते ।
जायइ जो घरइ सया तस्त गुरु हवइ सुपसन्नो ॥ ९७ ॥

[पाठान्तर-बहुपीय रुहिरवणो ससिषेहो होइ पुसराओ य ।
मीसमु विण चंदसमो दुभि वि जायति हिमवते ॥ ५६]

कक्केयण जहा-

पषणुप्पट्ठाण देसे जायइ कक्केयण सुखाणीओ ।
तबय सुपक्क महुक्य नीलाम सदिढ सुसणिइ ॥ ९८ ॥ छ ॥

[पाठान्तर-पषणुत्पट्ठाणदेसे जायइ कक्कपगं सुखाणियो ।
तबय सुपक्कमहुय षय नीलाम सुदिढ सुसणेइ ॥ ५२]

भीसम जहा-

भीसमु दिणचदसमो पहुरओ हेमवतसंभूओ ।
जो घरइ तस्त न हवइ पाएण अग्गि विज्जुमयं ॥ ९९ ॥

॥ इति रयणससक ॥

सिरिनायकुल परेवग देसे तह नब्बुया नईमञ्जे ।
गोमेय इंदगोव सुसणेइ पंडुरं पीय ॥ १०० ॥

[पाठान्तर-सिरिनायकुलपरेवमदेसे तह अम्मलनईमञ्जे ।
गोमेय इंदगोव सुसणेइ पंडुरं पीयं ॥ ५३]

गुणसहिया मल्लरहिया मगलज्जणया य लच्छिआवासा ।
विग्घहरा देवपिया रयणा सव्वे वि सफ्हाया ॥ १०१ ॥
मुच्चिय वज्ज पवाल्लय तिभि वि रयणाणि भिक्खजाईणि ।
वक्खवि जाइविसेसो सेसा पुण भिक्खजाईओ ॥ १०२ ॥
इय सत्थुत्तर(सत्तुत्तम) रयणा भणिय मणामित्थ पारसीरयणा ।
धन्नागर संजुत्ता लल अकीया य पेरुज्जा ॥ १०३ ॥

[पाठान्तर—इय सत्युघपरभा भणिय मणामित्य पारसी रयणा ।

षण्णागर सजुचा अणे जे पाठसंत्राया ॥ ५७]

अइतेय अग्निवन्न लाल वदखसाण देसमि ।

जमणवेसे यकीक लहु मुळ पिळ्ळुसमरंग ॥ १०४ ॥

[पाठान्तर—अइतेय अग्नीवण्ण लाल वदखसाण देसम्मि ।

यमणवेसे यकीक लहु मुळ पिळ्ळुसमरंग ॥ ५८]

नीलामल पेरुज्ज देसे नीसावरे मुवासीरे ।

उप्पज्जइ खाणीओ दिट्ठिस्स गुणावह भणिय ॥ १०५ ॥

[पाठान्तर—नीलनिह पेरुज्ज देसे नीसावरे गुवासीरे ।

उप्पज्जइ खाणीओ दिट्ठिस्स गुणावह भणिय ॥ ५९]

॥ इति षड्जादिसर्वरत्नाना स्थानज्ञातिस्वरूपाणि समाप्त (१) ॥

०

अथैतेषामेव मूल्यानि वक्ष्यते जथागाहा । पुनः भावानुसारेण

जथा—

जे सत्य दिट्ठिकुत्तला अणुमूया देस काल भावधू ।

जाणिय रयणसरूवा मडलिया ते भणिज्जति ॥ १०६ ॥

हीणग अतजाई लक्खण सत्तुज्जया फुडकलका ।

अय जाणमाणया विहु मडलिया ते न कईयावि ॥ १०७ ॥

मडलिय रयण दहु परोप्पर मेलिऊण करसन्न ।

जपति ताम मुळ जाम सहासम्मय होइ ॥ १०८ ॥

घणिओ अमुणियमुळो हीणहिय मुणइ तस्स नहु दोसो ।

मडलिय अलियमुळ कुणति जे ते न नदति ॥ १०९ ॥

अहमस्स अहियमुळ उच्चमरयणस्स हीणमुळ च ।

जे मयलोहघसाओ कुणति ते कुट्टिया होसि ॥ ११० ॥

रयणाण दिट्ठ मुळ निरुद्ध वद्ध न होइ कईयावि ।

तह्वि समयाणुसारे ज वट्टइ त भणामि अह ॥ १११ ॥

तिहु राइएहिं सरिसम छहि सरिसम तदुलो य धिठण जवो ।
 सोलस जवेहि छहि गुञ्जि मासओ तेहिं चहु टको ॥ ११२ ॥
 एगाइ जाव [बा]रस तिग बुझी जाम गुज चउषीसं ।
 षठ रयणाण मुल्ल तोलीण सुवन्नटकेहिं ॥ ११३ ॥
 पच दुवालस वीसा तीसा पन्नास पचसयरी य ।
 वसहिय षठसट्ठि सय दो चाला ति सय वीसा य ॥ ११४ ॥
 चारि सय तह य छह सय चउदस सय उवरि विठणविठण जा ।
 इक्कार सहस दुगसय मुल्लमिण इक्क हीरस्त ॥ ११५ ॥
 अरु इग दु षठ अट्टय पनरस पणवीस थाल सट्ठी य ।
 चुलसीइ चउदसुत्तर सय च कमसो य सट्ठिसय ॥ ११६ ॥
 तिस्सि सय सट्ठि समहिय सच सया तहय वारस सया य ।
 दो सहस कणय टका मुत्तियमुल्ल वियाणेहिं ॥ ११७ ॥
 दो पच अट्ट वारस अठ्ठार छवीसा य [याल्] सट्ठी य ।
 पचासी वीसा सठ सट्ठि सय दुसय वीसा य ॥ ११८ ॥
 चउ सय वीसा अठ सय चउदस चउवीस पिहु पिहु सयाणि ।
 गुजाइ [मास ?] टक उच्चिम माणिक्क मुल्ल वरं ॥ ११९ ॥
 पायरु एग दिवढ दु ति षठ पण छम्भ अट्ट वह तेरं ।
 ठार सगवीस षत्ता सट्ठि महामरगयमणीण ॥ १२० ॥

अस्यार्थं एष पत्रपूठिजत्रेणाह ॥ छ ॥

गुंथा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
हीरा	५	१२	२	३	५	७	११	१९	२४	३२	४	६	१४	२८	५६	११२	
मोरी	४	१	२	४	८	१५	३५	४	६	८४	११४	१६	३६	७	१२	२	
मन्थिक	२	५	८	१२	१८	२६	४	६	८५	१२	१६	२२	४२	८	१४	२४	
मरार	१	४	१	१४	२	३	४	५	६	८	१	११	१८	२०	४	६	

अस्यार्थं एष पत्रपूठिजत्रेणाह ११२ उपरे गाह १२ आप जाल्जीव ४ छ ४

अद्धमासाय अहिय मासय अद्ध जाम चठ मासं ।
 तोलीण हेमटकिहिं मुळ्ळु कमेण सुरयणाण ॥ १२१ ॥
 एग दुसठ छ नवग पनरस चठवीस तहय चउतीस ।
 पन्नास लाल्मुळ्ळ पठण एयाठ छ्हसणियर्यं ॥ १२२ ॥
 पा अद्ध पठण एग दु पच अट्टेव तहय पन्नरसं ।
 इय इव[नील] मुळ्ळ तहेव पेरोजयस्स पुणो ॥ १२३ ॥†

अस्यार्थं जत्रे जथा -

मासा	॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४
साय	१	२॥	३	४	५	६	७	८
पन्नरसी	॥	१॥	२॥	३॥	४॥	५॥	६॥	७॥
ईद्वीकि	१	॥	॥	१	२	३	४	५
पेरोजा	१	॥	॥	१	२	३	४	५

सिरि वद्ध गुण अद्ध पाय अणुसार पाय करड च ।
 टकिक्कि जे तुलती मुत्ताहल त भणामि अह ॥ १२४ ॥†
 दस वारस पन्नरसा वीस पणवीस तीस चालीसा ।
 पन्नर(सी) सत्तर सय चडति टकिक्कि तह मुळ्ळ ॥ १२५ ॥†
 पन्नास चालीस तीस वीस च तहय पन्नरस ।
 वारस दस ट पण तिय इय मुळ्ळ रुप्पटकेहिं ॥ १२६ ॥†
 इति मुत्ताहल ।

अथ वज्र जथा -

एगाइ जाम वारस तुलति गुजिक्कि वज्र ताणमिम ।
 मुळ्ळ महलिण्हिं ज भणिय त भणिस्सामि ॥ १२७ ॥

पणतीस छब्बीस वीस सोलस तेरस[य] वसेवा ।

अट्ट च एग ऊणा जा तिय कमि रुप्पट्टकाय ॥ १२८ ॥ छ ॥

अस्यार्थं जत्रेणाह -

सोटी टंक १	१	१२	१५	२	२५	३	४	५	७	१		
रुप्य टंक	५	४	३	२	१५	१२	१	६	५	३		
वस मुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२
रुप्य टंक	३५	२६	२	१६	१३	१	८	७	६	५	४	३

† मुद्रित प्रतिमें १२३ वीं गाथाका पाठ मिथ रूपमें मिसठा है और उसके नीचे यंत्ररूप कोष्ठक दिया गया है उसकी संज्ञापना भी मिथ प्रकारकी है । गाथा और कोष्ठक निम्न प्रकार हैं -

[अट्ट ति छह] दह तेरस सोलस बावीस तीस टकरई ।

लालस मुल्लु एर्य पेरुजं इदनील सम ॥ १२३

अस्यार्थं यंत्ररूपणाह -

मासा	॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४
हीरा	७	१६	३०	६०	१००	१५०	२२०	३४०
चूडी	८	१८	३	६०	१२०	२४०	४८०	९६०
मोती	२	८	३	८०	१२०	१८०	२४०	४०५
मराह	४	६	१०	१५	२२	३४	५०	७०
इंद्रनील	१	॥	॥	१	२	५	७	१०
सहसणीया	१	॥	॥	१	२	५	७	१०
साल	॥	३	६	१०	१३	१६	२२	३०
पराजा	१	॥	॥	१	२	५	७	१०

‡ सुव्रित प्रतिमें १२४, १२५, १२६ इम ३ गाथाभोजि स्थानपर पाठमेववाळी
मिष गाथायें हैं तथा छन्दे नीचे संस्कारसे जो कोष्ठक दिये हैं उनमें भंकादि मी
मिष गिनती बताते हैं । गाथायें और कोष्ठक मिष प्रकार हैं -

भारस षडदस सोलस षीसाई दसद्विय च आष सयं ।
टक्कि जे तुलती मुत्ताइल ताण मुल्लमिम ॥ १२४‡
आलीसं पणतीस तीस षडवीस सोलसिकारं ।
अट्ट छ इगो ग हीण जाव दु कमि रुप्य टकाण ॥ १२५‡
एगाइ जाव भारस षडंति गुज्जिकि वल्ल ताणमिमं ।
षीसाय सोल वेरस गारस नव इगूण जाव दुगं ॥ १२६‡

अस्यार्थे पुनर्यथकेणाह—

मोती टंक प्रति	१२	१४	१६	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
रूप्य टंकज	४०	३५	३०	२४	१६	११	८	६	५	४	३	२

हीरा गुंजा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रूप्य टंकज	२०	१६	१३	११	९	८	७	६	५	४	३	२

०

अइ चुक्ख निम्मला जे नेय सव्वाण ताण मुल्लु मिम ।
नहु इयर रयणगाण कणयद्ध विहुमे मुल्ल ॥ १२९ ॥
गोमेय फलिह भीसम कक्केयण पुसराय वेहुज्जे ।
एयाण मुल्लु वम्मिहि जहिच्छ कज्जाणुसारेण ॥ १३० ॥ छ ॥

०

[पाठमेव—अइ चुक्ख निम्मला जे नय सव्वाण ताण मुल्लमिम ।
सरोसे सयमसं ममाल्य मुल्लु दसमसं ॥ २७
गोमेय फलिह भीसम कक्केयण पुसराय वेहुज्जे ।
उक्किह पण छ टंका रूप्ययद्ध विहुस मुल्लं ॥ २८
॥ इति सर्वेषां मून्यानि समाप्तानि ॥]

०

सिरि धधकुले आसी कञ्जाणपुरम्मि सिद्धि कालियओ ।
तस्सुव ठक्कुर चदो फेरु तस्सेव अंगरुहो ॥ १३१ ॥

तेणिह् रयणपरिक्खा विहिया नियतणय हेमपालकए ।
कंर मुणि गुण ससि वरिसे (१३७२)

अच्छावदी विजयरज्जम्मि ॥ १३२ ॥

•

[पाठमेद-तेणय रयणपरिक्खा रया संखेवि ठिद्धिय पुरीए ।
कंर मुणि गुण ससि वरिसे अच्छावदीणस्त रज्जम्मि ॥ १२६]

•

॥ इति परमजैन श्रीचद्रागज ठक्कुर फेरु विरचिता
सक्षितरत्नपरीक्षा समाप्तौ ॥



ठकुर फेरू विरचिता

प्राकृतभाषायाद्वा

द्रव्यपरीक्षा

ॐ नमो कमलवासिणी देवी ।

कमलासण कमलकरा छणससिवयणा सुकमलदलनयणा ।

संजुप्तनवनिहाणा नमिषि महालच्छि रिद्धिकरा ॥ १ ॥

जे नाणा मुदाइ सिरि दिच्छिय टकसाल कज्जठिए ।

अणुभूय करिवि पत्तिउ वन्हि मुहे जह पयाठ धिय ॥ २ ॥

त मणइ कलसनदण षदसुओ फिरणुमाय तणयत्थे ।

सिह मुह्हु तुह्हु दव्वो नाम ठाम मुणत्ति जहा ॥ ३ ॥

पढम चिय चासणिय, वीयइ कणगाइ रुप्प सोहणिय ।

तइए मणामि मुह्हु, चउत्थए सव्व मुदाइ ॥ ४ ॥ वार ॥

चासणिय जहा —

मुह्हु पलासकट्ट गोमय आरज्जगा अजा अत्थिय ।

कमि तिय इगे गि भाय एगट्ट षहिय त रक्ख ॥ ५ ॥

छाणिय सेर सवायं वधि गह वकनालि घमि मव ।

घब अंगार सवा मणि सोहिय उत्तरइ चासणिय ॥ ६ ॥

त पुणरवि सोहिज्जइ पण तोला रक्ख वधिऊण गह ।

ता हवइ सह कूर अइ निम्मल चासणिय रुप्प ॥ ७ ॥

॥ इति सर्व चासनिका मूलसोधनविधि ॥

सीसस्त अमल पत्त करेवि लहु खड तुलिवि सोहिज्जा ।

नीसरइ रुप्प सयल सीस गच्छेइ स्वरद्धि महे ॥ ८ ॥

सय तोलामञ्जेण वारह जव सीसए हवइ रुप्प ।
पञ्छा पुण पुण सोहिय त्हावि निक्कण न कइयावि ॥ ९ ॥

॥ इति नागचासनिका ॥

रुप्पस्स वीस मासा छटक नाग च वेइ सोहिज्जा ।
जं जायइ ते विसुवा एव हुइ रुप्प चासणिय ॥ १० ॥

॥ इति रुप्पचासनिका ॥

नाणय दहक्क हरजय रीणी चक्कलिय टक दस गहिउ ।
पनरह गुण सीसेण सोहिय नीसरइ ज रुप्प ॥ ११ ॥
तस्साओ पाडिज्जइ रुप्प सीसस्स ज रहइ सेस ।
त चासणिय सरूव अन्न ज खरडि मज्झि हवे ॥ १२ ॥
नीचुच्च नाणयाओ कमेण चठ दु जव किंवि हीणहिया ।
संगहइ खरडि रुप्प अवस्स चासणिय समयमि ॥ १३ ॥
हरजय चासणिय दुग दह दह टकस्स मेलि गहि अरु ।
पठण दु जवतरेसु ह दु जवतरि वाहुइइ नूण ॥ १४ ॥

॥ इति द्रव्यचासनिका ॥

चासणिय जव दहग्गुण जि टक मासा हवति तस्सुवरे ।
अग्गिस्स मुषि दीयइ टकप्पइ जे जवा होति ॥ १५ ॥
त सय मञ्जे रुप्प तहञ्छमाणस्स पूरणे जत ।
तंवअहियस्स पुण जुय सल्लाही सा भणिज्जेइ ॥ १६ ॥

॥ इति सल्लाहिकाविधिः ॥

सामञ्जेण सुयन्नो वारहि वल्लीय भित्ति कणओ य ।
पच जव हीण चिप्प पिंजरि वल्ली य पच तुले ॥ १७ ॥
सिय खडिय लूण कल्लर सम भिस्सिय चुन्न सा सलोणीयं ।
मेल्लगय कणय चिप्पय करेवि तेण सह पइयव्व ॥ १८ ॥

तिहु अग्निच्छ सलोणी सत्ति सलूणीहि मुञ्जण चिप्प ।

इक्कारसीय क्की इक्कारस जव भवे मुक्स ॥ १९ ॥

सय तोल कणय पइए ज घट्टइ सा सलूणिय चिप्पे ।

धिप्पे दहग्गि पक्के जं घट्टइ त च कायरिय ॥ २० ॥

चिप्पस्स तिन्नि मासा पत्त करिवि भित्ति कणय सह पइए ।

स तिहाठ जओ घट्टइ भित्तीओ पढम चासणिय ॥ २१ ॥

पच्छा ति अग्नि पक्के पुणो वि तिय मास भित्ति सह पइए ।

तेरह विमुव जवस्स य इय अंतर वीय चासणिए ॥ २२ ॥

परपुन्न दहग्गि प[इ?]ए भित्ति सम हवइ तइय चासणिय ।

टकाण चक्कलीय गहिज्जइ य कणय चासणिय ॥ २३ ॥

॥ इति सुवर्णशोधना चासनिका च ॥

मेलगाइ रूप विमुवा दह तेरह सोल ठार उणवीसा ।

पच उण चठण तिउण विउण सम सीसय दिज्जा ॥ २४ ॥

सयल कुदव्व गच्छइ खरडितरि रहइ सेस रूपवर ।

तं पुण विवड्डी सीसइ सोहिय हुइ वीस विमुव धुव ॥ २५ ॥

॥ इति रूपसोधना ॥

तुलिय सलूणीयाओ अङ्गाइ गुणीय खरडि रूपस्स ।

वट्टेवि मेलि पिडिय करिज्ज कोम स चुन्न सहा ॥ २६ ॥

तत्तो करेवि कुट्टिय धमिज्ज घट्टेइ तईय अंसुमल ।

हवइ दुभामिस्स वल तस्साओ अङ्गय कुज्जा ॥ २७ ॥

नीसरइ सयल रूप सीसं तय च जाइ खरडि महे ।

सा खरडि पुण धमिज्जइ पिहु पिहु नीसरहि दुझेवि ॥ २८ ॥

काइरिय पुणो एव कीरइ तस्साठ तय सह कणय ।

नीसरइ तस्म चिप्प हुइ सीस खरडि मज्जाओ ॥ २९ ॥

॥ इति मिश्रदल शोधना ॥

कज्जलिय मूसि थूरिय तोपाल नियारयस्स सुहम कण ।
सोहग्ग फक्क सज्जिय वसंस जुय कडिय ह्वइ वल ॥ ३० ॥

॥ इति कणचूर्ण शोधना ॥

चठ भाय अमल तवय वर पिच्चल सोल भाय सह कडियं ।
इय रीस कायव्व रुप्पस्स विसोव करणत्थे ॥ ३१ ॥
वीस विसोवा रुप्प मासा वीसाठ जं जि कडिज्जा ।
तिच्चिय मासा रीस दिज्ज ह्वइ ते विसोव कस ॥ ३२ ॥

॥ इति रुप्पवनमालिका ॥

अइ चुक्ख रुप्प तवय कमि पनरह सट्ट सट्ट चठ रीसे ।
इय भाय वनियत्थे सोलस चठ कणय घट्टणत्थे ॥ ३३ ॥
जारिस वल्ली कीरइ तिच्चिय दु जवहिय भित्ति कणओ य ।
सेस दु जवूण रीसं एव तोलिक्कु ह्वइ परं ॥ ३४ ॥
रीस सम रुप्पय पढम गालिवि पुण थोव कणय सह कडिय ।
पुण सेस सहा वट्टिय ता ह्वइ जहिच्छ वनाम ॥ ३५ ॥

अथवा —

राम कर भाय सुल्म तारं मुणि सत्त भाय सह कडिय ।
एयं सयस रीसं सुवन्न वल्लस्स हरण वरं ॥ ३६ ॥
सेयालीस विभाय धुर कणय करवि एग एगूणं ।
तच्चुल्लि दिज्ज रीसं कमेण पाळण हुइ वल्ल ॥ ३७ ॥

॥ इति कनकवनमालिका ॥

जधि सोलसेहि मासठ चहु मासिहि टकु तोलओ तिठणो ।
सोलहि जवेहि वल्ली वारहि वल्ली महाक्कणओ ॥ ३८ ॥
वल्ली तुल्लेण हय भित्ति सुवन्नस्स अग्घ सह गुणिय ।
वारस भागे पत्त जहिच्छमाणस्स तं मुल्ल ॥ ३९ ॥

नाणा वन्नी कणओ नाणा तुल्लेण जाम गालिज्जा ।
 केरिस वन्नी जायइ अह एरिस वन्नि किं तुल्लो ॥ ४० ॥
 जसु वन्नी ज तुल्लो सो तस्सरिसो गुणेषि करि पिंड ।
 तुल्लि विहत्ते वन्न इच्छा वन्नी हरे तुल्ल ॥ ४१ ॥

॥ इति स्वर्ण विवहार ॥

उग्घाह मूसि दुग सठ पडिय सओ ढक्क मूसि उहेसो ।
 आवट्ट खए गच्छइ हरजइ तह रीण घट्टे य ॥ ४२ ॥
 ड्येयणि घट्टणु ज्वालणि सहस्सि तोलेहि रुपु चउमासा ।
 कणओ सवाठ भासठ टकट्ट सहस्सि दम्मैहि ॥ ४३ ॥

॥ इति ह्वास्य ॥

षट्ठु सय टुत्तरि कणओ चहु सय वन्नीस कणय टको य ।
 तेवन्नि सहु रुप्पठ सट्टि टकठ नाणठ ति वन्ने ॥ ४४ ॥
 तोलिच्छस्स सल्लूणी दम्मिहि वन्नीसि घठ हु कायरिय ।
 रुप्पस्स खरडि सीसय पमाणि छह टक दम्मिच्छे ॥ ४५ ॥
 सीसस्स मली सीसस्स मद्धए तह य ढठल खरडि पुणो ।
 लोहडि लोह कक्कर इय अग्घ तेर वासट्टे ॥ ४६ ॥
 रुप्पय कणय ति घाठय इय सिय मुदाण मुल्ल दम्मैहि ।
 वन्निय तुल्ल पमाणे सेस दु घाठय टंकेण ॥ ४७ ॥
 नाणा मुदाण कए जारिसु टको पमाणिओ होइ ।
 टकेण तेण मुल्ल गणियन्व सयल मुदाण ॥ ४८ ॥
 भणिसु हव नाणवट्ट दम्मिस्तिहि जाम इत्तिय मुह ।
 इय अग्घ पमाणेण इत्तिय मुदाण कइ मुल्ल ॥ ४९ ॥
 रासि तिगाइ गुणिय मज्झिम हरिऊण भाठ ज लद्ध ।
 त ताण मुद मुल्ल न ससय भणइ पेरु च्चि ॥ ५० ॥

॥ इति मौल्यम् ॥

अथ मुद्रा यथा —

- सवा इगवन्न दम्भिर्हि पुत्तलिया खीमलीय चउतीसे ।
 तोला इक्कु कज्जानिय वावनि आदनिय इगवन्ने ॥ ५१ ॥
 रीणी जे मुद्दा लग स तिहा गुणचासि तोलओ तेवि ।
 सङ्खुबयाल रुवाई खुराजमी, सङ्खु पचासे ॥ ५२ ॥
 वालिङ्ग पाठ ओवम रुप मया तिभि होंति तिहु तुछे ।
 सङ्खु सठ असी चत्ता तोला इक्को य वावन्नो ॥ ५३ ॥
 सिरि देवगिरिउ वन्नो सिंघणु तुछेण मासओ, इक्को ।
 सतरह विमुवा सङ्गा रुप्पउ ताराय मासओ ॥ ५४ ॥
 अन्न ज जि करारिय खट्टा लग नरहबाइ रीणीय ।
 तहं सयल दिट्ठि मुहु अहवा चासणिय अग्गिमुहे ॥ ५५ ॥

॥ इति रूप्यमुद्रा ॥

१

पूतली	तो०	५१।
खीमली	०	३४
कज्जानी	०	५२
आवनी	०	५१
रीणीमुद्रा	०	४९
रुवाई	०	४८४
खुराजमी	०	५०॥
यासिह जि ३		
प्रति		५२

१३० पा. १

८० पा. १

४० पा. १

मीषणमुद्रा ५०४

ताग मा० ॥ ५०२

रीणी खट्टिया लग नरहबाइ

बगरी एने इट्ठि अयया

नामनी प्रमात्र मूष्ये ।

कणय मय सीयराम दुविह सजोय तह विओर्यं च ।
 वह वन्नी दस मासा अमन्नणीया सपूयवरा ॥ ५६ ॥
 चठकडिय तह सिरोहिय अट्टी वन्नी सवा चठ म्मासा ।
 तुल्ले कुमर पुणेव अट्टी वन्नी धुव जाण ॥ ५७ ॥
 पठमाभिहाण मुहा धारह वन्नी य तस्स कणओ य ।
 तुल्लेण टकु इच्छो सच जवा सोल विसुवसा^२ ॥ ५८ ॥
 देवगिरी हेमच्छ सवादसी सिंघणी महादेवी ।
 ठाणकर लोहकुन्डी अट्टी धाणकर पठण वसी ॥ ५९ ॥
 खमाघर चुक्खरामा सट्टनवी केसरी य छह सट्टा ।
 सच जव वसी वन्नी कठलादेवी वियाणाहि ॥ ६० ॥
 जे अग्नि अच्छु घहुविह थरेहि तह मुल्लु तुल्लु नज्जेइ ।
 चठमासा दीनारो जहिच्छ वन्नी गुसारि फलो^३ ॥ ६१ ॥

॥ इति स्वर्णमुद्रा ॥

या १० सीयराम मासा १०
 १ संयोगी १ वियोगी
 वानी ८ चठकडिया धा
 वा ८ सिरोहिया धा
 वा ८ कुमर सिद्धजगिरि मासा धा
 या १२ पद्मा टं १ जय ७ ५०॥०

आल्लु देवगिरी मुद्रा स्वर्णमय
 वानी घिटराममाजे
 १०। सिंघण
 १०। महादेवी
 ८ ठाणाकर
 ८ लोहकुन्डी
 १५। रामपाण
 १५। खड्गघर. घोपीराम
 १५। केसरी
 १० ज ७ कीमदेवी
 ० दीनार मा ४

माहोवयस्त मुदा तुल्लो इच्छस्त सङ्ग चउमासा ।
 संजोय तिन्नि घाऊ पिहु पिहु नामेहि त भणिमो ॥ ६९ ॥
 रुव कणय गुज चठ चठ तवठ गुणवीस वीरवमो य^१ ।
 मुल्लु चउवीस जइयल हीरावमस्त वावीस^१ ॥ ७० ॥
 तंशु अढाइ मासा रुपु सुवन्नो य इक्कु इच्छो य ।
 तियलोयवम मुल्ल छचीस^१ विविह भोजस्त^१ ॥ ७१ ॥

८

२४ वीरवरमु	मासा ४॥	दुषातु
० सोमड	० रूपड	तांवा
० राती ४	० राती ४	रा १९

९

२२ हीरावरमु	मासा ४॥	दुषातु
० सोमड	रूपड	तांवा
० रा ३॥	रा ३॥	१९॥

१

३१ त्रिलोकवरमु	१ मासा ४॥	मा
० मा १ सोम मा १ रूपौ मा २॥		तांवा

११

० मोय नाना वैन्य विविष मूस्य
० दुषातु संभव ।

वल्लह तिय कमि घाऊ रूप्य कणय गुज अट्ट पण अहुट्ट ।
 त्थु भव ११ सत्तर १० वीसं १ मुल्ले घालीस तीस वीस धुव^{१२} ॥७२॥

१२

वालम्म	मासा	सोना	रुपा	तांवा	
४०	१	४॥	रा ८	रा ८	रा ११
३०	१	४॥	रा ५	रा ५	रा १७
२०	१	४॥	रा ३॥	रा ३॥	रा २०

॥ इति त्रिधातुमिश्रितमुद्रा ॥

अथ द्विधातुमुद्राः—

जे तोला जे मासा जि टक उल्लविय सयल मुदेहिं ।
 त सयमज्जे रुप्पठ जाणिज्जहु सेस तवो य ॥ ७३ ॥
 खुरसाण देस संभव चिन्हक्खर पारसीय तुरुकीय ।
 तवय रुप्प उ घाऊ इमेहि नामेहि जाणेह ॥ ७४ ॥
 भमइ य एगटिप्पी सिकदरी कुरुलुकी पलाहठरी ।
 सम्मोसीय लगामी पेरी जमाली मसूदीया ॥ ७५ ॥
 सय मुह मज्जि रुप्पठ ति षठ ति दु इगेग दु दु इग दु तोला ।
 सुन० ति ३ सुन० छ ६ दु २ सवापण ५।

छ ६ दु २ सढनव ९॥ फणदुइ १॥ मासा ॥ ७६ ॥
 चठतीसं तेवीस चठतीसिगयाल असी सट्टि कमे ।
 इगयाल सचयाल पणपन्न ऽचयाल टक्किळे^{११} ॥ ७७ ॥

॥ इति खुरसाणीमुद्रा । विवर जत्रेणाह—

११

३५	मांमइ मुद्रा	१०० मध्ये रूपा	तो ३	मा ०
३६	इयटीपी	१०० मध्ये रूपा	तो ४	मा ३
३७	सिकदरी	१०० मध्ये रूपा	३	मा ०
४१	कुरुलुकी	१०० मध्ये रूपा	२	मा ६
८०	पलाहठरी	१०० मध्ये रूपा	१	मा २
६०	सम्मोसी	१० मध्ये रूपा	१	मा ५
४१	लगामी	१०० मध्ये रूपा	२	मा ६
४७	पेरी	१०० मध्ये रूपा	२	मा २
५५	जमाली	१० मध्ये रूपा	१	मा ९
४८	मसूदी करारी	१०० मध्ये रूपा	२	मा १३

अवबुद्धी तह कुतुली तुळि सवापण दुमासिया मुळे ।
 सट्टि असी तह रुप्प दु दु जव षठ सोल विवकम्मे^{१४} ॥७८॥

१४

• अवबुद्धी	१ मासा ५।	मध्ये रूपा	जव २५४	म ६०
• कुतुली	१ मासा २	मध्ये रूपा	जव २॥	म ८०

॥ इति अठनारीमुद्रा ॥

विष्कम नरिंद भणिमो गोजिगा अरणतीस तोल रुवा ।
 वउराहा पणवीस सवा रुमे अहुठ चठ मुळे ॥ ७९ ॥
 मीमाहा छवीसं तोला मासद्दु चारि टकिळे ।
 चोरी मोरी तोला पणवीसं मुळि चारि सवा ॥ ८० ॥
 करड तह कुम्मरूपी कालाकचरि य छळ करि मुळे ।
 सय मज्जि अट्टमासा सतरह तोला य खलु रुप^{१५} ॥ ८१ ॥

॥ इति विक्रमार्कमुद्रा ॥

१५

० गोजिगा	१०० मध्ये	रुपा तोला	२९	मासा ९	प्रति ३१
० वउराहा	१०० मध्ये	रुपा तोला	२५	मासा ३	प्रति ४
० मीमाहा	१०० मध्ये	रुपा तोला	२६	मासा ०१	प्रति ४
० चोरी मोरी	१०० मध्ये	रुपा तोला	२५	मासा ०	प्रति ४१
० करड	१०० मध्ये	रुपा तोला	१७	मासा ८	प्रति ३
० कुम्मरूपी	१०० मध्ये	रुपा तोला	१७	मासा ८	प्रति ३
० कालाकचरि	१०० मध्ये	रुपा तोला	१७	मासा ८	प्रति ३

गुज्जरवड रायाण बहुविह मुदाइ विविह नामाइ ।
 ताण धिय भणिमोह तुळ मुळ निसामेह ॥ ८२ ॥
 कुमर अजय मीमपुरी लूणवसा रुपु टक पणवसा ।
 पच नव विमुव मुळो तुळे चठमास तेर जवा ॥ ८३ ॥
 वीसलपुरीय छह करि कुढे गुगुलिय टक पसास ।
 डुळहर पनर तोला अहुट्ट मासा छ सडू करे ॥ ८४ ॥
 अज्जुणपुरीय तोला वारह सडाय मुळि अट्ट करे ।
 कट्टारिया चठइस तोला मासा ति सचेव ॥ ८५ ॥
 नव करि असपालपुरीगारस तोला अड्डाइय मासा ।
 सारंगदेव नरवड तस्त इम संपवक्खामि ॥ ८६ ॥
 सोदलपुरी छ तोला मासा अट्टेव मुळु पसरसा ।
 पणमासा दहतोला घस करि लाखापुरी जाण^{१६} ॥ ८७ ॥

५४	कुमारपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१८	मा०	४
५४	मजयपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१८	मा०	४
५४	मीमपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१८	मा०	४
५४	सावणसापुरी	१००	मध्ये	तोळा	१८	मा०	४
८	मर्चुमपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१९	मा०	६
९	बीसळपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१९	मा०	८
	१ कुंडे १ गुणले						
६५	बोसहर	१००	मध्ये	तोळा	१५	मा०	३५
७	क्यारिया	१००	मध्ये	तोळा	१४	मा०	३
९	आसपाळ पु	१००	मध्ये	तोळा	११	मा०	२५
१५	चोडळपुरी	१००	मध्ये	तोळा	९	मा०	८
१०	जाळापुरी	१००	मध्ये	तोळा	१०	मा०	५

गविका य पच तोळा रुपठ सयमञ्जि वीस करि मुष्टे ।
 पडिया रजपलाहा सोलह करि छ तोल अहुठ मसा ॥ ८८ ॥
 वेवल्य सङ्ग सोलस रुपु छ तोलाय मासओ पठणो ।
 इय इचियाण तुळो मासा पचेव इच्छिओ ॥ ८९ ॥
 अट्ट करिषि सट्ट सया तोला सदवार तुळि मासहुठा ।
 वस तोल सच मासा वराह नव सङ्ग टकीण ॥ ९० ॥
 वारह सङ्ग करेविणु तोलट्ट रवा विनाइका चदी ।
 कन्हडपुरी छ सङ्गा कणु पनरह तोल अहुठ मसा ॥ ९१ ॥
 वाण इगवीस तोला अधमासठ रुपु पच इगि टके ।
 मछवाह छ करि सोलह तोला मासट्ट रुपु सप ॥ ९२ ॥
 चठतीसा पडतीसा छतीसा तह य सचतीसाय ।
 मालवपुरि छारीया चासणिए मुष्ठु एयाण ॥ ९३ ॥

॥ इति गुर्जरीमुद्रा ॥

२०	गविका	१००	मध्ये	तोळा	५	मा०	०
१६	पडिया	१००	मध्ये	तोळा	६	मा०	३५
१६	रजपलाहा	१००	मध्ये	तोळा	३	मा०	३५
१६	वेवसा	१००	मध्ये	तोळा	६	मा०	०५
८	साठसया	१००	मध्ये	तोळा	१२	मा०	३३
९	वराह मुंड	१००	मध्ये	तोळा	१०	मा०	७
१२	विनायक	१००	मध्ये	तोळा	८	मा०	०
६	क्याडपुरी	१००	मध्ये	तोळा	१५	मा०	३५
५	बाण मुद्रा	१००	मध्ये	तोळा	२१	मा०	३
६	मछवाहा	१००	मध्ये	तोळा	१६	मा०	८

मालविय चतुर्दशिया तोला अठ्ठाय सङ्ग वारि करे ।
 दिउपालपुरी पनरह तोला पण मास छह सङ्ग ॥ १४ ॥
 कुडलिया छह तोला पठण छ मासा य मुद्धि पन्नरसा ।
 मासठ्ठ पच तोला वारह जब कठलिया सतरं ॥ १५ ॥
 बावीस टक दब्बो तेरह सङ्ग छड्डुलिया होति ।
 सेलकी तुगह पण तोला तियमास चठवीस (उणवीसं?) ॥ १६ ॥
 इय इत्तियाण तुल्ल चठमासा दह जवा ह्वति धुव ।
 जानीया चित्तउडी वीसं दब्बो य पण तोला^{१८} ॥ १७ ॥

१८

प्रति	नाम	१०० म	रूपा तो०	मा०	तोस्ये	टं०	उष
१२४	बौद्धिया		८	०		१	१०
१५	दिउपालपुरी		१५	५		१	१०
१५	कुडलिया		६	५॥		१	१०
१७	कठलिया मुद्र		५	८॥		१	१०
१३३	छड्डुलिया		७	४		१	१०
१९	सेलकी तोगह		५	३		१	१०
२०	जानीया चित्तीडी		५	०		०	०

जङ्गरिया गलहुलिया बावीस तीस मुहु तह दब्बो ।
 कमि चारि तिभि तोला छ जब चठम्मास चठमासा ॥ १८ ॥
 मासठ्ठ इङ्ग तोलठ रुप्यो य रवालगा य छप्पभा ।
 सिवगणय पचहचरि मुद्धि सवा तोलओ रुप्यो ॥ १९ ॥
 चठदस सवा चठदसी तोला वपढाय मलित सत्त करे ।
 सिंह चोर मार मलुवा तेरह तोलाय सत्त सत्त सवा^{१९} ॥ २० ॥
 ॥ इति मालवीमुद्रा ॥

१९

प्रति	नामानि	१०० मध्ये	रूपा तो०	मा०	तोस्ये	टं०
२२	जङ्गरीया नाम	१०० मध्ये	४	५॥	०	०
२०	गलहुलिया	" "	३	४	०	०
५६	रवालगा मुद्रा शत १ मध्ये		१	८	०	०
७५	सिवगणा शत १ मध्ये		१	३	०	०
७	वापडा नाम मुद्रामध्ये		१४	०	०	०
१७	मलीता नाम मुद्रा मध्ये		१४	३	१	०
७	सीहमार नाम मुद्रा म०		१३	०	१	०
७	चोरमार नाम १०० म०		१३	०	१	०

चाहडी तिभि कमसो दुठचरी अंककी पुराणीय ।
 ति ति दु तोल वह ति दह मास ऽव्वीस वतीस पणतीसं ॥१०१॥
 आसलिय सतरहुचरि दु तोल छम्मास वव्वु चालीस ।
 आसल्ली ठेगा महि छ टक कणु मुद्धि पन्नास ॥ १०२ ॥
 आसलिय नविय तुल्ले सतरह तोला सवाय इगि टके ।
 टक अडाई रुप्यउ सय मज्जे वीस मासाय ॥ १०३ ॥

॥ इति नलपुरमुद्रा ^२ ॥

१

प्र० २८	चाहडी बुभोचरी १०० मध्ये	तो० ३	मा० १०
प्र० ३२	चाहडी आंककी १०० मध्ये	तो० ३	मा० ३
प्र० ३५	चाहडी पुराणी १०० मध्ये	तो० २	मा० १०
प्र० ४०	आसल्ली सतरहुचरी मध्ये	तो० २	मा० ३
प्र० ५०	आसल्ली ठेगा १०० मध्ये	तो० २	मा०
प्र० १७	आसल्ली नवी ठेग १ प्रति तुल्लित तोला १७		
	मध्ये रूपा तोला २१ सत १ मध्ये रूपा तो ५ (१)		

चदेरियस्स मुद्दा मुल्ले कोल्हापुरीय छह सट्टा ।
 पनरह तोला सतिहा तुल्ले चउ विमुव टकु इगो ॥ १०४ ॥
 सट्टुठ सट्टु वारह तोला जीरीय हीरिया सयगे ।
 वारट्टु करिवि सु कमे टकइ इके वियाणेह ॥ १०५ ॥
 वव्वु अडाई तोला अकुढा सय मज्जि मुहु चालीसा ।
 जइत अढ मास नव जव वव्वो मुल्लेण दिवढ सय ॥ १०६ ॥
 सट्टु सउ वीर टकइ जव तेरह सत्त मास सय मज्जे ।
 लक्खण सवा छ मासा रुप्यु सए मुहु असी सयं ॥ १०७ ॥
 राम दु जव अउमासा दुभि सया मुद्धि टकए इके ।
 वव्वावरा मसीणा खसरं न सय नक्क अहिय ॥ १०८ ॥

॥ इति चदेरिकापुरसत्कमुद्रा ^३ ॥

२१

प्र० ६॥ कोस्तापुरी	१०० मध्ये	तो० १५	मा० ४	जव ०
प्र० १२ वीरिया	१०० मध्ये	तो० ८	मा० ६	जव ०
प्र० ८ वीरिया	१०० मध्ये	तो० १२	मा० ६	जव ०
प्र० ४० मकुडा	१०० मध्ये	तो० २	मा० ६	जव ०
प्र० १५० जडत	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ८	ज० ९
प्र० १६० वीरमुंड	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ७	ज० १३
प्र० १८० छद्मणी	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ६	ज० ४
प्र० २०० राम	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ४	ज० २
प्र० १९० वधवावरा	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज० ८
प्र० १९० मसीणा	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज० ८
प्र० १९० छसर	१०० मध्ये	तो० ०	मा० ५	ज० ८

॥ इति खंवेरिकापुरमुद्राः ॥

जालधरी घडोहिय जडतचैदाहे य रूपचदाहे ।

रुप चठ तिभि मासा दिवढ सय दु सय टक्किळे ॥ १०९ ॥

तिभि सय इक्कि टके सीसडिया हुइ तिलोयचदाहे ।

संतिठरीसाहे पुण चारि सया इक्कि टकेण ॥ ११० ॥

॥ इति जालधरीमुद्रा^{२२} ॥

२२

प्र० १५० जडतचैदाहे	१०० मध्ये	रुपा तो० ०	मा० ४
प्र० २०० रुपचदाहे	१०० मध्ये	" ०	३
प्र० ३०० त्रिलोकचैदाहे	१०० मध्ये	" ०	०
प्र० ४०० सांतिठरी साहे	१०० मध्ये	" ०	०

अथ द्विहिकासत्कमुद्रा यथा—

अणग मयणपलाहे पिथठपलाहे य चाहडपलाहे ।

सय मज्झि टक सोलह रुपउ ठणवीस करि मुहो ॥ १११ ॥

॥ एता मुद्रा राजपुत्र-तोमरस्य^{२३} ॥

२३

प्रति	नामानि मुद्रानां	दात १ मध्ये	रुप्य	तोसा	मासा
१९	अणगपलाहे	सत १	"	५	४
१९	मदतपलाहे	सत १	"	५	४
१९	पिथठपलाहे	सत १	"	५	४
१९	चाहड पलाहे	सत १	"	५	४

सूजा सहावदीणी तहेव महमूद साहि चउकडिया ।
 टक चउइस रुप्पउ सय मज्जे मुहु इगवीसं ॥ ११२ ॥
 कढगा सरवा मखिया सवा छ तोला य रुपु सोल करे ।
 कुढलिया पण तोला छ मास अट्टार इगि टके ॥ ११३ ॥
 छुरिया जगढपलाहा चउतोल दु मास रुपु पणवीसं ।
 दुक्कीडेगा अहिया इगि मासइ रुपि तेवीसं ॥ ११४ ॥
 कुव्याहची जजीरी तह य फरीदीय परसिया मज्जे ।
 वस मासा तिय तोला मुळे टक्कि छव्वीसा ॥ ११५ ॥
 चउक कुवाचीय बफा सवा ति तोला य मुळि इगतीसा ।
 ससिहाय तिभि तोला खकारिया तीस करि जाण ॥ ११६ ॥
 उणतीस निववेवी मुळे तोला ति सडू चउमासा ।
 धमढाह जकारीया अहुट्ट तोलाऽहवीस करे ॥ ११७ ॥
 पढमा अलावदीणी सयगा समसीय चारि टक सवा ।
 इगसट्टि इच्छि टकइ सत्तरि चउ टक मोमिणिया ॥ ११८ ॥
 दुक सेला पच रवा तोला तिय दिवदु मासओ रुपो ।
 वचीस करिवि मुळे टकइ इके वियाणिज्जा ॥ ११९ ॥
 तितिमीसि कुव्वस्त्राणी खलीफती अघषँदा सिक्कंदरीया ।
 नव टक रुपु मुळे चउतीस करेवि इय समसी ॥ १२० ॥
 समसहीण सुयाण रूकुणी पेरोजसाहि पणतीसं ।
 तह वारसुत्तरी पुण इग मासा हीण तिय तोला ॥ १२१ ॥
 समसदि सुया रवीया तस रवी दुभि ठिळिय बुदउवा ।
 सढ सोल पउण तेरह टकक उणवीस इगतीसा ॥ १२२ ॥
 नवगा पणगा मठजी मासा नव सडू तोलओ इच्छो ।
 पणपन्न सोलहुतरी दुइ तोला मुळि पचासं ॥ १२३ ॥
 उणचास पनरहुतरी दुइ तोला इच्छु मासओ रुपो ।
 छका दु तोल दु मासा सइँताल मठजिया एव ॥ १२४ ॥

पेरोजसाहि नवण अलावदीणस्त प्य मुद्दाइ ।
 वलवाणीय इकणी अड्डा तिय टक मुद्धि असी ॥ १२५ ॥
 वलवाणि वामदेवी तिस्सुलिय चठकडीय सगवन्ना ।
 मुद्धे दिवडु तोलठ सय मज्जे वड्डु नायव्वो ॥ १२६ ॥
 तेरहसई मरुट्टी नवइ करिवि इक्कु तोलओ रुप्यो ।
 उव्वइ मूलत्थाणी नवमासा रुप्यु तीस सय ॥ १२७ ॥
 मरकुट्टीय सुकारी वारह नव नवइ १२९९ अंकितस्त महे ।
 तोलिक्कु अब मासठ सत्तासी मुद्धि जाणेह ॥ १२८ ॥
 सीराजी दुइ तोला छम्मासा रुप्यु मुद्धि इगयाला ।
 चठपन्न मुक्खतलफी मासा वस तोलओ इक्को ॥ १२९ ॥
 काव्हुणी तह नसीरी वड्डारी सत्त छ पण ७७५ टक कणो ।
 सगयालीस पचासं पणपन्ना कमिण टक्किच्छे ॥ १३० ॥
 सत्तावीस गयासी दु ति हिय सयमज्जि १०२।१०३ टक वस रुप्य ।
 मठजी सइ पण तोला समसी हुय रुप्य टकाय ॥ १३१ ॥
 जह्जाली तह रुकुणी सड्डा पण टक रुप्यु सय मज्जे ।
 मुद्ध सवाठ वम लहति षट्ठति विवहारे ॥ १३२ ॥
 अन्नन देससंभव अमुणियनामाइ जं जि मुद्दाइ ।
 ते पनरह गुण सीसइ सोहिवि कणु मुद्धु नज्जेइ^{२४} ॥ १३३ ॥

२४

प्रति	नामानि मुद्रानां	शत १ मध्ये	रुप्य	तोळा	मासा
२१	सुजानाम मुद्रा	सत १	"	४	८
२१	सहायदीप्ती मुद्रा	सत १	"	४	८
२१	महामुद्रसाक्षी मुद्रा	सत १	"	४	८
२१	अठकडीया मुद्रा	सत १	"	४	८
१६	कटक नाम मुद्रा	सत १	"	६	३
१६	सरवा नाम मुद्रा	सत १	"	६	३
१६	मल्लिया मुद्र	"	"	६	३
१८	कुंडलिया मुद्र	"	"	५	६
२५	सुरिया मुद्र	"	"	४	२
२५	जगटपलाहा नाम	"	"	४	२
२३	दुकडीया टगा	"	"	४	३
२६	कुषाहधी जरीती मुद्रा	"	"	३	१०

प्रति	नामानि मुद्रानां	शत १ मध्ये	रूप्य	तोळा	मासा
२९	फरीदी नाम मुद्रा	" "	"	३	१०
२९	पटसिया मुद्रा	" "	"	३	१०
३१	बडक नाम मुद्रा	सत १	"	३	३
३१	वफा नाम मुद्रा वर्ष	" "	"	३	३
३०	सकरिया नाम मुद्रा	" "	"	३	४
२९	नीयदेवी नाम मुद्रा	" "	"	३	४
२८	धमडाहा नाम मुद्रा	" "	"	३	३
२८	जकारीया नाम मुद्रा	" "	"	३	३
३१	भसावदीती मुद्रा	" "	"	३	५
३१	सतका समसी मुद्रा	" "	"	३	५
७०	मोमिनी अळाई मुद्रा	" "	"	३	४
३२	सेका समसी	" "	"	३	३
३४	तितिमीसी नाम मुद्रा	" "	"	३	०
३४	कुष्कखाली	" "	"	३	०
३४	बलीकती	" "	"	३	०
३४	मधमवा	" "	"	३	०
३४	सिकंदरी नाम मुद्रा	" "	"	३	०
३५	रकुमी नाम मुद्रा	" "	"	२	११
३५	पेरोज साही	" "	"	२	११
३५	बाखोचरी	" "	"	२	११
१९	रही डिद्रिका टंकसासर्स मध्ये	" "	"	५	३
३१	रही बुवीयां टंकसास बुवाळ	" "	"	४	३
५५	वार० नवका मडजी	" "	"	१	१५
५५	पमका मडजी नाम मुद्रा	" "	"	१	१५
५५	सोळहोचरी मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	२	०
४९	पनखोचरी मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	२	१
४७	छका नाम मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	२	२
८०	घसवाबी इकांगी सत १ मध्ये	" "	"	१	२
५७	बसवाबी वामदेवी सत १ मध्ये	" "	"	१	३
५७	बीकडीया	" "	"	१	३
१०	तेखसाई मरोठी सत १ मध्ये	" "	"	१	०
११०	बकाई मुलपाणी सत १ मध्ये	" "	"	०	१
८७	मरोठी हगामी मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	१	०
८७	सुकारी नाम मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	१	०
४१	सीराजी नाम मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	२	३
५४	मुक्तसफी मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	१	१०
४७	कान्हजी नाम मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	२	४
५०	नतीरी डिब्यां टंकसासहता	" "	"	२	०
५५	इकारी नाम मुद्रा सत १ मध्ये	" "	"	१	८
२७	गपासी बुगाणी नाम मुद्रा	" "	"	३	४
२०	मडजी नाम मुद्रा तिगामी सत १	" "	"	५	०
४८	जळाडी नाम मुद्रा परतमाना	" "	"	१	१०
४८	रकुमी नाम मुद्रा प्रयर्तमान	" "	"	१	१६

॥ इति श्री डिब्यां राज्ये वत्तमानमुद्राः ॥

संपद् पवट्टमाणा मुद्दा अल्लावदीण रायस्स ।

दुविह दुगाणी वुव्वो पठणा वस अट्ट टक सए ॥ १३४ ॥

छग्गाणी पुण दुविहा सट्टा पणवीस पठण पणवीसा ।

टंक सय मज्झि रूप्पठ सट्टा चठ दु जव नव विसुवा ॥ १३५ ॥

इग्गाणी सय मज्झे तय्थठ पण नवइ टक पण वुव्वो ।

रायहरे विवहारे गणिज्ज इग्गाणिया सयल ॥ १३६ ॥

इग पण वट्ट पत्तासं सय तोला तुल्लि हेम टकाइ ।

चठ मासा वीनारो रूप्पय टको य तोलीणो ॥ १३७ ॥

चठ मास जाव षट्ठिय सहावदीणस्स तुल्ल मुद्दाइ ।

वम्म छग्गाणी टका रूप्प सुवन्नस्स तोलीणा ॥ १३८ ॥

॥ इति अश्वपति महानरेन्द्र पातिसाहि अलावदी मुद्रा ३५ ॥

१५

० इत्य टंक १ मलाई प्रति गण्यते ॥

१० छगानी सत मध्ये तो ८ मा ३ अ ५०

१० छगानी सतमध्ये तो ८ मा ३ अ २५

३० दुगानी सत मध्ये तो ३ मा ३ अ ०

३० दुगानी सत मध्ये तो २ मा ८ अ ०

६० इगानी सत मध्ये तो १ मा ८ अ ०

० शेष तांवा सत १ टंक पूर्ये सचे मुद्र

इत्तो भणामि संपद् कुट्टुवुदी रायवदिछोटस्स ।

चठरंस वट्ट मुद्दा नाणाविह तुल्ल मुल्लो य ॥ १३९ ॥

वत्तीसं कणयमया रूप्पमया वीस वम्म सत्तविहा ।

चठविह तथय साहा मुद्दा सव्वेवि तेसट्टी ॥ १४० ॥ वारं ॥

इग पण वट्ट तोलाइ वस हिय जा सठ दिवट्ट सठ दु सय ।

इय वट्ट हेम टंका चठरंस पुणोवि एमेव ॥ १४१ ॥

तेरह मासा सतिहा सुधन्न टको य सोनिया तिबिहा ।
इग मासिया दुमासिय चउगुंजा एय व्तीसं ॥ १४२ ॥
॥ इति स्वर्णमुद्राः^{२९} ॥

२९

हेम टका माना तीस्ये

- ० एक तोलिया १
- ० पंच तोलिया १
- ० दस तोलिया १
- ० पचास तोलिया १
- ० सय तोलिया टका १

हेमदीनाठ मासा ४

रुप्य टका सर्वेपि एक तोलिया ।

३०

कनक मुद्रा १२ यथा-

२९. टका मानाविधा तोळो यथा-

१४. वृत्ताक्षर माना तो० तो

१ ५ १० २० ३०

४० ५० ६० ७० ८०

९० १०० १५० २००

१५. बनुःकोण तोस्ये वृत्ताक्षर पत्
निश्चित ।

१ मासा १३५ संवृत्ताक्षर ।

३. अपर माना वृत्त कमुद्राः-

१ मासा १ । १ मा० २ । १ गुं० ४

३२.

रुपिंग तोली वट्टा चउदस चउरंस हेम सम तुल्य ।

पच विहा रुप्यइया इग दु ति चउमासि अद्ध तुल्य ॥ १४३ ॥

॥ इति रुप्यमुद्राः^{३०} ॥

३०

रुप्यमुद्रा २० विवरणम् ।

१५. टका मुद्रा मानाविध तो० ।

१ संवृत्ताक्षर तो० १

१५. बनुःकोणः । तोळो यथा-

१ ५ १० २ ३० ४० ५०

६० ७० ८० ९ १०० १५० २००

एवं ।

५. रुपिया मुद्रा माना तोळो ।

१ मासा १ । १ मासा २ । १ मा० ३

१ मासा ४ । १ मासा ५ । संवृत्ता०

३०.

दुग्गाणी य छगाणी तुल्ले मुल्ले य रुप्य तथे य ।
 अल्लई सम जाणह अन्ने अन्ने वि ही भणिमो ॥ १४४ ॥
 चठगाणी वट्ट सए सोल सवा टक नव जवा रुप्य ।
 षठमासा तुल्लेण न संसय इत्थ नायव्व ॥ १४५ ॥
 चठवीस वारसट्ट य अठयालीसाण मुह चठरंसा ।
 तुल्ले य रुप्य तवय संखा कमि अट्टगाणीओ ॥ १४६ ॥
 तिचीस टक नव जव चठ विसुवा रुप्यु सेस तंथो थ ।
 सय अट्टगाणिण्हिं इगेगि तुल्लो य चठमासा ॥ १४७ ॥
 ॥ इति ब्रह्मसूत्रम् ॥

११

ब्रह्मासूत्रं सप्त उ नामाभिष्य लोको मूढो ।
 वृत्ताकारं मुद्रा ३ तोस्ये टं १
 १. दुग्गाणी १०० मध्ये घातु २
 टं. ८ नवाती रुप्य । टं. ९२ तांत्र
 १. चठगाणी १०० मध्ये घातु २
 टं. १६ मा० १ जव ९ रुप्य
 टं. ८३ मा० २ जव ७ भांवा
 १ छगाणी १०० मध्ये घातु २
 टं. २४ मा० ३ जव १३ रुप्य
 टं. ७५ मा० जव १४१ तांत्र
 चतुरस्र मुद्राः ४
 १ अठगाणी १०० मध्ये
 टं. ३३ मा० जव ९ ५४ रुप्य
 टं. ३६ मा० ३ जव १४१. १ तां
 १ वारहगाणी १०० टं. १५०
 मा० १ ज० १५१। १। २५४ रुप्य
 मा० ४ ज० ५ ३३. २१। १ तां
 १ चठवीसगाणी लो टं. ३ (३००।)
 मा० ३ ज० १५१ २३. ४। ३ रुप्य
 मा० ८ ज०। २ ५०। ५०० तां
 १ अठठाळीसगाणी टं. ३ (३००।) चठवीसगाणीतो
 विगुणं ब्रह्मं ।
 तांत्र मुद्रा ४ साहा सं ।
 • ५ १ मासा १
 • ५ १। मासा १।
 • ५ २। मासा २। • ५ ५ मासा ५

विमुवा सवाय विमुवा अघवा पइका य तं चउरसा ।
 तुल्लेण कमि चढता मासाओ जाम पण मासा ॥ १४८ ॥

॥ इति साहे मुद्रा ॥

एव वुव्वपरिक्ख दिसिमिचं चदतणयफेरेण ।
 मणिय सुय षघवत्ये तेरह पणहत्तरे वरिसे ॥ १४९ ॥

इति श्रीचन्द्रागज ठक्कुर फेरु विरचिता ।
 द्रव्यपरीक्षा समाप्ता ।

ठक्कुरफेरुविरचिता धातूत्पत्तिः ।

ॐ

अथ धातूत्पत्तिमाह—

रुप्य च मट्टियाओ नइ पन्वयरेणुयाठ कणओ य ।
 घाठव्वाओ य पुणो ह्वन्ति तुम्भिवि महाघाठ ॥ १ ॥
 पट्ट च कीढयाओ मियनाहीओ हवेइ कत्थूरी ।
 गोरोमयाठ दुब्वा कमल पकाठ जाणेह ॥ २ ॥
 मठरं च गोमयाओ गोरोयण होन्ति सुरहिपित्ताओ ।
 चमरं गोपुच्छाओ अहिमत्याओ मणी जाण ॥ ३ ॥
 उभा य सुक्कडाओ वन्त गइवाठ पिच्छ रोमा(मोरा?)ओ ।
 चम्म पसुवग्गाओ हुयासण वारुखण्डाओ ॥ ४ ॥
 सेलाठ सिलाइच्चं मलप्पवेसाठ हुइ जवाइ धरं ।
 इय सगुणेहि पविता उपत्ती जइय नीयाओ ॥ ५ ॥

इत्युत्पत्तिः ।

अथ करणीयमाह—

पित्तलिं जहा—

वे मण अघा(?)वटिय कुट्टिवि रघिज्ज गुढमणेणेण ।
 ज जायइ निष्ठीठ तयइ तयय सहा कट्टिय ॥ ६ ॥
 सा धीस विसुव पित्तल दुभाय तवेणे पनर विसुवा य ।
 तुल्लेण तवयाओ सवाइया ढक्क मूसीहिं ॥ ७ ॥

तम्भय जहा—

वध्वेरय खाणीओ आणवि कुट्टिज्ज घाहु मट्टी य ।
 गोमयसहियं पिंढिय करेधि सुक्कवि य पइयव्व ॥ ८ ॥

पञ्चा सुहृद् खिविय धमिज नीसरई सन्व मलकढ ।
 ज हिठ्ठे रहइ दल त पुण कुट्टेवि धमियञ्च ॥ १ ॥
 तस्साठ वहइ पयर त त्वमिठ्ठय वियाणेह ।
 बुद्धाणए पुणेव गुट्ट गुलिय तमो हवइ ॥ १० ॥

अथ सीसय जहा—

ना(न)भाखाणीओ पाहण कट्टिवि कुट्टेवि पीसि घोइज्जा ।
 ज होइ त मलदल दुमाय तइयस लोहजुय ॥ ११ ॥
 सय सय पलस्स मूसी ते चाडिवि तीस अंगए इक्के ।
 आवट्टिय तुल्लेण चउत्यभागूण हुइ सीसं ॥ १२ ॥
 लोह सारं च पुणो उप्पची घाहुपाहणाओ य ।
 पित्तल-कसईण विणहए होइ भिंगारी ॥ १३ ॥

अथ रंगय जहा—

रंगस्स घाहु कुट्टिवि करिज्ज कोमंस चुप्पण सह पिठ ।
 धमिय निसरई ज त पुण गालिय कविया होन्ति ॥ १४ ॥

अथ कसय जहा—

कथिय सेरकारस मणेग तम्भ च पयर गुट्ट वा ।
 आवट्ट घडिय मुद्ध कसं हुइ धीसयसूण ॥ १५ ॥

अथ पारय जहा—

पारस्स घाहु ठविय तस्सोवरि गोमयहकुठि कुज्जा ।
 मवगिघमियमाणो उज्जुवि संचरइ तस्स महे ॥ १६ ॥

अहवा

रसकूव भणन्तेगे त्थणत्थी तत्थ करवि सिंगारं ।
 तुरियारूढ इड्ढिवि अपुट्टपयरेहिं नस्सेइ ॥ १७ ॥
 कूवाओ तस्स कए पारं उच्छलवि घावए पञ्चा ।
 चाहुइ दहमकाओ पुणोवि निवडेइ तत्थे च ॥ १८ ॥

ज रहइ नियट्टाणे कत्यव कत्येव खड्ड-स्वडीहिं ।
तत्थाठ गहइ सा तिय उप्पत्ती पारयस्त इम ॥ १९ ॥

अथ हिंगुल्य जया—

एगमण पारह तहा गन्वय चुन्न च सेर दस खिविठ ।
दूराओ आसन्न मदग्गी कीरए मिस्सं ॥ २० ॥
कुट्टेवि तर्हि खिविज्जइ मणसिल हरियाल सेर पा पाय ।
पूरिवि कच्च कराव दट्टिज्जइ खोरचुभेण ॥ २१ ॥
मढि मट्टिय सदलेण तिन्नि अहोरत्ति वड्ढि जालिज्जा ।
जाव सुगघ ता हुइ सेर छयालीस हिंगुल्य ॥ २२ ॥

अथ सिन्दूरं जहा—

सीसयमणेगमज्जे वसयरक्खा वहइ सेराइ ।
गालिवि मेलिवि कुट्टिवि छाणवि जलि घोळि धरियव्व ॥२३॥
नित्तारिऊण नीरं ज हिट्टे तस्त वड्ढिय कय सुक्क ।
धणि कुट्टि हखि छाणिय ठवि मट्टी अग्गि कायव्व ॥ २४ ॥
जह जह लग्गइ ताव तह तह रंग चढेइ जा ति दिण ।
सेरूण सिन्दूरं तग्गालिय हवइ पुण सीसं ॥ २५ ॥
एव च मणिय संपइ कुघाठमज्जे सुघाठ भणिमोह ।
कविय रगे कणय तोलय सय जव चठत्तीस ॥ २६ ॥
सयतोळामज्जेण धारह जव सीसए हवइ रुप्प ।
पच्छा पुण पुण सोहिय तहावि निकण न कइयावि ॥ २७ ॥

अथ धातोकरणी विधि —कप्पूर अगर-चदण-मृगनाभीत्यादि ।

वाहिणवच संख इगमुह रुदक्ख सालिगामं च ।

देवाहिट्टिय तिन्नि वि अमुल्ल सपहाय भणियन्ति ॥ २८ ॥

खीरोवहिसंभूय विभूसणं सिरिनिहाण रायाण ।
 दाहिणवत्त संख बहुमगलनिलयरिद्धिकरं ॥ २९ ॥
 वट्टन्ति रेहकलियं पचमुह सुम्म सोलसावत्तं ।
 इय सखं विद्धिकरं संखिणि हुइ दीहहाणिकरा ॥ ३० ॥
 सिरिकणयमेहलजुय वरठाणे ठविय निच्च सुइ काठ ।
 दुद्धि न्हविळण चन्दणि कुसुमागरि मन्ति पूइज्जा ॥ ३१ ॥

पूजामन्त्र —

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीघरकरस्थाय

पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिन्तितार्थसप्रदाय
 श्रीदक्षिणावर्चसंस्त्राय । ॐ ह्रीं श्रीं जिनपूजायै नमः ॥

इति पूजाविधिः ।

दाहिणवत्तो य संखोयं जस्त गेहमि चिट्ठइ ।
 मगलाणि पक्कट्टन्ते तस्त लच्छी सयवरा ॥ ३३ ॥
 तत्संखि खिविय च्चदणि तिलय जो कुणइ पुहवि सो अजिओ ।
 तस्त न पहवइ किंची अहि-साइणि विज्जु-अग्नि-अरी ॥ ३४ ॥
 नरनाहगिहे संख बुद्धिकरं रज्जि रट्ठि भण्डारे ।
 इयराण य रिद्धिकरं अंतिमजाईण हाणिकर ॥ ३५ ॥
 दाहिणवत्ते संखे खीर जो पियइ कय कुल्लच्छी य ।
 सा वप्पा वि पसुवइ गुणलक्खणसजुय पुत्तं ॥ ३६ ॥

दुमुहा भगलजणया सिमुहा रिवहरण षउर मञ्जत्था ।
पचमुहा पुन्नयरा सेसा सुपविच सामन्ना ॥ ३९ ॥

इति यद्राक्षा ।

गण्डुयनइसभूय सालिग्गाम कुमारकणयजुय ।
चक्ककिय सावत्त वट्ट कसिण ष सुपविच ॥ ४० ॥
लोया तर्हयमत्ता हरि व्व पूयति सालिग्गामस्स ।
सेयत्थि मुत्तिहेऊ पावहरं करिवि ञ्जायति ॥ ४१ ॥

इति शालिग्गामम् ।

महभूमि दक्खिणोवहि केळियण त्तय केळिगुदाओ ।
कहरव्वओ य जायइ कप्पूरं केळिग्गाम्माओ ॥ ४२ ॥
कप्पूर तिञ्चि किच्चिम इक्कडि त्ह भीमसेणु चीणो य ।
कञ्जाठ मुकमि मुद्धो वीस दस छ विमु व विमुवसो ॥ ४३ ॥
कायासुगन्धकरण तहत्थिमज्जाय भेयग सीय ।
वाय-सलेसम-पिच तावहरं आमकप्पूर ॥ ४४ ॥

इति कर्पूर ।

अगरं स्वासदुवार किष्णागर तिष्ठिय च सैयलय ।
वीसं दस तिय एग विसोवगा मुकमि अन्तरय ॥ ४५ ॥
अइकडिण गवल्लवन्न मञ्जे कसिण सरुक्ख गरुय च ।
उप्पह वसिय सुयध दाहे सिमिसिमइ अगरवरं ॥ ४६ ॥

इत्यगरम् ।

मलयगिरि पव्वयमि सिरिचदणतरुवर च अहिनिलय ।
अइसीयल सुयध तग्गधे सयत्थणगध ॥ ४७ ॥
सिरिचदणु तह चदणु नीलवई सुक्कडिस्स जाइ तिय ।
तह य मलिन्दी कठ्ठी वव्वरु इय चदण छविह ॥ ४८ ॥
वीसं वारट्ट इग तिहाठ पा त्रिमुव चदण सेरं ।
पण तिय दु पाठ टका जइयल चउ तिञ्चि कमि मुद्ध ॥ ४९ ॥

स्त्रीरोवहिसंभूय विभूषण सिरिनिहाण रायाण ।
 दाहिणवच सख बहुमंगलनिलयरिद्धिकरं ॥ २९ ॥
 वदन्ति रेहकलिय पचमुह सुम्भ सोलसावत्तं ।
 इय सख विद्धिकरं सखिणि हुइ दीहहाणिकरा ॥ ३० ॥
 सिरिकणयमेहलजुय वरठाणे ठविय निच्च सुइ काठ ।
 दुद्धि न्हविळण चन्दणि कुसुमागरि मन्ति पूइजा ॥ ३१ ॥

पूजामन्त्र -

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीघरकरस्याय

पयोनिधिजाताय लक्ष्मीसहोदराय चिंतितार्थसंप्रदाय
 श्रीदक्षिणावर्त्तसंस्त्राय । ॐ ह्रीं श्रीं जिनपूजायै नमः ॥

इति पूजाविधि ।

दाहिणवत्तो य संखोय जस्त गेहमि विठ्ठइ ।
 मगलाणि पवदन्ते तस्त लच्छी सयवरा ॥ ३३ ॥
 तस्तसंखि खिविय चदणि तिलय जो कुणइ पुहवि सो अजिओ ।
 तस्त न पहवइ किंची अहि-साइणि विज्जु-अग्गि-अरी ॥ ३४ ॥
 नरनाह्गिहे सख युद्धिकरं रज्जि रट्ठि मण्डारे ।
 इयराण य रिद्धिकरं अंतिमजाईण हाणिकर ॥ ३५ ॥
 दाहिणवत्ते सखे स्त्रीरं जो पियइ कय कुलच्छी य ।
 सा वप्पा वि पसूवइ गुणलक्खणसजुयं पुत्त ॥ ३६ ॥

इति दक्षिणावर्त्तसंस्तु ।

दीवतरि सिवभूमी सिवदक्ख तत्य द्दोन्ति रुद्धक्खा ।
 ण्णाइ जा [च]ठइस वयणा सत्त्वे वि सुपविष्ठा ॥ ३७ ॥
 पर उत्तमेगवयणा सिरिनिलया विग्घनासणा सुहया ।
 कणयजुय कण्ठ सवणे मुय सीसे संठिया सहला ॥ ३८ ॥

दुमुहा भगलजणया तिमुहा रिक्हरण च्तर मञ्जत्या ।
पचमुहा पुन्नयरा सेसा सुपविच्च सामन्ना ॥ ३९ ॥

इति यद्राक्षा ।

गण्डुयनइसभूय सालिगगाम कुमारकणयजुय ।
चक्ककिय सावत्त वट्ट कसिण च्च सुपविच्च ॥ ४० ॥
लोया तईयभत्ता हरि व्व पूयति सालिगगामस्त ।
सेयत्यि मुच्चिहेऊ पावहरं करिवि ज्ञायति ॥ ४१ ॥

इति शालिग्रामम् ।

महभूमि दक्खिणोवहि केलिवण तत्य केलिगुदाओ ।
कहरव्वओ य जायइ कप्पूरं केलिगग्ग्माओ ॥ ४२ ॥
कप्पूर तिन्नि किच्चिम इक्कडि त्ह मीमसेणु चीणो य ।
कच्चाठ मुकमि मुद्धो घीस दस छ विसु व विसुवंसो ॥ ४३ ॥
कायासुगन्धकरण तहत्थिमज्जाय भेयग सीय ।
वाय-सलेसम पिच्च तावहरं आमकप्पूर ॥ ४४ ॥

इति कर्पूर ।

अगरं स्वासदुवार किप्प्हागर तिच्छिय च्च सेंवलय ।
वीसं दस तिय एग विसोक्का मुकमि अन्तरय ॥ ४५ ॥
अइक्कडिण गवल्लस मज्जे कसिण सरुक्ख गरुय च्च ।
उप्प घसिय सुयघ दाहे सिमिसिमइ अगरवरं ॥ ४६ ॥

इत्यगरम् ।

मलयगिरि पन्वयमि सिरिचदणतरुवर च्च अहिनिलय ।
अइसीयल सुयघ तगघे सयल्लवणगघ ॥ ४७ ॥
सिरिचदणु तह च्चदणु नीलवई सुक्कडिस्त जाइ तिय ।
तह य मलिन्दी कउही वच्चरु इय च्चदण छविह ॥ ४८ ॥
वीस वारट्ट इग तिहाठ पा विसुव च्चदण सेरं ।
पण तिय दु पाठ ट्ठा जइयल च्चउ तिन्नि कमि मुद्ध ॥ ४९ ॥

१ सिरिचन्दणस्त चिण्ह वझे पीय च घस्सिय रत्ताम ।
साए कहुय सीय सगठि संताव नासयरं ॥ ५० ॥

इति चन्दनम् ।

नयबाल-कासमीरा कामरुया मिय चरन्ति सुक्मेण ।
मासी मुत्थगठि उन कत्थूरिय अरुण पीयघणा ॥ ५१ ॥
नयबाल-कासमीरे मियनाही हवइ वीस विसुवा य ।
पचि उरमाइ पव्वय समूय दहट्ट जाणेह ॥ ५२ ॥
मियनाहि वीणओ हुइ पण तोला जाम चम्म सह तुल्लो ।
१ तस्स कणु वार विसुवा चम्मो विसुवट्ट उहेसो ॥ ५३ ॥
मियनाहि उण्हमहुरं कहुय तिक्ख कत्तायसुग्गाघ ।
दुग्गान्धि छदि तावं तियदोसहरं च सुत्तणेह ॥ ५४ ॥

इति मृगनाभीकत्थूरिका ।

कसमीरि जवडि केसरि देसे हुइ कुकुम् मृगन्धवरं ।
वीम वारट्ट विसुवा पण आदण हुरुमयस्स भव ॥ ५५ ॥
इति कुकुम्म् ।

मुर मास कुट्ट बालय नह चन्वण अगार मुत्थ छल्लीरं ।
सिल्हारसखडजुय सम मिस्स दहग वर धूर्वं ॥ ५६ ॥

इति धूप ।

कप्पूरसुरहिवासिय चन्वणसंभूय परम सिय वासा ।
मासीबालयसंभव कत्थूरिय वासिया सामा ॥ ५७ ॥

इति घासः ।

इति ठक्कुरफेरुविरचिते धातोत्पत्तिकरणीविधि समाप्त ।
धीविक्रमादित्ये संवत् १४०३ वर्षे फल्गुण शु० ८ चन्द्रबासरे
मृगसिरिनक्षत्रे लिखितम् । सा० मावदेबाज़न पुरिसड ।
आत्मवाचनपठनार्थे मुममस्तु ।

ठकुर फेरु विरचित

ज्योतिषसार

॥ ॐ स्वस्ति ॥

॥ आदिष्यादिप्रहा नमः ॥

सयलसुरासुर नमिठ जोइससारं भणामि किं पि अह
संखेवि परप्पहिय निरिक्खिठ पुब्बसत्याइ ॥ १

हरिमह-नारचदे पउमप्पहसुरि-जठण-वाराहे ।

लङ्घ-परासर-गग्गे कयगथाओ इम गहिय ॥ २

दिणसुद्धि वयालीसं विवहारे सट्ठि गणिय अढतीसं ।

गाह दुहियसउ लम्मे दुसय वयालीस जुय सव्वे[†] ॥ ३ ॥ दारं ॥

[प्रथमं दिनशुद्धिद्वारम्]

दिणशुद्धि जहा—

रवि^१ ससि^२ कुजै बुह^३ गुरे सियै सणि^४वारा राई केयै सहिय गहा ।

ससि बुह गुर सिय सोमा कूर चि बुहो य जेण जुओ ॥ ४

नदा मदा य जया रिप्ता पुष्पा य पडिवयाइ तिही ।

नक्खत्त जोय रासी चक्क अवकहह सुपसिद्ध ॥ ५

त जहा—अश्विनी १, भरणि २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरः

५, आश्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, अश्लेषा ९, मघा १०, पूर्णफाल्गुनी ११,

उत्तरफाल्गुनी १२, इस्त १३, चित्रा १४, स्वाति १५, विशाखा १६,

अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१,

अर्षीधि २२, अश्विन २३, घनिष्ठा २४, शतभिषा २५, पूर्णभाद्रपद

२६, उत्तरभाद्रपद २७, रेवति २८ ॥ इति नक्षत्रनामानि ॥

† ४२ दिणसुद्धि, ६० व्यवाहार, ३८ गणित, १०२ सम=२४२ गाहा ।

विष्कंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, सोमन ५, अतिगड ६, सुकर्मा ७, वृत्ति ८, शूल ९, गंड १०, वृद्धि ११, घुष १२, व्याघात १३, हर्षण १४, बज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, धरियानु १८, परिघ १९, शिव २०, सिद्धि २१, साध्य २२, शुभ २३, शुद्ध २४, ब्रह्मा २५, ऐंद्र २६, वैधृति २७ ॥ इति योगनामानि ॥

मेघ १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंघ ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, घन ९, मकर १०, कुम्भ ११, मीन १२ ॥ इति राशिनामानि ॥

बु बे बो ला अश्विनी । खि लु छे लो भरणि । अ इ उ ए कृत्तिका । ओ ष वि घु रोहिणी । वे वो क कि मृगशिरः । कु घ ङ छ आद्रा । के फो ह हि पुनर्वसु । हू हे हो ड पुष्य । डि डु डे डो अश्लेषा । म मि मु मे मघा । मो ट टि डु पूर्वाफाल्गुनी । टे दो प पि उत्तरफाल्गुनी । पु प ण ठ हस्तः । वे पो र रि चित्रा । रु रे रो त स्वाति । ति तु ते तो विशाखा । न नि नु ने अनुराधा । नो य पि यु ज्येष्ठा । ये यो भ भि मूल । मू ष फ ड पूर्वापादा । मे मो ज जि उत्तरापादा । जु जे जो षा अमि जित् । खि खु खे खो अश्वण । ग गि गु गे घनिष्ठा । गो स सि सु शतभिषक । से सो ष वि पूर्वमद्रपदा । वु श ङ थ उत्तरमद्रपदा । वे वो ष धि रेवती । इति नक्षत्रावकहडधक्रम् ॥

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादे मेघः १ । कृत्तिकाणां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरार्द्धं वृष २ । मृगशिरार्द्धं आद्रा पुनर्वसुपादत्रय मिथुनः ३ । पुनर्वसुपादमेक पुष्य अश्लेषा कर्कटः ४ । मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनीपादे सिंहः ५ । उत्तरफाल्गुनीनां त्रयः पादा हस्त चित्रार्द्धं कन्या ६ । चित्रार्द्धं स्वाति विशाखापादत्रय तुला ७ । विशाखापादमेक अनुराधा ज्येष्ठा वृश्चिकः ८ । मूल पूर्वापाद उत्तरापाद पादे घनः ९ । उत्तरापादाणां त्रयः पादा अश्वण घनिष्ठार्द्धं मकरः १० । घनिष्ठार्द्धं शतभिष पूर्वमद्रपदपादत्रय कुम्भः ११ । पूर्वमद्रपादमेक उत्तरमद्रपद रेवती मीनः १२ । इति नक्षत्रे राशयः ॥

रवि पडिवऽट्टमि नवमी कर मूल पुणव्वसू घणिट्टा य ।

अस्सिणि पुस्सो य तहा ति-उचरा रेवई सिद्धा ॥ ६

सोमे नवमी वीया मियसिरि अणुराह पुस्सु रोहिणिया ।

सवण इय पच रिक्खा मयत्तरे जया तिहि सुहया ॥ ७

तिय छट्टऽट्टमि तेरसि मूलऽस्सणि रेवई य असलेसा ।

मियसिर उत्तरभद्व इय सिद्धा भूमवारंमि ॥ ८

बीया सचमि वारसि असलेसा पुस्सु सवण अणुराहा ।

क्वित्तिय रोहिणि मियसिरि बुद्धदिणे इय सुहा भणिया ॥ ९

पचमि दसमिद्वारसि पुन्निम अणुराह पुव्वफग्गु फरं ।

पुस्सु पुणव्वसु रेवइ अस्सणि य विसाह गुरि सिद्धा ॥ १०

सुक्के तेरसि नवा अणुराहा सवण पुव्वफग्गु तिय ।

उत्तरसाढ पुणव्वसु रेवइ अस्सिणिय रिद्धिकरा ॥ ११

सणि नवमि चठथि अट्टमि चठइसी सवण साइ रोहिणिया ।

मह सयमिस पुव्वफग्गु तिहि-वार-मि सिद्धिजोय सुहा ॥ १२

॥ इति वार-तिथि-नक्षत्र-सिद्धियोगः^१ ॥

छट्टिद्वारसि चठदसि रवि वारसि तेरसी य सोमदिणे ।

भूमे पडिष इगारसि तेरऽट्टमि चठदसी बुद्धे ॥ १३

गुरि दु चठ सच्च वारसि नम्वि बीय चठत्थि चठइसी सुक्के ।

पण सच्च पुन दह सणि तिहि वार विरुद्ध जाणेह ॥ १४

॥ इति तिथि-वार-विरुद्धयोगः^२ ॥

सुराइ वारसीओ इग्गुणजा छट्टि कक्कजोगोऽय ।

रवि ससि सच्च बुहिर्ग तिय सवस्य छ गुरि सुक्कि तिया ॥ १५

॥ फर्फट-सवर्त्तयोगौ ॥

मर चित्तुत्तरसाढा घण-उत्तरफग्गु-जिट्ट-रेवइया ।

सुराइ जम्मरिक्खा सुणेह तह वज्जमुसल पुणो ॥ १६

॥ इति जन्मनक्षत्र वज्जमुसलं च ॥

१ दृश्यतां प्रथम श्लोकम् । २ दृश्यतां द्वितीय श्लोकम् । ३ दृश्यतां तृतीय श्लोकम् । ४ दृश्यतां चतुर्थ श्लोकम् ।

रवि मह ति विसाहार्हं यदि विसाहा ति-मुव्वसाढार्हं ।
 कुजि अह घणिद्वतिय बुह मूल ति रेवयार्हया ॥ १७
 गुरि क्विचिय रोहिणि तिय भिगु रोहिणि पुस्त तिय सणे हर्त्यं ।
 उत्तरफग्नु तिय तह जमघट्टप्पाय-मिञ्चुकमो ॥ १८

॥ इति जमघटः । उत्पातादित्रययोगः ॥

विक्खम मूल गंढे अइगढे षज्जु तह य वाघाए ।
 वइधिइ सूराइ कमे अइदुट्ठा सूलजोगा ए ॥ १९

॥ इति शूलयोगः ॥

रवि सत्त पण ति षठ वर्सु चदे रसं वेर्ये नर्येण मुणिं रामां ।
 पण तिय इग दु छ मूमे चठे केर मुणिं पचे एंग बुहे ॥ २०
 रामे इग छ वर्सु चठ गुरि भिगु दुं मुणिं सैरग्गिं मुणिं सणि रसां ।
 षठ छ दु कुलि-उवकुलिया कटय पहरइद्ध कालकमे ॥ २१

॥ इति कुलिक-उपकुलिकादित्रयम् ॥

इग दुभि छ ष रविणो चदे पढमइद्ध पचमी सुहया ।
 चठ-सत्तइद्धा मूमे तिभि खढइद्धा बुहम्मि सुहा ॥ २२
 वो पष सत्त जीवे सुहे चठ पढम छ ष अट्ट वरा ।
 सणि सत्तइद्धम पचम पहरइपमाण सुहवेला ॥ २३

॥ शुभवेला इवम् ॥

दुपहर षट्ठिए ऊणे दुपहर घट्टि एगि अहिय मज्झण्हे ।
 विजय नाम मुहुत्त पसाहर्गं सयलकज्ज सया ॥ २४

॥ विजयाहयमुहूर्तम् ॥

जइ पुण तुरिय कज्ज हविज्ज लग्ग न लम्भए सुद्ध ।
 ता छायाधुवलग्ग गहियव्व सयलकज्जेसु ॥ २५

5 दृश्यतां पञ्चम कोष्ठम् । 6 दृश्यतां षष्ठ कोष्ठम् । 7 दृश्यतां सप्तमं कोष्ठम् ।

रवि वीस चदि सोलह कुजि पनरह सङ्ग बुद्धि चउदसग ।
गुरि तेर सुद्धि सणिणो वारह वारंगुले सको ॥ २६

अथवा

सणि सुद्धि सोमबारे सङ्गुद्ध पया बुद्धिऽद्ध नव भूमे ।
गुरि सच रविष्कारस नियतणु छाया उ सुहकज्जे ॥ २७

॥ छायालग्नम् ॥

मह य घणिद्धा उदए उद्धो कित्तियऽणुराह घू तिरिओ ।
उद्धे घयाह कीरह तिरिए दिक्खा-पयट्टाई ॥ २८

॥ शुषललग्नम् ॥

मुणि^८ घडिय सूलग्गि विक्खमे पच तिभि वाघाए ।
वज्ज अङ्गह नव नव परिह वल वज्जि सेस मुहा ॥ २९

॥ योगः ॥

जाणेह काल होरा पढमा वाराहिवस्त त्तो य ।
छट्टे छट्टे ठाणे घडिया अट्टाहया जाव ॥ ३०

॥ कालहोरा^९ ॥

घण-मीणे विस-कुमे अज-कळे मिहुण-कन्न अलि-सीहे ।
मिर्ये-तुल रवि वङ्कमे बु चउ छ अह दसमि वारसिया ॥ ३१

॥ इति सूर्यदग्धतिथयः^{१०} ॥

कुम-घणे अज-मिहुणे तुल-सीहे मयर-मीण विस-कळे ।
विच्छिय-कळे सुकमे पुव्वुत्तिही य ससिदग्गा ॥ ३२

॥ इति चन्द्रदग्धतिथयः ॥

मेसाह कमि चउळे पडिवाई पचमिस्त पा पाय ।
एव तप्परए पुण जा पुनिम कूरदग्गतिही ॥ ३३

॥ इति कूरदग्घास्तिथयः^{११} ॥

८ दृश्यतां अष्टम कोष्ठम् । ९ दृश्यतां नवम कोष्ठम् । १० दृश्यतां दशम कोष्ठम् । ११ दृश्यतां एकादश कोष्ठम् । १२ दृश्यतां द्वादश कोष्ठम् ।

चठ छठे नव वसमे तेरसमे वीसमे य नक्खचे ।
 रविरिक्खाठ गणिज्जइ रविजोय^१ सयलकज्जकरं ॥ ३४
 रवि-कुज-बुह-सियवारा दुगतरे भरणिमाइ रिक्खाइ ।
 पुत्तिम तिय भद्दा तिहि निवजोया तरुणजोगा य ॥ ३५
 नदा पचमि नवमी अस्सणिमाई दुगतरे रिक्खा ।
 बुह-भूम-सोम-सुष्ठा कुमारयोगा मुणेयव्वा ॥ ३६
 रविजोय-रायजोए कुमारजोए सुसुब्बदियहे वि ।
 ज सुहकज्ज कीरइ त सव्व बहुफल् हवइ ॥ ३७
 ॥ इति रविजोग^२ राजजोग कुमारयोगअयम्^३ ॥
 गुर कुज सणि तिहि भद्दा मिय चित्त घण्टिठ्ठ जमलजोगोऽय ।
 तिप्पाए नक्खचे इय सहिय तिपुक्खरं जाण ॥ ३८
 जमल-तिपुक्खरजोए सुहकज्ज पुत्तजम्म-वीवाहं ।
 नट्ट-धिणट्ट सव्व हवेइ त बिठण-तिठण कमे ॥ ३९
 ॥ इति जमल त्रिपुष्करयोगौ^४ ॥
 वे वार सणि विहप्पइ दु दु अंतरि किच्छिगाइ नक्खत्ता ।
 तिहि रत्ता तेरऽट्टमि नायव्वा धविरजोगा य ॥ ४०
 जुब्ब जणावणीय जलासए सुव अणसणार्हण ।
 ज पुण वि अकरणीय त कीरइ धविरजोगेण ॥ ४१
 ॥ इति स्यविरयोगः^५ ॥
 सणि ससि बुह अभिसेय बुह-गुर-सुक्केसु वत्थपहिरणय ।
 सुरे कज्जारंभ पुर नंगल मगले कुज्जा ॥ ४२

इति भीर्षद्रांगजठफुरफेखरिचिते ज्योतिषसारे
 दिनशुद्धिर्नाम प्रथम द्वारं समाप्तम् ॥ गाथा ४२ ॥

१ सूर्यनक्षत्रात् चतुर्गणत्र चाम गच्छीषम् । ४।६।९।१०।११।१२०। रविजोग
 अयम् । 'इहस्त भय पपाणजस्त भजति गयपडसइस्ता ।

तइ रविजोगसज्जा गयजन्मि ग्हा न बीसंति ॥"

13 दृश्यतां प्रयोद्ध कोष्ठम् । 14 दृश्यतां चतुर्विध कोष्ठम् । 15 दृश्यतां पञ्चदश
 कोष्ठम् । 16 दृश्यतां षोडश कोष्ठम् । 17 दृश्यतां सप्तदश कोष्ठम् ।

एतैर्यज्ञेणाह—

प्रथमं कोष्ठकम्

वार	तिथिसिद्धियोग	महासिद्धियोग
रवि	१।८।९	ह।मू।पु।घ।अ।पु।उ३।रे।
बुध	१।२ मर्त० ज्ञेया	मृग।अनु।पुष्य।रो।अ।
मंगल	३।१५।८।१३	मू।अश्वि।रे।अस्से।मू।उम।
शुभ	२।७।१२	अस्से।पुष्य।अ।अनु।ह।रो।मू।
शुक्र	५।१०।११।१५	अनु।पू०फा।ह।पुन।पु।वि।रे।अश्वि।
शनि	१।१६।११।१३	अनु।अ।पू०फा।उ०फा।उ०पा।पुन।रे।अश्वि।ह
	१।७।८।१४	अ।स्वा।रो।मघा।शत।पूर्वाषाढ्युनी

द्वितीयं कोष्ठकम्

वार	तिथिसिद्धय	कर्कट	संवत्	वज्रमुशरु	यमघंट	उत्पात	मृत्युयोग	काण्ययोग
रवि	३।११।१४	१२	७	भरणी	मघा	विशा	अनु	ज्येष्ठा
शुभ	१।२।१३	११	७	चित्रा	विशा	पू०पा	उ०पा	अभि
मंगल	१।११	१०	०	उ०पा	आर्द्रा	शनि	शत	पू०भा
शुक्र	१।३।८।१४	९	१।३	शनि०	मूळ	रेयती	अश्वि	मघीर
शुक्र	२।७।७।१२	८	६	उ०फा	हृषि	रोहि	मृग	आर्द्रा
शुक्र	१।१५।७।१४	७	३	ज्येष्ठा	रोहि	पुष्य	अस्से	मघा
शनि	५।७।१०।१५	६	०	रेयती	हस्तु	उ०फा	हस्तु	चित्रा

तृतीयं कोष्ठकम्

वार	कुलिक	उपकुलिक	कंटक	अर्यग्रहर	कालबेला	शुभवेलाग्रहरार्ध
रवि	७	५	३	७	८	१।१५।९
बुध	६	४	२	७	३	१।८।५
मंग	५	३	१	२	६	५।७।८
शुभ	४	२	७	५	१	३।३।८
शुक्र	३	१	६	८	४	२।१।७
शुक्र	२	७	५	३	७	५।१।६।८
शनि	१	६	४	३	२	७।८।५

नवमी कोष्ठकम्

राजयोग, शरणयोग-द्वौ		
तिथि	नक्षत्र	घार
१५	मरा। सुग। पुष्य	रवि
३	पू० फा। शिवा। मनु	बुध
२	पू० पा। घ।	मंग
७	उत्तर मा	शुक्र
१२		

वशमी कोष्ठकम्

कुमारयोगः		
तिथि	नक्षत्र	घार
१	अश्वि। रो	बु
३	पुन। म	मं
११	ह। विशा	शो
५	मूळ। अ	शु
१०	पू० मा	

पक्ष्मणी कोष्ठकम्

धर्मयोगः		
तिथि	नक्षत्र	घार
२	शु	शुक्र
७	वि	मंग
१२	घ	शनि

दाक्षी कोष्ठकम्

त्रिपुरयोगः		
तिथि	नक्षत्र	घार
२	कृत्ति। पुन	शुक्र
७	उ० फा। वि	मंग
१२	उ० पा। पू० मा	शनि

अयोध्या कोष्ठकम्

स्वविरयोगः		
तिथि	नक्षत्र	घार
४	कृत्ति। मार्द्रा	शनि
९	भास्वेया	अ
१४	उत्तर फासुनी	र
१९	स्वाती। ज्येष्ठा	बु
८	उत्तराषाढा	ह
०		स्व
०		ति

चतुर्विंश कोष्ठकम्

सूर्यादिग्रह राशिस्थिति	रवि मासु १	शुक्र दिन २।	मंग मासु १॥	बुध मासु १	गुरु मास १३	शुक्र मासु १	शनि मास ३०	राहु मास १८
उदयदिन सं०	०	०	१६०	३६	३७२	२५१	३४२	०
अस्तदिन सं०	०	०	१२०	१३	३२	९	४२	पश्चि० पूर्व०
पक्षदिन	०	०	१५	२१	११२	५२	१३४	०

षोडश कोष्ठकम्

रवि ३।३।१०।११	शुक्र १।३।३।७।१०। ११ सित्त० २।५।१	मंगल ३।३।११
राहु ३।३।१०।११	गोचरकुंडलिका शुभा महा	बुध २।३।३।१०।११
शनि ३।६।११	शुक्र १।२।३।४।५। ८।९।११।१२	शुक्र २।५।७।९।११ विषाहे मय्य

पञ्चदश कोष्ठकम्

३।३।११	उत्तिम
५।५।१०।१२	मध्यमा
३।३।१२	अधमः
महत्पराह	फल इति

सप्तदश कोष्ठकम्

शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
११	५	३	१२	३	१२	७	२	२	५	२	१२	१	८
३	९	११	०५	११	०५	१	५	४	३	११	०८	३	७
१०	४	०६	०९	०६	०९	११	८	८	१	५	०४	८	५
६	१२					१०	४	१०	८	७	०३	११	३
						३	९	११	१२			१२	३
रवि शेषः शनि विना	शनि यामशे रवि विना	भूमय यामशेषः	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना	शुभ शेषः शुभ विना

[द्वितीय व्यवहारद्वारम्]

सणि तीस गुरू तेरह अट्टारस राहु दिवदु मासु कुजो ।
 बुह-सिय-रवेगु मासो सिवा दु दिण चदु रासिठिई ॥ १
 खडु सैयं सट्ट छतीसो तिनि वैहँचर दु-एग-र्यनाँसो ।
 तिभि वैयोळ गारय(ह) आइ कमे उदयदिणसंखा ॥ २
 सुँन-रवि सोले वसणो नदं वयालीसँ पच्छिमत्य दिणा ।
 मूमाई तह पुव्वे बुह सिय वचीसँ सर्गसियरी ॥ ३
 पणसँट्टि एगँवीस धीरँसअहिय सय च वावँना ।
 वैरँतीस सयं दियहा वळगया मगलाइ कमे ॥ ४

॥ इति ग्रहाणां राशि-स्विति-उदया ऽस्त-वक्रदिनसक्षा(ख्या) ॥

रवि तिय छट्टो वसमो चंदो तिय सत्त छ इग वसमो य ।
 सियपक्खि दु पण नवमो गुरु पचम दु नव सत्तमओ ॥ ५
 बुहु दु चठ खडु व्हट्टो कुजु सणि ति छ मिगु छ सत्त वसरहिओ ।
 राहु तिय वस छट्टो गोयरि सवि गारहा सुहया ॥ ६
 रवि मगलु पविसंता चदु सणी निस्सरंत गुरु अंते ।
 मज्झगया बुह सुक्खा सुह-असुह फल पयच्छति ॥ ७
 बुहु विज्जा-गमणि सिओ सणि दिक्खा गुरु विवाहि जुद्धि कुजो ।
 निवदसणमि सूरु सव्वसुकज्जे यली चदो ॥ ८
 नव सत्त पच धीओ दिवायरोऽ सुरगुरू य सि छ व्हमो ।
 एए जहुत्तपूहय हवति सुपसन्न धीवाहे ॥ ९

॥ इति जन्मराशितो ग्रहाणां गोशरः ॥

गहणे रासीओ जानिय रासी ति चउ अट्ट गार सुहा ।
 पण नव व्ह ऽत मज्झिम, छ सत्त इग बुद्धि अइअहमा ॥ १०

॥ इति ग्रहणराशिफलम् ॥

षड्वल सियपक्खे कसिणे ताराबलं सुरिक्खाओ ।

षठ छै नैषुत्तिम दुँ इगर्ह मज्झिमा ति' पणै सच्चैऽहमा ॥ ११

॥ इति ताराबलं जन्मनक्षत्रात् ॥

जो गहु गोयरि अबलो तस्समसुहमक्कि जइ गहो कोइ ।

हुइ धामवेहि सु गहो असुहो वि सुहस्स फलु वेइ ॥ १२

रवि सणि विणु सणि रवि विणु च्चद विणा बुहु बुह विणा चंदो ।

असुहक समसुहके सेसस्स गहाण वेहसुहा ॥ १३

गारह तिय दह छ सुहो पण नव च्चरंतिमो रवी असुहो ।

सणि कुज ति गार छ सुहा असुहंतिम पंचमा नवमा ॥ १४

सत्तेग छ इक्कारस दह तिय च्चदो सुहकरो भणिओ ।

दु पणतिमऽट्ट च्चठ नव असुवरो वामवेहमि ॥ १५

दु च्चठ छ अठ वह गारस ठाणे बुहो महावली होइ ।

पण ति नवेगऽट्टते असुहो विय होइ नायव्वो ॥ १६

धीओ इक्कारसमो नव पचम सच्चमो य विद्धिकरो ।

धारऽट्ट दह च्चटत्यो तइओ य असुवरो जीओ ॥ १७

सुहो इगाइ जा पण अट्ट नविक्कार अंतिमो सुहओ ।

अठ सत्तिग दह नव पण इक्कारस छ तिय विरु सुहो ॥ १८

॥ इति सूर्यादिग्रहाणां जन्मराशितो धामवेपः, फलाफलम् ॥

पुंवेऽग्गी जमै नेरुँ पच्छिमै वायव्ये उच्चैरीर्षाण ।

इय अट्टदिसा सुकम पायालाऽऽयाससहिय वसं ॥ १९

॥ इति दिसाक्रमम् ॥

सिरि' मुहि कंधे' य सुर्यो कैरि हियेपु नाहि गुर्झ जाणुं पंठ ।

ति ति दु दु दु पण इगेग दु छ रवि रिक्खा उ गण सुकमे ॥ २०

एयस्स फल कमसो सिरिव्ह मियहार सुहँठ परंपसं ।
चोरी सरं लँहुतुटो तिररत्त विदेस अप्पात्त ॥ २१

॥ इति रविनक्षत्राद् रविष्यक्रमम् ॥

मुंहि दाहिणैकर पाए वामकरे हिये सिरै नयणे गुञ्जे ।
इगे चठे छे चठे पणे ति दे दे सणि नक्खत्ताट सुकमेणं ॥ २२
रोय लाह विदेसं घघणे लाह च पूय सुहँ मिर्धु ।
भणिया एह गुणागुण गणिज्ज ता जाव नियरिक्ख ॥ २३

॥ इति शनिष्यक्रमम् ॥

चठ सिरि चठे दाहिणकरि कठिगे पण हिये छ पाय वामकरे ।
चठ, ति नयणि गुररिक्खा पय वामकरं वज्जि सेस सुहा ॥ २४

॥ इति गुरष्यक्रमम् ॥

तम रिक्खु मुंहि ति फुल्लिये चठ फलिये ति अहले ति झडिये गुडिछ
तिय रायस तिय तामस चठ सुहँ तिय असुहँ तमचछ ॥ २५
फुल्लिय फलिये लाह अपा(खा)णि लच्छी सुह च सुहि रिक्खे ।
सुह अहल झडिय रायस तामस असुहे य असुहतम ॥ २६

॥ राहुनक्षत्राद् गणनीयम् ॥

राहतनुष्यक—पुव्वो वायव्वो विय दाहिणे ईसाणे पच्छिमैऽग्गी य ।
उत्तरैऽनेरह सुकमे चठघडिय राहु दिणमाण ॥ २७

॥ इति राह दिनष्यक्रमम् ॥

पुव्वुत्तरऽग्गिनेरह दाहिण पच्छिम वायवीसाणे ।
सियपडिययाइ जोहणि कमि संसुह दाहिणे वज्जा ॥ २८

॥ इति योगिनीष्यक्रमम् ॥

कसिणे सत्तमि चठदसि दिण भदा दसमि तीय रयणीए ।
सिय पुम्मिद्वदियहे चठत्थि इक्कारती य निसे ॥ २९

पण घडिय घणहराऽऽइम भयकरी वह दुवालसंतकरी ।

विट्टी तियघडियतिम घण-कणयसुहकरी जाण ॥ १०

मणुं बरुं मुंणि तिहि^१ वेर्यो वरुं रुं ति^१ पुव्ययाइ अठ्ठ विसे ।

पठमपहराइ महा पिट्टि सुहा संमुहा अमुहा ॥ ११

॥ इति भद्राचक्रम् ॥

गिहभूमि सत्तभाय पण दह तिहि तीस तिहि घडिक्क कमे ।

इय विण संख च[उ]दिसि सिर पुळ समक्कि वळ्ळठिई ॥ १२

रविचक्र कोष्ठकम्

मस्तके	३	भीपति
मुखे	३	मिष्टमोजन
कपे	२	स्कंधपति
मुखौ	२	परदेसी
हस्तयोः	२	तस्कर
हृदये	५	ईश्वर
नासि	१	भस्महृष्ट
गुह्ये	१	स्त्रीरत्न
जानुम्यां	२	विदेश
पादयोः	६	अभ्यासु
रविनक्षत्रात् रविचक्रम् ।		

शनिचक्र कोष्ठकम्

मुखे	१	रोग
द० करे	४	शाम
पादयोः	३	विदेश
वामहस्ते	४	बंधन
हृदये	५	शाम
शीर्षे	३	पूजा
निचयोः	२	श्रीमा
गुह्ये	२	सुर्यु
शनिनक्षत्रात् गणनीयम् । जाय जन्मरिक्तम् । शनिचक्रम् ।		

गुरुचक्र कोष्ठकम्

मस्तके	४	राज्यं
दा० हस्ते	४	लक्ष्मी
कंठे	१	विभूति
हृदये	५	राज्यधी
पादयोः	३	पीडा
बा० हस्ते	४	मृत्यु
मथयोः	३	सुखमाप्ति
बृहस्पतिनक्षत्रात् गणनीयम् । जाय जन्मरिक्तम् ।		

शुक्रचक्र कोष्ठकम्

मधुम	१	मुख मक्षत्र
शुभ	३	पुष्कित मक्षत्र
शुभ	४	पक्षित मक्षत्र
अशुभ	३	अपक्षित मक्षत्र
अशुभ	३	शङ्कित मक्षत्र
शुभ	१	शुद्धि मक्षत्र
अशुभ	३	राजस मक्षत्र
अशुभ	३	तामस मक्षत्र
शुभ	४	शुभ मक्षत्र
अशुभ	३	अशुभ रिक्त
शुक्रनक्षत्रात् रेखाशुभाशुभा ।		

राहपडीचक्र कोष्ठकम्

ईशा १६	पूर्व ४	अग्नि २४
उत्तर २८	राहपडी चक्रम्	दक्षिण १२
वायु ८	पश्चिम २०	मैत्रास्य ३२

तिथियोगिनीचक्र कोष्ठकम् ।

ईशा ८	पूर्व १२	आग्नेय ३१२
उत्तर २१०	तिथियो- गिनी चक्र	दक्षिण ५१२
वायु ७१५	पश्चिम ३१४	मैत्रास्य ४१२

मद्राचक्र कोष्ठकम् ।

पूर्व रुप्ये दिवा १४ मह १	आग्ने शुक्र दिवा ८ मह २	दक्षिण रुप्ये दिवा ७ मह ३	मैत्रास्य शुक्र दिवा १५ मह ४	पश्चिम शुक्र रात्रि ४ मह ५	वायव्य रुप्ये रात्रि १० मह ६	उत्तर शुक्र रात्रि ११ मह ७	ईशान रुप्ये रात्रि ३ मह ८
---------------------------------------	-------------------------------------	---------------------------------------	--	--	--	--	---------------------------------------

॥ इति मद्राचक्रं सम्पूर्णां वर्षां प्रहरमाने ॥

वत्सचक्र कोष्ठकम् ।

ई	कम्पा	शुक्रा	दृष्टिक	आ			
सिंह	५	१०	१५	२०	२५	३०	मि
	२०	<div style="text-align: center;"> <p>पूर्व</p> <p>उत्तर — इति वत्सं — दक्षिण</p> <p>मध्य</p> </div>					
२५	३५						
३०	४०						
३५	४५						
४०	५०						
मिथुन	५	१०	१५	२०	२५	३०	५
वा	५	१०	१५	२०	२५	३०	५

मिथु सणि तमु सचु रवे, तमु चदे, बुध कुजे, मसी बुद्धे ।

बुध मिथु जीवे, सुके रवि ससी, मदे रविदु कुजा ॥ ३४

चं मं गु मिच सरे, पु र चदि, र च गु भूमि सु र बुद्धे ।

च म र गुरि स बु सिए, बु सु मदे, मिच सेस समा ॥ ३५

॥ इति राशुमित्रीवासीना ॥

शत्रु-मित्र-उदासीन ग्रहकोष्ठकम् ।

ग्रह	रवि	शुक्र	मंग	बुध	शुभ	शुक्र	शनि
शत्रु मित्र सम	शु.श.प र.मं.गु. बुधा	शु. बु.र. मं.पु.श.र.	बुधा र.मं.गु. शु.श.र.	शु.र. शु.र. मं.पु.श.प.	शु.शु. र.मं.र. श.र.	र.मं. श.शु. मं.पु.र.	र.मं.मं. बु.शु. गु.प.

मैत्र विस मयर कक्षे कक्षे मीणे तुले य मिहुणे य ।

सुराह कमेणुञ्चा नीचा उञ्चा उ सप्तमगा ॥ ३६

॥ इति उच्चनीचौ ॥

सवणऽह पुस्तु रोहिणि ति-उचरा सय घणिठ उहुमुहा ।

रायामितेय मंदिर छचालवाइ कायव्वा ॥ ३७

भरणिऽसलेस ति-पुव्वा मू म वि किची अहोमुहा रिक्खा ।

नीम्ब सर क्व वावी पकीरप भूमिखणणार्ह ॥ ३८

चित्त अणु जिठ रेवइ मिय कर पुण साइ अस्त तिरियमुहा ।

गय तुरय करह वमण जत सगढ अरहटं कुञ्जा ॥ ३९

॥ इति ऊर्ध्वमुख-अधोमुख पार्श्वमुखा नक्षत्राः ॥

मू स स्ता ह ति-पुव्वा मिय घण सवणऽह चित्त असलेसा ।

पुस्तु पुणऽस्तिणि गुर बुह ससि रवि मिगु इय मुहा विञ्जा ॥ ४०

॥ विचारंमे श्रेष्ठाः ॥

घण पुण रोहिणि रेवइ ति-उचरा पुस्तु पच हत्याई ।

अस्तिणि बुह-गुरु-मुष्ठा वत्यालकारि पुरिसमुहा ॥ ४१

हत्याइ पच रेवइ घणिठ अस्तिणि गुरऽह मिगुवारे ।

चूढाइकणयरयण घत्य पहिरेइ नारिवरा ॥ ४२

॥ इति पुरुषस्त्रियो घञ्जालंकारे प्रधानाः ॥

पाणिगहणाठ गमण पढमे तइए य पचमे वरिसे ।

गुर मुष्क पच सयले विवाहलग्गो व मेलग्गो ॥ ४३

रोहिणि मूल ति-उचर मह मिय कर चित्त पुस्तु घण साई ।

मुहवारे नषवहुया मुगिहिपविट्टा ह्वइ मुहया ॥ ४४

॥ नूतनयद्गृहप्रयेसे छुमदिननक्षत्राः ॥

क्वित्चि भरणि सलेसा पुणव्वसू चित्त सवण मूल महा ।

अदा पुत्तो य तथा न कुणइ न्हाण पसू य तिया ॥ ४५

॥ प्रसूतास्त्रीस्त्वाने पते नक्षत्रा नियेषाः ॥

पचग घणिट्ठगाई जा रेवइ पचरिक्ख ताव घुव ।

वक्खिणदिसे न गम्मइ न कट्ट तिणगहण गिहछाया ॥ ४६

इत्थ सधणाइ तिय तिय अणुहार(राह)स्तिणि अमीइ मिय मूल ।

पुस्सु पुणव्वसु रेवइ सुहया गुर चव भेसिजे ॥ ४७

॥ इति भैरवजे(पञ्चे) ॥

जे इच्छति सुसहल नववहुय सवाल गुव्विणी ते वि ।

न हु गच्छति पएग दाहिण तह समुहे सुच्छे ॥ ४८

दुष्काल वेसमगे रायमए इच्छि नयरि वीवाहे ।

जे तिय तिवार आगय ताण सुच्छो न ह्मेइ ॥ ४९

पोढसिय सुच्छि दाहिण अगच्छइ संमुह च वजेइ ।

कम्मअ चेय तवस्तिणी दाहिण समुहो न दूसेइ ॥ ५०

॥ इति छुक्कफलम् ॥

सिंघट्टिय जइ जीवे महमुत्त होइ अहय रवि मेसे ।

ता कुणहु निव्विसंक्क पाणिग्गहणाइ कम्माण ॥ ५१

॥ इति मते गुरसिंघस्यफलम् ॥

जो कच्चु जेण रिक्खे भणिओ सो तस्त मुहुति कायव्वो ।

दिण निसि पनरसम सो ज हुइ त मुहुतपरिमाणो ॥ ५२

अइ भैहि मि(चि?)त्तं महं घणं पुव्वुत्तरं साद ऽभीई रोहिणियां ।

जिंठु विसेइ मूलं सैय पुव्वुत्तरं फग्गुं दिणमुहुता ॥ ५३

रयणिमुहुत्त अहो पुव्वामइइ अट्टे नक्खचा ।

पुणव्वसुं पुत्तुं सवणं करं चित्तं सोई य पन्नरसा ॥ ५४

॥ इति दिन-रात्रिमुहूर्तनाम ॥

मूल मिय सवण हृत्ये पुस्तु पुणव्वसु कुज ऽह गुरुवारे ।
 घणपक्खि सुहदियहे सीमतयउत्तय कुज्जा ॥ ५५

॥ सीमतोन्नयनम् ॥

सवणाइ तिन्नि हृत्य रेवइ अणुराह साइ अस्तिणिया ।
 पुस्तु पुणव्वसुऽभीर्हि ति उत्तरा सुहदिणे ष्वे ॥ ५६
 नामक[र]ण ऽसपासण नयणजण जायकम्म वयवघ ।
 सिप्पाइ चूढकरण तणुभूसणमाइ कायव्व ॥ ५७

॥ इति नामकरण अन्नप्रासन चूडाकरणं च ॥

कर सवण चित्त रेवइ रोहिणि अणुराह पुस्तु जिट्ठा य ।
 अस्तिणि पुणव्वसे धि य करिज्ज सिमुकन्नवेह सुहा ॥ ५८
 पुस्तु पुणव्वसु रोहिणि ति उत्तरेर्हि कुसुभवत्थाई ।
 जत्तेण परिहरिज्जहु जइ वल्लहु सुपइसोहग्ग ॥ ५९

॥ इति कुसुमवस्त्रे निषेधः ॥

रोहिणि पमुहाईण अघय काण च विप्पडं अमलं ।
 सयलद्धसुद्धिसुन्न गयवत्थ कमेण उवएसं ॥ ६०

*

॥ इति भी चन्द्राङ्गज ठफुरफेरु विरचिते ज्योतिषसारे व्यवहारद्वार
 द्वितीयं समाप्तम् ॥ २ ॥

[तृतीय गणितपद्यद्वारम् ।]

०

उज्जेणि दाहिणुत्तर जत्य ठिण सुहसु कीरण लग्गो ।
 तत्यतरस्स जोयण पच उण रसेर्हि ज पत्त ॥ १
 धि-सैर्यं छ उत्तर पिंढे हीणज्जुय दाहिणुत्तरे कमसो ।
 ससि वेर्ये भाइ लद्ध अगुल पडिअगुल ज च ॥ २

रवि^{१२} अगुल सकस्त य विसव च्छायाइ त च मेस तुले ।

अयण सूनदिणेहिं जहिच्छट्टाणस्त नायव्व ॥ ३

॥ इति विषयच्छाया ॥

एगुण संठ्ठेसय पणसट्टि वैसेहि विसवच्छायहय ।

सोलेह वसु राम फल सदेसचरखडियपलाइ ॥ ४

॥ चरखडिकानयनम् ॥

वसु रिक्खे नद नैवे कर ति वैसेण तिय-वैते नद गुणैतीस ।

वैते रिक्ख चरखडिय कमुक्कमे रिणघण कुञ्जा ॥ ५

मेसाइ कमि उवक्कमि इच्छियठाणस्त लग्गपलसखा ।

मणिय घ अओ बुच्छ तक्कालिय ज फुट्ट लग्ग ॥ ६

॥ लग्नानयनम् ॥ स्थापना लिख्यते-

२७८	हीली ओज्जन ७४	भासी ओज्जन ८१	कल्पप्रमाणं पक्षसंख्या ।	
२९९	विषयच्छाप मंगुळ	विषय कल्पमाया मंगुळ		
३२३	मंगु ६ प्र ६०	६ ३९	हीली सं० मेघु २१४	भासी सं० २१२ मीनु
३२३	चरखडिक	चरखडिक	वृषु २४७	२४५ कुंम
२९९	३४	३६	मिघु ३०१	३ १ मकर
२७८	५२	४	ककु ३४५	३४५ धनु
	२२	२२	सिंघु ३५१	३५३ शुक्रि
	परमदिनं घ० ३४ प० ३६	परमदिनं घ० ३४ प० ४४	कन्या ३४२	३४४ शुभ

घण मिहुणगए सुरे जिच्चिय भोयसि फिरइ सकपहा ।

तिच्चिय अयणस धुव अनि पवाहिय इम जाण ॥ ७

पण ख रूठ्ठेणं साग सट्टिकल रूठ्ठसहिय अयणसा ।

ते सुरे वायव्वा लग्गे कती चराणयणे ॥ ८

॥ इत्ययनंशः ॥

संकतीमुत्तसा संकमणं सोहि सट्टि घडियाओ ।
सेसकल वियलज त मेसाइउ वेस फुडसूर ॥ ९

॥ स्फुटसूर्यः ॥

फुडसूरऽयणसजुय तीसाओ सेस ज च असाई ।
तेण ह्य उदयलग्ग त रविरासीउ नायव्व ॥ १०
हिट्ठाओ सट्टिफल उट्टे जुय ख रीम फलजत ।
हीण हिट्टपलाओ सेसाओ लग्ग साहिज्जा ॥ ११
सेस तीसठणं खलु असुद्धलग्गे फलसगाईणि ।
मेसाइमुत्तसहिय अयणसविहीण फुड लग्ग ॥ १२

॥ इति इष्टकालजन्मादि स्फुटलग्नम् ॥

एव च फुडियलग्ग भणिय, मणामित्य सत्तवग्गविहिं ।
गिहं होरो देऽण नव वोरह सेच तीसंसा ॥— वारं ॥ १३
रवि सीहो ससि कळो कुज अलि मेसो य बुह मिहुण कळा ।
गुर घण मीणो सिय विस तुलो य सणि कुम्भ मयर गिहा ॥ १४

॥ इति गृहस्वामी ॥

लग्गाद् पढम होरा विसमे सूरस्त तह य चवसमे ।— होरा ।
विष्ठाणो य तिभागो सपच नव अहिवाई कमसो ॥— द्रेऽण । १५
अज सीह घणु अजाई विस मयर त्थी नवंस मयराई ।
तुल मिहुण घड तुलई कळो अलि मीण कळाई ॥— नवांशकः । १६
नियअहिव्याइ सुकमे वारस असा मुणेह इच्छिक्के ।
एव च सत्तमंसो गणिज्जे जम्मलग्गामि ॥ १७

॥ इति द्वाषशांशाः स्वराशौ ॥

सैर बोण वंसु मुणिविये मगल सणि जीव सुद्धस्त ।
विसमे लग्गे सुकमे उवक्कमे स मिण तसंसा ॥ १८

॥ इति त्रिंशांशः ॥

फुडलमास्तसाई कलपिंह नैवं छं दुसैयं विवढसैपै ।
सद्विं फल चठठाण इय खडुवग्गस्त खडुवग्ग ॥ १९

॥ इति सप्तपद्मवर्गशुद्धिः ॥ अथ भाग्यशुभायः-

इगवीस पुव्व सतरह अढ अठरह अट्ट जिण रवी सतरं ।
चउदह छवीस अट्टय मेसाई सुकमि गुणयारा ॥ २०

छमाभि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृद्धि	धम	म	इ	मी
शुभाय	२१	२४	१७	<	१८	<	२४	१२	१७	१४	२६	<

जो लग्गो ठाविज्जइ तीसंसो तस्स गुणह गुणयारे ।

ज हुइ त पल उवरिं हवइ छ पण वग्गसुद्धी य ॥ २१

अह ज लग्ग सुहगह नवसगेगूण त गुणेयव्व ।

नवं फल उवरिं सुद्ध विणावि खडुवग्ग भणहि इगे ॥ २२

॥ इति पद्मवर्गस्योपायः ॥

इय छ पण वग्गसुद्धी सोमगहाण च सयलकज्जकरा ।

कूरग्गहाण अमुहा सुहया उदयत्यसुद्धि पुणो ॥ २३

दत्तनवसगसामी जा पिक्खइ लग्ग उदयसुद्धि इम ।

दिक्खा पयट्टमाई सुहावहा सव्वकज्जेसु ॥ २४

॥ इति उदयशुद्धिः ॥

जोइ नवसगु लग्गे तस्स कलत्तसैं सामि जइ पिच्छे ।

लग्गस्त य जा मिच्चं इविज्ज ता अह(त्य ?) सुद्धी य ॥ २५

अस्तशुद्धि स्त्रीणा शुभफरी ।

दसम सिपु नव पणगे चठ अट्ट गहा कैलचठाणाओ ।

पिक्खति पायवुद्धी लग्ग दिट्ठीणुसारि फल ॥ २६

मुत्तेगीरसठाणे संठिय पिक्खति पुन्नदिट्ठि गहा ।
लमां गहाण दिट्ठी गणिज्ज वाम विणा राह् ॥ २७

अथ पुनः केचिदेषमाहुः—

वो धारह्घा य छह्ठ पाओ, दिट्ठी य अह् तिय गारसाओ ।
पथो नव ठाण गहाण पठण, षठकिंद् दिट्ठी पर(रि)पुन्न नूण ॥ २८

अथवा—

तिय दसमगो य मदो तिकोणमो ५ । ९ जीओं अह्-चठ मूमो ।
सुह्-रवी बुह् अवा पुन्नं पिक्खति जायाओ ॥ २९

॥ इति ग्रहाणां हस्तिः ॥

जा तिय ता न विकप्य तियहिय किंद् खडाठ हीलिज्जा ।
स्सद्दु स्सहियाठ हीणा नवहिय ष्ठकाठ सोहि मुज्ज ॥ ३०

॥ इति मुजम् ॥

धरस्सहपिण्डविठण स्स लह् तीसं जुत्त परमदिण ।
कक्कयण सुणदिणे निसिद्ध दिणमाणु मिस्सु भवे ॥ ३१

॥ इति परमदिन मिश्री ॥

अयणसजुत्तसूरं मुजकम करिषि सेस जं रासी ।
तं चरखडियमुत्त मुज्जेहि गुणिज्ज अंस कला ॥ ३२
धरिठ्ठण तीसि भाय लह्पल जुत्त मुत्त खडिचरं ।
त पनरहिजुय हीण अज तुल कमि विठण दिणरयणि ॥ ३३

॥ इति दिन राश्रिमानम् ॥

परमदिणाओ हीण इच्छिपय दिणमाणु सेस सच्चिह्य ।
पंचं फल धारसंगुलं संकस्स दिणद्धलाय धुव ॥ ३४

॥ इति मर्यादाच्छाया ॥

जा जहि काले छाया दिणद्धछाया वि हीण सकेजुया ।
दिणमाण छ चै गुणसेण फल दिवसगयसेसं ॥ ३५

॥ गतशेषदिनम् ॥

दिवसद्ध सकेजुय गयघट्टियफलेण मज्झछायजुय ।
संक्कूणे सेसज्जगुल जहिच्छकालस्स छायवर ॥ ३६

॥ इति इष्टच्छाया ॥

संकपहावग्गजुय तस्स पए कनु कम्मवग्गाओ ।
सोहेधि संकवग्गं सेसस्स पए हवइ छाया ॥ ३७

॥ कर्णच्छाया ॥

वासरमुत्त घट्टी पल संपइ तिहि वार रिक्ख जोयजुय ।
त तच्छालियवारं तिहिरिक्ख जोय जाणेह ॥ ३८

॥ तिथ्यादितष्कालिक योग ॥

॥ इति परमजैन श्री चन्द्राङ्गज ठफुरफेरु विरचिते ज्योतिषसारे
गणितपद तृतीयं द्वार समाप्तम् ॥

[चतुर्थं लग्नद्वारम्]

गुरखित्तगए सुरे रविखित्ते जीठ गुररविच्छि गिहे ।
मुळे य सुरगुरे वा घाले बुद्धे य अत्थमिए ॥ १
तिन्नि वह्द वियह्द घाले पक्ख पण वियह्द भिगु सुए बुद्धे ।
पुब्बावरसुकमेण तिविण गुरू घाल पण बुद्धे ॥ २
हरिसयण अहियमासे रवि ससिगहणाठ जाव सत्त दिणा ।
संकत्ति पढम अग्गिम इय ति विण दिणत्तयाईए ॥ ३
जिट्ठस्स जिट्ठमासे वह्दधिइ वितिपाय विट्ठि ससि नट्टे ।
न हु लग्ग दायल्ल जम्मदिणे जम्ममे मासे ॥ ४

॥ इति षष्ठं मामादिनिषेधः ॥

लंघो पाय वेह^१ जुई जाँमित्त गलग्गहु प्पगँह ।
इक्कमर्ल दिणदोसा चय दिक्ख पइट्ट वीवाहे ॥ ५

॥ अक्रम् ॥

पचुट्टरेहा पण तिरिय रेहा, पत्तेय च्चट्टकूणिहि विन्नि रेहा ।
वामस्स कूणग्गहि वीयरेहा, किचीयमाइ मुणि लच्चवेहा ॥ ९

॥ पंचशालाकाचक्रम् ॥

रवि कुज गुर सणिकमसो धारह ति छ अट्ट पुरउ लच्च ति ।
पुम्मिम ससि बुह भिगु तम पञ्चा धावीस सत्त पच नध ॥ ७
विच्चहेरं मयजणं मरणं कल्हे च धनुनासयरं ।
कच्चधिणोसं गमणं मरणं सूराइलच्चफल ॥ ८

॥ इति छातः ॥

मह चित्ता असलेसा रेवइ अणुराह सवण इय पाओ ।
रविरिक्खाओ ठविज्जइ अस्सिणिमार्हणि जोइज्जा ॥ ९

॥ इति पातम् । अन्नपातक्रम् ॥

ससिहरनक्खत्ताओ जइ हुइ गट्ट इक्कि रेह धीयदित्से ।
ता जाण्णिज्जहु वेह परिहरियच्च जओ भणिय ॥ १०
रवि कुजवेहे विहवा बुहि वप्पा भिगु अउत्त सणि वासी ।
गुरवेहेण तवस्सिणी विलासिणी राहवेहेणं ॥ ११
उत्तरसाढतपप्प सवणाइमघडिय चारिं अम्भीई ।
तत्थट्टिए गहेण उप्पज्जइ रोहिणीमेय ॥ १२
परिहरिधि विरुपाय करिज्ज कच्च असकिय नून ।
सप्पस्स वट्ट अंगुलिछेए ता हवइ कत्थ विसं ॥ १३

॥ इति वेचः ॥

सणि सुक राह केळ रवि कुज रासिकि चदसहिय जुई ।
 बुद्ध विहम्पइसहिय न ह्वह कत्येव जुइदोसं ॥ १४

॥ इति युतिः ॥

लग्नससि जो नवसगु जामिचनवसगो य जेण गहो ।
 चठवन्न जाव सुद्धं उवरे जामिच जुइदोसं ॥ १५
 ससि लग्न सत्तमो जइ कूरगहो त च चयहु जामिच ।
 जत्युमयविसे कूरा चदे अह लग्नि गलगहय ॥ १६

॥ इति यामिन्न-गलगहो ध्रौ ॥

रविरिक्खाठ उवग्गह वज्जह पच्चऽट्टु चठ वसऽट्टारं ।
 उणवीसं वावीसं तेवीसइम च चठवीसं ॥ १७
 विज्जुमुह सुलं असैणी केळैळो वज्जं कपं निग्घार्य ।
 इय नाम फल कमसो अट्टेव उवग्गहाण च ॥ १८

॥ इति उपग्रहः ॥

एगुइ तिरिय तेरस रेहाषकमि विसमजोगिक्क ।
 सम जए अहवीसं तयद्ध तुळ्ळ च सिररिक्ख ॥ १९
 सिररिक्खाठ कमेण अट्टावीस ठविज्ज नक्खत्ता ।
 जइ इक्कि रेह रवि ससि इक्कगल्लु त वियाणाहि ॥ २०

॥ इति इक्कगल्लु । इति लत्तयादिषोसाः ॥

सणि पवणु अमु पाय बुह गुर कल्लह कुजऽग्नि रवि रत्त ।
 सुक्केण य सतावं अहिचक्के किचियाइ ससिनाहिं ॥ २१

॥ इति अहिचक्रदोषः ॥

उदयाओ गय लग्न सकतीमुचदियह जुयसेय ।
 त पचहा ठवेठ तिहि^{१४} रवि^{१५} वई^{१६} ऽट्टं मुणि^{१७} सहिय ॥ २२
 नवसेस जत्य पणं^{१८} तत्य फल कल्लह^{१९} अम्मि^{२०} रायमय^{२१} ।
 चोरमय^{२२} मिच्चु^{२३} कमे पइठ विवाहे य ताऽरिट्ठ ॥ २३

॥ इति बुधपंचकदोषः ॥

मुत्ति कलत्ते रषि सणि खडऽट्ट इग ससि छ सत्त अड सुके ।
 इग सत्तऽड कुजि अड गुरि सत्तऽड बुहि किंदि राहु न विवाह ॥ २४
 उदय ऽट्टमगे मम्म नव पचम कूर कंटय मणिय ।
 दसम चटत्ये सल्ल कूरा उदय ऽत्थितं छिह ॥ २५
 मम्मणदोसे मरण कटयदोसे कुलक्खयं हवइ ।
 सल्लेण रायसत्तू छिहे पुत्त विणासेइ ॥ २६

॥ इति लगे वंगकराः ॥

अरिगय नीए वक्के अत्यमिए लग्गरासि निसिनाहे ।
 अषले रषि गुरु षदे अदिट्टसामी सया वज्जे ॥ २७

॥ इति लघुदोषाः ॥

चरलम्गेण य जत्ता बुच्चियमावे विवाह सुरठवणा ।
 पिरलगि गिहपवेसं मेसाई चर यिर दु मावं ॥ २८
 तणु षणु सहयै सुमित्तं सुयै सत्तु कलत्त मिर्षु धम्मं च ।
 कम्म लोह च वैये लग्गाई सुकमि इय भाव ॥ २९
 ससि धीठ कुमुम्ब लग्गो नवस्सगो सुफलु तह य माठरसो ।
 लग्गो मग्गण्हारो भावाहिक्खई य घायारो ॥ ३०
 जु जु माठ सामि मिचे सुहग्गहे दिट्ठ जुत्तु सो सहलो ।
 पावगहे हाप्पिकरो असेसकज्जेहि नायव्वो ॥ ३१
 भावाहिक्खई भाव लग्गावई लग्गा लग्गावइभाव ।
 भावाहिवो य लग्गं पिक्खइ ससिदिट्ट सयलसुह ॥ ३२
 लग्गाहिक्खई जहिं जहिं भावे संखरइ त तहा कुणइ ।
 मित्तगिह्णुच्चविसेसे इय तत्त सव्वकज्जेसु ॥ ३३
 भावतगओ य गहो परमावफल च देइ पिच्छासु ।
 जावंत्तिम इच्छ घढी जम्म विवाहाइ तत्त फल ॥ ३४

सवण घणिष्ठ विसाहा दक्खिण अवरेण मूल पुरसो य ।

कर पुव्वफग्गु उत्तर पुव्वे पुव्वुत्तरासाहा ॥ ४४

सोम सणी पुव्वदिसे गुरु दाहिण पच्छिमेण सुह रवी ।

उत्तर सुह भूमो विय गमणे वज्जेह विगसूल ॥ ४५

॥ इति नक्षत्रचार दिक्कालम् ॥

किञ्चीत्त सत्त सत्त य पुव्वाइ चउद्विसेहिं परिघटिई ।

अग्गी वायव कोणे रेहा उल्लवि न चलिज्जा ॥ ४६

॥ इति परिषच्चक्रम् ॥

पुव्वाइवसदिसेहिं कमेण सियपडिवयाइ हुइ पासो ।

तस्सम्मुहो य कालो गमणे दुञ्जि वि समुहवज्जा ॥ ४७

विणवारं पुव्वाइ कमेण संघारि जत्थ ठाणि सणी ।

काल तत्थ वियाणसु तस्संसुहु पासु भणहि इगे ॥ ४८

॥ काळ पाणौ सन्मुखौ वज्यौ ॥

जिठ्ठा य पुव्वमइव रोहिणिया तह य उत्तराफग्गु ।

पुव्वाइ सुकमि कीला संसुह गमणे विवज्जिज्जा ॥ ४९

॥ इति कीला ॥

घण सीह मेस पुव्वे, विस कभा मयर दाहिणे चदो ।

तुल कुम मिहुण अवरे, उत्तर अलि मीण कळे य ॥ ५०

वामो चदो सुहो निष्, दाहिणोऽष्टाधिकारगो ।

पिट्ठि च असुहो चदो, संसुहो अहसुंदरो ॥ ५१

॥ इति चंद्रचार ॥

निसि अंतिमदुघडीओ पहर पहर पुव्वयाइ हुइ सरो ।

गमणे दाहिण पिट्ठी पवेसगे वामु पिट्ठि सुहो ॥ ५२

॥ इति रविचार ॥

जा नाही वहइ धुव त चरणऽग्गे करेवि चलियव्व ।
सिञ्जति सयलकज्ज इय लग्ग सयललम्माण ॥ ५३

॥ इति इसचार ॥

पडिबऽट्ट पुभिमाऽवम रत्ता तिहि कूर वार भरणिऽद्दा ।
मह किचि विसाहुत्तर ति सलेसा जत्त इय असुहा ॥ ५४
सय साइ चित्त रोहिणि घण सवण ति पुव्व मज्झिमा जत्ता ।
पुण पुस्त मूल रेवइ मिय कर जिट्ठऽस्तिणीऽणुराह सुहा ॥ ५५

॥ इति अघम मध्यमोत्तमप्रस्थानाः ॥

रवि कुज ति छह वह लाहे बुह - गुर - सुक्खा खडत रहिय सुहा ।
इगे छे अडऽते विणा ससि जत्ता लम्मे ति छायु सणी ॥ ५६

॥ याघालमन् ॥

इय महलीय नरवइ पत्याणे पच सत्त वह दियहा ।
पचसयघणुहमज्जे वह ठवरि ठविज्ज सत्थ वत्थाई ॥ ५७
रेवइ मूल ति उत्तर सय साइऽणुराह पुव्वमहक्खा ।
पुस्त पुणव्वसु रोहिणि सवणऽस्तिणि हत्थु दिक्खसुहा ॥ ५८

॥ तिथिवारनक्षत्रप्रधानाः ॥

दु पण छ रवि दु ति छ ससी कुज ति छ वह बुद्धु ति दु छ पण वहमो ।
किं व ति कोणे य गुरू सुक्को तिय छ नव वारसमो ॥ ५९
मवो दु पण छ अडमो सुक्ख विणा सख्वि गारहा सुहया ।
धवाठ कूर सत्तम अइ असुहा दिक्खसमयमि ॥ ६०
रवि ति ससि सत्त वहमो बुहेग चठ सत्त नव गुरू ति छ दो ।
सुक्को दु पच सणि तिय मज्झिम सेसा असुह सेसा ॥ ६१

॥ इति वीक्षालप्रकुंडलिफा उत्तममध्यमाधमा ॥

सियपक्खि पडिब वीया पचमि दह तेर पुभिमा सुहया ।
कसिणे पडिब दु पचमि विवपइट्ठाइ सुहवारा ॥ ६२

सवण घणिट्ट विसाहा दक्खिण अवरेण मूल पुत्तो य ।
 कर पुव्वफग्गु उत्तर पुव्वे पुव्वुत्तरासादा ॥ ४४
 सोम सणी पुव्वदिसे गुरु दाहिण पच्छिमेण सुक्क रवी ।
 उत्तर बुह भूमो विय गमणे वज्जेह दिगसूल ॥ ४५

॥ इति नक्षत्रचार दिक्कश्लम् ॥

किचीठ सत्त सत्त य पुव्वाइ अठद्विसेहिं परिघठिई । । । ।
 अमी वायव कोणे रेहा उल्लधि न चलिजा ॥ ४६

॥ इति परिघचक्रम् ॥

पुव्वाइदसविसेहिं कमेण सियपडिवयाइ हुइ पासो ।
 तत्सम्मुहो य कालो गमणे दुल्लि वि समुहक्खा ॥ ४७
 दिणवारं पुव्वाइ कमेण संधारि जत्थ ठाणि सणी ।
 काल तत्थ वियाण्णु तत्समुहु पासु भणहि इगे ॥ ४८

॥ काल पाशौ सन्मुष्ठी वज्ज्यौ ॥

जिट्ठा य पुव्वमहव रोहिणिया तह य उत्तराफग्गू ।
 पुव्वाइ सुक्कमि कीला समुह गमणे विवज्जिजा ॥ ४९

॥ इति कीलाः ॥

घण सीह मेस पुव्वे, विस कन्ना मयर दाहिणे चदो । ।
 तुल कुम मिहुण अवरे, उत्तर अलि मीण क्के य ॥ ५०
 धामो चदो सुहो निच्च, दाहिणोऽहाणिकारगो ।
 पिट्ठि च अमुहो चदो, समुहो अइसुदरो ॥ ५१

॥ इति चद्रचार ॥

निसि अंतिमदुघटीओ पहर पहर पुव्वयाइ हुइ सरो ।
 गमणे दाहिण पिट्ठी पवेसगे वामु पिट्ठि सुहो ॥ ५२

॥ इति रविचार ॥

दुन्दु वग्गक ठविठ वसु भाए सेस अग्गिमो लहइ ।
बहु काइणि मग्गतो पुरिसो तियपासि सो सहलो ॥ ७२

॥ रिणलभ्यवर्गः ॥

गरुड मजोर सैहे साणे अहि उदरे य मिये मिडे ।
इय अट्टवग्गजोणी पचमठाणे हवइ वयर ॥ ७३

॥ इति पचमे वैरम् ॥

तुरेय गये मेस अहि अहि साणे विराले च मेस मजार ।
मूसुदरे पेसु मेहिसं वेध महिसी य वेध च ॥ ७४

मिये हरिणे साणे वनरे निठेलेदुंग वानरो य हरि तुरेय ।
सीहे पेसु हत्ये एव अस्तिणिमाईण जोणिकम ॥ ७५

॥ नक्षत्राणां जो (यो) नयः ॥

सीह-गये महिस-तुरेय मूसये-मजार वनर-मेस ।
अहि निठेले पसु-वेध मिय-साण विरुद्ध अन्नोन्न ॥ ७६

॥ इति योनिषट्कम् ॥

वर कन्नरासि सामि य सत्तू असुहा य सेस सुह वरणे ।
इय सत्तमेय पीई भणिय, भणामित्य वीवाह ॥ ७७

॥ इति वरणे सप्तधा प्रीतिः ॥

अट्टि वरिसेहि गठरी, नवि रोहिणि, वसहि कन्न, उवरित्यी ।
एव जाव गणिज्जइ, धारहवरिसुवरि न गणिज्जा ॥ ७८

गुर रवि ससि लग्गयले गठरी सेसा इगेगि रहियकमे ।
इय भणिय सुह विवाह न विवाह सत्तवरिसतले ॥ ७९

पच घठी सिहि अंते उह रिक्खते य ति दिण मासते ।
दुहिय अउच विहव कमि हवेइ तिय पाणिगहणकए ॥ ८०

रेवइ मह मिय रोहिणि मूल ति उत्तरणुराह कर माई ।
धुह गुर सिय ससि वारा पाणिगहणे सुहा भणिया ॥ ८१

सवण घणिठ्ठ पुणव्वसु पुस्सु महा मूल साइ रोहिणिया ।
हत्थु अणुराह रेवइ ति उत्तरा हरिणि सुपइठ्ठा ॥ ६३

॥ इति प्रतिष्ठायां तिथिनक्षत्रवारशुभाः ॥

अथ लग्नम्-

दु ति छ ससी ति छ कूरा दु छ किंद तिकोण गुरु पइठ्ठसुहा ।
बुहु वह इगाइ जा पण इग चउ नव वह सिओ सविच्चारी ॥ ६४

॥ इति उत्तिमा ॥

मज्झिम रवि कुज पचम दु पण छ मुणि सुक्खु छ नव सत्त बुहो ।
किंद तिकोणे चदो वहइठ्ठ पण सणि गुरु तईओ ॥ ६५

॥ मध्यमा ॥

सोमगहइठ्ठम ति सिओ मगल्ल सूरु दु अठ्ठ नव किंदे ।
सणिग दु चउ नव सत्तम पइठ्ठ सवि वारहा असुहा ॥ ६६

॥ अथमा इति प्रतिष्ठाविनष्टादिः ॥

गणं नाडि रासि वेम्मा पचम वेहरं च जोणिवेहरं च ।
रासिवेहणं भाव कक्षा वर सत्तहा पीई ॥ वारं ॥ ६७
पुस्सु पुणस्सिणि रेवइ कर साइअणुराह मिय सवण देवा ।
भरणि ति पुव्व ति उत्तर रोहिणि अहा य मणुयगणा ॥ ६८
घण वित्त जिठ्ठ मह सय मूल विसा किचि रक्खससलेसा ।
सुक्खुत्तिम नर रक्खस मरण मज्झिम सेसगणा ॥ ६९

॥ इति देव-मनुष्य (प्य) राक्षसगणाः ॥

अहिचक्खि अस्सिणाई वरकन्न म एगनाडि त वेह ।
कक्षा वरणे असुह सुहय गिहसामि मिच्चाई ॥ ७०

॥ इति नाडिवेषः ॥

समरासीओ अठ्ठम वहरं विसमाओ अठ्ठमे पीई ।
सत्तु खडइठ्ठय असुह दु वारसं तह य अन्नसुह ॥ ७१

॥ इति पञ्चाष्टक-दु (द्वि) श्रावणाकौ ॥

दुन्ह वग्गक ठविठ वसुं भाए सेस अग्गिमो ल्हइ ।
वहु काइणि मग्गतो पुरिसो सियपासि सो सहलो ॥ ७२

॥ रिणलभ्यधर्मः ॥

गरुह मजोर सीहे साणे अहि उदरे य मिये मिंढे ।
इय अट्टवग्गजोणी पचमठाणे हवइ वयर ॥ ७३

॥ इति पचमे वैरम् ॥

तुरेय गये मेस अहि अहि साणे विरालं च मेस मजारं ।
मूसुदुरे पेसु महिसं वेग्घ महिसी य वेग्घ च ॥ ७४

मिये हरिणे साणे वनरे निठेल्लुग वानरो य हरि तुरेय ।
सीहे पेसु हत्थिये एव अस्सिणिमाइण जोणिकम ॥ ७५

॥ नक्षत्राणां षो (यो) नयः ॥

सीह-गये महिस-तुरेय मूसये-मजार वनरं-मेसं ।
अहि निठेल पसु-वेग्घ मिय-साण विरुद्ध अन्नोन्न ॥ ७६

॥ इति योनिषइर ॥

वर कञ्जरासि सामि य सचू असुहा य सेस सुह वरणे ।
इय सत्तमेय पीई भणिय, भणामित्य धीवाह ॥ ७७

॥ इति वरणे सप्तभा प्रीतिः ॥

अट्टि वरिसेहि गठरी, नवि रोहिणि, दसहि कम्म, उधरित्थी ।

एव जाव गणिज्जइ, धारहवरिसुवरि न गणिज्जा ॥ ७८

गुर रवि ससि लग्गवले गठरी सेसा इगेगि रहियकमे ।

इय भणिय सुह विवाह न विवाह सत्तवरिसत्तले ॥ ७९

पच घडी तिहि अंते छह रिक्खते य ति दिण मासंते ।

दुहिय अठत्त विहव कम्मि हवेइ तिय पाणिगहणकए ॥ ८०

रेवइ मह मिय रोहिणि मूल ति उत्तरणुराह कर साई ।

सुह गुर सिय ससि धारा पाणिग्गहणे सुहा भणिया ॥ ८१

अथ लग्नम्-

भिगु ससि विणु सहि (१ णि) छट्टा इगदु चठ नवऽति पच दह सोमा ।

वीवाहे ससि बीओ सव्वे तिय गारहा सुहया ॥ ८२

बुह-गुर छट्टा सणि सूरु अट्टमा सुहय भूम रवि नवमा ।

बुह गुर सुक्का अंते करगहणे सयणसुक्खकरा ॥ ८३

भिगु सस्सू रवि सुसरो सुह दुह लग्ग पस्सू सुयठाण ।

जामित्तवर्ह भत्ता तियस्स जाणेहु वलमाणो ॥ ८४

॥ इति विवाहे लग्नम् ॥

अथ क्षीरकर्म-

छट्टऽट्टमि नम्बि चठदसि अमावस चठयि विट्ठि गडुते ।

संझा निसि मज्झन्हे एए वज्जेह सूरकस्से ॥ ८५

पुस्सु पुणव्वसु रेवइ सवण घणिट्टा मियऽस्तिणी हत्या ।

चित्त बुह सोमवारा खउरं सुहलग्गि कायव्वा ॥ ८६

दु पण नवते सोमा सुहपावा असुह तिय छ गार सुहा ।

बुह गुर सिय किंदि सुहा ससि कूरा असुह सेस खउरि समा ॥ ८७

॥ इति क्षीरकर्मफलाफलम् ॥

रोहिणि महा विसाहा ति उत्तरा भरणि किच्चियऽणुराहा ।

इय मुहण लोयकए इदो वि न जीवए वरिसं ॥ ८८

॥ इति नक्षत्राः सुंजन लोके वर्जनीयाः ॥

सुहलग्गे चवबले खणिज्ज नीमा अहोसुहे रिक्खे ।

उट्टमुहे नक्खत्ते चिणिज्ज सुहलग्गि चवबले ॥ ८९

चित्तऽणुराहा ति उत्तर रेवइ मिय रोहिणी य सय पुस्सो ।

साइ घणिट्ट सुहकर गिहप्पवेसे य टिहसमए ॥ ९०

कूरा ति छ गारसगा सोमा किंवे तिकोणगे सुहया ।

कूरऽट्टम अहवसुहा सोमा मज्झिम गिहारमे ॥ ९१

किंदऽट्टम ति कूरा असुहा तिय गारहा सुहा सबे ।

कूरा बीया असुहा सेस समा गिहपवेसे य ॥ ९२

सूर्य गिहित्यो गिहिणी चदु घण सुकु सुरुगुरु सुक्वं ।
जो सबलु तस्त भाव सबल हुइ नत्यि संदेहो ॥ ९१

॥ इति गृहनीम्ब निवेश प्रवेशे च ॥

चदुबलहीणदियहे चरलग्ग तिकोण किंदि पावगह ।
तिहि रिच कूर वारे रोयविमुक्कस्त ह्माण वरं ॥ ९२

॥ इति रोगीरोगविमुक्ते स्नानदिनम् । इति कुंडलिकालग्रानि ॥

फुडु गोधूलियलग्ग दिणति दिट्टे दुमाय रविदिबे ।

अम्भच्छम्मे जाणसु दुदलतरूपत्तमिलमाणे ॥ ९३

फुल्लति य वल्लीओ सठणा निलयत्थि उच्छगा ह्योति ।

राइसिणि सिरिस किक्किरि पवाढपत्ता मिलति गोधूले ॥ ९४

जमि गोधूलियालग्गे चदो मुची खड्डट्टमो ।

कुलिओ कतिसम्मो य, त च वज्जेह जत्तओ ॥ ९५

रवि-चदुमुत्तरासी पिंढे हुइ जत्य छ च वारस वा ।

तत्य कमि कतिसमो सणिच्छरंते हवइ कुलिओ ॥ ९६

जइ सब्बदोसरहिय गुणवलसहिय च लम्भण लग्ग ।

ता गोधूलिय सुहमवि बुहि एकि सया त्रि वज्जिआ ॥ ९७

अजापाल [य] गोवाला लुद्धा षीवर कोलिया ।

जे घरंति पुणो तेसिं, लग्ग गोधूलिय वरं ॥ ९८

॥ इति गोधूलिकलग्नम् ॥

आसी सट्टकुलेसु सिट्टिकलसो ठाणे सुक्कमाणए,

तस्तगस्त रुहो सुठक्कुरवरो चदु च चदो इह ।

फेरु तचणओ य तेण रइय जोइस्तसारं इम,

दोसत्तग्गिग (१२०२) वच्छरे दुगसय गाहा दु च्चाहिय ॥२४२

॥ इति श्री चद्रांगज ठक्कुरफेरु विरचिते ज्योतिष्कसारे लग्नसमुच्चय

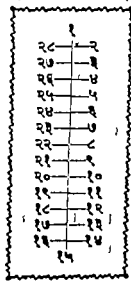
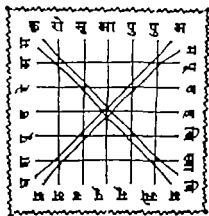
द्वार चतुर्थं समाप्तम् ॥

ज्योतिषसार गाथा २४२ । प्रयागं श्राव ४१४ । यंत्र कुंडलिक सद्धितम् ।

ज्योतिषसार ग्रन्थनिर्दिष्टानां यत्र चक्र कुण्डलिकादीनां स्थापना यथा-

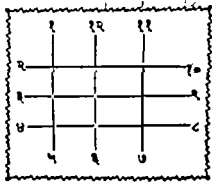
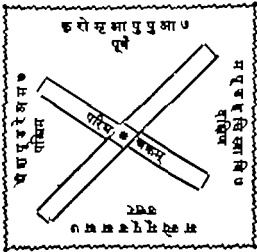
२४ तमे पत्राद्दे सुचितं पञ्चशखाका-
यन्मसिदम्-

२५ तमे पत्राद्दे सुचितं
'इक्ष्वाकु' चक्रमिदम् ।



परिषत्तमसिदम् ।

कांतिसाम्यचक्रम् ।



मह	र	क	मं	पु	ह	शु	वा
रहिमा	२ ५ ११	२ ३ ११	३ १० ११	३ २ १० ११	१ ७ १० ११	३ १ १२	२ ५ ११
मध्यमा	३ ०	७ १०	० ०	१ ७ १०	३ १ २	२ ५	३ ०
अधमा	१ ७ १० ११	१ ७ १० ११	१२ ४ ७ ११	८ १२ ० ०	८ १२ ० ०	१ ७ १० ११	१ ७ १० ११

वीक्षाकुंडलिका उत्तम-मध्यम-अधमा

प्रतिष्ठाकुंडलिकाचक्रम्

र	क	मं	पु	ह	शु	वा	मह
३ ० ११	२ ३ ११	३ १० ११	३ १० ११	१ ७ १०	३ १ १२	२ ५ ११	म कु ंड ल ि का
५ ० ०	१७ ७ ५	० ० ०	१ ७ १०	३ १ २	२ ५	३ ०	
२८ ११ ३०	८ १२ ०	२५ ०					

र	बी	मं	कु	ह	शु	घ	रा	
३	२४	३	११२	११२	११२	३	३	
३	११२	३	४९	४९	४९	३	३	
११	११०	११	१२५	१२५	१२५	११	११	
८	१११	९	१०३	१०३	१०३			
९			११६	११६	११६			

विवाह कुंडलिया

सठर कर्मकुंडलिकार्य

र	बी	मं	कु	ह	शु	घ	रा	
३	२	३	२५	२५	२५	३	३	कर्म कुंडली
३	५	३	११२	११२	११२	३	३	
११	९	११	११४	११४	११४	११	११	
			७१०	७१०	७१०			
०	३६	८	३६	३६	३६	८	८	सप्यम
८	८११		८११	८११	८११			
०								
२५	१	२५	०	०	०	२५	२५	सप्यम
११२	४	११२	०	०	०	११२	११२	
११४	७	११४	०	०	०	११४	११४	
७१०	१०	७१०	०	०	०	७१०	७१०	

प्रश्न	र	क	म	बु	शु	शु	वा
उत्तिमा	२ ५ ११	२ ३ ११	३ ५ ११	३ ५ ११	३ ५ ११	३ ५ ११	२ ५ ११
मध्यमा	३ ०	७ १०	० ०	१ ७ ११	३ ५ ११	२ ५	३ ०
अधमा	१ ७ ७ ८ १० ११	१ ७ ५ ८ ११	१२ ७ ७ ७ ११	८ १२ ० ०	८ १२ ० ०	१ ७ ७ ८ १० ११	१ ७ ७ ७ ११

बीजाकुंडलिका उत्तम-मध्यम अधमा

प्रतिष्ठाकुंडलिकाचक्रम्

र	क	म	बु	शु	शु	वा	प्रश्न
३ ५ ११	२ ३ ११	३ ५ ११	१० १२ ५ ११	२ ३ ५ ११	२ ३ ५ ११	३ ५ ११	उत्तिमा कुंडलिका
५ ०	१२ ७ ५	५ ०	५ ७	३ ०	२ ५ ७	१० ८ ५	मध्यम कुंडलिका
२ ५ ७ १० ११	८ १२ ०	२ ५ १० ७	८ १२ ०	८ १२ ०	८ १२ ०	१२ ७ ७	अधम कुंडलिका

र	ख	मं	पु	ह	शु	वा	य	
३	२४	३	११२	११२	११२	३	३	
३	११२	३	४१९	४१९	४१९	६	६	
११	४१०	११	१२५५	१२५५	१२५५	११	११	
८	३१११	९	१०१३	१०१३	१०१३			
९			१११६	१११६	१११६			

विवाह कुण्डलिया

सुखर कर्मकुण्डलिकापञ्च

र	ख	मं	पु	ह	शु	वा	य	
३	२	३	२५	२५	२५	३	३	उत्तम कुण्डली
३	५	३	११२	११२	११२	३	३	
११	९	११	११४	११४	११४	११	११	
			७१०	७१०	७१०			
०	३१३	८	३१३	३१३	३१३	८	८	मध्यम
८	८१११		८१११	८१११	८१११			
०								
२५	१	२५	०	०	०	२५	२५	अधम
११२	४	११२	०	०	०	११२	११२	
११४	७	११४	०	०	०	११४	११४	
७१०	१०	७१०	०	०	०	७१०	७१०	

ग्रह	र	चं	मं	बु	शु	शु	दा	रा
बृहस्पति	३	२१४	३	२१४	२१४	२१४	३	३
	६	७१०	६	७१०	७१०	७१०	६	६
	२२	९१५	२२	९१५	९१५	९१५	२२	२२
		३१२२		३१२२	३१२२	३१२२		
मङ्गल	९	८१२	९	८१२	८१२	८१२	५	५
	५	३१२२	५	३१२२	३१२२	३१२२	९	९
शुक्र	८१२	•	८१२	•	•	•	८१२	८१२
	४१७	•	४१७	•	•	•	४१७	४१७
	२०१२२	•	२०१२२	•	•	•	२०१२२	२०१२२
	२	•	२	•	•	•	२	२

ज्योतिषसारस्य विवरणम् - द्वार ४, गाथा २४२

प्रथमं दिनशुद्धि द्वारं गाथा ४२

गा १ द्वारगाथा	गा० १ जन्म मसत्र षड्मुश०।	गा० १ योगानां अशुभ घटी।
" २ चार तिथिनामानि ।	" २ यमघंट उत्पाठादियो०।	" १ सूर्यवशास्तिधया ।
" ० मसत्र २८ नामा० ।	" १ शूलयोग ।	" १ सूर्यवशास्तिधया ।
" ० योग २७ नामानि ।	" २ शुभवेद्या षड् ।	" १ कूरवशास्तिधया ।
" ० राशि १२ नामानि ।	" २ कुलिक उपकुलिकादि	" १ कुमारयोगः ।
" ० मसत्र षड्कण्ड षड् ।	षड् ।	" १ राजतरुणयोगः ।
" ० मसत्रे राशया ।	" १ विजयाद्वय मुहूर्त ।	" १ रथिजोगः ।
" ७ चार तिथि मसत्र सि०।	" १ शुभसप्त षड् ।	" १ योगत्रयफल ।
" २ विद्वजयोगः ।	" १ छापाछानो जया ।	" २ यमद्व त्रिपुष्कर ।
" १ कर्कटसंवर्षकयोगः ।	" १ काळ होरा ष २।	" २ स्वधिरयोग ।
		" १ चार गुण ।

एवं गाथा ४२ दिनशुद्धिद्वार

द्वितीयं ध्ययहाय्वारं गाथा ३०

गा० ४ प्रहाणां राक्षिस्थिति	गा० १ योगिनी षड् ।	गा० ३ शुक्र फलाफल ।
षड्पास्तवकदिन ।	" ३ मद्रा षड् ।	" १ शुक्र सिंहस्थफल ।
" ५ प्रहगोषट शुद्धि ।	" २ वस्सगति षड् ।	" ३ दिनरात्रिमुहूर्त ।
" १ तापबल जन्मम० ।	" २ शत्रुमित्रोद्गासीन ।	" १ सीमितोद्ययन० ।
" १ प्रह गोषट राक्षि ।	" १ उद्यनीषी ।	" २ नामकरणमद्यया० ।
" ७ प्रहाणां वामबेध ।	" ३ ऊर्ध्वाधो तिर्यक् ।	" १ कर्षवेधदिन ।
" १ दिशाषड् जया ।	" १ विचारमे षेष्ट ।	" १ कुसुमबस्त्रनिवे० ।
" २ रविषड् जया ।	" २ पुरुषस्त्रियो ष० ।	" १ मंधकापात्रिमस० ।
" २ शनिषड् जया ।	" २ अपूरुहमवेश० ।	
" १ पूहस्पति जया ।	" १ स्त्रियम्भान यजा० ।	
" २ राहवजु षड् ।	" १ पंचक नक्षत्रा ।	इति विषयहाय्वारं
" १ राहदिन षड् ।	" १ मेपज नक्षत्रा ।	द्वितीयं । गाथा ३०

तृतीयं गणितपदद्वारं गाथा ३८

- गा० १ विपुषच्छायाः ।
 " १ चरक्षिआमयनं ।
 " २ छाननयनं ।
 " २ भयनोत्तानयनं ।
 " १ स्फुटसूर्यः ।
 " ३ स्फुटछाननयनं ।
 " ७ पद्वर्गानयनं ।
 " ३ पद्वर्गाटपायाः ।
 " २ उदयशुद्धिः ।
 " १ अस्तशुद्धिः ।

- गा० ४ प्रहाणां दृष्टिः ।
 " १ मुञ्ज कर्म ।
 " १ परमदिनः ।
 " २ दिनघत्रिमानं ।
 " १ मध्याह्नच्छायाः ।
 " १ गतशेषदिनं ।
 " १ इष्टच्छायाः ।
 " १ कर्षच्छायाः ।
 " १ तिथ्यावितक्षसिक
 इति गणितपदं तृतीयं द्वारं । गाथा ३८

चतुर्थं छानसमुच्चयद्वारं गाथा १०२

- गा ४ वर्षमासादिभिषेधः ।
 " १६ छत्तापाताविशेषः ८ ।
 " १ मक्षिके माडीशेषः ।
 " २ बुधपंचकशेषः ।
 " ३ छमे मंगलराः ।
 " १ छानशेषाः ।
 " ७ छानस्य भावाः ।
 " १ छानविशेषकाः ।
 " ३ सप्तसामान्यछानं ।
 " ५ जम्भकुंडलिकाः ।

- गा० १४ पात्राकुंडलिकाः ।
 , ५ शीसाकुंडलिकाः ।
 " ५ प्रतिष्ठाकुंडलिकाः ।
 " १८ विवाहकुंडलिकाः ।
 " ३ शौरकम्मकुंडलाः ।
 " १ मुञ्जमलोचकर्म ।
 " ५ गृहनीम्बप्रवेशः ।
 " १ रोनीम्बामदिनं ।
 " ३ गोपृष्ठीकछानं ।
 " १ संपूर्णकरणं ।

इति छानसमुच्चयद्वारं चतुर्थं । गाथा १०२

इति श्री ब्रह्मगण्डठङ्करकेरुविरचितज्योतिषसार द्वार ४ गाथा २५२
 सं० बीजकविवरणम् ।

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ठक्कुर फेरू-विरचित

गणितसार



[प्रथमोऽध्याय ।]

नमिऊण तिजयनाह लच्छीस गिरीस-सयल देवज्ज ।

लेह्माण गणणपाढी पुन्वायरिएहि जह बुत्ता ॥ १

तत्तो व (१ वि) किंचि गहिय किंचि वि अणुभूय किंचि सुणिऊणं ।

त सयललोयहेऊ फेरू पमणेह चदसुओ ॥ २

पढिकाइणि तह काइणि पढिविस्संसा तहेव विस्ससा ।

जावय होंसि विसोवा वीस उण कमेण नायव्वा ॥ ३

धीसि विसोइहि दम्मो दम्मिहि पचासि टकओ इच्छो ।

वीस कम दीह वित्यरि अह कवी सट्ठि वीगहओ ॥ ४

पव्वंगुलि चउवीसिहि षचीस करगुली य विषेया ।

अट्ठि जवि तिरियगेह पव्वगुलु इक्कु जाणेह ॥ ५

चउवीसंगुल हृत्यो पढिय चहु हृत्यि हवइ उहु इगो ।

त्रिहुसहसिदढि कोसो चहुँकोसिहि जोयणो इच्छो ॥ ६

इय भणिय सरहत्य विक्खभायाम गुणिय पढहत्य ।

वित्यारहु उदय गुण त षण अत्य वियाणाहि ॥ ७

चहुँ करपुढेहि पाई चहुँ पाई ण्णु माणओ भणिओ ।

चहुँ माणेहि वि सेई सोलम सेई भये पत्तो ॥ ८

उहिँ गुजि मासओ हुइ तेहि पि चहु टकु टकि दसहि पलो ।

छहि पलिहि इक्कु सेरो सेरिहि चालीसि इक्कु मणो ॥ ९

जधि सोलसेहि मासठ तेहिधि चहु टकु तोलओ तिरणो ।
सोलहि जवेहि वधी वारहि वधी महाकणओ ॥ १०

सट्टि पलि एग घडिया घडिया सट्टीहि एगु दिणु रयणी ।
दिणि रयणि तीसि मासो वारहि मासंभि वरिष्ठ इगो ॥ ११

एग वह सय सहसं दसहस लक्ख तहेव दसलक्ख ।
कोडिं तह दसकोडी अव्व दसअव्व जाणेह ॥ १२

खख तह दसखव्व संख दससंख पठम दसपठम ।
नील तह दसनील नीलसय नीलसहसं च ॥ १३
दससहस नील तह पुण नील लक्खो धि नील दसलक्ख ।
तह कोडिनील इच्छाइ संख अकाइ नामाइ ॥ १४

॥ इति २५ गणिताङ्क ॥

परिकम्म पणवीसं तहऽट्ट जाई य अट्ट विवहारा ।
अहिगारा चारेय पणयालीसाइ वाराइ ॥ १५

।

इच्छाएगि जुयद्धे इच्छा गुणियं हवेइ संकलिय ॥ १६

१ अथ संकलितमाह—

सम दिण दल मग्ग गुण विसम अग्गिमदलेण सगुणिय ।

ज हुइ त सकलिय न ससय इत्य नायव्व ॥ १७

इच्छा पण्हऽक्खरिहिं गुणिज्जइ, पन्हु मेलि पुणु इच्छ हणिज्जइ ।
त्रिठणिहिं पण्हिहिं भाठ हरिज्जइ लद्धकिहि संकलिठ कहिज्जइ ॥ १८

एग्गाई जाव दस संकलिय पिहगु दस गुणाण च ।

एगुत्तर बुद्धिकमे भणेह एयाण मूल पुणो ॥ १९

सकलियट्ट गुणिगि जुय तस्स पय ण्णि ह्रीण अद्धेण ।

अह विउण वग्गमूले सेस सम संकलियमूल ॥ २०

२. अह(य) व्ययकलितमाह-

जह सकलियपण्डण इच्छिक एगयाइ वड्डेइ ।
 तह विमकलिय छिज्जइ इच्छिक मूलरासीओ ॥ २१
 सेग विमकलियपय संकलियपय च कीरण सहिय ।
 दुन्ह पयतरि गुणिय वलीकय विमकलियसेस ॥ २२
 संकलिय सहस्ताओ दसाइ दस-वसऽहियस्त सकलिय ।
 साहेवि भणसु पडिय ज हुइ विमकलियसेसंक ॥ २३
 विमकलियसेस सोहि वि संकलियघणाठ सेस्त विठणजुय ।
 तस्त पय सेससम त हुइ विमकलियमूलपय ॥ २४
 सकलियपय विठण सेग विमकलियपयविहीणवल् ।
 विमकलियजुय ज हुइ त उवराओ य विमकलिय ॥ २५
 सयसंकलियघणाओ उवराओ तीह जाम विमकलिय ।
 ता किं जायइ त भणि, जह विमकलिय वियाणाहि ॥ २६

३ अथ गुणाकारमाह-

ठवि गुणरासि हिट्ठे क्वाडसंधि च उवरि गुणरासी ।
 अनुलोम-विलोमगई गुणिज्ज सुकमेण गुणरासी ॥ २७
 धीसा सठ वचीसिहि नव सइ चउसट्ट सचवीसेहिं ।
 अहहिय सठ सट्टिगुण किं किं पचेय होति फल ॥ २८
 अह गुणरासी खडिबि इगेग अंकेण गुणवि करि पिंठ ।
 परकमि चडति पती छेय करवि सुकमि गुणिय पुणो ॥ २९

बुढीक गुणाकार सख्यालीक परिज्ञान-

गुणरासि गुणरासी पिहु पिहु पिंठ नवस्त सेसगुण ।
 तह गुणियरासिपिंठ नवसेससम ह्वइ मुद्ध ॥ ३०
 खेवसमखजोए रासि अविगयक्खव जोडणे हीणे ।
 सुज गुणाणइ सुभ सुभगणे सुभ सुत्तेण ॥ ३१

सुन्नस्त य गुणयारं सुन्नस्त य भागहरं तद्वा वग्गं ।
सुन्नस्त वग्गमूल घणाइ भणि जइ वियाणासि ॥ ३२

४ अथ भागाहरमाइ-

जस्ताओ पाढिज्जइ सहरणीओ जु हरइ सुज्जि हरे ।
उवरि लिहि हारणीय हिट्ठि हरंसं भवे भाय ॥ ३३

५ अथ वर्गः-

पढमकु वग्गु ठविय अवरकमे विठणआइ अंकेहिं ।
गुणि पुव्वसहिय पुण तह वग्गजुय ठाणाहियवग्ग ॥ ३४
जो अंकु सिणय अंके गुणिज्ज सो वग्गु अहव इच्छ दुहा ।
वट्ठुण जुय गुणेविणु तहिट्ठवग्गाहिय इय वग्ग ॥ ३५
एगाइ नवताण सोल्लस च्चठवीस अट्ठवीसाण ।
पत्तेय वग्गरासी ज जायइ त भणह सिग्घ ॥ ३६

६ अथ वर्गमूलमाइ-

ज हवइ वग्गरासी तस्सताओ गणिज्ज जाव धुर ।
विसम सम विसमट्ठाणे वग्ग साहेवि मूलक ॥ ३७
विठणु करि चालि माय फलपती तस्स वग्गि सोहि पुणो ।
पुव्वविहि जाव धरिम विठण तमच्चिय मूल ॥ ३८

७ अथ घनमाइ-

धुरिमकघण ठाविय तस्सेव धुरंक वग्गु तिहु गुणिय ।
वीयक्के गणिऊण ठाणाहिय सुकमि जोढिज्जा ॥ ३९
पुणु वीय अंकवग्ग धुरिमकिहि गुणिवि तिठण करि जुत्त ।
पुणु तस्स य अंसस्स य घण करिवि सहिय घणमेय ॥ ४०
इच्छिय अंकु तिहा ठवि उवरुप्परि गुणिय ज हवइ स घणो ।
अग्गिमु पुव्वकि ह्य तिठण पुव्वघणजुयसेसं ॥ ४१

एगाई जाव नव तह सोलस दुसय पचवीसाण ।
तिभि सय नवऽहियाण पचेय किं ह्वेइ घण ॥ ४२

८ अथ घनमूलमाह-

घणपय दोअ घणपण घणपयमाय घणेण पाडिज्ज ।
त लद्धक मूल घालिवि तईयकनलि दिज्जा ॥ ४३
तवग्गु सिठणु तस्सेव पच्छए घरिवि भाठ पाडिज्जा ।
लद्ध पति ठविज्जइ हरकविगमो य कायव्वो ॥ ४४
पतिस्स अंकवग्ग तिठण पुव्वक्कि गुणिवि सोहिज्जा ।
अंति पयस्स घण पुण सोहिय त लद्ध पुण एव ॥ ४५

९. अथ अग्निप्रपरिकर्माष्टकमाह-

मिन्नकु इम ठविज्जइ रू(ऊ)वरि असस्स मज्झि छेयतले ।
हीणंसे विंदुचय अच्छेय जत्य तत्येग ॥ ४६
छेय ह्य रूवरासी अंसा जुय गय सवनण हवइ ।
अभोअछेयगुणिया हवति कम्मि सदिसछेयसा ॥ ४७
सदिसच्छेय करेविणु ता कीरइ जोड हीण अंसाण ।
न हवइ छेयाण जुई कयावि इय भणिय सत्येहिं ॥ ४८
छेयके विठण कए उवरिमरासी हवेइ अदीय ।
सव्वेवि पायरेहिं मिन्नठिई एस नायव्वा ॥ ४९

१० अथ भिन्नसफलितमाह-

सदिसच्छेयसजुई छेएण विहत्त भिन्नसंकलिय ।
ति छ पण नवस पिंड तह पठण ति दिठठ सतिहाय ॥ ५०
आदायस्स वयस्स य सवनण करवि सदिसछेय पुणो ।
पिहु पिहु अंसाण जुई तयनरे मिन्न विमकलिय ॥ ५१
अरू तिहाय खडसा नवसु अट्टाठ सोहि किं सेस ।
सइ तिय पच सतिहा नवम ग्वडमाउ सोहिज्जा ॥ ५२

११ अथ भिन्नगुणाकारमाह-

अंसेण असगुणिय छेएण वि छेय गुणिवि हरियच्च ।
ज हक्क लद्धमक त जाणह भिन्नगुणयारं ॥ ५३
पाऊण पच्च दम्मा गुणिच्च सतिहाय अट्ट दम्मेहिं ।
अद्ध खडसि गुणिय पिहु पिहु किं हक्क तस्स फल ॥ ५४

१२. अथ भिन्नभागाहरमाह-

करिऊण छेय अंसा हरस्स विवरीय न हारणीयस्स ।
पुव्वविहि गुणि विमाय एस विही भिन्नभायस्स ॥ ५५
अट्टाइएहि भाय हरिच्चए पठणसत्तदम्मेहिं ।
घट्टु सतिहाइ विहत्त सवा ठ किं ताण लद्ध फल ॥ ५६

१३ अथ भिन्नवर्गमाह-

अंसाण वग्गरासी हिट्ठिम छेयाण वग्गभाएण ।
पाडेवि ज जि लद्ध त जाण [हु] भिन्नवग्गफल ॥ ५७
अट्टाइयस्स घम्मा सतिहा पच्चस्स पठणसत्तस्स ।
भणि अद्ध तिहाय पुणो जइ वग्गविही वियाणासि ॥ ५८

१४ अथ भिन्नवर्गमूलमाह-

अंसस्स वग्गमूले छेयणमूलेण भाठ पाडिज्जा ।
विसम-सम-विसमकरणे हुइ मूल भिन्नवग्गस्स ॥ ५९

१५. अथ भिन्नघनमाह-

अंसस्स घण कुज्जा छेयस्स घणाण भाउ हरिऊणं ।
ज किंपि तत्थ लद्ध भिन्नघणं त वियाणाहि ॥ ६०
सट्टय-सत्तस्स घण सवाय पनरस पा तिहायस्स ।
ज जायइ घणरासी पचेय त भणिज्जासु ॥ ६१

१६ अथ भिन्नघणमूलमाह-

अंसघणमूलरासे छेयणघण मूलभाठ पाडिज्जा ।
घणपय दोअ घणपए इय करणे हवइ घणमूल ॥ ६२

१७ अथ चैरासिकमाह-

आइ अंतेकजाई ठविच्चए अन्नजाइमज्जेण ।
 अंतेण मज्झि गुणिय आइमभाग तिरासियग ॥ ६३
 जा इच्छारस वमिहि दोसिय कर सत्त कप्पहो होइ ।
 ता च्चवीसिहि वम्मिहि कइ हत्य हवति ते कहसु ॥ ६४
 मणिसु हव नाणवट्ट नव मुद लहति वम्म पणवीस ।
 इय अग्घपमाणेण सोलस मुदाण कइ मुच्छ ॥ ६५
 चवण पल सवाय सतिहा नव वम्म मुच्छ पावेइ ।
 ता छ पल ख्हसूणा किच्चिय वम्माइ पावति ॥ ६६
 वम्मि सवा सत्तेहि पिप्पलि दुइ सेर छट्ठमसऽहिया ।
 लम्मइ ता नव वम्मिहि तिहाय ऊणेहि किं हवइ ॥ ६७
 पाठणवीसा सएहि वम्मिहि सतिहाय पच पत्या य ।
 ता तदुलाइ अन्न कइ लम्मइ इच्छि वम्मेण ॥ ६८
 चारहवञ्जी कणओ सतिहा सय वम्मि तोलओ इच्छो ।
 जइ हुइ त इच्छि मासय वसंसहीणस्त कइ मुच्छो ॥ ६९
 जइ जोयणछट्ठसं फगुलओ च्चलइ सत्त दिवसेहि ।
 ता सट्ठि जोयणाइ किच्चिय कालेण गच्छेइ ॥ ७०
 अंगुलसत्तसो जइ दिणस्त छट्ठसि कीढओ च्चलइ ।
 गच्छिहइ अट्टजोयण नियसई केण कालेण ॥ ७१

अथ पंचरासिकमाह- , सप्तनवैकादशरासिको य (?)

हिट्ठिम फल्लक विवरिय पिहु पिहु कमि दो वि पक्ख गुणिरुण
 घोवक-रासिभाय पण सत्त नवाइ रासीण ॥ ७२

१८ अथ पंचराशिकमाह-

मासेण पचगसए वरिसे सट्ठिस्त किं फल हवइ ।
 अह नो नज्जइ काल फल मूल तह पमाणघण ॥ ७३

११ अथ भिन्नगुणाकारमाह-

अंसेण असगुणिय छेण्ण वि छेय गुणिवि हरियव्व ।

ज ह्वइ लद्धमक त जाणह भिन्नगुणयारं ॥ ५३

पाऊण पच दम्मा गुणिज्ज सतिहाय अट्ट दम्मेहिं ।

अद्ध खडसि गुणिय पिहु पिहु किं ह्वइ तस्स फल ॥ ५४

१२. अथ भिन्नभागाहरमाह-

करिऊण छेय असा हरस्स विवरीय न हारणीयस्स ।

पुव्वविहि गुणि विभाय एस विही भिन्नभायस्स ॥ ५५

अट्टाइएहि भाय हरिज्जए पठणसत्तदम्मेहिं ।

चहु सतिहाइ विहत्त सवा ल किं ताण लद्ध फल ॥ ५६

१३ अथ भिन्नवर्गमाह-

अंसाण वग्गारासी हिट्ठिम छेयाण वग्गामाएण ।

पाडेवि ज जि लद्धं त जाण [हु] भिन्नवग्गफल ॥ ५७

अट्टाइयस्स वग्ग सतिहा पंचस्स पठणसत्तस्स ।

भणि अद्ध तिहाय पुणो जइ वग्गविही वियाणासि ॥ ५८

१४ अथ भिन्नवर्गमूलमाह-

अंसस्स वग्गमूले छेयणमूलेण भाठ पाडिज्जा ।

विसम-सम-विसमकरणे हुइ मूल भिन्नवग्गस्स ॥ ५९

१५. अथ भिन्नघनमाह-

अंसस्स घण कुज्जा छेयस्स घणाण भाठ हरिऊण ।

ज किंपि तत्थ लद्ध भिन्नघण त वियाणाहिं ॥ ६०

सट्टय-सत्तस्स घण सवाय पनरस पा तिहायस्स ।

ज जायइ घणरासी पत्तेय त भणिज्जासु ॥ ६१

१६ अथ भिन्नघणमूलमाह-

असघणमूलरासे छेयणघण मूलभाठ पाडिज्जा ।

घणपय दोअ घणपए इय करणे ह्वइ घणमूल ॥ ६२

१७ अथ त्रैरासिकमाह-

आह अंतेकजाई ठविञ्चए अक्षजाइमज्जेण ।
 अतेण मज्झि गुणिय आइमभाग तिरासियग ॥ ६३
 जा इक्कारस दमिहि दोसिय कर सत्त कप्पढो होइ ।
 ता चठवीसिहि दम्मिहि कइ हत्य हवति ते कहसु ॥ ६४
 मणिमु हव नाणवट्ट नव मुद लहति दम्म पणवीस ।
 ह्य अग्घपमाणेण सोलस मुदाण कइ मुछ ॥ ६५
 चवण पल सवाय सतिहा नव दम्म मुहु पावेइ ।
 ता छ पल खडसूणा कित्तिय दम्माइ पावति ॥ ६६
 दम्मि सवा सत्तेहिं पिप्पलि दुइ सेर छट्टमसऽहिया ।
 लम्मइ ता नव दम्मिहि तिहाय ऊणेहिं किं हवइ ॥ ६७
 पाठणवीसा सएहिं दम्मिहि सतिहाय पच पत्या य ।
 ता तदुलाइ अक्ष कइ लम्मइ इक्कि दम्मेण ॥ ६८
 धारहवणी कणओ सतिहा सय दम्मि तोलओ इक्को ।
 जइ हुइ त इक्कि मासय दससहीणस्स कइ मुछो ॥ ६९
 जइ जोयणछट्टमं फगुलओ चलइ सत्त दिवसेहिं ।
 ता सट्ठि जोयणाइ कित्तिय कालेण गच्छेइ ॥ ७०
 अंगुलसत्तसो जइ दिणस्स छट्टसि कीठओ चलइ ।
 गच्छिइइ अट्टजोयण नियत्तई केण कालेण ॥ ७१

अथ पंचरासिकमाह- , सप्तनवैकादशरासिको य (१)

हिट्ठिम फलक विवरिय पिहु पिहु कमि दो वि पक्ख गुणिरुण
 घोषक-रासिभाय पण सत्त नवाइ रासीण ॥ ७२

१८. अथ पंचराशिफमाह-

भासेण पचगसए वरिसे सट्ठिस्म किं फल हवइ ।
 अह नो नज्जइ काल फल मूल तह पमाणघण ॥ ७३

मासे तिहाय ऊणे सडूसए दिवडु वम्मु ववहारो ।
 ता सतरहि पाठणिहिं सवायनवमास किं हवइ ॥ ७४
 सडुठ मणह भाडइ जोयण सतिहाइ वम्म पठणदुए ।
 ता नव सवा मणाण किं हुइ दस जोयणे पठणे ॥ ७५
 जइ वारस कम्मयरा चहु दिवसिहि तीस वम्म पावति ।
 पणयालीस दिणेहिं ता किं पावति अट्ट जणा ॥ ७६
 जइ किरि भिचि सुवन्नो गुज्जण तिमास पठणवीस घणे ।
 ता सडुदसी वन्नी गुजहिय दुमास कइ मुछ ॥ ७७

१९. अथ सप्तराशिकमाह-

छ दीह सिकर वित्थर दुइ कवल नवइ वम्म पावति ।
 नव दीह पच वित्थरि ता कवल सच कइ मुछ ॥ ७८

२०. अथ नवराशिकमाह-

चीर वारह पच वन्नेहि,
 ते दीहण सच कर, तिन्नि हत्य वित्थार अच्छइ ।
 तह सव्वह मुछ किउ छ सय वम्म दोसियहि निच्छइ ।
 जइ चहु वन्निहि अट्ट कर दीहि पच वित्थारि ।
 ता नव चीरह मुछ कइ, कहि दोसिय विचारि ॥ ७९

२१. अथ एकादश राशयो(शिनी) आह-

दु छ ति दु इग पत्याई जा कर पुड मुग सट्टि वम्महिं ।
 ता नव ति दुग तिकमे पत्याई मुग कइ मुछ ॥ ८०

२२. अथ न्यस्तत्रैराशिको(क)माह-

मञ्ज च आइगुणिय अतेण विहत्त वित्थ तियरासी ।
 अताइ एग जाई ठवि मञ्जे अत जाईय ॥ ८१
 वह सेइयमि पत्ये मविया मत्तहिय वीस पत्याइ ।
 सोलसि सेई पत्ये कइ पत्य हवति ते कहसु ॥ ८२
 छासट्टि टक्कतुड तुलिया मण थीस वक्खरं तइया ।
 जइ वाहचरि तुछ तुलिय ति हवति कितिय मणा ॥ ८३

सङ्क्रान्तस वन्नी तोला चालीस सङ्घ कणओ य ।
ता दस सवाय वन्नी पवट्टणे ह्वइ केवइओ ॥ ८४
नव आयाम तिवित्तर दुइ सइ वीसहिय कबल सव्वे ।
पचायाम दु वित्तर कइ कबल होति ते कहसु ॥ ८५

१३ अथ क्रयविक्रयमाह-

मज्झत गणिय मूल अंताई गुणिय सव्व उप्पत्ती ।
विक्रय क्यतरि मायं नाइज्जइ मूललाहघणं ॥ ८६
सत्तरह मण टकेण लिज्जहि पन्नरस विक्रिणिज्जति ।
जइ दस टका लाहे ता कहु टकाण ते मूले ॥ ८७
तिहु दम्मि पच वत्थु लिज्जहि नवि दम्मि सत्त विक्रिज्जा ।
दम दुवाल्लस लाहे कित्तिय दम्माण सा मूले ॥ ८८
उवरि दम्म तलि वत्थु ठविज्जहि धंकइ विभि वि रासि गुणिज्जइ ।
आइम रासि लाहि ताडिज्जइ विहु रासि अंतरि पाडिज्जइ ॥ ८९

१४ अथ भांडप्रतिभांडफमाह-

मह पडिमरुकरणे विवरिय मुल्ल फल च विवरीय ।
फमि गुणवि दोवि रासी हरिज्ज लहु रासिणा मायं ॥ ९०
सइ दम्मि दुमण पिप्पलि तिहु सय दम्मेहि पच मण सुठी ।
ता पिप्पलि सत्त मणे पाविज्जइ सोठि कित्तिय मणा ॥ ९१

१५ अथ जीवविक्रयकरणमाह-

जीवस्स विक्रयण य वरिस विवरीय फलक विवरीय ।
सेसं च पुव्वविहिणा जाणिज्जहु जीववरमुल्ल ॥ ९२
दस वरिसा तिय करहा टका सठ अट्ट अहिय पावति ।
सा नव वरिसा करहा कइ मुल्ल ह्वइ पचाण ॥ ९३

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गल ठप्परफेरुविरचिताया गणितसार
कौमुदीपाठ्यां पञ्चविंशतिपरिकर्मसूत्र (त्राणि ?) समाप्तानि ॥

॥ इति प्रथमोऽध्याय ॥

[द्वितीयोऽध्यायः ।]

१ अथ भागजाती फलासवर्णनमाह-

समष्टेय करवि पच्छा असजुई ह्वइ भागजाई य ।
अदस्त अधु(इ) तस्त य पणस-छट्टसु किं ह्वइ ॥ १

२. अथ प्रभागजातिमाह-

छेएण छेय गुणिय असे अंसा पभागजाई य ।
अदस्त अधु (इ) तस्त य पणस छट्टसु किं ह्वइ ॥ २

३ अथ भागभागजातिमाह-

छेएण स्वगुणिए छेयगमे ह्वइ भागभागविही ।
अंसाण जुई भाय घणेण पिहगस गुणवि फल ॥ ३
एगि तिमाय दुभाय एगि सु नव भाय सत्तमाय च ।
एगि छमाय तिमायं किं सयदम्माण पिहगु फल ॥ ४
वावि छ कर चठ नालय भरंति कमि दिणिगि वल ति चठरंसी ।
जइ समकालि ति मुच्चहि ता पूरहि केण कालेण ॥ ५

४ अथ भागानुषयमाह-

अहहरि उवरिमु हरु गणि स अंसि हिट्टिमहरेण गुणि स्व ।
जा ह्वइ चरिम छेय एसा भागानुषयविही ॥ ६
सइ तिय तस्त पाय सहिय ज तस्त छट्टमसजुय ।
तस्तइ जुत्त किं हुइ तहइ सतिहाय तस्त पायजुयं ॥ ७

५. अथ भाग(िगा)पवाहमाह-

हिट्टिम हरि उवरिमहरु गुणिञ्ज हिट्टिम हरे गयसेण ।
उवरिम स्व गुणिञ्जहि एव भागापवाहं च ॥ ८
तिय अदूण पठणं तस्त स्वडसूण तहय अइ च ।
तस चठरसरहियं किं किं पचेय हों(हो)ति फलं ॥ ९

६ अथ भागमातृजातौ आह-

भागार्द्धं पञ्च जाई समासण त च भागमन्तीय ।
 पिद्दु पिद्दु जहुत्तकरण करेवि समछेय असजुई ॥ १०
 अद्द पयस्स माय तिमायमाय तद्दद्द अद्दहिय ।
 तद्दयसु अद्दहीण एगद्द किं ह्वेइ घण ॥ ११

७. अथ बल्लीसवणनि आह-

बल्लीसवणविही हिट्ठिम छेएण गुणवि छेयसा ।
 उवरिमज्जसे रिणु घणु पकीरए हिट्ठिमसाण ॥ १२
 दुइ सोला तिय मासा तहेव चउ गुज पच विमुवा य ।
 ते सत्तमसहीणा सवणणे किं ह्वइ बल्ली ॥ १३

८. अथ स्यंभस(स्त्वभाषा)कजाती आह-

समछेय अंस पिंड रूवाओ सोहि ज ह्वइ सेस ।
 तेण पञ्चक्खमाय लद्दके थमपरिमाण ॥ १४
 अद्द खडस दुवाल्स असा जल पक वालुयत्यकमे ।
 पञ्चक्ख तिन्नि कविय भणि पडिय ! थमपरिमाण ॥ १५
 माऊ पचमु गयउ पुवडि,
 वक्खिण अट्टमउ सोलससु पच्छिम पणट्टउ,
 चाउद्दु गउ उत्तरह सीहमइण इम छट्टु नट्टउ ।
 तलइ रहिउ पडिय । निमुणि गोरू सउ पणयालु,
 ते इक्कहा जइ करहि कइ लोडइ थणवालु ॥ १६
 अधु सतिहाउ विंज्जे खडसु सत्तस अहिउ जलतीरे ।
 अट्टसु नवसहिउ थलिगय चउसेस किं जूहे ॥ १७

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राद्भज ठप्पुरफेरुखिरचिते गणितसारे
 फौमुदीपाठ्यां अष्टौ भागजातयः ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

[तृतीयोऽध्यायः ।]

१ अथ व्यवहारगणनायां मिश्रकल्पव्यवहारे आह-

नियकालि पमाणघण फलेण परकालु वि तज्जोय ।
मिस्ति गुणिऊण दोन्नवि जोयाविह तम्मि फल्लमूलं ॥ १
मासेण पचगसए चहु मासिहि वम्म पचसइ वीसा ।
तस्स फल्ल किं मूलं जइ मुणसि त मणसु सिग्घेण ॥ २

२. अथ भाग्यके आह-

नियकालि पमाणघण गुणिज्ज फल्लकालि कमिफलाईणि ।
अंसाण जुईमाय मिस्ति गुणवि लद्ध मूलाई ॥ ३
मासे सयस्स पण फल्लु एग विप्पस्स अद्दु विचीय ।
लेहगपायं वरिसे नवसयप्पहियमिस्सघण ॥ ४

३ अथ एकपत्रीकरणे आह-

गयकाल फल्लसमासे मासफल्लेण माइ कालो य ।
मासफल्लु पिंदु सयगुणि घणपिंदे हरि सयस्स फल्लं ॥ ५
दुगि तिगि चठ पंचा सइ मासे घणु विनु एग दु ति छ सयं ।
चहु छहि वसट्ट मासिहि एग पत्त कह हवइ ॥ ६

४ अथ प्रक्षये(क्षे)पके आह-

समच्छेयसजुई हर मिस्सं पत्तेयअंसि गुणिऊण ।
पक्खेक्करणमेय मिस्साठ फल्ल मुणिज्जेइ ॥ ७
दुनि तिय पच्च चठ मण वीय पक्खविय तं च निप्पन्नं ।
विसय दहोत्तर हल हरि विस्साण वि किमह मिश्रफल्ल ॥ ८
टंकट्ट छहि बुणिज्जहि मुच्छे वस टक पच्चि वम्मोहि ।
टक छयासी पट्टं किं बुणिय किं बुणाववियं ॥ ९
फच्चोलु सच्च उवए सच्चोवरि एगु ह्दिद्धि विक्खमा ।
वसि वम्मि भरिउ चदणि अंगुलि इच्छिक्खि कह मुच्छो ॥ १०

५. अथ समविषमक्रययोः आह-

मुञ्चे वस्तु वि हृत्यो पिहगस गुणेय अंस जुवभाव ।
 वञ्चेण अंसगुणिओ समविसमक्य तिरासि विहि पुत्र ॥ ११
 दम्भिच्छि सेरु हरदइ तिभि यहेदा छ सेर आमल्ल्या ।
 भो विज्ज ! देहि फक्किय सममत्ता इक्क दम्मस्त ॥ १२
 तिहुँ अद्दु सेरु पिप्पलि सत्तिहा नवि दम्भि मिरीय सेरु इगो ।
 चहुँ पठणु सेरु सुठी इगस्त तिउडू सम देहि ॥ १३
 वमि नव सेर तदुल इक्कारस मुग सेर इक्कु षिओ ।
 ति दु इग अंस वणिय ! कमि सवाय दम्मस्त मे देहि ॥ १४

६. अथ सुषण्णव्ययहारे आह-

ज सुवन्ना ज तुल्ल त तेण गुणेवि कीरए पिंढ ।
 तुल्लि विहचे वन्नी वन्नी भाए हवइ तुल्ल ॥ १५
 नव दस अट्ठिक्कारस वन्नी तोलाय तिय छ पण जुयल ।
 एगत्य गालिय त केरिस वन्नी हवइ कणय ॥ १६

७. अथ सुषण्णे भिक्षोवाहरणमाह-

अट्ठ सवा नव पठण छ वन्नी तुल्लेति पच दुइ मासा ।
 तिय छ पण अंस सहिया आवट्टे किं हवइ कणय ॥ १७

८. अथ पक्कसुषण्णस्य आह-

वन्न सुवन्न गुणिक्क विपक्क कणए विहत्तवन्नाय ।
 इप्पला वन्नीभाए पक्कसुवन्नस्त तुल्लक ॥ १८
 छ पणट्ठ सत्त तोलय नव सत्त दसट्ठ वन्नपक्काय ।
 संजायवीसतोला केरिस वन्नी हवइ कणय ॥ १९

दुतीक -

सत्तट्ठ नव छ वन्ना प्ठ पच ति सत्त तोल्या कमसो ।
 इक्कारसीय वन्नी तुल्ले किं हवइ पक्कविओ ॥ २०

९. अथ नष्टसुवर्णघर्णमाह-

उपलवन्नपण सुवन्नपिठ गुणेवि सोहिजा ।

वन्नसुवन्नवहिष्ठ गयवन्न सुवन्नए माय ॥ २१

तिय पच सत्त मासा नवट्ट वसवन्न अट्टमासमे ।

उपला वस वला का वन्नी अट्टमासाण ॥ २२

उपलवन्नताडिय कणयजुई वन्नकणयवहपिठ ।

सोहिवि भाय गयकणयवन्नि उप्पन्नवन्नूणे ॥ २३

अहियस्त हीणछेय हीणस्त य अहिय इच्छ वन्नीओ ।

छेयक तुल्ल भागा इय इच्छाकरणवन्नविही ॥ २४

पण सत्त नव इगारस वन्नीओ पिहगु पिहगु किं लिजा ।

जेण हुइ वसी वन्नी तुल्ले तोलिक्कु त भणसु ॥ २५

॥ इति मिश्रकथ्यवहारम् (११) ॥

१. अथ सेहीव्यवहारो यः (१५पा-)

गच्छेगुणुत्तर ह्य सहाइ अतवणु पुणवि आइ जुयं ।

दुविहत्त मज्झिम घण गच्छ गुण ह्वइ सव्व घणे ॥ २६

वीसाइ पच उत्तर सत्तदिणे तुरिय हरदईमाण ।

त भणि तह नट्टाई उत्तर गच्छ पुणो भणसु ॥ २७

२. अथ नष्टाधानयने करणमाह-

नट्टाइजाणणत्ये सव्वघण गच्छ भत्तलच्चाओ ।

एगुण गच्छित्त तरू गुणेवि वलि सोहि सेसाई ॥ २८

३. अथ नष्टोत्तरानयने करणसूत्रमाह-

उत्तरनट्टाणयणे गच्छेण विहत्तसव्वघणरासी ।

आइविहीण काठ निररेगच्छ दल लब्ध चयं ॥ २९

४. अथ नष्टगच्छानयने आह-

अट्टउत्तर ह्यगुणिय दुगुणाई बुद्धि हीणवन्नाजुयं ।

मूल घण वि उणूण सचय चयविठण हरि गच्छ ॥ ३०

५. अथ संकलितैक्यानयने आह-

इग चय संकलियक वि जुएण पएण गुणिवि तिहु भाय ।

लद्ध संकलिय जुई न ससय इत्य नायव ॥ ३१

संकलिय घग्ग तह घण पिहु पिहु पचाण किं हवइ इच्छ ।

गणिकण भणसु सिग्घ जय गणियविहिं बियाणासि ॥ ३२

६. अथ घणैकघनैक्यानयनमाह-

इच्छपय विठणसेग ति हरिय संकलिय गुणिय घग्गजुई ।

संकलियवग्गु ज हुइ त घणपिंढ बियाणेहि ॥ ३३

७. अथ संकलितबर्गघनैक्यानयने आह-

सेग विठण पय पय गुण सेग पयच्छेण गुणिय हुइ ज त ।

संकलियवग्ग तह घण तिन्हाण जुई मुणेयव ॥ ३४

॥ इति सेवीव्यवहारे सूत्रगाथा सम्मप्ता ॥

अथ क्षेत्रव्यवहारमाह-

चठरंस दीह चठरस विक्खभायामु गुणिय त खेत्त ।

चठरंसे छ कर मुया ति पच कर दीह चठरंसे ॥ ३५

भुव पिंढद्ध चठहा कमेण भुवहीण सेस गुण सुकमे ।

तस्स पए त खित्त तिसुए अ चठम्मुए जाण ॥ ३६

मुहमुव कर पणवीसं भूमिभुव सट्ठि धाम धावन्न ।

दाहिण उणयालीस किं जायइ तस्स खित्तफल ॥ ३७

भूमिभुव हत्य चठवस तेरस एग च धीय पन्नरस ।

एय विसम तिकोण खित्तफल अस्स किं हवइ ॥ ३८

सयलाण चठरसाण भूमुह जोयद्ध लथ गुणखित्त ।

तसाण भूमुवद्ध लथगुण हवइ खित्तफल ॥ ३९

मुवजुव तेरस पनरस भूमुव इगवीस पच हत्य मुहे ।

मज्जे लघु दुवालस एरिसखित्तस्स किं माण ॥ ४०

तिष्ठोणफल विठल भूमत्त मज्झ लखओ ह्वइ ।
 सुवलख वग्ग अंतरि सेसस्त पए ह्वइ अहवा ॥ ४१
 सुवलख वग्गपिठ तस्त पए ह्वइ निच्छय कसं ।
 सब्बत्य खित्तगणणे एस विहि ह्वइ नायवा ॥ ॥ ४२
 विक्खमं वग्ग वह गुण तम्मूले वट्टखित्त परिहि धुव ।
 विक्खम पाय गुणिया परिही ता ह्वइ खित्तफल ॥ ४३
 वस विक्खमे खित्ते समवट्टे किंपि जायए परिही ।
 गुणित्ठण मणहि पडिय ! तसु खित्तफलस्त किं ह्वइ ॥ ४४
 वट्टस्त य विक्खमं तिठण तह छट्टमसजुय परिही ।
 विक्खमद्धे गुणिया परिहि वल तस्त खित्तफल ॥ ४५
 जीवा सर पिठव सर गुणिय वग्ग दहगुणं काठ ।
 नव माए ज लखं तस्त पए ह्वइ घणुह फल ॥ ४६
 घणुपिठे इगवीसं जीवा पनरस छक छक जस्त सरं ।
 मणि पडिय ! गणियफल किं जायइ तस्त घणु खित्त ॥ ४७
 सरवग्ग छगुणकियं जीवा वग्गहिय मूल घणु पिठं ।
 घणुवग्गाओ जीवा वग्गूण छायाय मूल सरं ॥ ४८
 घणु सर जुयद्धीणं घणुहाओ वग्ग चठण पय जीवा ।
 पत्तेय गणियमाण एयाण फल ह्वइ नूण ॥ ४९
 थालिंदे तिमुव दुग मुरुजे वो घणुह चठरसं मज्जे ।
 वो घणुह जवाकारे कुलिसे चठमुव दु कप्पिज्जा ॥ ५०
 तिमुव गयदतोवम चठमुव सगडवक्खवट्टसम ।
 चवस्त सरिस घणुह वट्ट परिपुत्तचदसम ॥ ५१
 थालिंदोवम खित्तं वित्तारे पचधीस कर दीहे ।
 वल लख तिन्नि घरा गयदते किं ह्वेइ फल ॥ ५२
 निम्मागारे खित्ते उभयमुहे तिकर पचकर लये ।
 धरामुहे पण हत्य ति मज्झि वह लय कुलिसुवमो ॥ ५३
 ॥ इति क्षेत्रव्ययहारसूत्रं समाप्तं ॥

१ अथ खातव्यघहारमाह-

तलमुह मञ्जे विसमं उच्च अह्व दीह-विसम वा ।
 त एगद्व काठ विसमद्वारेहिं हरिय सम ॥ ५४
 सम वित्थर-दीहगुण उच्चे गणिय ह्वइ खिचफल ।
 खाच सममुववेहे घणोवम जायए गणिय ॥ ५५
 दु सि घठ कर उच्चे पुक्खरणी पच हत्य वित्थारे ।
 सोलस हत्यायामे किं जायइ तस्स खचफल ॥ ५६
 दीह कर सहु सोलस वित्थारे दस सवाय अहुदए ।
 अह वित्थर दीहुदए सम नवकर किमिह पिहगु फल ॥ ५७

२ अथ कूपस्य फलानयनमाह-

कुववित्थारं वग्ग तिउण खहसहिय वेहि गुणियन्व ।
 घहु भाए ज लद्ध त करसंखा ह्वइ सच्च ॥ ५८
 कुवस्स य विक्खम छ हत्य कर वीस जस्स उच्च ।
 कुवस्स तस्स पडिय ! खचफल किं हवेइ धुव ॥ ५९
 तिकोणयाइ खिच्चा पुव्वुत्ता खिचफलसमा जाण ।
 ते वि गुणिय तिवेहे हवति घणहत्य खचफले ॥ ६०

३ अथ पापाणफलानयनकरणसूत्रम्-

दीहगुलाणि वित्थर पिंढगुल ताडियाणि विमएहिं ।
 जिणे अहु तेरेसोहिं हवति पाहाणघणहत्या ॥ ६१
 सहुतिय हत्य वित्थरि करदु पिंढे सिलासहे जस्स ।
 ससिहाय पच दीहे कमित्य हुइ तस्स गणियफल ॥ ६२
 ज ह्वइ विविहरूव वट्ट तिकोणाइ सयलपाहाण ।
 खिचफलु व्य गुणेविणु पिंढगुण ह्वइ तस्स फल ॥ ६३
 वस हत्ये विक्खमे घरट्टपट्ट व्य वट्टपाहाणे ।
 विवट्टकरमाणपिंढे किं होइ इमस्स गणियफल ॥ ६४
 गोल्समुदयघणद्ध सनवसे अहिय त ह्वइ सेल ।

परिहि चउत्य भायं ह्य परिहि नवसहिय खित्त ॥ ६५
 छ कर दीहुवय वित्थर समवट्ट गोलयस्त पाहाण ।
 किं गणिय किं खित्त ज हुइ तं मणहि पत्तेय ॥ ६६

४ अथ पापाणस्य तौल्यमाह-

घणकविय इच्छेण ठिच्छियसंभूय पाहण सब्ब ॥
 पचास मण जायइ तुल्लिओ चउवीस तुल्लो [य] ॥ ६७
 वसी अढयालीसं मम्माणी सट्टि कसिणु चासट्टी ।
 जज्जावय कक्षाणय उणवन्नकुल्लुक्कहो सट्टी ॥ ६८

॥ इति स्नातव्यवहारसूत्रगाथा १५ सम्मत्ता ॥ '

अथ धितिव्यवहारमाह-

गौमट्टे पायसेव चउरसं वैट्ट मुनोरय तौक ।
 सोवाण पुँल कुँव वावी इय नवधिहा मिची ॥ ६९
 पढममवि सुद्धमिची वित्थरवीहुवय गुणिय ज हवइ ।
 तत्साठ धार वारी आलय कट्टाठ सोहिज्जा ॥ ७० ।
 सेसाओ वसमंसं दिवइय मट्टियस्त घट्टेइ ।
 सेसा पाहणसंस्सा हवति घणहत्थमाणेण ॥ ७१ ।
 पच्च कर भित्ति उदये वस दीह दुवित्थरे य तम्मज्जे ।
 धारु ति उदइ दु वित्थरि का सत्ता हवइ पाहाणे ॥ ७२

अथ इहानां गणना-

दीहे वित्थरिपिँडे अद्धु तिहा अट्टमसु इट्ट कमे ।
 चठ रुदइ दिववु वित्थरि दइ दीहे भित्ति के इट्टा ॥ ७३

१ अथ गौमट्टमाह-

गौमट्टमूलपरिही अद्ध पा परिहि गुणिय सनवसं ।
 भित्ति(इति)भाग्माओ चयण वाहिर मज्जाठ त खित्त ॥ ७४
 भित्ति(इति)भाग्माओ परिही उणवीस छ वित्थरस्त किं चयण ।
 वाहिर परिही पढिय ! चउवीस किं हवइ खेत्त ॥ ७५

परिहीविक्षमन्ने गुणिय नवसहिय खल्लु गुमट्टे ।
अणुमवसहिय भणियं न संसय इत्थ नायव्व ॥ ७६

२. अथ पायसेवमाह-

चउरंस पायसेव बाहिर भिच्ची य मज्झिम धम ।
वित्थर वीहुदय गुण ज हुइ त कविया जाण ॥ ७७
भिच्चि तह धम अंतरि कमुच्च मग्ग फिरंत त दीह ।
तल उवर जुयहुदय वित्थर गुणिय हवइ पूरं ॥ ७८

३. अथ षट्-

तह षट्पायसेवे धम भिच्ची य गणहु कूवु व्व ।
पूरंतर छच्चिदल त चउरंसु व्व जाणेह ॥ ७९

४. अथ मुनारया-

षट्पासेवसरिसा मुनारया होंति सयल मज्झाओ ।
पुणु इत्थिय विसेसं तिकोणदल षट्दलभिच्ची ॥ ८०

५. अथ ताक-

वारिस्सुवरिम ताक वीहुदए गुणिय भिच्चिर्पिढगुण ।
सत्तस दिवङ्गुण सिहाजुय जायए खल्लु ॥ ८१
सत्त कर ताक दीह सिहासहिय इत्थ चारि जस्सुदय ।
इत्थेग भिच्चिर्पिढ किं जायइ तस्स खल्लुफल ॥ ८२

६. अथ सोपानम्-

सोषाणहिट्टउवरिम जोयद्ध उदयवित्थरे गुणिय ।
नव हिट्ठि उवरि एग दु पिहुल छह उदइ किमिह फल ॥ ८३

७. अथ पुल्लघमाह-

वित्थर वीह उदए गुणिय, ताकविहीण सुवजुवसहिय ।
निग्गम अहिय तह खल्लूण, जलपुल्लघ त हुइ नूण ॥ ८४

८. अथ कूप-

कुवभिच्चिमज्झि परिही वित्थर उदएण गुणिय हवइ फल ।
दस उदइ दु कर वित्थरि अट्टारस परिहि किं चयणं ॥ ८५

अथ धापी पट मेदि-

चउरंस दीह वट्टा खडस अट्टस संखवचाई ।

बहुलदि होंति वाकी(वी) ते दिट्टपमाणि गुणियति ॥ ८६

॥ इति धितिव्यवहारसूत्र गा० १८ सम्मत्ता ॥

अथ ऋक्चव्यवहारसूत्रकरणमाह-

दारु जहच्छियमाणे तस्साठ जहिच्छ फलिह कीरति ।

दुण्ड वलु वीहु वित्यरु गुणिच्च फलहेहिं भागु चि ॥ ८७

अट्ट कर वीहु दारो करदु वित्यारि वलि तिहाउ करे ।

दीहेगु पाठ वित्यरि नवसु वलि किमिह फलहेण ॥ ८८

अथ करवत्ते दारुच्छेदितगणना-

करवत्त लीह जे हुइ ते वीहिण गुणिय होंति हत्याइ ।

वित्यरवसाउ कोडी चिरावणी अग्घमाणेण ॥ ८९

इग दिवढ विमुव सइ गजि दु ति वित्यरि गजि असीहिं कोडी य ।

चहु विमुवहि सट्टि गजे पचाइ नवति प्वालीसे ॥ ९०

दस्ताइ जाव तेरस विमुवा वित्यारि ताव तीसेहिं ।

उवरते जा सोलस ता वीसि गजेहि कोडी य ॥ ९१

उवरि जा वीस विमुवा ता कोडी दसि गजेहि जाणेह ।

उवरि करवत्तु न चलइ इय भणिय सुत्तहारीहिं ॥ ९२

दारु गज सत्त वीहे विसोवगा अट्ट सत्त वित्यारे ।

दस लीह फलह गारस चीरिय कइ कोडिया होंति ॥ ९३

अट्ट जव कवियगुलि जवेगु करवत्त लीह फलहि इगे ।

वट्टस खडकरणे पिंड त वीहु जाणेह ॥ ९४

महुव वढ साल सीसम निव सिरीसाइ सम चिरावणिय ।

खयरजण कीर सवा सेंबलु सुरदारु गुणि पठण ॥ ९५

॥ इति ऋक्चव्यवहारो समत्तो ॥ गाहा ० ॥

अथ राशिव्यवहारमाह-

सममुषि कयऽन्नरासी तप्परिहि खडस वग्गु उदयगुणे ।
ज दुइ ते घणहत्या घणहत्ये इच्छि पत्तो य ॥ ९६
तिल कुद्व घञ्जाण नवसु उदओ य रासि परिहीओ ।
वसमसु मुग्ग गोहुम बोर कुलत्या इगारसमो ॥ ९७
सिद्वरु व्व वट्टरासी चठरुदय तस्स परिहि छत्तीस ।
मिच्चिसंलग्गअच्च कूणतरि पाय परिही य ॥ ९८
याहिरकूणे पठण परिही उदओ सएह जाणेह ।
किं जायइ करसत्ता पिहु पिहु रासीण त भणसु ॥ ९९
दल पाय पठण परिही गुणिवि कमे दु चठ सत्तिहाएण ।
पुव्वु व्व फल पञ्चा नियनियगुणयारए भाय ॥ १००

॥ इति राशिव्यवहारसूत्र सम्मत्त ॥ गाहा ५ ॥

अथ ञ्छायान्यवहारसूत्रफरणमाह-

थमाह मिच्चि ञ्छाया वंदि मिणवि गुणहु दढमाणेण ।
तस्सेव षडञ्छाया हरिच्च माय फलेणुदय ॥ १०१
चठवीसगुल वंदे ञ्छाया थमस्स तिन्नि वंद सवा ।
दढ सवा अट्टारस अगुल किं थसु उच्च ॥ १०२

अथ साधनानयनकरणम्-

समभूमि दु कर वित्यरि दुरेह वट्टस्स मज्झि रविस्सक ।
पठमत छाय गब्भे जमुत्तरा अद्धि उदयत्य ॥ १०३
चठ थठ इग मयरार्ई पण तिय इग कक्कडाइ धुव रासी ।
सत्तगुल पह मुँणिजुव फल रूगयजुत्त दिवस गय सेसं ॥ १०४
॥ इति ञ्छायान्यवहारसूत्र सम्मत्त ॥ गाथा ४ ॥ एकत्र गाथा १०४ ॥
॥ इति परमर्जन श्रीचन्द्राङ्गज ठकुरफेरुविरचिताया
गणितकौमुदीपाठ्यां अष्टौ व्यवहाराणि (शिरा) समाप्त (शिरा) ॥
॥ इति तृतीयाध्यायः ॥

[चतुर्थोऽध्यायः ।]

अथ देसा(शा)धिकारमाह-

द्विष्टिय रायद्वाने कञ्च भूय करण मञ्जमि ।

जं देसलेहपयही त फेरु मणइ चदमुओ ॥ १

जसु जसु वटिषि दिज्जइ तसु तसु जीवलइ ज मवे दव्वो ।

सो गुणिषि लद्ध वम्मिहि सब्बाण य जीवलइ माय ॥ २

सेव रायह, [सेव रायह] पच्च जण गए य,

तह सब्बइ जीवलइ तीस सहस्स एगत्य रासिण,

सिय तेरस पच दुइ सच्च सहस इय भिन्न रूखिण,

वय फारणि जा नक्सहस ते सब्बिषि पावसि ।

निय निय जिवला कट्टतह किं किं कसु आवति ॥ ३

उपक्खइ ज दव्वं हुइ त पंढिय ! करिज्ज सयगुणिय ।

चट्टीहरे वि भाय ज लब्भइ त सई होइ ॥ ४

गामि नयरि देसे जइ नखि लखि पचास सहसि चट्टी य ।

सत्तरि सहस उपक्खइ ता तस्स क्किसा सई होइ ॥ ५

जिसा सई भेइज्जइ जिच्चिय घण कट्ट तहि स वट्टिज्जा ।

जुयल तंक फुसिषि तह पणभागे होंति विमुवा य ॥ ६

सहसेति अंतिमका फुसवि कमे लिहसु दु चउरट्ट गुणा ।

ते विमुवाई जाणह एव दस सहसि लक्खे वा ॥ ७

जइ चट्टी मूलघण दु लक्ख नव सहस पच्च इ [? ग] तीसा ।

चउक सई भेइज्जइ ताम घण किच्चिय ह्वइ ॥ ८

(१) अथ देशाके-

घणरासि अंतिमको फुसिज्ज त विउण विमुव वसमसो ।

दो अंतिमक फुसिए पणसि तह विमुव सयमसो ॥ ९

रासिस्स अंतिमके विमुवा विमुवसगाइ सेस कमा ।

आइम अंकाणद्धे वम्मा जाणेह घीसंसे ॥ १०

(२) अथ मुक्कातयमाह-

मुक्कातइ ज वरिसे त गय दिण गुणवि वरिस दिणिभाय ।
पचि सहस्सि मुक्कातइ नवि दिणि चउमासि किं हवइ ॥ ११
जिच्चा दम्म मसेलिय दिज्जहि मासिक्कि ते तिभागूणा ।
सेस ह्वंति विसोवा दिवसे दिवसे मुणेयव्वा ॥ १२

(३) अथ पावफ्फगतौ-

लहुगाइदिणसंखगुण लहु वीहगाइस्स अंतरे भाय ।
लद्धदिणेहि मिलत्ती अप्पगाई लहुगाई दो वि ॥ १३
चउ जोयणीय पच्छा नवम दिणे सच्च जोयणी चलिओ ।
तस्स व्होढण हेऊ मिलेइ सो कइय दिवसेहिं ॥ १४
पच्चाइ दु वहुता जोयण दिवसेण चच्छए करहो ।
जोयण चउवस करही किच्चिय दिवसेहिं सो मिलइ ॥ १५
आइ मज्झत रासी अताओ आइ हीण मज्जेण ।
भाए लद्ध विठण एगजुय करह दिणमाण ॥ १६

(४) अथ सबत्सरानयनमाह-

विक्कमाइ जे वरिस मास चिच्चाइ करिवि दिण,
छै मुँणि नवँ लद्धहिय मास ते वच्छर जुय पुण,
नैव निहाँण रैस वरिस मास दुइ दुइ दिण ऊणय,
ताजिय वच्छर हवइ मास मुहरम माईणय,
ताजिक्कु पुणेष करिवि पर अहिय मास सोहेवि पुणि ।

नैव मुँणि छै वरिस दुइ दिण अहिय पढिय । विक्कमसमठ भणि ॥१७

॥ इति देशाधिकारकरणसूत्रं सम्मत्तं ॥

(५) अथ पट्टाधिकारमाह-

जुज पट्टोलय अतलस साराई पट्ट वत्य एमाई ।
कर वासक ताणाई इय मुहमा थूल साडाई ॥ १८

सय हृत्थि सयल कप्पडि सीवाणि कर दिवदु एगु कत्तरणे ।
 इग दु सिय कोर धुवणे घट्टइ पट्टसुयाइ कमे ॥ १९
 सयल खीमेहिं कप्पड समसंख नवार किंचि हीणहिया ।
 वहली जविणा सब्बे थमाठ सवाइया उदए ॥ २० ॥
 उदयस्स वार विसुवा कमरतले अट्ट उवरि सब्बेहि ।
 इग थमि दु थमे वा इत्तो सिय कप्पड भणिमो ॥ २१)
 सब्बाण पढतलोवर जुयद्ध उदए गुणिज्ज जा कमरं ।
 पिट्ठी वित्थर वीह ह्य अट्टस हिय जुय वत्थ ॥ २२
 मज्झिम ढढस्साओ चउण खीमस्स क्कयलपवेसो ।
 तस्स दिवद्वा परिही चारसमसूण चउरसे ॥ २३
 चउ कर मज्झिम थम सोलस कमरं च परिही बावीसं ।
 तस्स खीमस्स पढिय ! किं जायइ वत्थपरिमाण ॥ २४
 अट्टस तह य वट्टे तिउण कमरं तयद्ध जुय वउरं ।
 इय घर ह्य सीमाणय थमाठ तनाव चउगुणिय ॥ २५
 तगोटी इग थमा हिट्टुवर जुयद्ध उदय गुण वत्थ ।
 थमा परिहि पणगुण दुगथमा मज्झ पढ अहिया ॥ २६)
 खरिगह मडव उवर उमयविसे जि कर तस्स अच्चुदय ।
 तत्तो पणगुण परिही परिहिदल उदय गुण वत्थ ॥ २७
 मिच्चिवलय पढ दोन्निवि दुवार पढ धेवि उदयवीहगुणा ।
 इय वत्थ अद्ध मडव सह वार तह भिच्चिं ॥ २८
 वारिगह खड्डुसा च्छत्तागारा य मडवागारा ।
 एयाण च तरक्क हिट्टुवर जुयद्ध उदयगुणा ॥ २९
 इग थम ल्हुण परिही दुथम परिही य मज्झ पढ अहिय ।
 अट्टस जुत्त उदए थमाठ तनाव पचगुणा ॥ ३०)
 मीराण वारिग हुइ चिलग चउरस दु एग थमा य ।
 सम उदय चउण कमर विउण परिहि अट्टमस हिय ॥ ३१

बह्वहलि पचवह्ली श्रुयुक्ताकलिय मञ्ज शह्वरिया ।
 एयाण य कप्पहओ तह तह्य पुहस्स पुण अहिओ ॥ ३२
 छायापह चदोवय सराइ चाजमणियाइ मित्तिपडा ।
 वित्थर वीहे गुणिया सुञ्जति विणोयचित्त विणा ॥ ३३
 वहली जरुइ ताका छज्जय कुब्बाय चरख पडिरूवा ।
 छचालव निसाणा ते टिप्पपमाणि नायव्वा ॥ ३४
 उदेस सियावणिय सइ गज्जि नावार दम्म सोलसग ।
 चिस गज्जिक्कि पच्छा वहली जसराइ चेति दुग ॥ ३५
 किमिस गज्जिक्कि चित्ते सुहमे चठवीस थूलि वीसा य ।
 चचारि टक डोरी इग सुत्त अरुण नील वा ॥ ३६
 नावार सरज चम्म नीलारुण कस्सिण वत्थ त पयड ।
 सुत्त नवार सइ गज्जि निव पठण इयर सेरु ॥ ३७

॥ इति धम्मचिकारे गाहा २१ सम्मत्ता ॥

अथ जम्भाधिकारकरणसूत्रमाह-

विणयैरग्गिं रसे तेरे^१ वैठ[व]सिदिये जुगे ईसरे ।
 इय कुट्टिहि ख(०) इगाइ इगिगि समहिय लिहि मणहर ।
 वैर निहि सोलसे^२ तह य उवैहि^३ र्धसु तिहि^४ दिसि ससिहरे ।
 इच्छादलिरू^५ हरिवि कमिण ठवि जत्तु मुणहि पर ।
 जा सुश्रु वारि ताणुक्कमिहि जतरि तव्विवरीउ धुय ।
 जा सव्वि गोहि विसम हव सम, सम विसमाइ समक जुय ॥३८

॥ पट्ट गृहे जञ्ज ॥

दाहिण कञ्जेगाई सत्तहि य खडाइ पचहि य वामे ।
 दते^१ चउतीस सुरे^२ सरे^३ मुणि उणेवीस ठारे^४ पणेवीस ॥ ३९
 पणतीसे^५ ति^६ चउठे^७ दु^८ रेवी^९ तेरेहे^{१०} जिणे^{११} तीमे^{१२} रिक्खे^{१३} मणेवीस ।
 मेणु ससगेहे^{१४} दमे^{१५} नवे^{१६} तेविसे^{१७} पुव्वाइ जन छगिह ॥ ४०

लिहि घुराठ पाओलि अरु अह मेलि पुणुवरिम ।
 पायओलि इय कमिहि जाव पा जतु हवइ इम ।
 मज्झिमदु उवकमिहि चरिम पा जतु पुणु वि कमि ।
 घठ गिहाइ घठ बुद्धि जत इय हुइ इग चय कमि ॥ ४१
 तिहि^१ निहि^२ रसै जुयै वसु करै तेर^३ गौरै ।
 सैसि मुँणि रवि^४ मणुँ दिसि^५ कलै गुणै सरै ।
 अधु पठ चहु चहुठे घठसठि गिहि ।
 रू ति^६ दुँ चरै कमिऽणुकमेगाइ लिहि ॥ ४२

अथ विपमजप्रानयने-

ख इगाइ जहिञ्छोलि गिह संखिग जुय सपुव्व पढमोलि ।
 ततो मज्झिम मज्झिम गिहाठ गिह जुच सुकमेहि ॥ ४३
 घुरि पति चरिम अंकाठ जत्य अहियकु हवइ तित्य गिहे ।
 सब्वगिहसंख सोहिधि लिहिज्ज इय विसमगिहजत ॥ ४४
 जुगै गहै लोयणै हरनयणै इदियै मुँणि अट्ठेहि ।
 सैसि रसै जतु इगाइ लिहि, इक्कासी कुट्ठेहि ॥ ४५
 ॥ इति जत्राधिकारो सम्मत्तो ॥ गाहा ८ ॥

अथ प्रकीर्णकाधिकारमाइ-

(१) कुसुमानयनमाइ-

दुगुणा दुगुण जि उव्वरहि, वार वार तिहु जुच ।
 अह जइ को कुसुमु न उवरइ, ता घुरि तिन्नि निरुत्त ॥ १
 इणु सुरगिहु चहु दुवारेहि,
 पचेय तहि जक्खु इगु वार तुळ्ळ तसु मज्झि सुरवइ ।
 घम्मिठ कुसुमाण वि वहल सयल थिय अरुत्त सुठवइ ।
 ज तावत इगेगु दे सविहि वारि जक्खस्स ।
 सैस धीस जहि उव्वरहि सब्वे कह हुइ तस्स ॥ २

(२) अथ भामानयनमाह-

जे पत्ता ते असि गुणिज्वहि, आइ हीण करि शुद्धि हरिज्वहि ।
 लब्ध विठण रूवसंजुत्ता, पढिय ! ते जण गया निरुत्ता ।
 सेढिय सकलिये फलसंखा, लब्ध विहत्ते हुइ फलसखा ॥ ३
 अंसु अट्टमु कटक मज्जाठ,
 गठ अब तोढण वणिहि भक्खणत्थ आएसि राणय ।
 घठरादि वहुत छह एण परिहि सव्वेहि आणिय ।
 ज कटकु थिठ लब्ध सिहि, वीस वीस सव्वेहि ।
 कय जण गय कित्तठ कटकु, कइ अवाणिय तेहि ॥ ४

(३) अथ जमात्रिफ वरिसोला नयनमाह-

गुणक थप्पिवि कमिण एगाइ,
 उववप्परि गुणित्रि गुणि वार वार इच्छिक्कु दीजइ ।
 वरिसोला जे ह्वइ सव्वि तेइ पढमह भणिज्वहि ।
 तेवि अंक रूवाह विणु, पुव्व परिहि गुणियति ।
 हुइ ति ति भक्खहि सव्वि जण, पढिय इठ पमणति ॥ ५
 गय जमाइय पच सामुरइ,
 वरिसोलाऽणुक्कमिहि वियइ सामु तट्टिय भरेविणु ।
 तह मुजिय रहहि जि ते विठण ति चठ पण गुण करेविणु ।
 अत्तिम सहि भक्खहि अबरि, मणाहि एण बहु खब्ब ।
 सविहि एगु सा भक्खिया, कइ थाक्कइ कइ खब्ब ॥ ६

(४) अथ वरुणफलानयनमाह-

जे जण गहसि हृत्यं ते चउण गुणिज्व लब्ध वत्थकरे ।
 त वत्थु दीहु वित्थरु कर जण गुण चउण सव्वि जणा ॥ ७
 वर वत्थु इगु घठदिसि इगेगु कर ठाहिठ तिहु तिहु जणेहि ॥
 नव नव करि जणि पत्ता कइ जण वरवत्थु कइ हत्था ॥ ८

(५) अथ करभगत्यामाह-

आह-मञ्जतरासी अंताओ आह हीण मज्जेण ।

भाए लद्ध विठण एगजुय करह विणमाण ॥ ९

चठ जोयणाह तिय तिय वडुतो निच्च चळए करहो ।

सोलस जोयण करही किचिय दिवसेहि सा मिलह ॥ १०

(६) अथ विपरीतोद्देशफमाह-

सेसूण जुच वग्ग गय अहिय तस्त मूलभाय गुण ।

गुणयारेण विहच सो अमुणिय रासि नायव्वो ॥ ११

पचगुण नवविहच तवग्ग नवहियस्त मूल च ।

दो हीण तिन्नि सेस विविरिय उद्देशगो रासी ॥ १२

(७) अथ पञ्चयिन्ताज्ञानमाह-

सत्तरि गुण तिठनेहिं पचहि इगवीस पनर सत्तेहिं ।

पिंढेण सठ पणुचरु वेवि हरिवि मुणह परधित्तं ॥ १३

चिंतिय सुयकरसहिय चिठणिगि जुय पचगुण सुयासहिय ।

दह गुण ख पणक रूव सेस कमे मुणह सुन्न विणा ॥ १४

(८) अथ मर्दिताफज्ञानमाह-

सयलकपिंडु सोहिवि रासिस्सताठ सेसपिंढाओ ।

ज हीणु नवसु पाढइ पूरइ मलियकु सुनु नव ॥ १५

(९) अथ सहशांफानयनमाह-

एगाई य नवता अट्ट विणा इच्छियकु नवि गुणिओ ।

पुव्वकरासि गुणिया हवति एगाइ सरिसंका ॥ १६

(१०) अथ गोसंख्यानयनमाह-

उवराओ जा हिट्ठि ह्हुइ, ताणुक्कमिहि ठविज्ज ।

उवरुप्परि सव्वेवि गुणि, गावि ष्म जाणिज्ज ॥ १७

चहु दुवारिहिं गावि नीसरिय,

गय पाणी पंच सरि सत्त रुक्ख तलि ते घइट्ठिय ।

आवति वारिहि नविहि पइसि छच्च वाडिहि निविट्ठिय ।

रक्त्वाहि अट्ट गुवाल तह, सारिञ्चिय सहि तेवि ।
पडिय ! किच्चिय गावि हुइ, तम्मि नयरि सव्वे वि ॥ १८

(११) अथ गोबुगुषधटनमाह-

गो जण सममाणेण जणसख इगाइ ठवि कमु छम्मसो ।
जा अंतिम गोअक समपण्हे दुहु अंकसम ॥ १९

इति श्रीबन्द्राङ्गप्रठक्खुरफेस्खिरचित्ते गणितसारे देशा
धिकारारथा' चस्थारि(रिः) अधिकारानि(रिः)
सम्मत्ता ॥ गाहा ६४ ॥

अथ उद्देशपञ्चग सूत्रमाह-

पणमेविणु सिद्धिकरं मणामि निप्पत्तिपचगुहेस ।
घन्निक्खुचुप्पढाण देसकरघाणमाणण ॥ १
सव्वत्य अन्न निप्पइ भूमिविसेसेण अंतरं बहुय ।
ढिद्धिय आसिय नरहह वरुण पएसा इम जाण ॥ २
खित्तस्स दीह वित्थर विग्गहया गुणिय ह्वइ भूसखा ।
वीस कमि दीह-वित्थरि अह कथिय सट्ठि वीगहओ ॥ ३
अन्नस्स फल जायइ निप्पत्ते वीस विमुव वीगहओ ।
सट्ठि मण घन्न कुइव चठवीस मउट्ट जाणेह ॥ ४
चठला मण वावीस तिल सोल्लस मुग्ग मास अट्टार ।
वीस क्खणुणिय चीणय पनरह कूरी सवाईया ॥ ५
सोल्लस मण कप्पासा चालीस जुवारि दस सणो तह य ।
इक्खु सवाणिय साहा इत्तो आसाढिय जाण ॥ ६
गोहुष पणयालीसं कलाव मस्सूर चणय वत्तीस ।
जव छप्पन मणाइ सरिसम अलसीइ करड दस ॥ ७
वट्टला सोरि कुल्लथा चठदस मण होंति सव्व कण तुल्लिया ।
जीरा घणिया दस मण पर सिद्धय मज्झि गणियति ॥ ८

सव्वे वि वेसवारा हालिम मेत्थी य सग्गवत्ती य ।
कोर घनाइ सेंकय सठ दम्म करस्स विग्गहए ॥ ९

॥ इति धान्योत्पत्तिफलम् ॥

नव खारि पचास मणी इक्खुरसो तस्स पचमसु गुलो ।
सक्कर छट्ठसे हुइ सोलसमसे य खडा य ॥ १०
तस्स दिवङ्गा रव्वा हीणाहिय पुण ह्वेइ नीरक्सा ।
पुणु इत्थिय नवि चलइ जा भणियं विट्ठ पत्तेण ॥ ११
खडाउ तिभागूणा निवात वरिसोलगा भवे पठणा ।
अइचुक्ख सेस सीरो इग वारा होइ खडसमा ॥ १२

॥ इति इक्षुरसफलम् ॥

तिल-सरिसम करड मणे सिद्ध नव सत्त पंच विसुव कमे ।
बुद्धि अडसु नवसो लूणिठ तत्तो य पठण धियो ॥ १३

॥ इति स्नेहफलम् ॥

वसि छालीएहि गाधी महिसी तव्विठण षड्हु वयच्छि हलो ।
चुल्लि पवाणे कुट्टिया नाविय बलहार महर विणा ॥ १४
देवइ कन्नचला तह नीली कविलीय गो अवतीय ।
विप्प सवासणि य पुणो करं चरं नत्थि एयाण ॥ १५
टका वत्तीस हलो त्तिविह कुळी एग दीवढ दु टकीय ।
महिसिक्कु गावि अद्धो बुद्धिय वसहस्स टको य ॥ १६
इय मणिय उद्धेसं हीणाहिय होंति चट्टियणुसारे ।
अद्ध तिहा पा अन्न तिण चर पा हीण भा सक्करं ॥ १७

॥ इति देशकरफलम् ॥

जे पाई दम्मक्किहि मवति ते तिठण निच्छए सेई ।
अन्नेवि विठण पाई टक्कइ इक्केधि जाणिज्जा ॥ १८
जि क्किवि सेर भणियहि दम्मिक्किहि, ते वि सवाया मण टक्किहिहि ।
मणइ भाउ पचमु पाडिज्जहु, सेस सेर दम्मिक्कि मुणिज्जहु ॥ १९

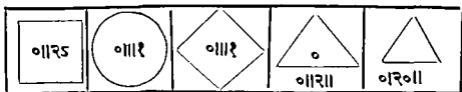
जिचिहि किचिहि दम्भिहि पठिय । मणु एगु वक्खरो होइ ।
 तस्सद्धेहि विसोइहि सेरो इक्को वियाणाहि ॥ २०
 गणिमवत्थूण जिचिहि दम्मेहि होइ कोठिया इक्का ।
 तावइय विसोवेहि लब्धइ एगा गणिम वत्थू ॥ २१
 ॥ इति अर्घस्य फलम् ॥

अथ मानानि-

वट्टस्स य विक्खम तिउण तह् छट्टमस जुय परिही ।
 सा पाय वित्तरे गुणि ज जायइ त जि खित्तफल ॥ २२

-दर्शन (६) परिधि १९ क्षेत्र फल २८ इति वृत्तं ॥

वट्टाओ च्चरंस बारस विमुवा ह्वेइ सविसेस ।
 च्चरंसाओ वट्ट तह् वट्टठ पचमसूण ॥ २३
 तिकोणयाओ वट्ट सट्टुदुवाल्स विसोव हुइ खित्त ।
 वट्टाओ य तिकोण विसोवगा सच्च अद्धहिया ॥ २४



॥ इति क्षेत्रमानम् ॥

विशेष पया दर्शनमाह-

गोलस्स य उदयघण पठण पठण व ह्वइ पाहाण ।
 परिहिचउत्थ भाय ह्यपरिहि नवसजुयखित्त ॥ २५
 न्यास (६) लब्ध गोलफल १९० क्षेत्रफल १००५५३, घनि २१६
 पठणं १६२ पुणु पठणं १२० फल ॥ परिहि ४॥ गुणित १० जात
 १० । अस्य नवांस १० एव १०० क्षेत्रफल ॥
 घण कविय इक्केण दिहिय समूय पाहण सव्व ।
 पन्नासमण जायइ तुलिओ चउतीससय तुद्धे ॥ २६

वसी अढयालीसं सट्टि ममाणीय कसिणु वासट्टी ।
 जज्जावर कक्षाणय उणवन्न कुडुक्कुडो सट्टी ॥ २७
 मट्टी मण पणवीसं तुसंन मण अट्टुवारस वणन ।
 दह मण तिह्ण घयं तह सोलस मण लवण उदेस ॥ २८
 राजु इगु तिजणसहिओ वारस गज भित्ति पाहणे चिणइ ।
 चउदससयाइ इट्ट उदेस जल गगरी तीसा ॥ २९
 सगवीस मणा हक्क नव चुल्ल धिठणु खोर इक्कि गजे ।
 पाहाण भित्ति चिज्जइ नव मणइ इमेव जाणेह ॥ ३०
 लेवे केवण चुल्ल पउण मण पायसेर सण सहिय ।
 तइयस खोर जुच तलवट्टे अद्दु जलठाणे ॥ ३१ ॥ ।
 छाणय मण चालीसं तह कक्कर सट्टि पक्क हुइ चुल्ल ।
 रक्ख पवाहिय सट्टी अरक्ख चालीस फलिया य ॥ ३२
 उदेस पचगमिम चदासुय फेरुणा अओ भणिय ।
 जह देसकरुप्पत्ती चट्टिय समए मुणिज्जेइ ॥ ३३

॥ इति उदेसपच्चगं सम्मत्तं ॥

॥ इति परमजैन श्रीचन्द्राङ्गज ठङ्कुरकेरुविरचित गणितसार
 कौमुदीपाट्यां सूत्रं समाप्तः (शतम्) ॥

॥ सय वस्तुपंच तथा गाथा मिश्रित ३११ ॥

लिखित चैत्र सुदि ५ सयत् १४०४ ।

सूत्र सं० गाथा तथा वस्तुषय गणित ३११ ।

गा० १५ मूल प्रथम्य स्थापना ।	गा० २ मिश्र वर्गस्य गणना	१३
गा० ७८ परिकर्माणि पाटी	१ मिश्र वर्गमूल गणना	१४
गा० ५ संकलित उत्पत्ति विधि	२ मिश्र घनस्य गणना	१५
गा० ३ विमल कलित गणना	१ मिश्र घन मूल गणना	१६
गा० ३ गुणाकार मेद् २ गणना	१ त्रैलोक्यिक गणना	१७
गा० १ मागाहर गणमोत्पत्ति	१ पंच राशिक गणना	१८
गा० ३ वर्गसं० उत्पत्ति गणना	१ सप्त राशिक गणना	१९
गा० २ वर्गमूल सं० उत्पत्तिगणना	१ नव राशिक गणना	२०
गा० ४ घन उत्पत्ति गणना	१ एकदश राशिक गणना	२१
गा० ३ घनमूलोत्पत्ति गणना	५ द्व्यस्त त्रैलोक्यिक गणना	२२
गा० ४ अमिश्र परिक्रम गणना	४ ऋय विऋय मेद् गणना	२३
गा० ३ मिश्र संकलित गणना	२ मांड प्रतिमांड गणना	२४
गा० २ मिश्र गुणाकार गणना	२ जीप विऋय गणना	२५
गा० २ मिश्र मागाहर गणना		

॥ इति गाथा ७८ परिकर्माणि २५ सूत्रस्य बीजक यथा शुभमस्तु ॥

अपरभाग जाति ८ अष्ट

नामानि

सूत्र गाथा० १७

१ कडासर्पनु गाथा	१
२ प्रमागजाति गाथा	१
३ भाग भागजाति गा०	३
४ भागानुबंधाभा०	२
५ भाग प्रवाह गणना	२
६ भाग माह जाति गा०	२
७ बह्नी सवर्षनु गाथा	२
८ स्वमोहेच जाति गाथा	४

अपर व्ययहार ८ गणना ।

सूत्र गा० १०४

१ प्रथम मिश्रक व्ययहार

गा० २५

गा० २ मिश्रक गणना प्रथ.	१
गा० २ माध्यक गणना बुती	२
२ एकपत्री करण सूत्र	३
४ प्रक्षेपक	४
४ सम विसम	५
२ सुबन्धी व्यय०	३
४ सुबर्ष मिथो	७
५ अष्ट सुवर्ष पण अष्टम	८

२ दुतीक सेवी व्ययहार

गाथा ९

गा० २ सेवी व्ययहार गणित	१
१ नष्टघानपन	२
१ मपोत्तयनपन	३
१ नष्टगच्छानपन	४
२ संकलितैक्यामपन	५
१ वर्गीकघनानपन	३
१ संकलित वर्गी घनैक०	७

३ क्षेत्र व्ययहार सूत्र

गाथा १९

१ समघट्टरक्ष
२ दीर्घ घट्टरक्ष
३ एकदि सांक्ष
४ त्रिकोण क्षेत्र
५ पंचकोण क्षेत्र
३ त्रिकोण विऋत
७ वृत्तमंडल
८ घणुहाकार
९ गजपूताकार
१० पञ्जाकार
११ मूर्धगाकार
१२ मानापिधि

४ स्वात व्यवहार गाथा १५

गा०	४ स्वातनानाविधि मध्यम	१
"	३ कूपस्य फलानयन	२
"	३ पापाय फलानयन	३
"	२ पापाय लोक्य मध्यम	४

—

५ विधि व्यवहार गाथा १९

गा०	१ सूत्रप्रबंध गा०	१
"	४ विधि ईदपापाय	२
"	३ गोमद विधान गा०	३
"	२ पायसेधविधि	४
"	२ मुनारा गणित संख्या	५
"	२ ताक गणना छुदि	६
"	१ सोपान गणना	७
"	१ पुष्पबंधगा०	८
"	१ कूप संगणना	९
"	१ बापीसंगणना	१०

—

६ आकष व्यवहार गाथा ९

०	आकष दीर्घ वि०
	करवती छेद०
	मानाच्छद
	पता गाथा ९

—

७ राशि व्यवहार गाथा ५

	भक्त राशि
	दीर्घोद्देश
	विस्तार
	गणितसारि

—

८ छाया व्यवहार गाथा ४

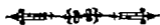
०	छाया साधना
०	द्विष्टाधना

॥ इति अष्ट व्यवहार सूत्र गाथा १०४ ॥



ठक्कुर-फेरू-विरचित

वास्तुसार ।



[प्रथम ग्रहलक्षणप्रकरणम् ।]

नमो जिनाय ।

सयलसुरासुरविद वसण-वञ्जाणुगाह नमिळण ।
पयरण ति वत्युसारं जहुत्त सखेवि भणिमो हँ ॥ १
गेहे पनरहिय सयं, विंषपरिक्खस्स गाह सीसाइ ।
पासाइ सट्ठि भणिय, पणहिय सय दुब्धि सव्वेवँ ॥ २ ॥ दारं ॥
वत्तीसँगुल भूमी खणेवि पूरिज्ज पुणावि सा गत्ता ।
तेणेव मँट्टिएण हीणाहिय सम फलँ नेय ॥ ३
अहव त भरिय नीरेँ चरणसय गच्छमाण जा सुसइ ।
ति-दु-इग अंगुल कमि धरँ अहँ मज्झिम उच्चमा जाण ॥ ४
सिय विप्प, अरुण खत्तिय, पीयल वइसाण, कसिण सुहाण ।
मट्टियवन्नपमाणे सुहया विवरीय असुहयराँ ॥ ५
॥ इति भूमिपरीक्षा ॥
समभूमि दुक्क वित्थरि दु रँहँचक्खस्स मज्झि रवि १२ संक ।
पढमत्त छाया गम्भे जमुत्तरा अद्धि उदयत्थं ॥ ६

पाठान्तरे-१ वञ्जाणुगं पप्पमिळणं । २ गेहाइ पत्युसारं संखेवेवं मन्निस्सामि ।

३ इगवन्नसयं च गेहे विंषपरिक्खस्स गाह तेवञ्जा ।

उह सत्तरि पासाए दुगसय चडुत्तए सखे ॥ २ ॥

४ वत्तीसंगुल । ५ मट्टियाए । ६ फला नेया ।

७ अह सा भरियज्जलेण प । ८ भूमी । ९ अहम ।

१० सिय विप्पि अरुण खत्तिणि पीय वइसी अ कसिण सुरी म ।

मट्टियवन्नपमाणा भूमी निपनिपवण्ण सुफन्नपटी ॥

११ इत्ये ।

॥ दिगुसाधनाचक्र ॥

समभूमी तिष्टीए वदति छ अंडु कोण कळडए ।
 कूण दु दिसि संतरगुल मज्झि तिरिय हत्यु चउरसे ॥ ७
 चउरसिक्किक्कि दिसे घारस भागाठ पचै भा मज्झे ।
 कूणेहिं सडु तिय तिय एव हुइ सुद्ध अडुसं ॥ ८

॥ इति भूमिसाधना ॥

चउरस अदिसिमोहा अवम्मियाऽफुट्ट तिदिणवीयरुहो ।
 अक्कल्लर भूमिसुहा पुव्वेसाणुत्तरखुवहो ॥ ९
 वम्मइणी वाहिकरा रोसुत्तर फुट्टभूमि मज्झयरी ।
 ससल्ला वहुदुक्खा त बुच्छ सल्लनाणमिमं ॥ १०
 व क च च ए हं स प्य य इय नव वलो कमेण लिह्दिऊण ।
 नव कुट्ठा भूमिकया पुवाइ मुणह पन्हेणे ॥ ११
 व प्पन्हे नरसल्ल सडुकरे मिशुकारग पुव्वे ।
 क प्पन्हे खरसल्ल अग्गि दुहेत्येहि निवदण्डं ॥ १२
 दाहिणे च प्पन्हेण नरसल्ल कडितलमि मिशुकरं ।
 त प्पन्हेसाण नेरइ हिंमाण य मिशु सडुकरे ॥ १३
 ए पन्हे अवरदिसे सिंसुसल्ल सडुहत्यि परेदेसं ।
 वायवि ह पन्हे चउकरि अंगारा मिचनासयरा ॥ १४

१ अडु । २ संतरगुल । ३ भाग पण । ४ इय जायइ । ५ दिण तिण
 बीपप्पसवा चउरसाऽपामिणी मज्झा य । ६ भू सुहाया । ७ बुद्धा ।

८ वम्मइणी वाहिकरी ऊत्तर भूमीइ इयइ रोउकरी ।

आफुट्टा मिशुकरी बुक्कज्जरी तह य ससल्ला ॥

९ इसपज्जा । १० यण्णा । ११ छिदियण्णा । १२ पुव्वाइ दिसासु तहा भूमि
 करुण भवभाए ॥ ११ ॥

अदिमसिऊण खडियं पिदिपुण्वं कप्राया करे वाओ ।

आणापिखर पण्हं पण्हाइम अक्कले सल्लं ॥ १२ ॥

१३ अग्गीय बुक्करी । १४ आमे । १५ त्पन्हे निर्वाय सडुकरे साणु सल्ल
 सिंसुहाणी ॥ १५ ॥ १६ पण्डिमदिदि ए पन्हे सिंसुसल्लं कर दुगमि परएसं ।

स प्यन्दि उत्तरेण ये द्यै वरसङ्घ कंठीह रोरकरं ।
 प प्यन्हे गोसङ्घं सङ्घकैरीसाणि घणनासं ॥ १५
 य प्यन्दि मङ्गकुट्टे केसं छार कवाल अइसङ्घा ।
 वञ्छत्यलप्यमाणा मिञ्चुकरा ह्येति नायव्वो ॥ १६
 इय एवमाइ अभिवि जे पुव्वगयाइ ह्येति सङ्घाइ ।
 ते सङ्घे वि य सोहिवि वञ्छत्यले कीरए गेह ॥ १७

तं अइ । वञ्छत्यर्क-

कभाइ तिसि पुढे घणाइ तिय दाहिणे भवे वञ्छो ।
 पञ्चिम मीणाइ तिय उत्तर मिहुणाइ तिय गेयं ॥ १८
 गिहमूमि सत्तमायं पण ५ वह १० तिहि १५ तीस २० तिहि १५
 दस १० ऋ ५ कमे ।

इय दिणसंखे चउदिसि सिरि पुळ समकि वञ्छठिई ॥ १९
 अग्गिमओ आयुहरो घणक्खय कुणाइ पञ्चिमो वञ्छो ।
 वामो य दाहिणो वि य सुहावहो होई नायव्वो ॥ २०
 घण मीण मिहुण कत्ते रवि ठिय गेह न कीरए केहवि ।
 तुल विञ्चिय मेस विसे पुव्वावर सेस सेस दिसे ॥ २१
 ॥ इति वत्स ॥

सोय १ घण २ मिञ्चु ३ हाणी ४ अत्य ५ सुन्न च ६ कलह ७
 उव्वसिय ८ ।

पूया ९ संपई १० अग्गी ११ सुह च १२ चित्ताइ मासफल ॥ २२
 ॥ इति शृङ्गारंमे मासफलाफलम् ॥

१ उत्तरदिसि सप्यन्हे । २ दिय । ३ कञ्चिमि । ४ करे घणविणासमीसाणे ।
 ५ अप्यन्हे मङ्गगिहे मङ्गकार कवाल केस बहुसङ्घा ।
 वञ्छत्यलप्यमाणा पापण य इति मिञ्चुकरा ॥ १७ ॥
 ६ कभाइतिगे पुढे वञ्छो तदा दाहिणे घणाइ तिगे ।
 पञ्चिमदिसि मीण तिगे मिहुण तिगे उत्तरे हपर ॥ १९ ॥
 ७ भाय । ८ बहुसङ्घमा । ९ संखा चउदिसि । १० भाउहरो । ११ हपर ।
 १२ घण मीण मिहुण कण्या संकतीण न कीरए गेह । १३ संपई ।

दि	कन्या		शुक्र		शुक्रि		मा
	२०	२५	३०	२५	२०	५	
सिद्ध	पूर्व						२०
सिद्ध	उत्तर						२०
सिद्ध	वर्ष						२०
सिद्ध	उत्तर						२०
सिद्ध	वर्ष						२०
सिद्ध	उत्तर						२०
सिद्ध	वर्ष						२०
सिद्ध	उत्तर						२०
सिद्ध	वर्ष						२०

ईशाज	पूर्व	आग्नेय
प	व	क
धननाश	शुभ	सुपद
उत्तर	य	दक्षिण
स	सुख	व
दक्षि	सुख	शुभ
घाप	पश्चिम	निर्वास
ह	प	त
मिथनास	परवेश	विष्मशुभ

वइसाहे मग्गसिरे सावणि फग्गुणि मयतरे पोसे ।
 सियफक्खे सुहदीहे' कए गिहे हवइ सुह रिद्धी ॥ २३
 सुहलग्गे षदबले खणिज्ज नीमो अहोमुहे रिक्खे ।
 उहुमुहे नक्खत्ते चिणिज्ज सुहलग्गि चदबले ॥ २४
 सवणइ पुसु रोहिणि ति उत्तरा सय घणिठ उहुमुहा ।
 भरणिऽस्तलेस ति पुन्वा मू-म वि किच्ची अहोवयणा ॥ २५
 पुवुत्तर नीवतले धिय अक्खय रयण प्पगं ठवियं ।
 सिलानिवेसं कीरइ सिप्पीण समाणणापुव्व ॥ २६

छात्रं यथा-

मिगुलग्गे सुहदसमे विणयरु लाहे ११ विहंप्पई किंदे १।१।१०।
 जइ गिहनीवारंमे' ता वरिससयाठं तम्मि गिह ॥ २७

दसम चठत्ये गुरु-ससि-सणि

कुज-लाहे ११ सु वरिस ताम असी ।

इग ति चठ छ मुणि १।१।१।१०

कमसो गुरु-सणि-सियं-रवि-मुहमि सयं ॥ २८

१ विपसे । २ नीमीठ । ३ नीम । ४ ठबिंड । ५ विहंप्पई । ६ नीमारंमे ।
 ७ सयाठयं हपर । ८ अठविठ वरिस असी । ९ मिगु ।

सुक्रुदए रवितइए मगलि छट्टेंसु पचमे जीवे ।

इय लग्गकए गेहे धैण-कणजुय दुसय वरिसाऊ ॥ २९

सुगिहत्थो ससिलगो गुफकिंवे थलजुएसु विद्धिकर्रो ।

कूरठ्ठम अइअसुहा सोमा मज्झिम गिहारंभे ॥ ३०

इकेवि गिहे^१ निच्छइ परगेहि परंसि सत्त वारसमे ।

गिहसामि वण्णनाहे अवले परहत्थि हुई गेह ॥ ३१

वमण सुक्क विहप्फइ रवि-कुज खत्थिय मैयकु वइसो य ।

बुहु सुहु मिच्छ सणि तमु गिहसामिय वस जाणेह ॥ ३२

कूरा ति-च्छ-गारसगा सोमा किंवे तिकोणगे सुहया । १।४।७।१०।१।५

जइ अठ्ठमो य कूरो अवस्त गिहसामि मारेइ ॥ ३३

॥ इति गृहनीचनिवेशालप्रम् ॥

चित्तऽणुराह ति उत्तर रेवइ मिय-रोहिणी य विद्धिकरा ।

मूलऽहा असलेसा जिट्ठा पुत्त विणासेइ ॥ ३४

भैरणी महा ति पुव्वा गिहसामिहया विस्ताह तियनास ।

कित्थिय अग्निभयकरे गिहप्पवेसे य ठिइ समए ॥ ३५

तिहि रिच्च ४।९।१४ वार कुज-रवि चरलग्ग विरुद्ध जोय विणचव ।

वज्जिज्ज गिहपवेसे सेसा तिहि-वार-लग्ग सुहा ॥ ३६

किंवे^{१२}ऽठ्ठमति कूरा १।४।७।१०।८।१२ असुहा ति छगारहा ३।५।११

सुहा भणिया ।

सैव्जे अठ्ठम असुहा इय लग्ग गिहपवेसस्त ॥ ३७

१ म । २ दोपरिससपाउय रिदी । ३ पडहुओ । ४ कतो । ५ गहे ।
६ हीर गिह । ७ मयम परसो म । ८ वण्ण माह इमे । ९ सपड सुहजोपसमो
मीमारंभे य गिहपवेसे म । १० पुम्बतिगं मह मरणी गिहसामिचई विस्ताहरणी
बास । ११ समसे । १२ किंजु पु भइत कूरा । १३ किंजुतिओपतिजाटे सुहया
सोमा समा सेसे ।

सूर्य गिहत्यो गिहिणी चंद्रो घण सुद्ध सुरगुरु सुक्ख ।
जो सबलु तस्त भाव सबल हुइ नत्थि संदिहो ॥ १८

॥ इति ग्रहमवेशालप्रं ॥

राया १ सेणाहिबई २ अमच्च ३ जुवराय ४ अणुज ५ रण्णीण ६ ।
नैमित्तिय ७ विज्जाण य ८ उवरोहिये ९ पच पच गिहा ॥ १९

एगसय अट्टहिय षटसट्टी सट्टि असीअ चालीस । ॥ १
तीस चालीस तिगे कमेण करसंख वित्थारो ॥ ४०

षट छच्च अट्ट तिय तिय अट्ट छै तियगेसु अंसजुयदीहे ।
सेसगिहाण य माण वित्थाराओ मुणेर्येव ॥ ४१

अह छच्च षट छ चउ छह षट तिय गेहीण हीण सुकमेण ।
वित्थाराओ सेसा सेसगिहा हुति एयाण ॥ ४२

अस्यार्य पत्रेणाह-

रस्त संख्या	राजा	सेनाधिप	अमात्य	युधयज	अणुज	राजीना	नैमित्तिक	पैष	उपरो दित
१	विस्तार दीर्घ १०८ १३५	६४ ७७.५	६० ७३	८० १०७.५	४० ५३.५	३० ३९	४० ५३.५	४० ५३.५	४० ५३.५
२	विस्तार दीर्घ १०० १२५	५८ ७२.५	५३ ६६	७४ ९८.५	३३ ४८	२४ ३७	३३ ४२	३३ ४२	३३ ४२
३	विस्तार दीर्घ ९२ ११५	५२ ६५.५	५२ ६५	६८ ९०.५	३२ ४२.५	१८ २५	३२ ३७.५	३२ ३७.५	३२ ३७.५
४	विस्तार दीर्घ ८४ १०५	४३ ५३.५	४८ ५४	६२ ८२.५	२८ ३७.५	१२ १६	२८ ३२.५	२८ ३२.५	२८ ३२.५
५	विस्तार दीर्घ ७६ ९५	४० ५३.५	४४ ५३.५	५६ ७७.५	२४ ३२	९ १३	२४ २८	२४ २८	२४ २८

वक्ष षट्छर्स्स गिह घचीस कराइ वित्थेर भणिय ।

षट षट हीण सुकमे जा खोढसे अंतजाईण ॥ ४३ ॥

१ घट । २ चंद्रो । ३ माघो सवलु मबे । ४ पुरोदियाण इह पच गिहा ।
५ छ छ छ माण कुत्त वित्थारो । ६ सेसगिहाण य अंसो माण दीहत्तजे मबे ।
७ अह छह षट छह षट छह षट षट छह हीणया कमेणव ।
मूलगिहवित्थाराओ सेसाण गिहाण वित्थारो ॥ ४२ ॥
८ गिहेसु । ९ वित्थारो भणिया । १० हीणो कमेसा । ११ सोखस ।

दसमस-अष्टमस खडस चउरंस वित्थरस्सहिय ।

दीह सव्वगिहस्सं य दिय-वत्थिय-वइस-सुदाण ॥ ४४

अस्यार्थं पुनः यन्त्रेणाह-

हस्त	विप्र	सत्रिय	विश्य	घट्ट	मत्पज
विस्तार	३२	२८	२४	२०	१६
दीर्घ	३५४	३१०	२८	२५	१६

अंगुल सत्तहिय सय उदए गम्मे य होइ पणसीई ।

गणियाणुसार दीहे सुगिहोळिंदस्स इय माण ॥ ४५

पव्वगुलि चउवीसिहिं वैत्तीसि करंगुलेहि कवीया ।

अट्ठि जवि तिरिय गेह पव्वगुलु इक्कु जाणेह ॥ ४६

पासाय-नायमदिर-तडाग-पायार-वत्थभूमाइ ।

इय कवीहि गणिज्जहि गिहसामिकरेहि गिहवत्थू ॥ ४७

गिहसामिसुहत्थेण नीम्भ विणा मिणसु वित्थर-दीह ।

गुणि अट्ठेहि विहच सेस घयाई भवे आया ॥ ४८

घय १ धूम २ सीह ३ साणे ४ विस ५ खर ६ गय ७ घखि ८ पूइअट्ठाया ।

पुव्वाइ घयाइ ठिई फल च नामाणुसारेण ॥ ४९

विप्पे घयाउ विज्जा खत्थियं सीहाउ वइसि वसहाओ ।

सुदाणे कुजराया घत्तायु मुणीण वायव्वा ॥ ५०

घय गय सीह विज्जा सते ठाणे घओ य सव्वत्थ ।

गय पचाइणे वसहा खेइय तह कवडाईसु ॥ ५१

१ गिहाण य । २ इत्थिक्क गार्थं इम परिमाणं । ३ इत्ये वाद् मुद्रित में निम्नोक्त गायार्थं ई-अं दीहवित्थरार्थं मणियं तं सयसमूमगिहमार्थं ।

सेसमखियं जाणह अहरिययं अं वहीकम्मं ॥ ४६ ॥

ओवरय सास कप्पओ वट्ठार्थं मूमगिहमियं सव्वं ।

अइ मूलसासमग्गं अं वट्ठं तं च मूलगिहं ॥ ४७ ॥

१ एत्तीसि । ४ वंविभा । ५ अट्ठिं यय मग्गेहिं । ६ मूमीय । ७ गणिसुह ।

८ गिहसामियो करेणं मिच्छि विणा । ९ साणा । १० अट्ठ भाय इमे । ११ तिप्पे ।

१२ सुहे अ कुजराओ घत्ताउ मुणीण मायव्वं । १३ पचाण्व ।

वावी क्लृव त्वागे सयणे अ गओ अ आसणे सीहो ।
 वसहो भोयणपचे लृचालवे घओ सिद्धो ॥ ५२
 विस-कुजर-सीहाया नयरे पासाय-सव्वगेहेसु ।
 साण मिच्छार्हण^१ घख कारुयगिहाईसु ॥ ५३
 घूम रसोइठाणे तहेव गेहेसु वज्जिजीवाण ।
 रासहु वेसाण गिहे घय गय-सीहाठ रायहरे ॥ ५४
 वीह वित्थरिगुणियं ज हुइ त मूलरासि नायव्व ।
 वसु^२ ८ ह्य रिक्ख २७ विहस, गिहनक्खत्त भवे सेस ॥ ५५
 गिहेरिक्ख वेयइहय नवभाए लद्ध मुत्तरासि धुव ।
 गिहरासि सामिरासी छक्कट्टे^३ दुवार(ल)सं असुह ॥ ५६
 रिक्ख वसु ८ सेस वय त च तिहा जक्ख-रक्खसं पिताय ।
 अय काठ कमेण हीणाहिय सम मुणेयव्व ॥ ५७
 जक्ख वओ विद्धिकरो घणनासं कुणइ रक्खस वओ य ।
 मज्झिम वओ पिताओ तहय जमसं थ वज्जिज्जा ॥ ५८
 मूलरासिस्त (मूलस्त रासि ?) अंक गिहनामक्खर वयकसंजुत्त ।
 तिये ३ सेस मुणहु असा इव-जमा तहय रायाणो ॥ ५९
 गिहेरिक्ख सामिरिक्ख पिंठ नव सेस छ चठ नव सुहया ।
 मज्झिम दो पठमट्ठा ति पच सत्ताऽहमा तारा ॥ ६०
 अह कन्ना-वरपीई गणिज्वए तह य सामिय गिहाये ।
 जोणि-गणे-रासि-सव्व त जाणह जोय(इ)साओ य ॥ ६१

१ मिच्छार्हणं । २ सं भवे । ३ अट्ट गुण उट्ट मत्तं । ४ हय्य । ५ गिह
 रिक्खं घट्टगुणियं मयमत्तं लद्ध मुत्तरासीओ । ६ सव्वहु । ७ वसुमत्त रिक्खसेसं
 ययं । ८ भाउ अंघट्ट कमसो । ९ तिथिदुत्तु सेस असा ईस-अमंसययसा ।
 १० गेहमत्तामिमपिंटे मयमत्तं सस छ चठ नव सुहया । मज्झिम दुग ह्य अंहु ति
 पच सत्ताहमा तारा ॥ ६० ॥ ११ गिहाय । १२ जोणि-गण-रासि पमुहा माडी वेहो
 य गविपणो ।

‡ सुद्रितपुस्तके एतदन्तर निम्नलिखिता गाथा लम्पन्ते—

ओवरय नाम साला जेषेण दुसालु मण्णय गेह ।
 गइ नाम च अलिंदो इग इ तिर्लिंदोइ फसालो ॥ ६५
 पटसाल बार बुहु दिसि आलिय भिचीहि मंडवो इवइ ।
 पिट्टी दाहिण वामे अलिंद नामेहि गुंमारी ॥ ६६
 आलिय नाम मूसा थंमय नाम च इवइ खडदारं ।
 मार पट्टो य तिरिओ पीड कडी घरण एगड्डा ॥ ६७
 ओवरय-पट्टसाला-पज्जवं मूलगेह नायव्वं ।
 एअस्स पेव गणियं रंघण गेहाइ गिहमूसा ॥ ६८
 ओवरय-अलिंद-गई गुवारि-भिचीण पट्टथंमाण ।
 आलिय मंडवाण य मेएण गिहा उव्वंति ॥ ६९
 अठदस गुरु पत्तारे लड्डुगुरुमेयहिं सालमाईणि ।
 वार्यंति सव्व गेहा सोल सहस्स ति सय चुलसीआ ॥ ७०
 ततो य सिं किवि संपइ वड्डति घुवाइ संतप्पाईणि ।
 ताण पिय नामाई लक्खणनिष्साइ घुच्छामि ॥ ७१

घुव १ घन २ जय ३ नद ४

खर ५ क्त ६ मणोरम ७ सुमुह ८ दुमुह ९ ।

कूर १० सुपक्ख ११ घणद १२ खय १३

अक्कद १४ निठल १५ विजय १६ गिही ॥ ६२

पोडशा गृहम्

११११ घुव
११११ घम्य
११११ जय
११११ मंद
११११ खर
११११ क्त
११११ मनोरम
११११ सुमुह

११११ दुमुह
११११ कूर
११११ सुपक्ख
११११ घणद
११११ फलय
११११ मंद
११११ निठल
११११ विजय

ठवि चठ गुराइ सुकेमे
 लड्डुओ गुरु हिट्टि सेस उवर समा ।
 ऊणेहिं गुरु एव
 पुणो पुणो जौम सव्वलह ॥ ६३

त ध्रुव-धन्नाईण पुञ्जाइ लहूहिं साल नायन्वा ।

गुरुठाणि मुणह मुल्ल नामसम भावै जाणेह ॥ ६४ †

॥ इति पोडशाग्रहम् ॥

‡ पोडशाग्रहकोष्ठफानन्तर मुद्रितपुस्तके पता निम्नगता गाथा लम्पन्ते ।

संतण १ संतिव २ वड्डुमाण ३ कुकुडा ४ सत्तियं ५ च हसं ६ च ।

वद्वण ७ कम्मुर ८ संता ९ हरिसम १० बिठला ११ कराल १२ च ॥ ७५

विचं १३ चित्त १४ घर्म १५ कालदंड १६ तह्ये वधूद १७ ।

पुषद १८ सध्वगा १९ तह वीसहम कालचर्क २० [च] ॥ ७६

तिपुरं २१ सुदर २२ नीला २३ कुडिल २४ सासय २५ य सत्यदा २६ सीलं २७ ।

डडुर २८ सोम २९ सुमदा ३० तह मरुमार्ग ३१ च कूरक ३२ ॥ ७७

सीहिर ३३ य सम्बन्धमय ३४ पुड्डिद ३५ तह कित्तिनासणा ३६ नामा ।

सिणगार ३७ सिरीवासा ३८ सिरीसोम ३९ तह कित्तिसोहणया ४० ॥ ७८

जुगसीहिर ४१ बहुलाहा ४२ सच्छिनिवासं ४३ च कुविय ४४ सज्जोया ४५ ।

बहुतेर्य ४६ च सुतेर्य ४७ कलहावह ४८ तह बिलासा ४९ य ॥ ७९

वह निवासं ५० पुड्डिद ५१ कोहसभिहं ५२ महंत ५३ महिता प ५४ ।

दुक्कं ५५ च कुलच्छेय ५६ पयावद्वण ५७ य दिष्वा ५८ य ॥ ८०

बहुदुक्क ५९ कंठच्छेयण ६० जंगम ६१ तह सीहनाय ६२ हत्थीनं ६३ ।

कंटक ६४ इ नामाई सम्पलणमेय अबो बुच्छं ॥ ८१

केवल ओवरय दुगं संतण नामं मुणेह तं मेई ।

वस्सेव मन्नि पईं मुहेगअलिंदं च सत्तिययं ॥ ८२

सत्तिय मेहस्सम्मे अलिंदु बीओ अ तं मणे संतं ।

सति गुजारि दाहिण थंम सद्धिय तं हक्क विचं ॥ ८३

विचगिहे बामदिसे अइ हक्क गुमारि ताव वधूदं ।

गुमारि पिड्ढि दाहिण पुरजो दु अलिंदं व तिपुरं ॥ ८४

पिड्ढि दाहिण बामे इगेग गुंजारि पुरठ दु अलिंदा ।

तं सासय आवासं सम्बाण जणाण संतिफरं ॥ ८५

दाहिण वाम इगेग अलिंद शुअलस्त मंडव पुरओ ।
 ओवरय मञ्जि थंमो तस्त य नाम इवइ सोमं ॥ ८६
 पुरओ अलिंद तियग तिदिसि इक्कि इवइ गुंमारी ।
 थंमय पइ समेयं सीपर नाम च तं गेहं ॥ ८७
 गुंमारी शुअल तिहुं दिसि दुलिंद मुहे य थंम परिकल्पियं ।
 मंडव जालिय सहािया सिरिसिंगारं स्य विति ॥ ८८
 तिभि अलिंदा पुरओ तस्तमो महु सेस पुंभु च्च ।
 त नाम शुमासीपर बहुमगल रिद्धि-आवासं ॥ ८९
 दु अलिंद-मंडव तह जालिय पिहेग दाहिणे दु गई ।
 मिचितरि थंम नुआ ठओय नाम घणनिलयं ॥ ९०
 ठओअगेइ पच्छइ दाहिणए दुगइ मिचि अंतरए ।
 चइ हुति दो ममठी विलासनाम इवइ गेह ॥ ९१
 ति अलिंद मुहस्समो मंडवयं सेसं विलासु च्च ।
 तं गेहं च महंतं कुणइ महङ्गि वसंताण ॥ ९२
 मुहि ति अलिंद समडव जालिय तिदिसेहि दु दु य गुंजारी ।
 मञ्जि थलय थय मिची जालिय य पयाववदणयं ॥ ९३
 पयाववदणए च्च थमय ता इवइ जंगमं सुजसं ।
 इअ सोलस गेहाइ सव्वाइ लत्तरमुहाइ ॥ ९४
 एयाइ थिय पुज्वा दाहिण पच्छिम मुहेम चारेण ।
 नामंतरेण अभाइ तिभि मिलियाणि चउसट्ठि ॥ ९५
 संतणमुत्तरचारं तं चिय पुज्जमुहु संतद भणिय ।
 सम्ममुह बहुमाण अवरमुहं कुणुह तहभेसु ॥ ९६
 अमो अलिंद तियग इक्कि वाम दाहिणोवरय ।
 थमहुयं च दुसाल तस्त य नाम इवइ घरं ॥ ९७
 वयणे य चउ अलिंदा उमयदिसे इहु इहु ओवरओ ।
 नामेण वासन त जुगअंत वाप वसइ पुंभं ॥ ९८
 मुहि ति अलिंद दु पच्छइ दाहिण वामे अ इवइ इक्किं ।
 त गिह नाम वीयं हियच्छियं चउमु वमार्णं ॥ ९९
 दो पच्छइ दो पुरओ अलिंद तह दाहिणे इवइ इको ।
 कालक्ख त गह अक्खलि दंठं कुणइ मूयं ॥ १०० ॥

अलिंद तिभि वयणे जुअल जुअलं च वामदाहिण्य ।
 एगं पिठ्ठिविसाय पुदी संपुदि वहुण्य ॥ १०१
 दु अलिंद षठदिसेहिं सुध्वय नाम च सध्वसिद्धिर्त्त ।
 पुरभो तिभि अलिदा तिदिसि दुगं तं च पासायं ॥ १०२
 षठरि अलिदा पुरभो पिठ्ठि तिगं तं गिई दुवेहक्खं ।
 इह धाराई गेहा अट्टुधि नियनामसरिसफला ॥ १०३
 विमलाइ सुदराई हंसइ अलंकियइ पमबाई ।
 पम्भोय सिरिमवाई चूढामभि कलसमाई य ॥ १०४
 णमाइवासु सध्वे सोलस सोलस हवंति गिह तपो ।
 इकिक्काओ चठ षठ दिसिमेअ-अलिंदमेएहिं ॥ १०५
 तिअलोयसुदराई षउसहिं गिहाइ हुति रायाणो ।
 ते पुण अबइ संपइ मिच्छाण च रत्तमावेण ॥ १०६



पुव्वेदिसे अत्याण अग्गीय रसोइ दाहिणे सयण ।
 नेरइ नीहारठिई भोयणठिइ पच्छिमे भणिय ॥ ६५
 वायव्ये सव्वायुहं कोसुत्तर घम्मठाणु ईसाणे ।
 पुव्वाइविनिहेसो मूलगिहद्वारविक्खाओ ॥ ६६
 पुव्वेणं विजयवार जमघरं दाहिणेणं नायव्व ।
 अवरेण मयरवारं कुवेरवारुं चरे पासे ॥ ६७
 नामसम फलमेयं वारं न कयावि दाहिणे कुब्जा ।
 कारणवसाठ जइ हुइ चठदिसि भागट्ट कायव्वा ॥ ६८
 सुहवार असमज्जे षठहिं दिसेहिं पि अट्टमागाओ ।
 चठ तिय १ दुग्धि ८ २ पण तिय ३ तिय पण ४ पुव्वाइ सुकम्मेण ॥ ६९
 वाराठ गिहपघेसं सोवाण करिज्ज सिद्धिमग्गेण ।
 पयठाण सूरसुह जलकुम्भ रसोइ आसन्न ॥ ७०

१ पुव्वे सीहवुवारं । २ अग्गीइ । ३ सव्वाउह । ४ विक्खाए । ५ पुव्वाइ ।
 ६ दाहिणार । ७ वारं उईचीय । ८ मेसिं । ९ जइ होइ करवेणं ताठ चठदिसि
 अट्ट माग कयव्वा । १० चठसुं पि विसासु अट्टमागासु ।

सईमुहाइ गेहो कायव्या सिर्पि^१-हट्ट वग्घमुहा ।

गिहवाराठ कमुष्ठा हट्टुष्ठा पुरओ मज्झसमा ॥ ७१

पुव्वुअयै अत्यहरं जमुन्नैय मदिंरं घणसमिद्धं ।

अवरुअयै विद्धिकरं उत्तरुअयै होइ उव्वसिय ॥ ७२

मूलाओ औरम कीरइ पच्छा कमे कमे कुज्जा ।

मूलगणियविमुद्ध वेह^२ सव्वत्थ वज्जिज्जा ॥ ७३

तलवेह १ कोणवेह २ तालुयवेह ३ कवालवेह ४ च ।

तह थम ५ तुलावेह ६ दुवारवेह च ७ सत्तमय ॥ ७४

समविसम भूमिकुभिय जलपूरं परगिहस्स तलवेह ।

कूणसम जइ कूण न होइ ता कूणवेह^३ तु ॥ ७५

इक्खणे नीत्तुअ पीठ त मुणह तालुयावेह ।

वारस्सुवरिमपट्टे गम्मे पीठ च सिरवेह ॥ ७६

गेहस्स मज्झि भाए थमेग त मुणेह उरसल्ल ।

अह अनलो विनलाइ हविज्ज जा थमवेह^४ त ॥ ७७

हिट्ठम उवरंमि खणे^५ हीणाहिय पीठ त तुलावेह ।

पीठ^६ पीठस्स सम हवेइ जइ तत्थ नहु दोस ॥ ७८

कुव्वथमु हुमै^७ कोणय कीले विद्धे दुधारवेहो य ।

गेहुअविठण भूमी त न विरुद्ध युहा विंति ॥ ७९

तलवेहि कुट्टरोया हवति उव्वेय कोणवेहमि ।

तालुयवेहे^८ भय कुलक्खयं थमवेहेण ॥ ८०

१ सगइमुहा वरगेहा । २ तहय । ३ पुव्वुअयै । ४ वादिण उच्यते ।
५ अयमर्थः । ६ उच्यते । ७ वारंमा । ८ सत्तमय । ९ वेहो । १० वेहो ।
११ वेहो अ । १२ वेहो सा । १३ हिट्ठम उपरि कण्ठान् । १४ पीण समसंखाओ
वर्षति ३३ तत्थ नहु दासा । १५ भूमकूप यम । १६ वेहेण ।

कावालु तुलावेहे घणनासो होई रोरभावो य ।
 इय वेहफल नाउ सुद्ध गेहं सुकायव्व ॥ ८१
 वेहेगेण य कैलह कमेण हाणिं च जत्य वे हुति ।
 तिहुं भूयाण निवासो चहु कखय पवि सव्वरिय ॥ ८२

॥ इति वेधः ॥

अट्टुचर सठ माया पडिमारुषु व्व करिवि मूमि तओ ।
 सिरि हियइ नाहि सिहणे थमं वज्जेह जचेण ॥ ८३
 वारं वारस्त समं अह वारं वारमज्झि कायव्व ।
 अह वज्जिऊण वारं कीरइ वारं तहाल च ॥ ८४
 कूण कूणस्त सम आलइ आल च कीलए कील ।
 थमे थम कुब्जा अह वेह वज्जि कायव्वा ॥ ८५
 आल्यसिरंमि कीलो थमो वारुवरि वार थसुवरे ।
 वारंदि वार समखणि विसमा थमा महा असुहा ॥ ८६
 थमहीण न कायव्व पासाय मढं-मदिरं ।
 कूण-कखत्तरेऽवस्तं वेय थम पयत्तओ ॥ ८७
 कुभीसिरंमि सिहरं वेट्ट अट्टस भइगायोरं ।
 ख्वगपल्लवसैहिय थमेरिसगिहि^{१५} न कायवं ॥ ८८
 खणमज्जे कायव्व कीलालय गेठखमुक्ख समसंमुह ।
 अंतरं छेची मच करिज्ज खण तह य पीढसम ॥ ८९
 गिहमज्झि अंगणे वा तिकोणय पचकोणय जत्य ।
 तत्य वसंतस्त पुणो न होइ सुह रिद्धि कईयावि ॥ ९०

१ इयइ । २ करेअप्ये । ३ इगवेहेण य कखहो । ४ वो । ५ तिहु भूयाण
 निवासो चउहिं लभो पंचहिं मारी । ६ सिद्धिणो । ७ कीळा । ८ दि । ९ कख ।
 १० मड । ११ पहा । १२ महगायाय । १३ सदिआ । १४ गेहे थंमा न कायव्वा ।
 १५ गमोळ । १६ मुह । १७ छत्ता ।

मूलगिहे पश्चिमदिसि' जो कैरइ तिनि धार ओवरए ।
 सो त गिह न भुजइ अह भुजइ दुम्बित्तओ ह्वइ ॥ ९१
 कमलेगि ज दुवारो अहवा कमलेहिं वज्जिओ होइ ।
 हिट्ठाठ उवरि पिहुलो न ठाँइ थिर लच्छि तम्मि गिहे ॥ ९२
 बलयाकारं कूणेहिं सकुल अहव एग दु ति कूण ।
 वाहिण-धामय कीह न वासियन्वेरिसं गेह ॥ ९३
 सयमेव जे किवाढा पिहियति य उग्घटति ते असुहा ।
 धित्त-कलसाइ-सोहा-सविसेसा मूलवारि सुहा ॥ ९४
 छित्तिरि मिच्छित्तिरि मग्गतरे दोस जे न ते दोसा ।
 साल-ओवरय-कुस्ती-पिट्ठि-दुवारेहिं बहु दोसा ॥ ९५
 जोइणि नट्टारंभ भारह-रामायण च निवजुद्ध ।
 रिसिचरिय-देवधरिय इअ धित्त गेहिं नहु जुत्त ॥ ९६
 फलिहतय कुसुमवल्ली सरस्तई नवनिहाणजुअलच्छी ।
 कलसं बद्धावणय सुमिणावलियाइ सुहचित्त ॥ ९७
 पुरिसु ध्व गिहस्संग हीण अहिय न पावए सोह ।
 तम्हा सुद्धं कीरइ जेण गिह ह्वइ रिद्धिकरं ॥ ९८
 वज्जिज्जइ जिणपुट्ठी रवि ईसर दिट्ठि विन्हु धामो य ।
 सव्वत्थ असुह घडी बम्हीं पुण सव्वहा थयह ॥ ९९
 अरिहतविट्ठि वाहिण हर पुट्ठी वामए सुकह्हाण ।
 विवरीए घहु दुक्ख परं न मग्गतरे दोस" ॥ १००
 पठमत जाम वज्जिय थयाइ दु-तिपहरसमवा छाया ।
 दुहदायो नायन्वा तओ य जैत्तेण वज्जिज्जा ॥ १०१

१ मुदि । २ धाव दुधि वाय ओवरए । ३ हवर । ४ डार । ५ धामर ।
 ६ वारि । ७ गेह । ८ पिट्ठी । ९ विण्डु धाममुमा । १० धामाय चठदिसि
 थयह । ११ दोसो । १२ हेत्त । १३ पयत्तेण ।

सम कट्टा विसम खणा सव्वपयारेसु इयं विही कुञ्जा ।
पुव्वुत्तरेण पल्लव जमावरा मूल कायव्वा ॥ १०२*

हल-धाणय-सगढ-मई-अरहट्टजताणि कट्टई तह य ।

पचुंघरि खीरतरु एयाण य कट्ट वज्जिज्जा ॥ १०३

विज्जठरि केलि दाढिम जमीरी वो हलिह अंबिलिया ।

घव्वूलि धोरि माई कणयमया तहवि नो कुञ्जा ॥ १०४

एयाण जईयं जडा पाढवसाओ, पविस्सई अहवा ।

छाया वा जमि गिहे कुलनासो हवइ तत्येव ॥ १०५

संसुद्धे मग्ग दग्गा मसाण खग निल्य खीर विरदीहा ।

निंघ घहेढय रुक्खा नहु कट्टिज्जति गिहहेरु ॥ १०६

पाहाणमय थम पीढ पट्ट च धारउत्ताइ ।

एए गेहिविरुद्धा सुहावहा घम्मठाणेसु ॥ १०७

पाहाणमए कट्ट कट्टमए पाहाणस्त थमाइ ।

पासाए य गिहे, वा वज्जियव्वा पयत्तेण ॥ १०८

पासाय-शूव-आवी-मसाण-मठ-रायमदिराण च ।

पाहाण-इट्ट-कट्टा सरिसममत्ता वि वज्जिज्जा ॥ १०९

सुगिहजलो उवरिमओ विविज्ज नियमज्जि नन्नगेहस्त ।

पच्छा क्कहवि न सिप्पइ इय मणिय पुव्वसत्थमि ॥ ११०

ईसाणाई कोणे नयरे गामे न कीरए गेह ।

संतलोयाण असुह अतिमजाईण रिद्धिक्कंरं ॥ १११

देव-गुरु-वप्पि-गोघण-समुहे चरणे न कीरए सयण ।

उत्तर सिर न कुञ्जा न नग्गदेहा न अल्लपया ॥ ११२

*सु पु पाठमेवो यथा - 'सम्प्रेयि भारयद्वा मूत्रगिदे एगिसुप्ति कीरंति ।

पीढ पुण एगमुत्ते उवरयगुंजारि-मडिदेसु' ॥ १५५ ॥

१ अरपि । २ पाडिपसा, पाडोसा । ३ सुसुद्ध । ४ धारउत्ताणं । ५ विद्धिक्कंरं ।

धुचामन्नासन्ने परवत्युदले चउप्पहे न गिह ।

गिह-देवलपुब्बिच्छ मूलदुवारं न चालिज्जा ॥ ११३

गो-वसह-सगढठाण दाहिणए वामए तुरंगाण ।

गेहस्से वारभूमी संलग्गा साल ऐयाणं ॥ ११४

गेहठ वाम दाहिण अग्गिम भूमी गहिज्ज जह कज्जं ।

पच्छा कहव न लिज्जइ इय मणिय परमैनाणीहिं ॥ ११५

॥ इति श्रीचन्द्राक्षर ठक्कुर-केरु-विरचिते वास्तुसारे

गृहलक्षणप्रकरणं प्रथम समाप्तम् ॥



[द्वितीय विम्बपरीक्षाप्रकरणम् ।]

इय गिहलक्खणभाव भणिय भणामित्य विंघपरिमाण
गुण-द्वोसलक्खणाइ सुहासुह जेण नज्जेई ॥ १

छत्तयत्तचारं भाल-कवोलाठ सवण-नासाओ ।

सुहय जिणधरणओ नवग्गाहा जक्ख-जक्खिणिया ॥ २

विंघपरिवारमज्जे सेलस्स य वण्णसकरं न सुह ।

समअंगुलप्पमाण न सुधर हवइ कहयावि ॥ ३

अञ्जुभजाणु-कधे तिरिए केसत अंचल्ले य ।

सुत्तेग च्चट्टरंसं पज्जकासण सुह विंघ ॥ ४

नव ताल हवइ रूव रूवस्स य वारसंगुलो तालो ।

अंगुल अट्टहियसय उट्ट चासीण छप्पन्नं ॥ ५

भाल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुञ्ज ७ जघाइ ८ ।

जाणु ९ य पिठि १० य धरणा ११ इकारस ठाण नायव्वा ॥ ६

चठ ४ पच ५ वेय ४ रामा ३

रवि १२ दिणयर १२ सूर १२ तह य जिण २४ वेया ४ ।

जिण २४ वेय ४ भायसंखा कमेण इय उट्टरूवेण ॥ ७

भाल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुञ्ज ७ जाणू य ८ ।

आसीणविंघमाण पुव्वविही अंक सस्साई ॥ ८

१ जापिन्ना । २ चासीण ।

† मुद्रितपुस्तके पाठान्तररूपेण उद्धृतः पाठः—

भालं मासावयणं वणसुत्तं माहि गुञ्ज उरु य ।

जाणुम जंघा धरणा इय इह टाणाणि जापिन्ना ॥ ६ ॥

चठ पंच वैप तेरस चउत्स दिणनाह तह य जिण वेया ।

जिण वेया भायसंखा कमेण इय उट्टरूवेण ॥ ७ ॥

मुहकमलु चउवसंगुल कझंतरि वित्यरे व्ह गीवा ।

छचीस उरपएसो सोलह कडि सोल तणुपिंड ॥ ९

कनु व्ह सोल वित्यरि चउ उवरे तिभि हिट्टि लउलि खण ।

नकु ति वित्यरि दुदए सिरिवच्छो दु व्ह तिय पिहुलो ॥ १०

[पञ्चदशन्तरं मुद्रितपुस्तके निम्नलिखिता गाथा अभिन्न उपलभ्यन्ते—

नकसिहागम्माओ एगतरी चकसु चउरदीहचे ।

दिबहुदइ इकु डोलइ दुमाइ मउहडु छदीहे ॥ १

नकु ति वित्यरि दुदए पिंडे नासगि इकु अडु सिहा ।

पण माय अहर दीहे वित्यरि एगगुल बाण ॥ २

पण उदइ चउ वित्यरि सिरिवच्छं बमसुचमच्चंमि ।

दिवर्बंगुल थणवडु वित्यरं उडचि नाहेग ॥ ३]

सिरिवच्छ सिद्धिण फक्खतरमि तह मुसल पण सरह ५५५८ केमे ।

मुणि ७ चउ ४ रवि १२ ठे ८ वेया कुहुणी मणियधु जघ जाणुपय ॥ ११

[अत्र पुनः सु० पु० एतद्गाथानन्तरं भोगोक्ता अभिन्न गाथा विद्यन्ते—

थयसुच अहोमाए सुय बारस अंस उपरि छडि कंध ।

नाहीठ किइ बडु फभाओ केस अंताओ ॥ १

कर-उपर अंतरेगं चउ वित्यरि नद दीहि उच्छग ।

मउमडु दुदय ति वित्यरि कुडुपी कुच्छित्तरे तिभि ॥ २

बंमसुचाओ पिंडिय छ जीव दह कभु दु सिहण दु माल ।

दु चिपुक सच भुजोनरि सुयसंधी अडु पयसारा ॥ ३

बाणुअ मुहसुचाओ चउदस सोलस अहार पसरं ।

समसुच बाण नाही पयकंक्रम आप छम्माय ॥ ४

पसरार गम्भरेहा पनरसमाएदि चरण अंगुह ।

दीहगुलीय सोलस चउदसि माण कणिट्टिया ॥ ५

मुद्रितपुस्तके पाठभेदो यथा—

कभु दह तिभि वित्यरि अह्वाई हिट्टि इकु आचारे ।

केसंठ बडु समसिह सोय पुण नयपरह समं ॥ १०

१ मुसल उ पण मडु कम । २ बसुवेया । ३ कुट्टिपी ।

[द्वितीय विन्धुपरीक्षाप्रकरणम् ।] १५

इय गिहलक्खणभाव भणिय भणामित्य विंघपरिमाण ।
 गुण-दोसलक्खणाइ सुहासुह जेण नज्जेइ ॥ १ ॥
 छत्तयउत्तारं माल-कवोलाउ सवण-नासाओ ।
 सुहय जिणचरणगे नवग्गाहा जक्ख-जक्खणिया ॥ २ ॥
 विंघपरिवारमज्जे सेलस्स य वण्णसंकरं न सुह ।
 समञ्जगुलप्पमाण न सुवर ह्वइ कइयावि ॥ ३ ॥
 अञ्जुमजाणु-कधे तिरिए केसंत अंचल्ले य ।
 सुत्तेग चउरंसं पज्जकासण सुह विंघ ॥ ४ ॥
 नव ताल ह्वइ रूव रूवस्स य वारसंगुलो तालो ।
 अंगुल अट्टहियसय उट्ट चासीण छप्पन्न ॥ ५ ॥
 माल १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुञ्ज ७ जघाइ ८ ।
 जाणु ९ य पिण्डि १० य चरणा ११ इच्छारस ठाण नायव्वा† ॥ ६ ॥
 चउ ४ पंच ५ वेय ४ रामा ३
 रवि १२ दिणयर १२ सूर १२ तह य जिण २४ वेया ४ ।
 जिण २४ वेय ४ भायसंखा कमेण इय उट्टस्खेण ॥ ७ ॥
 मालं १ नासा २ वयण ३ गीव ४ हियय ५ नाहि ६ गुञ्ज ७ जाणू य ८ ।
 आसीणविंघमाण पुव्वविही अंक सस्साई ॥ ८ ॥

१ आणिसा । २ बासीण ।

† मुद्रितपुस्तके पाठान्तररूपेण कट्टतः पाठाः-

मालं मासापपर्यं यणमुत्तं माहि गुञ्ज कइ य ।

जाणुम पेजा चरणा इय तह आणपि आणिसा ॥ ६ ॥

चउ पंच वेय तेरस चउत्तस हियमाइ तह य जिण वेया ।

जिण वेया भायसंखा कमेण इय उट्टस्खेण ॥ ७ ॥

मुहकमलु चउदसंगुल कम्भतरि वित्यरे वह गीवा ।

छत्तीस उरपएसो सोलह कडि सोल तणुपिंड ॥ ९

कसु वइ सोल वित्यरि चउ उवरे तिभि द्विद्वि लउलि खण ।

नकु सि वित्यरि दुवए सिरिवच्छो दु वइ तिय पिहुलो ॥ १०

[एतत्पुस्तके मुद्रितपुस्तके निम्नलिखिता गाना अपिक्का उपलभ्यन्ते—

नक्षत्रसिद्धागम्भामो एगंतरि चकसु चउरदीहये ।

दिवद्वदइ इकु बोलइ दुमाइ मउहकु छरीहे ॥ १

नकु ति वित्यरि दुवए पिंडे नासग्गि इकु अदु सिहा ।

पण माय अहर दीहे वित्यरि एगंगुल बाण ॥ २

पण उदइ चउ वित्यरि सिरिवच्छं बमसुचमन्त्रंमि ।

दिवदंगुलु यणवहुं वित्यरं उडचि नाहेगं ॥ ३]

सिरिवच्छ सिद्धिण क्वस्वतरंमि तह मुसल पण सरहु ५।५।८ कमे ।

मुग्गि ७ चउ ४ रवि १२ डुं ८ वेया कुहुणी मणिबधु जघ जाणुपय ॥ ११

[अत्र पुनः मु० पु० एतद्गामान्तरं अपोगत्ता अपिक्का गाना विद्यन्ते—

यणसुच अहोमाए सुय बारस अंस उवरि छदि कंष ।

नाहीठ फितइ वहुं कंषाओ केस अंताओ ॥ १

फर-उयर अंतरेगं चउ वित्यरि नद दीहि उच्छंमा ।

बलवहु दुवय ति वित्यरि कुहुणी कुच्छित्तरे तिभि ॥ २

बंमसुचामो पिंडिय छ जीष दइ कसु इ सिहय दु माल ।

दु चिबुक सच सुबोवरि सुयसंधी अहु पयसारा ॥ ३

बाणुय मुहसुचाओ चउदस सोलस अबार पसारां ।

समसुच माय नाही श्यकंकाय वाव छन्नाय ॥ ४

पसारा गन्मरेहा पनरसमायहिं चरय अंगुहुं ।

दीहंगुलीय सोलस चउदसि माए कणिद्धिया ॥ ५

मुद्रितपुस्तके पाठमेवो यथा—

कसु दइ तिभि वित्यरि अहार्इ द्विद्वि इकु आपारे ।

केसंत बहु समसिरु सोय पुण नपणरेइ सर्प ॥ १०

१ मुसल छ पण अहु कमे । २ बडुवेया । ३ कुद्धिणी ।

करयल गम्माठ कमे दीहंगुलि न्दे पक्खिमिया ।
 छ्वा कणिट्टिय मणिया गीषुदए तिभि नायम्बा ॥ ६
 मन्नि म्हात्थगुलिया पण दीहे पक्खिमिअ चउ चठरो ।
 उट्ट अंगुलि माय तियं नह इक्किं ति अंगुट्टं ॥ ७]

अंगुट्टसहियकरयल वट्ट सत्तगुलस्स वित्थारे ।
 चरण सोलस दीहे तयन्दि वित्थिअ चउ उवए ॥ १२ ॥ ।

[पत्तज्ञानन्तरं मुद्रितपुस्तके निम्नगतैश्च गाथा भविष्य सम्भते—
 गीष तह कम्म अंतरि खणे य वित्थारि दिवङ्गु उदइ तिग ।
 अंचलिय अट्ट वित्थरि गदिय मुह जाव दीहेण ॥ १

छम्भाय अहरदीहे चक्खुपण दीह अट्टपिहुलत्ते ।
 सिद्धि सिद्धिण चउ नाही नासा उर नाहि सुत्थेगा ॥ १३
 केसंत सिद्धा गदिय पचट्ट कमेण अंगुल जाण ।
 पठमुट्टरेहचक्क करचरण विट्ठसियं निच्च ॥ १४

[मुद्रितपुस्तके पत्तज्ञानन्तरं निम्नोद्धृता गाथा भविष्य सम्भन्ते—
 नक्क सिरिबन्ध नाही समगम्भे पंमसुत्तु चापेह ।
 तथो अ सयलमार्ण परिगरविचस्स नायम्भं ॥ १
 सिद्धासणु विवाओ दिवङ्गुओ दीहि वित्थरे अट्टो ।
 पिडेण पाठ चउओ रुग्ग नव अहन सत्त पुओ ॥ २
 उमपदिसि अक्ख-अक्खिअभि केत्तरि गय चमर मन्नि चक्कपरी ।
 चउदस बारस दस तिय छ माय कम्मि इअ भवे दीहं ॥ ३
 चक्कपरी गल्लक्क तस्साहे धम्मचक्क उमपदिसं ।
 हरिफट्टुअं रमणीयं गदियमज्झंमि जिणचिअं ॥ ४
 चउ कणइ दुभि छत्तइ बारस इत्थिहिं दुभि अह कम्मए ।
 अह अक्खरवट्टीए एय सीहासण्यसुदयं ॥ ५
 गदिय-सम-बसुभाया तथो इगतीस चमरधारी य ।
 तोरणसिंरं दुवालस इअ उदयं पक्खवापाण ॥ ६
 सोलस माए रूच पुट्टलियसमये छहि बरत्तीय ।
 इअ वित्थरि बावीसं सोलस पिडेण पक्खवाय ॥ ७

छत्तद्वं दसमार्यं पंचयनालेग तेर मालघरा ।
 दो माए पुंमल्लिए तहदु वसभर-वीणघरा ॥ ८
 तिलपमन्ममि बग दुमाय यमल्लिय छषि मगरमुहा ।
 इम उमयदिसे जुलसी दीह उलस्स बाणेइ ॥ ९
 षठवीसि माइ छचो धारस तस्सुदइ अट्टि सखघरो ।
 छहि बेणुपचवल्ली एव उठलुदए पभास ॥ १०
 मालभर सोलसंसे गाईद अद्वारसमि ताणुवरे ।
 हरिणिंदा उमयदिसं तओ अ दुंदुहिअ संखी य ॥ ११
 छचचय वित्थारं धीसंगुल निग्गमेण दइ मार्यं ।
 मामडल वित्थारं बावीस अट्ट पइसारं ॥ १२
 विंबदि उठलपिंड छत्तसम गेहवइ नायम्ब ।
 थणल्लुचसमा दिट्ठि चामरधारीण फायम्भा ॥ १३
 अइ हुंति पथ तित्था इमेहिं मार्यहिं तेवि पुच कुम्भा ।
 उस्सगियस्स जुअलं विंबशुग मूल विंबेग ॥ १४]

वरिससयाओ उट्टु ज विंथ उच्चमेहिं संठविय ।
 विलय(यल)गु वि पूइज्जइ त विंथ निक्कल न जओ ॥ १५
 मुह-नक्क-नयण-नौहिं कडिभगे मूलनायग चयह ।
 आहरण-वत्य-परिगर-विन्हायुहमगि पूइज्जा ॥ १६
 धाउलेवाइ विंथ विलय(यल)ग पुणवि कीरए सज्ज ।
 कट्ट-रयण-सीलमय न पुणो सज्ज च कर्हयावि ॥ १७
 पाहाणलेवकट्टा वतमया चित्तलिहिय जा पडिमा ।
 अप्परिगर-भाणाहिय न सुदरा पूयमाण गिहे ॥ १८
 इक्कगुलाइ पडिमा इक्कारस जाम गेहि पूइज्जा ।
 उट्टु पासाइ पुणो इय भणिय पुव्वसूरीहिं ॥ १९
 नह-अंगुलीय-वाहा-नासा-पयभगिणुक्कमेण फल ।
 सत्तुभय-देसभग थघण-कुलनास-व्वस्वय ॥ २०

पयपीठ-चिन्ह-परिगरमगे जण-जाण-भिन्नहाणि कमे ।
 छत्त-सिरिवच्छ-सवणे लच्छी-मुह-घघवाण स्वय ॥ २१
 पढिमा रउह जा सा कारावय हति सिप्पि अहियगा ।
 दुव्वण्णं वव्वविणासा कित्तोयरा कुणइ दुब्भिव्व ॥ २२
 षहुदुक्ख वक्कनासा इस्सग स्वयंकरी य नायथा ।
 नयणनासा कुनयणा अप्पमुहा भोगहाणिकरा ॥ २३
 कडिहीणायरियहया सुय-घघव हणइ हीणजवा य ।
 हीणासण रिद्धिहया घणक्खया हीणकर-चरणा ॥ २४
 उत्ताणा अत्थहरा वक्कमीवा सवेसमगकरा ।
 अहोमुहा य सच्चिता विवेसगा हवइ नीणुत्था ॥ २५
 विसमासण वाहिकरा रोरकरऽभायव्वनिप्पत्ता ।
 हीणाहीयगपढिमा सपक्ख-परपक्खकट्टकरा ॥ २६
 उट्टमुही घणनासा अप्पूया तिरियविट्ठि विन्नेया ।
 अइयट्टदिट्ठि असुहा हवइ अहोदिट्ठि विग्घकरा ॥ २७
 षठमुव सुराण आयुह हवत केसंत उप्परे जइ ता ।
 करण-करावण-थप्पणहाराणप्पाण देसहया ॥ २८
 षठवीस जिण नवग्गह जोइणि षठसट्ठि वीर धावत्ता ।
 षठवीस जक्ख-जन्निवणि वह दिहवइ सोलं विज्जसुरी ॥ २९
 नव नाह सिद्ध चुलसी हरि-हर-अमिद्ध-वाणवाहण ।
 वल्लक-नाम-आयुह वित्थरगथाठ जाणिज्जा ॥ ३०
 ॥ इति परमजैम-भीचन्द्राङ्ग-ठडुर-फेरुविरचिते वास्तुसारे
 चिन्वपरीक्षाप्रकरण द्वितीय समाप्तम् ॥

[तृतीय प्रासादविधिप्रकरणम् ।]

मणिय गिह्लखस्वणाह विषपरिक्त्वाहँ सयलगुणदोसं ।
संपह पासायविही संखेवेण निसामेहँ ॥ १
पढम गङ्गावरैय जलतँ अह कक्करतँ मरियन्व ।
कुमनिवेसं अट्ट सुरस्सिला तयणु सुत्तविही ॥ २
पासायाओ अद्ध तिहायपाय च पीढ-उदओ य ।
तस्सद्धि निग्गमो हुहँ उववीडु जहिच्छ माण तु ॥ ३
अङ्गुथर १ फुल्लियओ २ जाढमुहो ३ कणठ ४ तह य कयवाली ५ ।
गय १ अस्स २ सीह ३ नर ४ हस ५ पच थर इय भवे पीठ ॥ ४
सिरिविजठ १ महापठमो २ नदावत्तो य ३ लच्छित्तिलओ ४ य ।
नरवेय ५ कमलहसो ६ फुजर ७ पासाय सत्त जिणो ॥ ५

[इतोऽग्रे मुद्रितपुस्तके निम्नोद्धृता मधिका गाथा सम्पन्ते-

बहुमेया पासाया अस्संखा विस्सफम्मया मणिया ।
तत्तो य केत्तराहँ पण्णीस मणामि म्मुल्लिहा ॥ १ ॥
केत्तरिय सवमहो सुनदणो नंदिसालु नंदीसो ।
तह मंदिरु सिरिवच्छो अमिअम्मुडु हेमवतो अ ॥ २ ॥
हिमहूह कर्णलासो पुहविजओ इदनीलु महनीसो ।
भूभरु अ रयणकूडो वइडुओ पठमरागो अ ॥ ३ ॥
बळंगो सुठइल्लु अरराओ रायइसु गरुडो अ ।
वसहो अ तह य मेरु एण पण्णीस पासाया ॥ ४ ॥
पण अडपाइ सिहरे कमेण वठवुद्धि चा इवइ मेरु ।
मेरुपासाय अडयसंखा इगहिय सयं वाण ॥ ५ ॥
एण्हि उवजती पासाया विविह सिहरमाणाओ ।
नव सहस्स छ सय सत्तर वित्थरगयाओ ते नेया ॥ ६ ॥
वठरंसंमि ठ खिचे अट्टइ दु धुद्धि वान वावीसा ।
मापविराड एव सपेसु वि दवमवपेसु ॥ ७ ॥

चउकूणा चउमहा सव्वे पासाय होंति नियमेण ।

कूणस्सुमयदिसेहिं वलाइ जा होंति भदाइ ॥ ६

पडिरह १ वोलिंजरया २ नदी ३ सुकमेण ति पण सच वल्ल ।

पल्लविय करणिक्क अवस्स महस्स दुण्ह दिसे ॥ ७

वो भाय कूणओ हुंइ कमेण पाऊण जा भवे नवी ।

पाय०, एग १, दुसह २॥, पल्लविय करणिय भद ॥ ८

महस्सं वस भाय तस्साओ मूल नासिय एग ।

पठणाति तिय सवातिय २॥) १) ३) वल्लेहिं सुकमेण नायव्वं ॥ ९

कूण पडिरह य रह भद सुहभद मूलस्संगाइ ।

नवी करणिक पल्लव तिलय तवंगाइ भूसणय ॥ १०

॥ इति विस्तर ॥

सुर १ कुम २ कलस ३ कइवल्लि ४ मन्धी ५ जघा य ६ छज्जि ७ उरजघा ८ ।

भरणि ९ सिरवट्टि १० छज्जय ११ वइराडु १२ पहारु १३ तेर थरा ॥ ११

१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

इग तिय दिवडु तिहुंठे

पण सङ्गा इग दु दिवडु दिवडो य ।

वो दिवडु दिवडु भाया

पणवीसं तेर थरमाण ॥ १२

१३ पासायस्स पमाण गणिज्ज सहमिच्छि कुमगथराओ ।

तस्स य वस भागाओ वो वो मिच्छीहि रस ६ गम्मे ॥ १३

इग दु ति चउ पण हत्ये पासाइ सुराठ जा पहारैथरो ।

नव सच पण ति एग अंगुलजुच कमेणुदय ॥ १४

इन्नाइ स-धाणते ५० पडिहत्ये चउवसगुल विहीणा ।

इय उवयमाण मणिय अओ य उडु भवे सिहर ॥ १५

१ पडिहोति २ दुभि । ३ वो भाय इवइ कूणो । ४ करणिक्क । ५ कमेण
पर्यपि पडिच्छाईसु । ६ तिसुक्कमि । ७ पहारु ।

पाऊणं दूण भूमजु नागरु सतिहाउ दिवडु सप्पाओ ।
 दैवड सिहरो दिवडो सिरिवञ्छो पठणं दूणो य ॥ १६
 छञ्जउठ उवरि तिहु विसि रहिया जुयविन्न उवरि उरसिहरा ।
 कूणेहि चारि कून्हा दाहिण वामग्गि वो तिलया ॥ १७
 उरसिहर कून्डमञ्जे सुमूलरेहाय उवरि चारि लया ।
 अंतैरि कूणेहि रिसी आवलसारो य तस्सुवरे ॥ १८
 पडिरह विकलमञ्जे आमलसारस्स वित्थरडुवए ।
 गीवडयचदिकामलसारिय पठणु सैवा इग्गिगो ॥ १९
 आमलसारय मञ्जे चवणखट्टासु सेयपट्टवुया ।
 तस्सुवरि कणयपुरिसो घयपूर तओ य वरकलसो ॥ २०
 पाहणकट्टिट्टमओ जारिसु पासाठ तारिसो कलसो ।
 जहसत्थि पड्ढ पञ्छा कणयमओ रयणजडिओ यौ ॥ २१

[पठद्राघामन्तरं मुद्रितपुस्तके भिन्नगतं गाथाद्वयमधिकं विधत्ते-
 छजाओ बाव कष [मार्यं] इगनीस करिवि वत्थो अ ।
 नव अप्प बाव तेरस दीहुदये इवइ सठभासो ॥ १
 उदयदि विदियपिडो पासायनिलाड तिक्क च तिलउ य ।
 तस्सुवरि इन्न सीहो मंडपकलसोदयस्स समा ॥ २]

सुहय इगदारुमय पासाय कलस-वड-मच्छडिय ।
 सुहकट्ट सुदिठ कीरं सीसम खयरंजण महुव ॥ २२
 नीरतरदल विमत्ती मह विणा चउरसं च पासाय ।
 पसायारं सिहरं करति जे ते न नदति ॥ २३

१ दूणु पाऊणु । २ दापिड । ३ पऊण । ४ अंतर् । ५ अंतिक्का । ६ पऊण सवारपिडो । ७ अ । ८ सुदिडु ।

† पडिरह विकलमञ्जे आमलसारस्स वित्थरए होइ ।
 तस्सयेण य उवओ तं मञ्जे टाण चत्तारि ॥
 गीवडय चडिक्क आमलसारीय कमेण तप्पागा ।
 पाऊण सपाठ इग्गो आमलसारस्स एन्न विही ॥
 -इति पाठान्तरं मुद्रितपुस्तके ।

अङ्गुलाइ कमसो पायगुल बुद्धि कणयपुरिसो य ।
 कीरइ धुव पासाए इग हत्याई ख-याण ते (५०) ॥ २४
 इगहत्ये पासाए दढ पठणगुल भवे पिंढ ।
 अङ्गुल बुद्धि कमे जा कर पत्तास कम्बुवए ॥ २५
 निप्पमे वरसिहरे घयहीणसुरालयमि असुरठिई ।
 तेण घय धुव कीरइ दढसमा मुक्खसुक्खकरा ॥ २६
 पासायाओ दुवारं हेत्यप्पइ सोलसंगुल उदए ।
 नैव पचम वित्तारे अहवा पिहुलाठ वृणुवए ॥ २७

[मत्र मुद्रितपुस्तके पपा गाथा अधिष्ठा विद्यते-

उद्यदि वित्तरे बारे भायदोस विसुदए ।

अंगुलं सङ्गमर्दं वा हाणि बुद्धि न दसए ॥ १]

निष्ठाडि वारउत्ते विष साहेहि हिट्ठि पडिहारा ।
 कूणेहि अट्ट दिसिवइ जघा-पडिरइइ पिक्खणय ॥ २८
 पासायत्तरिय ४ भागप्पमाणविष सठत्तम मणियं ।
 राठट्टे रयण विहुम घाठमय जहिच्छमाण वरं ॥ २९
 दस भाय कयदुवार उदुवर उत्तरंग मज्जेण ।
 पढमसे सिवदिट्ठी धीए सिवसत्ति जाणेइ ॥ ३०
 सयणासण सुर तइए लच्छीनारायणं चठत्ये य ।
 वाराइ पचमए छट्ठंसे लेवचित्तस्स ॥ ३१
 सासण सुर सत्तमए सत्तम सैत्तमि वीयरागस्स ।
 चडिय भइरव अइमे नवमिदा छत्त चमरघरा ॥ ३२
 दसमे माए सुज्ज जक्ख्वा गघव्व-रक्खसा जेण ।
 हिट्ठाठ कमि ठविअइ सयलसुराण च दिट्ठी य ॥ ३३

१ पासायस्स । २ हत्येपर । ३ वा हत्य चरख इति तिगुग बुद्धि कमाठ
 पत्तासं । ४ पचइ । ५ सत्तंसि । ६ अत्तंसि ।

भागद्व मणतेगे सत्तम सत्तमि^१ दिद्वि अरहता ।
 गिहदेवालै पुणेव कीरइ जह होइ सुद्विकर ॥ ३४
 गम्भगिहद्वै पणसा जक्खा पढमसि देवया धीए ।
 जिण-किंन्ह-रवी तइए धमु चउत्थे सिव पणगे ॥ ३५
 नहु गम्भे ठाविज्जइ लिंआ गम्भे षइज्ज नो कहवि ।
 तिलअद्ध तिलमत्त^२ ईसाणे किं पि आसरिउ^३ ॥ ३६
 भित्तिसलग्गविंघ उच्चिमपुरिस च सव्वहा असुह ।
 चित्तमय नागाइ हवति एए सैहावेण ॥ ३७ ॥
 जगई पासायतरि रस ६ गुणं पच्छा नवग्गुणा पुरओ ।
 दाहिण-धामे तिठणा इय भणिय खित्तमज्जाय ॥ ३८
 पासायकंमलियग्गे गूढक्खयमढव तउ छक्क ।
 पुणु रगमढव तह तोरण सुंभलाणमढवय ॥ ३९
 दाहिण-धामदिसेहिं सोहामढव गउक्खजुय साला ।
 गीय नट्टविणोय गघव्वा जत्थ पकुणत्ति ॥ ४०
 पासायसम विठण विवह्वय^४ पठण दूण वित्तारे^५ ।
 सोवाण तिन्नि^६ उदए चउकीओ मढवा होति ॥ ४१
 कुम्भी थम मरण सिरपट्ट इग पंच पठण सप्याय ।
 इग इय नव भाग कमे मढव पिहुलाउं अहुदए ॥ ४२
 पासायअट्टमसे पिंड मक्कडिय-कलस-थमस्स ।
 दसमसि धारसाहा सपट्ठिग्घहु कल्लेसुं दूणुदए ॥ ४३
 पट्टस्स आयहिद्व उज्जयहिद्व च सव्वसुत्तेग ।
 उदुचरसम कुभिय थमसमा थम जाणेह ॥ ४४

१ सत्तसि । २ अरिहता । ३ देवात्तु । ४ गिहइ । ५ तलसिठ ।
 ६ आसरिओ । ७ समासेण । ८ गुणा । ९ मत्ताय । १० क्कमठ अग्गे । ११ पुण ।
 १२ सव्वलाय । १३ दिद्विद्वयं । १४ पित्थारो । १५ ति उदए षड्वय पय ।
 १६ पट्टाठ अट्टए । १७ कलसु विवह्वय ।

जलनालयाठ फरिसं करतरे चठ जवा कमेणुञ्च ।
 जगईय मिचि उवए छज्जयं सम चठदिसेहिं पि ॥ ४५
 अगगे दाहिण-वामे अट्टट्ट जिणिंद-गेह चठवीसं ।
 मूल सैलागाठ इम पकीरए जगइ मज्झमि ॥ ४६
 रिसहाई जिणपती पासायाओ य वामियदिसाओ ।
 ठाविज्ज पिट्ठिमगो सव्वेहि जिणालए एव ॥ ४७
 चठवीसतित्यमज्जे ज एग मूलनायग हवइ ।
 पतीइ तस्स ठाणे सरस्सई ठवसु निम्भत ॥ ४८
 चठतीस वाम-दाहिण नव पिट्ठी^१ अट्ट पुरठ देहुरियं^२ ।
 पासाय मूल एग वावज्जिणालयं एव ॥ ४९
 पणवीसं पणवीस दाहिण-वामेसु पिट्ठि इच्छारं ।
 वह अगगे नायव्व इय वाहत्तरि जिणिंवाल ॥ ५०
 अंगविभूसणसहिय पासाय सिहरवद्ध-कट्टमय ।
 नहु गेहे पूइअइ न धरिअइ किंतु र्जत्त वरं ॥ ५१
 जत्त कए पुणु पञ्चा ठविज्ज रहसाल अहव सुरमवणे ।
 जेण पुणो तस्सरिसो करेइ जिणजत्त धर संघो ॥ ५२
 गिहवेवाल कीरइ वारुमय विमाण पुप्फय नाम ।
 उववीठ पीठफरिसं जहुत्त चठरंस तस्सुवरे^३ ॥ ५३
 चठ धम चठ दुवारं चठ तोरण चठ दिसेहिं छज्जठड ।
 पच्च कणवीर सिहरं ईंग ति दुवारेग सिहरं वा ॥ ५४
 अह मिचि-छज्ज ओवम सुरालय आयुसुद्ध कायव्व ।
 सम चठरंसं गम्भे तैस्साठ सवायओ उवए ॥ ५५

१ नासिपाठ । २ छज्जइ । ३ सिसागाठ । ४ सीहपुषारस्स दाहिणदिसाओ ।
 ५ पुट्ठि । ६ देहरदं । ७ मूल पासाय । ८ अणु । ९ तस्सुवरिं । १० पण पु वि
 चारेण । ११ ठको अ सवायओ उवपसु ।

गम्भाठ छज्जओ हुइ सवाठ सतिहाठ दिवहु वित्यारे ।
 वित्याराठ सवाओ उदण्ण य निग्गमे अद्धो ॥ ५६
 छज्ज-उढ-भयम-त्तोरणजुय उवरे महओवम सिहरं ।
 आलयमज्जे पहिमा छज्जयमज्जामि जलवट्ट ॥ ५७
 गिहवेवालयसिहरे धयवढ नो करिज्ज कंइयावि ।
 आमलसारयै कलस कीरइ इय भणिय संत्येहिं ॥ ५८
 सिरिधवकलस-कुलसमवेण चवासुण्ण फेरेण ।
 कम्माणपुरठिण्ण य निरक्खिठ पुव्वसत्याइ ॥ ५९
 †सपरोवगारहेऊ नयण-मुणि-राम-चद (१३७२) वरिसम्मि ।
 विजयदसमीइ रइय गिहपहिमालक्खणाईण ॥ ६०

इति परमजैनश्रीचन्द्राङ्गजटङ्गरफेरुबिरचिते शास्तुसारे
 प्रसावविधिप्रकरण द्वितीय समाप्त ॥

॥ एष शास्तु प्रयरणं त्रय गाथा २०२ ॥



१ इवइ उच्च । २ करिज्जइ कपायि । ३ आमलसार ।

† मुद्रितपुस्तक इयं गाथा पूर्वे लिखिता पश्चाद् उपरिक्तगाथा विद्यते ।

ठङ्कुर फेरु रचिता
स्वरतरगच्छद्युगप्रधानधतु पदिका ।

नमो जिनाय ।

सयल सुरासुर वदिय पाय, वीरनाह पणमधि जगताय ।
सुमरेधिणु सिरि सरसइ देवि, जुगवरचरिठ भणिमु संखेवि ॥ १
सुहमसामि गणहर पमुह,
सिरि जुगपवर नाम वर मत, सुमरहु अणुदिणु भचिजुय ।
लीलइ तरिवि भवोवहि जेम, कमि कमि पावहु सिद्धिसुह ॥ धूवक
वद्धमाणजिणपट्टि पसिद्धु, केवलनाणीगुणिहि समिद्धु ।
पचमु गणहर जुगवर पढमु, नमहु सुहमसामि गुरु अममु ॥ २
भज्जा अट्ट पच सय तेण, इच्छि रयणि पडिवोहियं जेण ।
सुगुरपासि लिठ संजमभारु, सरहु सरहु सो जमुकुमारु ॥ ३
पमक्खरि सिज्जमठ सुगुरु, जसोमहु सूरीसरु पक्ख ।
सिरि संभूयधिजठ मुणितिल्लठ, पणमहु महवाहु गुणानिल्लठ ॥ ४
महवाहु सूरीसरपासि, चठवस पुव्व पढिय गुणरासि ।
भज्जिठ जेण मयणमहवाठ, जयठ सु थूलिमहु मुणिराठ ॥ ५
दूसमकालि तुलिठ जिणकप्पु, अज्ज महागिरि गुरु माहप्पु ।
अज्ज सुहत्थि युणहु धरि माठ, जिणि पडिधोहिठ संपह राठ ॥ ६
संतिस्सरि कय संघह संति, चठदिसि पसरिय जसु वरक्किचि ।
तासु पट्टि हरिभहु मुणिण्डु, मोहत्तिमिरभर हरण दिणिण्डु ॥ ७
संढिल्लस्सरि तह अज्ज समुहु, अज्ज मगु जणकहरवचंडु ।
अज्ज घम्मु धर पयडिय घम्मु, महगुत्तु वसिय सिधसम्मु ॥ ८
धयरसामि पढ्माविय तिल्लु, अज्ज रक्खिठ धोहिय जणसत्थु ।
अज्ज नदि गुरु धवहु नरहु, अज्ज नागाहत्थीसरु सरहु ॥ ९
रेवयसामि सरि खडिच्छ, जिणि उम्मूलिय भवदुहसल्ल ।
हेमवतु श्चायहु वहु भचि, तरहु जेम भवसायरु ज्जाचि ॥ १०

नागज्योत्सुरि गोविंद, भूइविभ लोहिच मुणिंद ।

दुसमसुरि उम्मासय सामि, तह जिणभइसुरि पणमामि ॥ ११

सिरि हरिभइसुरि मुणिनाहु, देवभइसुरि वर जुगवाहु ।

नेमिचद चवुज्जलकिचि, उज्जोयणसुरि कचणदिचि ॥ १२

पयडिय सूरिमत्माहप्पु, रुविज्जाणि निज्जियकदप्पु ।

कुदुज्जल जस भूसिय भवणु, सलहहु वद्धमाणसुरि रयणु ॥ १३

अणहिलपुरि दुल्लह अत्थाणि, जिणसरसुरि सिद्धतु वस्वाणि ।

चउरासी आइरिय जिणेषि, लठ जसु वसहिमग्गु पयडेवि ॥ १४

जिणि विरईय क्हा संवेग रंगसाल तह सत्य अणेग ।

नियदेसण रंजिय नरराय, तसु जिणचदसुरि सेवहु पाय ॥ १५

वर नव अंग विचि उद्धरणु, थमणि पास पयढ फुडकरणु ।

अभयदेवसुरि मुणिवरराठ, दिसि दिसि पसरिय जसु जसवाठ ॥ १६

नदि न्हवणु वळि रहु सुपइठ,

तालारासु जुवइ मुणि सिठ ।

निसि जिणहरि जिणि वारिय अविहिं,

धुणुहु सु जिणवल्लहसुरि सुविहिं ॥ १७

जोइणिचक्कु उज्जेणिय जेण, धोहिठ जिणि नियमाणवलेण ।

सासणदेवि कहिठ जुगपवरु, सो जिणदत्तु जयठ गुरपवरु ॥ १८

सहजरूवि निज्जिय अमरिंद, जिणि पडिधोहिय सावयविंद ।

पच महन्मय दुद्धर घरणु, नदठ जिणचद सुरिसुणिरयणु ॥ १९

अजयमेरि नरवइपच्चक्खि, करि विवाठ बुहियणजणसक्खि ।

जिणि पठमप्पहु लठ जयपत्तु, जिणवइसुरि जयठ सुचरित्तु ॥ २०

नयरि नयरि जिणमदिर ठविय, तोरण दढ कल्स घज सहिय ।

धेवीसा सठ विन्निखय साहु, जिणसरसुरि जयठ गणनाहु ॥ २१

तस्य पय पठमज्जोयणु भाणु, जस निम्मल्लु गुणगणहः निहाणु ।
 जुगपवरागम संसयहरणु, जिणपवोह सुरिसुहगुरु सरणु ॥ २२ ॥
 तस्य पट्टुद्धरु गुरु मुणिरयणु, मयणविणासणु सिवसुहकरणु ।
 भवियल्लोयजण मणआणदु, संपइ जुगपहाणु जिणचदु ॥ २३ ॥
 इय इत्तिय सुहगुरु आमनइ, जिणचदसुरि जुगवर जो मनइ ।
 सुज्जि रमइ सासय सिवनारि, वलवि न पढइ इत्थ ससारि ॥ २४ ॥
 जक्खिणि जक्ख विठण चठवीस, विज्जादेवि च्छणी वीस ।
 इय चठ(स)ठि मिलि देहि असीस, जिणचदसुरि जिठ कोढि वरीस ॥ २५ ॥
 संघसहिठ फेरु इम भणइ, इत्तिय जुगपहाण जो शुणइ ।
 पढइ गुणइ नियमणि सुमरेइ, सो सिवपुरि वर रज्जुकरेइ ॥ २६ ॥
 तेरह सइतालइ महमासि, रायसिहर वाणारिय पासि ।
 चद तणुम्मवि इय चठपर्यय, कझाणइ गुरुमत्तिहि कहिय ॥ २७ ॥
 सुरगिरि पच दीव सव्वेवि, चद सूर गह रिक्ख जि केवि ।
 रयणायर घर अविचल जाम, संघु चठव्विहु नदठ ताम ॥ २८ ॥

॥ इति जुगप्रधान चतुपदिका समाप्ता ॥ ६ ॥

जिणपवोह गुरुराय चलणपकय वर अलिवल्लु ।
 नवविह जिय दयकरणु मयण गय सिंह महावल्लु ।
 चदुज्जल्लु गुणविमल्लु क्खित्ति दस दिसिहि पत्तिद्धठ ।
 दवणु पणदिय चठ कसाय गुणगणिहि समिद्धठ ।
 सुरिद्धु पणय घण जण सहिठ, वल्लिठ सुहियण निरु नरहु ।
 रिठ अंतरंग मय अवहरणु पय पठमक्खरि गुरु सरहु ॥ १ ॥

परिशिष्टम् ।

मूढप्रतौ श्योतिस्तारप्रचान्ते निम्नलिखितानि ज्योतिषविषयसम्बन्धानि कानिचिद्
स्फुटपद्यानि प्राप्तानि, तानि परिशिष्टरूपेणात्र मुद्रितानि ।

लार्मं विक्रमं खं शार्ड्यु स्थितः शोभनो निगदितो विषाकरः खेचरैः ।
सुते तपो जल्लोख्यैर्गैर्व्याकिंभिर्पदि न विध्यते तदा ॥ १
धुने जन्मं रिपु-लार्मं खं त्रिगम्बन्धमाः शुभफलप्रदस्तदा ।
खात्मजोन्त्ये मृतिबन्धुं धर्मगैर्विध्यते न विषुधैर्यदि ग्रहैः ॥ २
विक्रमाय रिपुर्गः शुभः कुजः स्यात्तदान्त्ये सुते धर्मगैः खगैः ।
खेच विद् इनर्त्तनुरप्यसौ किंतु मर्म घृणिना न विध्यते ॥ ३
खोर्पु शार्ड्यु मृति खी ऽऽर्यगः शुभो जस्तदा न खलु विध्यते यदा ।
आत्मजे त्रिं नष आद्यं नैषर्न प्राख्यैर्गैर्विधुभिर्नमश्चरैः ॥ ४
खोर्पु धर्मं तनेय खूनस्थितो नाकिनापकपुरोहितः शुभः ।
रिपुं रन्ध्रं खं जल्लोख्यैर्व्याकिं विध्यते गगनधारिभिर्न हि ॥ ५
आसुताष्टमसुतो ध्येयार्थगो विद् आस्फुजिदशोभनः स्मृतः ।
नैषर्नास्तं तर्तुं कर्म धर्मधी लार्मं धैरि-सहर्जस्यखेचरैः ॥ ६
एषमत्र खचरा व्यघान्यिताः सत्फल नहि विद्धान्ति गोचरे ।
वामवेषविधिना स्वशोभना अप्यमी शुभफलं दिशन्त्यलम् ॥ ७

॥ इति ग्रहाणा वामवेष दक्षिणवेषयो फलम् ॥

सर्वेषामेष दोषाणां धर्जयेद् घटिकाद्वयम् ।
उत्पातमृत्युकाणानां सप्त पद् पञ्च नाडिका ॥ १
षड्घोऽप्येष जगदुः सिंहास्त्रोऽपि धृत्रशत्रुगुरुम् ।
समतिक्रान्तमघर्क्षां न विरुद्धः सर्वकार्येषु ॥ २
आत्मोपेक्षक पोषक धषकानिह जन्मराशि चन्द्राम्याम् ।
घटिकास्तिपिरसरुद्रार्द्धसार्द्धद्वयशकलचरमान्ता ॥ ३

*

योगिनीषु प्रथम्यामि दिव्यं परममुत्तमम् ।
जयं च विजयं चैव येन जायन्ति मृतले ॥ १
इन्द्राणी पूर्वभागेषु योगिनी नाम नामतः ।
प्रतिपदानव्यां च उदयं कुरुते सदा ॥ २

उत्तरायां महिषीनाम योगिनी योगनामिनी ।
 वशाभ्यां च द्वितीयायां उदयं कुरुते सदा ॥ ३
 एकादश्यां तृतीयायां मेपरूढा तु योगिनी ।
 कुमारी नामविज्ञेया आग्नेयी हृद्यते यथा ॥ ४
 श्वानशृष्टिगता देवी असुर्धी द्वावशी तथा ।
 नैर्भस्यां विशामासूत्य सिंहनारायणी सदा ॥ ५
 वाराही योगिनी नाम सिंहारूढा सुदुर्गरा ।
 पञ्चम्यां त्रयोदश्यां च वक्षिणे उदयं सदा ॥ ६
 वारुण्यां विशामासूत्य ब्राह्मणी वृषगामिनी ।
 असुर्वश्यां तु पष्ठ्यां च उदयं कुरुते सदा ॥ ७
 षट्त्वा तु अरशृष्टिं चामुंढी षण्डरूपिणी ।
 सप्तम्यां पूर्णिमायां च वायव्ये उदयं सदा ॥ ८
 महालक्ष्मी महादेवी ईशान्यां वृषसंस्थिता ।
 काके रूढा सदा देवी अमावास्याष्टमीदिने ॥ ९
 एवं तु योगिनीचक्र ज्ञायते यस्तु मानवः ।
 विजयं लभेत् संग्रामे युद्धेषु रणसफटे ॥
 शूते वा विषहारे वा विवादे जायते शुभम् ॥
 श्वानकुर्कुटनालानां मेयेण महिमादिषु ।
 विजय जायते तस्य यस्य शूठे तु योगिनी ॥
 अथ सन्मुखयोगिन्यां संग्रामेषु रणेषु च ।
 गम्यते युध्यते पुंसां न सिद्धिर्जायते क्वचित् ॥

॥ योगिनी चक्रम् ॥

GOVERNMENT OF RAJASTHAN



RAJASTHAN ORIENTAL
RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (INDIA)

Hon. Director Padmashree Muni Jivijaya, Puratattvacharya



PUBLICATIONS
RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor
PADMASHREE MUNI JIVIJAYA, PURATATTVACHARYA

DECEMBER 1961

PUBLICATIONS

Up to July 1961



RAJASTHAN PURATAN GRANTHAMALA

(General Editor—Padmasakree MUNI JINVAJAYA, Perazattwacharya)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur November 1961

A. SANSKRIT

- 1 Praman manjari—by Sarvadeva with commentaries by Advayatanya Balbhadra and Vaman Bhatt, ed. by Pattabharam Shastri, Ex Principal, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur now Prof. of Darshan University of Calcutta. —Rs. 6 00
- 2 Yantraraja rachana—An astrological work written under orders of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur ed. by Late Pt. Kedar Nath Jyoturvid, Editor Kavyamala Series. —Rs. 1 75 nP
3. Maharshikul-vaibhavam Pt. I—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Mahamahopadhyaya Pt. Giridhar Sharma Chaturvedi. —Rs. 10 75 nP
- 4 Maharshikul-vaibhavam Pt. II Text.—by Late Vidya-
vachaspati Madhusudan Ojha, ed. by Pt. Pradumna Ojha
—Rs. 3 50 nP
- 5 Tarksamgrah—by Annam Bhatt with commentary of Kshmakalyan Gani ed. by Dr Jitendra Jetli, MA., Ph D Prof. Ramananda Arts College, Ahmedabad. —Rs. 3.00
6. Karakasambandhodyota—by Rabhas Nandi, ed. by H P Shastri, M A., Ph D Vice Principal B. J Institute Vidya Bhawan Ahmedabad. —Rs. 1 75 nP
- 7 Vrittidipika—by Mouni Krishna Bhatt, ed by Purushottam Sharma Chaturvedi formerly Prof Mayo College Ajmer
—Rs 2.00
8. Shabdaratnapradipa—by an unknown author ed. by H P Shastri, M.A., Ph D., Vice Principal B. J Institute Vidya Bha wan, Ahmedabad. —Rs. 2.00

- 9 *Krishnagiti*—by Somanatha ed by Dr. Priyabala Shah M.A Ph. D D Litt. Prof Ramananda Arts College, Ahmedabad.
—Rs. 1 75 nP
- 10 *Nritt samgrah*—a treatise on Indian Dance—by an unknown author ed. by Dr Priyabala Shah M.A., Ph.D D Litt. Prof Ramananda Arts College, Ahmedabad. —Rs. 1 75 nP
- 11 *Shringarharavali*—by Shri Harsha Kavi ed. by Dr Priyabala Shah M.A., Ph. D., D Litt., Prof Ramananda Arts College Ahmedabad. —Rs 2.75 nP
- 12 *Rajvinod Mahakavyam*—by Udayraj a medieval Sanskrit poem on the life and achievements of Mahmud Begra, Sultan of Ahmedabad, ed by G N Bahura M. A Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs. 2 25 nP
- 13 *Chakrapanivijaya Mahakavyam*—by Lakshmi Dhar Bhatt a romantic Sanskrit poem based on the love story of Usha and Aniruddha ed. by K.K. Shastri Curator and Prof B J Institute, Gujrat Vidya Sabha Ahmedabad. —Rs. 3 50 nP
- 14 *Nrityaratna*—Kosha Pt. I—by Maharana Kumbhakarna Deva of Chittore; a long awaited authentic treatise on Indian Dance, ed. by R. C. Parikh Director B J Institute Gujrat Vidya Sabha Ahmedabad. —Rs 3 75
- 15 *Uktiratnakar*—by Sadhu Sunder Gani ed. by Puratattwacharya Muni Jinvijayap Hon Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs 4 75 nP
- 16 *Durgapushpanjali*—by Late Mahamahopadhyaya Pt. Durga Prasad Dwivedi, ed. by G. D Dwivedi Lecturar Maharaja's Sanskrit College, Jaipur —Rs. 4 25 nP
- 17 *Karnakutuhel and Shri Krishnalilamritam* —by Mahakavi Bholanath a protegc of Sawai Pratap Singh of Jaipur ed. by C N Bahura M.A., Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 1 50 nP

- 18 *Ishwarvilasa Mahakavyam*—by Kavikalanidhi Shri Krishna Bhatt a work based on the History of Jaipur written under orders and in the time of Maharaja Sawai Ishwari Singh son of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur The work bears an eye witness description of the Ashwamedha yajna performed by Sawai Jai Singh ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya with a foreword by late Dr P.K. Gode M.A. D Litt. Curator B O R. Institute, Poona. —Rs. 11 50 nP
- 19 *Rasadeerghika*—by Vidyaram Kavi a rare and abridged work on Sanskrit rhetorics, ed. by G.N Bahura, M A Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur. —Rs. 2.00
- 20 *Padya-muktawali*—A compilation of Literary and Historical poems of Krishna Bhatt a contemporary of Sawai Jai Singh of Jaipur ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya. —Rs. 4 00
- 21 *Kavyaprakash*—of Mammata with Samketa by Someshwar Bhatt, found in Jaisalmer Grantha Dhandar Edited by R. C Parikh Director B J Institute Gujrat Vidya Sabha Ahmedabad
Pt. I Rs. 12 00
- 22 „ Pt. II Rs. 8.25 nP
- 23 *Vasturatnakosha*—by an unknown author Edited by Dr Priyabala Shah M. A Ph. D., D Litt. Prof Ramanand Arts College, Ahmedabad. —Rs. 4 50 nP
- 24 *Dashkantha Vadham*—by late Mahamahopadhyaya Durga Prasadji Dwivedi, a poetical work on Ram-Charitra Edited by Shri Gangadhar Dwivedi, Prof Maharaja Sanskrit College Jaipur —Rs 4 00
- 25 *Bhuwaneshwari Mahastotram*—by Prithwidharacharya with commentary of Padmanabha edited by Shri G.N Bahura M A. Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur. —Rs. 3 75 nP

B. RAJASTHANI AND HINDI

- 1 *Kanadhade Prabandha*—by Mahakavi Padmanabha a famous

- Rajasthani Historic Poem dealing with the chivalry of Konadhade Chouhan at the time of the attack of Alauddin Khilji on the fort of Jalore ed by Prof. K.B Vyas, M A Elphinstone College, Bombay —Rs. 12.25 nP
2. *Kyamkhan Rasa*—by Alaf Khan Nawab of Fatehpur (Shekhawati) a Poetical History of Kayamkhan, the Muslim Rajpoots of Rajasthan ed. by Dr Dashrath Sharma, M A D Litt. Professor Hindu College, Delhi and Shri Agar Chand Nahata Bikaner —Rs. 4.75 nP
3. *Lava Rasa*—by Gopaldan Kaviya a contemporary description of the battle of Madhorajpura between the Chief of Lava and Amcerkhan of Tonk ed. by Mehtab Chand Khared Jaipur —Rs. 3.75 nP
4. *Vankidas-ri-Khyat*—a History of Rajasthan written in Rajasthani prose by Vankidas, the famous Historian of Jodhpur ed by Prof Narottamdas Swami, M A Vice Principal Maharana Bhupal College Udaipur —Rs. 5.50 nP
5. *Rajasthani Sahitya Sangrah Pt. I*—A collection of old Rajasthani literary prose ed by Prof Narottamdas Swami M.A. Vice Principal, Maharana Bhupal College Udaipur —Rs. 2.25
6. *Rajasthani Sahitya Sangrah Pt II*—Three old Rajasthani stories i.e. Bagdawatan Ri Vat, Pratap Singh Mahokam Singh Ri Vat and Veeramde Soneegara Ri Vat edited by P.L. Menaria M.A., Sahitya Ratna Offig Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 2.75 nP
7. *Kavindra Kalpalata* —by Kavindracharya Saraswati a contemporary of Emperor Shahajahan, ed by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat Jaipur —Rs. 2.00.
8. *Jugal Vilasa*—a poem by Maharaja Prithvi Singh of Kushalgarh ed. by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur —Rs. 1.75 nP
9. *Bhagat Mala*—a poetical work in Rajasthani by Charan

Brahma Dasji Dadupanthi, ed. by Udayraj Ujjwal Jodhpur
—Rs. 1 75 nP

- 10 A Classified List of Manuscripts Pt. I—a list of 4000 manuscripts collected in The Rajasthan Oriental Research Institute upto the year 1955 —Rs. 7 50 nP
- 11 A Classified List of Manuscripts Pt. II—a list of 3855 Ms. collected in the Rajasthan Oriental Research Institute from Apr. 1956 to March 1958 Edited by Shri G N Bahura Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur —Rs. 12 00.
- 12 A List of Rajasthanian Manuscripts Pt. I—Collected in the Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur upto March 1958 Edited by Padmasri Muni Shri Jinvijaijn. —Rs. 4.50 nP
- 13 A List of Rajasthanian Manuscripts—Pt. II—Ms. collected during the year 1958-59. Edited by Purushottamlal Menaria M.A. Sahitya Ratna —Rs. 2.75
- 14 Munhata Nensiri Khyat Pt. 1—by Munhata Nenn of Jodhpur History of Rajasthan in Rajasthanian prose edited by Shri Badri Prasad Sakaria. —Rs. 8 50 nP
- 15 Raghurwar Jas Prakash—by Charan Kishnaji Adha A work on Rajasthanian rhetorics, edited by Shri Sitaram Lalas. —Rs. 8.25
- 16 Veer Van—by Dhadhi Badar a Rajasthanian poem relating a few heroic events of Veeramji Rathod of Jodhpur Edited by Smt. Rani Laxmi Kumari Chundawat of Rawatsar —Rs. 4 50 nP
- 17 A Catalogue of Late Purohit Harinarayanji B. A. Vidyabhooshan Manuscripts Collection—edited by Shri G. N Bahura Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur and Shri L. N Goswami, Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs. 6 25 nP
- 18 Sooraj Prakash Pt. I—by Charan Karnadan Kaviya History of the Rathods of Jodhpur in Rajasthanian Poem edited by Shri Sita Ram Lalas. —Rs. 8 00
- 19 Nehatarang—by Raoraja Budha Sngbji Hada of Bundi A work on rhetorics, edited by Shri Ramprasad Dadheerch M A Lecturer Hindi Dept. Jaswant College Jodhpur. —Rs. 4.00

**RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE,
JODHPUR**

B WORKS IN THE PRESS

	<i>Editor</i>
1. Tripura Bharati Laghustawa by Leghu Pandit	Muni Shri Jinviyaji
2. Balshiksha Vyakaran by Sangram Singh	
3. Padarth Ratna Manjusha by Krishna Mishra	
4. Karnamritaprapa by Sameshwar	"
5. Prakritanand by Raghunath Kavi	"
6. Shakun pradEEP	"
7. Hameer Mahakavya of Naya Chandra Soon	"
8. Ratna peretekshadi of Thakka Pheru	"
9. Vasant Vilasa Phagu	Shri MC. Modi
10. Chandra Vyakaran by Chandra Gomi	Shri B D Doshi
11. Swayambhoochhanda	Shri H.D. Velankar
12. Nritya Ratna Kosh Pt. II by Maharana Kumbhakarna	Prof. R.C. Parikh & Dr. Priyabala Shah
13. Nandopakhyan	Shri B J Sandesara
14. Vrittajatisamuchchaya by Ka : Virahanka	Shri H.D. Velankar
15. Kavi Darpan	
16. Ka : Kaustubha by Kavi Raghunath Manohar	Shri M.N. Gori
17. Go a Badal Padmini Chaupai by Kavi Hemratan	Shri Udai Singh Bhatnagar
18. Indra Prastha Prarbandh	Dr. Dashratha Sharma
19. Vasavdatta of Subandhu	Dr. Jaideva Mohan al Shukla
20. Ghatkharparadi Panchalaghu Kavyani	Pt. Amrit Lal Mohan Lal
21. Bhuvan deepak of Yavnacharya	Pt. Purshottam Bhatt
22. Rajasthan Men Sanskrit Sahitya Ki Khoj by Dr. Bhandarkar	Translation in Hindi by Shri Brahma Dutt Trivedi
23. Munhata Nansi ri Khyat Pt. II	Shri Badri Prasad Sakaria
24. Rathore Vanashri Vigat	Muni Shri Jinviyaji
25. Puratattva Samshodhan Ka Itibasa	"

- | | |
|---|----------------------------------|
| 26. Sooraj Prakash Pt. II | Shri Sitaram Lalas |
| 27 Rathodan Ri Vanshawali | Muni Shri Jinvijayaji |
| 28. Rajasthan Bhasha Sahitya
Grantha Suchi | Muni Shri Jinvijayaji |
| 29 Mira Brihat Padawali, completed
by Late Pt Hari Narayanji Purohit
Vidya Bhooshan | Padmashri Muni Jinvijayaji |
| 30 Rajasthan Sahitya Samgrah Pt. III | Shri LN Goswami |
| 31 Schulibhadra Kakadi | Dr A.R. Jajodia |
| 32. Matsya Pradesh Ki Hindi Ko Den, | Dr. Moti Lal Gupta,
M.A Ph. D |
| 33. Rukmini Harana by Sayanji Jboola | P L. Manariya M.A |
| 34 Vrittamuktawali
by Shri Krishna Bhatt | Bhatt Shri Mathuranathji |
| 35 Agamrahasya | Shri G. D Dwivedi |
-

SOME COMMENTS

- 1—**Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha ed. by Prof. K. B. Vyas M. A. Elphinstone College, Bombay

We are indeed grateful to the Rajasthan Puratattva Mandir for giving to the interested world this beautiful edition of a very fine work which should be known all over India.

SUNITI KUMAR CHATTERJI
M. A., D. Litt.
Chairman,
Govt. Hindi Sanskrit Commission.

★

- 2—**Rajavinoda Mahakavyam**—by Udayraj ed by Shri Gopalnarayan Bahuta M. A. Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

The series of important rare Sanskrit and Prakrit texts called the Rajasthan Puratan Granthamala started by Muniji under his General-Editorship is doing valuable service to Indology. With his characteristic vision and historical insight Muniji has selected for this series some rare texts of great historical, literary and cultural value. These texts in Sanskrit will facilitate the search for similar texts. The manuscript of the Rajavinoda Kavya in praise of Mahamud Begda was acquired by Dr. Bühler in 1857 for the Govt. of Bombay.

Muni Jimvijayaji was the first to realise the importance of the poem and make arrangements for its editing and publication in the series of the Rajasthan O. R. Institute. Accordingly he entrusted the work of editing this poem to Shri Gopalnarayan and I am happy to find that this learned editor has spared no pains in giving us an edition worthy of the series in which it appears. I have to convey my hearty congratulations to Muni Jimvijayaji upon the wise planning of his scheme of Rajasthan Puratana Granthamala and its successful execution by entrusting different works in it to competent scholars like Shri Gopalnarayan, who also deserves the best thanks of all lovers of Indian

History and Sanskrit by making available to them a new text, hitherto unknown and unpublished.

Annals of the Bhandarkar Oriental
Research Institute, Poona
V 1. XXXVII, 1957

P. K. GODE,
M. A., D. Litt.

*

- 3—*Ishwarvilasa Mahakavyam*—by Kavikalanidhi Krishna Bhatt
ed. by Shri Mathuranatha Bhatt, Sahityacharya, Jaipur

The publication of an 18th century poem of Krishna Bhatt a Jaipur-court bard, brings out interesting fact that the Ashvamedha Yajna was organised by rulers to assert their supremacy over neighbouring princes as late as 200 years ago.

Bhatt in his book *Ishwarvilasa Kavya* describes the Ashvamedha Yajna performed by his friend and master Raja Ishwari Singh some time after he ascended the Amber gaddi in 1743 on the death of his father Sawai Jai Singh II who founded Jaipur

Bhatt himself attended the Yajna. Besides describing the Yajna in detail, he names the persons who witnessed the ceremony

7th November, 1959.

TIMES OF INDIA

*

- 4—*Classified List of Manuscripts Pt II*—ed by Shri G N Bahura
M.A Dy Director Rajasthan Oriental Research Inst. Jodhpur

All students in Indology will be glad to consult this excellent catalogue containing many rare and precious Sanskrit works.

Director Indian Institute, Paris
16th. Feb. 1960

LOUIS RENOU

*

It is evident from the list that the Institute possesses a rich collection of Sanskrit Manuscripts on almost all subjects and branches of learning cultivated in ancient India, and also a large number of Prakrit, Rajasthani, Old Gujarati and Hindi manuscripts, and these lists will undoubtedly prove to be important tools of research to scholars doing textual work in Sanskrit and derived languages.

Journal of
The Oriental Institute Baroda.
December, 1960

R. J. SANDESARA

C. The catalogue adds to our knowledge of the manuscript material still existing in the Indian libraries

IaMEO
Via Merulana
245 Roma.

Giuseppe Tucci
East and West.
June-September, 1961

★

D Die Rajasthan Purana Granthamala welche im Auftrag der Regierung von Rajasthan Werke in Sanskrit, Prakrit, Alt Rajasthan, Gujarati und Hindi herausgibt ist in Europa bisher wenig bekannt. Sie hat jedoch bereits eine grobe Reihe schon veröffentlichten herausgebracht, darunter manche bisher unbekannte Werke. Der vorliegende Band enthält ein Handschriftenverzeichnis. Der erste Teil dieses Verzeichnisses behandelt die bis 1956 erworbenen Handschriften. Der vorliegende zweite Teil verzeichnet die Neuerwerbungen von April 1956 bis März 1958 zusammen mehr als 4000 Nummern. Angegeben sind in hergebrachter Weise Titel, Verfasser, Datum und Blattzahl der Handschrift und, wenn nötig, sind kurze Bemerkungen beigefügt. Im ersten Anhang sind Anfang und Schluss einer Anzahl wichtigerer Handschriften wiedergegeben. Der zweite Anhang enthält ein alphabetisches Verzeichnis der Verfasseramen. Ein dritter Anhang bringt ein Verzeichnis der ehemaligen Palastbibliothek von Indragardh, die nunmehr unter die Obhut des Oriental Research Institute in Jodhpur gestellt ist. Druck und Ausstattung des Bandes sind sehr gut. Von einigen besonders wertvollen Handschriften sind einzelne Blätter abgebildet.

Journal of the Institute of Indology
University of Vienna.

E. FRAUWALLNER

★

" I appreciate them very much for their being a great enrichment to any library specialised in the Orientalistic field.

President IaMEO (Oriental Institute)
Rome (Italy)

Prof. TUCCI

★

" I am very glad to know that the Institute is so actively engaged in editing the unpublished manuscripts of Rajasthan in Sanskrit and other languages. This is a valuable contribution to Sanskrit studies.

Indian Institute University of Oxford
26 July 1961

Prof. T. BURROW

5—Dasakanthvadham by M M Pandit Durgaprasad Dwivedi,
edited by Shri Gangadhar Dwivedi

"The author of the work under review has depicted the life of Rama from the spiritual point of view in his work called Dasakanthvadham on the lines of Yogavantha a well-known extensive philosophical treatise on Advaita Vedanta. The author is a gifted poet of a very high order. The treatment of the theme especially in the first chapter is highly elaborate and the descriptions abound in rich poetical imagery of high aesthetic value."

Journal of the Oriental Institute Berode
V 1 X. No. 3, March 1961

H. C. METHA

६—श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्—पृष्ठीभराचार्यविरचित कविपद्मनामकृत
भाष्यसहित सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम ए., उपसंस्थासक
राजस्थान प्राप्यविद्या प्रतिष्ठान ओसपुर ।

क "मूल स्तोत्र की प्रबोधिनी टीका और पाद-टिप्पणियों में जो अनेकानेक पाठान्तर दिये गये हैं उनसे इस प्रकाशन की उपयोगिता तथा महत्व बढ़ गया है ।

२१ जून १९६१

महाराजकुमार डा रघुवीरसिंह
एम ए एम एम बी बी लिट् एम पी
सीतामढ़

क 'इस स्तोत्र में भुवनेश्वरी के स्वरूप ध्यान और मंत्रों का सम्यक रूप से विवेचन है । साथ ही अन्य १२ स्तोत्रों के द्वारा भुवनेश्वरी के माहात्म्य की पर्याप्त सामग्री एकत्र की गई है । यथासमय उपासनासम्बन्धी कई सातव्य विषय दिए गए हैं । प्रारंभ में प्रास्ताविक परिचय' नाम से श्रीगोपालनारायण बहुरा ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है । उससे इस स्तोत्र तथा इसके विषय को समझने में बड़ी सहायता मिलती है ।

डा २ अक्टूबर १९६१

—बैजिक विमुक्तान नई दिल्ली

७—राजस्थानी साहित्य सग्रह—

भाग १ सम्पादक श्रीनरोत्तमदाम स्वामी एम ए

भाग २ सम्पादक श्रीपुष्पोत्तमपाल मेनागिया एम ए साहित्य-रत्न ।

साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं इतिहास-सम्बन्धी भी बहुत

धार्मिक सामग्री उक्त बार्ता-साहित्य में प्राप्य है। तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन धार्मिक भावनाओं और अंध विश्वासों आदि की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के गद्य साहित्य का गहरा अध्ययन सर्वथा अनिवार्य हो जाता है। पाद-टिप्पणियों में दिये गये पाठान्तरों और साथ ही आवश्यक शब्दाओं से इस संस्करण का विशेष महत्त्व हो गया है। इन दोनों भागों में दी गई भूमिकाएँ भी उपयोगी और विचार-प्रेरक हैं।

ता २६ जून १९९१

८—स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-प्रबन्ध-सूची—सम्पादक श्रीगोपासनारायण बहुरा एम ए और श्रीसद्गोपीनारायण गोस्वामी बी.ए.डी.

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी स्वयं ही एक सजीव संस्था थे। उन्होंने एकाकी ओ काम किया वह अनेकानेक संस्थाओं के मिला कर काम करने पर भी उतनी पूणता और तत्परता से किया जाना कठिन ही होता। अतः उनके निजी पुस्तकालय के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान को सौंपे जाने से बस्तुतः एक बड़ी सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा हो गई है जिसके लिये राजस्थान ही नहीं भारत का समूचा शिक्षित समाज पुरोहितजी के सुपुत्र श्रीगोपासनजी का संबंध अनुगृहीत रहेगा। अतः ऐसे महत्त्व के पुस्तक-संग्रह की यह पुस्तक-सूची अवश्य ही विद्वानों सद्योषकों आदि सब ही के लिये बहुत ही उपयोगी होने वाली है। प्रतिष्ठान का यह प्रकाशन सप्रहणीय है।

ता २६ जून १९९१

९—सूरजप्रकाश भाग १—कविया करणीबानजीकृत सम्पादक श्रीसीताराम सालस।

साहित्य प्रेमियों के साथ ही इतिहासकारों के लिये कविया करणीबानकृत 'सूरजप्रकाश' का विषय महत्त्व है। मारवाड़ के इतिहास के प्रमुख आधार ग्रन्थ के रूप में इस ग्रन्थ का अध्ययन किया जाता है। अतः उसको प्रकाशित करने का आयोजन कर प्रतिष्ठान ने एक बड़ी कमी को पूरा किया है।

ता २६ जून १९९१

महाराजकुमार डॉ. रघुबीरसिंह
एम.ए., एल.एल.बी., डी.लिट्., एम.पी.

